अगाथा क्रिस्टी

एन्ड देन देयर वेयर नन

एन्ड देन देयर वेअर नन

अगाथा क्रिस्टी

अनुवाद

नीलाभ अश्क

हार्पर
हिन्दी

लेखक की टिप्पणी

मैंने यह किताब लिखी, क्योंकि इसे लिखना इतना मुश्किल था कि इस ख़याल ने मुझे बाँध लिया था। दस लोगों को मरना था और न तो किताब को मज़ाक बनना था, न हत्यारे का पता लगना था। मैंने यह किताब ख़ूब योजना बना कर लिखी थी और जो नतीजा निकला था, उससे मैं बहुत ख़ुश थी। यह साफ़, सीधी, चकराने वाली किताब थी और इसके बावजूद इसका एक तार्किक उत्तर भी था; वास्तव में, इसे समझाने के लिए इसमें एक उपसंहार की भी व्यवस्था करनी पड़ी। इसे प्रशंसा मिली, अच्छी समीक्षाएँ हुईं, लेकिन असली ख़ुशी मुझे हुई थी, क्योंकि किसी भी आलोचक की तुलना में मुझे मालूम था कि इसे लिखना कितना कठिन रहा था।

अगाथा क्रिस्टी

'आत्म-कथा' से

अध्याय 1

I

पहले दर्जे के धूम्रपान वाले डिब्बे के एक कोने में हाल ही में सेवा-मुक्त हुए न्यायाधीश वॉरग्रेव सिगार फूँकते हुए '*द टाइम्स*' अख़बार की राजनैतिक ख़बरों पर दिलचस्पी से नज़रें दौड़ा रहे थे।

उन्होंने अख़बार नीचे रख दिया और खिड़की के बाहर देखा। वे अब समरसेट से होकर गुज़र रहे थे। उन्होंने घड़ी पर निगाह डाली—दो घण्टे का सफ़र अभी बाक़ी था।

उन्होंने अपने दिमाग़ में वह सब दोहराया जो सोल्जर आइलैण्ड के बारे में अख़बारों में छपा था। पाल वाली नावों के बेहद शौक़ीन अमरीकी करोड़पति द्वारा उसके ख़रीदे जाने की ख़बर तो छपी ही थी, डेवन के समुद्री-तट पर इस छोटे-से टापू पर उस सुख-सुविधा सम्पन्न आधुनिक मकान का विवरण भी छपा था जो उस अमरीकी ने वहाँ बनवाया था। बदक़िस्मती से उस अमरीकी करोड़पति की नयी तीसरी बीवी की कोई गति समुद्री नावों और मल्लाही में नहीं थी और इसी वजह से यह मकान और टापू बिक्री के लिए चढ़ा दिया गया था। अख़बारों में इसके बहुत-से अलग-अलग और जगमगाते हुए इश्तेहार छपे थे। फिर एक सपाट-सी ख़बर आयी थी कि उसे किन्हीं मिस्टर ओवेन ने ख़रीद लिया था। उसके बाद चर्चा-कुचर्चा का बाज़ार गर्म हो गया था, अफ़वाहें उड़ने लगी थीं। दरअसल, सोल्जर आइलैण्ड हॉलीवुड की तारिका मिस गेब्रिएल टर्ल ने ख़रीदा था। वह हर तरह के प्रचार से दूर कुछ महीने वहाँ शान्ति से गुज़ारना चाहती थी। '*बिज़ी बी*' के नाम से छपने वाले स्तम्भ में बड़ी नज़ाकत-नफ़ासत से इशारा किया गया था कि वह किसी शाही (?) रिहाइश के काम आने वाला था। दूसरे स्तम्भकार, '*मिस्टर मेरीवेदर*' के कानों में सुन-गुन हुई थी कि वह हनीमून के लिए ख़रीदा गया था—युवा लॉर्ड—आख़िरकार कामदेव के तीर का निशाना बन ही गये थे। 'जोनास' को यह 'सच्चाई' मालूम थी कि उसे नौसेना ने कुछ बहुत ही गुप-चुप क़िस्म के प्रयोग करने के लिए ख़रीदा था।

इसमें कोई शक नहीं था कि सोल्जर आइलैण्ड ख़बरों में था।

अपनी जेब से जस्टिस वॉरग्रेव ने एक चिट्ठी निकाली। लिखावट लगभग अपठनीय थी, लेकिन यहाँ-वहाँ शब्द असाधारण स्पष्टता से नुमायाँ थे।

प्रिय लॉरेंस... इतने साल बीत गये तुम्हारी कोई ख़बर नहीं...

सोल्जर आइलैण्ड ज़रूर आना चाहिए... बेहद ख़ूबसूरत जगह... बात करने को इतना है... पुराने दिन... प्रकृति का संग-साथ... धूप में पसरना... पैडिंगटन स्टेशन से 12.40 वाली गाड़ी... ओकब्रिज पर मिलूँगी...

और पत्र-लेखिका ने बड़े अन्दाज़ में पत्र का अन्त अपने बाँके हस्ताक्षरों से किया था—*तुम्हारी कॉन्स्टेंस कल्मिंगटन।*

जस्टिस वॉरग्रेव ने दिमाग़ पर ज़ोर डालकर यह याद करने की कोशिश की कि उन्होंने लेडी कॉन्स्टेंस कल्मिंगटन को आख़िरी बार सही-सही कब देखा था। सात—नहीं, आठ साल हो गये होंगे। उस समय वह इटली जा रही थी—धूप का आनन्द लेने और कुदरत और किसानों से एकमेक होने। बाद में उन्होंने सुना था कि वह आगे सीरिया चली गयी थी —और भी कड़ी धूप में पसरने और प्रकृति और बद्दू क़बीले के लोगों से एकमेक होने।

कॉन्स्टेंस कल्मिंगटन, उन्होंने मन-ही-मन कहा, ठीक वैसी ही औरत थी जो एक टापू ख़रीदे और अपने को रहस्य से घेर ले। अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए सिर को हल्के से हिलाते हुए जस्टिस वॉरग्रेव ने उसे ढीला छोड़ दिया और जल्दी ही उनका सिर नींद के झोंकों से हिलने लगा...

वे सो गये थे...

II

तीसरे दर्जे के एक डिब्बे में पाँच और मुसाफ़िरों के साथ, वेरा क्लेथॉर्न ने अपना सिर पीछे टिका लिया और आँखें बन्द कर लीं। आज रेलगाड़ी से सफ़र करने में कितनी गर्मी लग रही थी। समुद्र-तट पर पहुँचना कितना अच्छा होगा। यह नौकरी मिलना सचमुच बड़ी क़िस्मत की बात थी। जब

कभी छुट्टियों में नौकरी की ज़रूरत होती तो लगभग हमेशा ही इसका मतलब होता ढेर सारे बच्चों की देख-भाल करना—सेक्रेटरी की नौकरी तो कही ज़्यादा मुश्किल से मिलती थी ! नौकरी दिलाने वाली एजेन्सी को भी बहुत उम्मीद नहीं थी।

और फिर वह चिट्ठी आयी थी :

मुझे तुम्हारा नाम कुशल महिला एजेन्सी से उनकी सिफारिश के साथ मिला है। मेरी समझ में वे तुम्हें व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। मैं तुम्हें वह तन्ख़ा देने को तैयार हूँ जो तुमने चाही है और उम्मीद करूँगी कि तुम 8 अगस्त को आकर अपना काम सँभाल लोगी। रेलगाड़ी 12.40 पर पैडिंगटन से रवाना होती है और ओकब्रिज स्टेशन पर कोई तुम्हें लेने आवेगा। मैं ख़र्चे के लिए एक-एक पाउण्ड के पाँच नोट भेज रही हूँ।

तुम्हारी

ऊना नैन्सी ओवेन

पत्र के ऊपर मुहर-लगा पता था—*सोल्जर आइलैण्ड, स्टिकलहेवन, डेवन...*

सोल्जर आइलैण्ड ! अरे, हाल के दिनों में इसके सिवा अख़बारों में जैसे कुछ और छप ही नहीं रहा था। हर तरह के संकेत, हर क़िस्म की दिलचस्प अफ़वाहें। हालाँकि शायद उनमें से ज़्यादातर झूठी थीं। लेकिन वह मकान यक़ीनन एक करोड़पति ने बनवाया था और बताया जाता था कि ऐशो-आराम के लिहाज़ से उसका कोई मुक़ाबला नहीं था।

हाल ही में स्कूली नौकरी का एक कठिन सत्र पूरा करके थकी वेरा क्लेथॉर्न ने सोचा, 'तीसरे दर्जे के स्कूल में खेल-कूद की अध्यापिका की नौकरी के बारे में क्या कहा जा सकता है... काश, किसी *अच्छे* स्कूल ही में मुझे नौकरी मिल जाती।'

और फिर अपने दिल को घेरे सर्द एहसास के साथ उसने सोचा, 'लेकिन यह भी क़िस्मत ही है कि इतना भी है। आख़िरकार लोग मौत की अदालती जाँच पसन्द नहीं करते, भले ही जाँच अधिकारी ने मुझे सभी दोषों से बरी कर दिया था।'

उसे याद आया कि जाँच अधिकारी ने उसकी हाज़िर दिमाग़ी और साहस की तारीफ़ भी की थी। अस्वाभाविक मौत की जाँच के लिहाज़ से इससे अच्छा और कुछ नहीं हो सकता था। और श्रीमती हैमिल्टन तो उसके प्रति दया की प्रतिमा थीं—सिर्फ़ ह्यूगो—*लेकिन वह ह्यूगो के बारे में नहीं सोचेगी।*

अचानक, डिब्बे की गर्मी के बावजूद उसके शरीर में एक सिहरन-सी दौड़ गयी और उसके मन में इच्छा जगी कि काश, वह समुद्र-तट पर न जा रही होती। उसके दिमाग़ में एक तस्वीर कौंधी—साफ़-साफ़। *सिरिल का सिर चट्टान की तरफ़ तैरते समय ऊपर-नीचे डुबकियाँ मारता हुआ*—ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे... और वह ख़ुद आसान अभ्यस्त तरीक़े से उसके पीछे तैरती हुई—पानी को चीर कर अपना रास्ता बनाती हुई, लेकिन पक्के तौर पर यह जानती हुई कि वह समय पर नहीं पहुँच पायेगी।

समुद्र—उसकी गर्म नीली गहराई—सुबहों को रेत पर पसरे हुए बिताना—ह्यूगो—ह्यूगो जिसने कहा था कि वह उससे प्यार करता था...

उसे ह्यूगो के बारे में नहीं सोचना है।

उसने आँखें खोलीं और अपने सामने बैठे आदमी पर त्योरियाँ चढ़ायीं। लम्बा-सा आदमी, भूरा चेहरा, हल्की आँखें जो एक-दूसरे के कुछ नज़दीक थीं और एक घमण्डी लगभग क्रूर मुँह।

उसने मन में सोचा :

यह शर्तिया दुनिया के कुछ दिलचस्प हिस्सों की सैर कर चुका है और कुछ दिलचस्प चीज़ें देख चुका है।

III

तेज़ी से घूमती-फिरती अपनी आँखों की महज़ एक ही निगाह से सामने बैठी लड़की को आँकते हुए फ़िलिप लॉम्बार्ड ने सोचा :

'काफ़ी आकर्षक है—बस थोड़ी-सी स्कूली अध्यापिका जैसी है शायद।'

दमदार है, उसके ख़याल से—और ऐसी जो अपने बल पर मुक़ाबला कर सके—प्यार में या जंग में। मौक़ा मिले तो वह उसे आज़माना चाहेगा...

उसने मुँह बनाया। नहीं, यह सब छोड़ो। यह काम-धन्धे का मामला था। उसे अपना दिमाग़ काम पर लगाये रखना था।

मामला दरअसल था क्या, उसने सोचा? उस छोटे-से क़द के यहूदी ने बड़े रहस्यमय ढंग से बात की थी।

'हाँ या ना, कैप्टन लॉम्बार्ड।'

फ़िलिप ने सोचते हुए कहा था :

'सौ गिनी, ऐं?'

उसने बड़े इत्मीनान से यह कहा था, मानो उसके लिए *सौ गिनी* की कोई अहमियत नहीं थी। सौ गिनी—जब कि असलियत यह थी कि उसके पास ढंग से खाने के पैसे लगभग ख़त्म हो चुके थे। हालाँकि उसके ख़याल में उस छोटे-से यहूदी को कोई ग़लतफ़हमी नहीं हुई थी—यहूदियों के सिलसिले में कमबख़्त यही बात थी, उन्हें पैसों के बारे में धोखा नहीं दिया जा सकता था—वे *जानते थे!*

उसी बेपरवाही से उसने कहा :

'और आप मुझे इससे ज़्यादा और कोई जानकारी नहीं दे सकते?'

मिस्टर आइज़क मॉरिस ने अपना सिर बहुत फ़ैसलाकुन अन्दाज़ में हिलाया था।

'नहीं, कैप्टन लॉम्बार्ड, मामला बस इतना ही है। मेरे मुवक्किल का ख़याल है कि आपकी शोहरत कठिन परिस्थिति में कारगर आदमी की है। मुझे आपको सौ गिनी का भुगतान करने का अधिकार दिया गया है जिसकी एवज़ में आप स्टिकलहेवन, डेवन जायेंगे। सबसे नज़दीक का स्टेशन ओकब्रिज है, वहाँ आपसे कोई मिलेगा और कार से स्टिकलहेवन ले जायेगा जहाँ से एक मोटरबोट आपको सोल्जर आइलैण्ड पहुँचा देगी। सोल्जर आइलैण्ड पहुँचकर आप मेरे मुवक्किल के आदेशों के अनुसार काम करेंगे।'

अचानक लॉम्बार्ड ने कहा :

'कितने समय के लिए?'

'हद-से-हद तक हफ़्ते भर के लिए, उससे ज़्यादा नहीं।'

अपनी छोटी-सी मूँछ पर उँगली फिराते हुए कैप्टन लॉम्बार्ड ने कहा :

'आप यह तो समझ रहे हैं न कि मैं ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जो ग़ैर-क़ानूनी हो?'

बोलते समय उसने दूसरे शख़्स की तरफ़ तीखी निगाह डाली थी। मिस्टर मॉरिस के मोटे-मोटे होंटों पर बड़ी हल्की-सी मुस्कान आयी जब उन्होंने गम्भीरता से जवाब दिया :

'अगर कुछ भी ग़ैर-क़ानूनी करने के लिए कहा जाता है तो निश्चय ही आपको छोड़कर चले आने की पूरी आज़ादी होगी।'

कैसा चिकना-चुपड़ा बन्दा था यह कमबख़्त, वह मुस्कराया था ! मानो वह अच्छी तरह जानता था कि लॉम्बार्ड के पिछले तमाम काम काज में क़ानून का सवाल हमेशा *अनिवार्य शर्त* नहीं रहा था...

लॉम्बार्ड के अपने होंट फैल गये।

क़सम ऊपर वाले की, एक या दो बार वह ख़तरे के बहुत नज़दीक से हो कर गुज़रा था। लेकिन हर बार वह साफ़ निकल आया था। ऐसी कोई हद नहीं थी जिसे पार करने से वह सचमुच हिचकता था...

नहीं, ऐसी कोई हद नहीं थी जिसे वह पार करने से कतराये। उसने सोचा कि सोल्जर आइलैण्ड पर उसे काफ़ी मज़ा आने वाला था...

IV

धूम्रपान निषेध वाले एक डिब्बे में मिस एमिली ब्रेण्ट अपनी आदत के मुताबिक़ बहुत सीधी तनी बैठी थीं। वे पैंसठ साल की थीं और ढुलक कर बैठना पसन्द नहीं करती थीं। उनके पिता पुराने खेवे के कर्नल थे और चाल-ढाल के बारे में बहुत ध्यान देते थे।

मौजूदा पीढ़ी तो बेशर्मी से ढीली-ढाली थी—उठने-बैठने-चलने में, *और हर दूसरे तरीक़े में...*

ईमानदारी और अटल सिद्धान्तों के वातावरण में घिरी, मिस ब्रेण्ट तीसरे दर्जे के अपने भीड़-भरे डिब्बे में बैठी उसकी असुविधा और गर्मी को बहादुरी से झेल रही थीं। आजकल हर कोई ज़रा-ज़रा-सी बात पर आसमान सिर पर उठा लेता है। दाँत निकलवाने से पहले उन्हें इंजेक्शन

चाहिए—नींद न आये तो गोली—बैठने के लिए उन्हें आराम कुर्सियाँ और गद्दियाँ चाहिएँ और लड़कियाँ अपने शरीर को कैसे भी ढीला छोड़ देती थीं और गर्मियों में सागर-तटों पर अधनंगी लेटी रहती थीं।

मिस ब्रेण्ट के होंट कस गये। वे कुछ लोगों को तो ज़रूर सबक़ सिखाना चाहेंगी।

उन्हें पिछले साल की गर्मियों की छुट्टियाँ याद हो आयीं। इस साल, बहरहाल, मामला काफ़ी अलग होगा। सोल्जर आइलैण्ड...

मन-ही-मन उन्होंने उस चिट्ठी को दोहराया जिसे वे पहले ही इतनी बार पढ़ चुकी थीं।

प्रिय मिस ब्रेण्ट,

मुझे पूरी उम्मीद है मैं आपको याद हूँगी? हम कुछ साल पहले अगस्त के महीने में बेलहेवन गेस्ट हाउस में साथ थे और लगा था कि हममें बहुत कुछ है जो एक-दूसरे से मिलता है।

मैं डेवन के समुद्र-तट पर एक टापू में अपना ख़ुद का गेस्ट हाउस शुरू कर रही हूँ। मेरे ख़याल में सचमुच ऐसी जगह की ज़रूरत है जहाँ अच्छा, सीधा-सादा खाना मिल सके और एक अच्छी पुराने-खयालों और चाल-चलन वाली महिला भी। आधी रात तक यह नंगापन और ग्रामोफ़ोन बगैरा नहीं। मुझे बड़ी ख़ुशी होगी अगर आप सोल्जर आइलैण्ड पर अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने के बारे में सोचें—बिल्कुल मुफ़्त—मेरी मेहमान के रूप में। क्या अगस्त के शुरू में आपको ठीक लगेगा? शायद 8 अगस्त को।

आपकी

यू. एन. ओ.

क्या नाम था? हस्ताक्षर पढ़ने में तो ज़रा दिक्कत हो रही थी। अधीरता से एमिली ब्रेण्ट ने सोचा : 'इतने सारे लोग अपने हस्ताक्षर ऐसे करते हैं कि पढ़े नहीं जाते।'

उन्होंने अपने दिमाग़ को पीछे बेलहेवन पर इकट्ठा लोगों पर दौड़ाया। वे वहाँ लगातार दो गर्मियाँ जाती रही थीं। वहीं वह भली-सी अधेड़ महिला

थी—मिस—मिस—क्या नाम *था* उसका?—उसके पिता पादरी रहे थे। और वहीं एक श्रीमती ओल्टन भी थीं—ओर्मेन—नहीं, पक्का था कि वे *ऑलिवर थीं!* हाँ...ऑलिवर।

सोल्जर आइलैण्ड। अखबारों में सोल्जर आइलैण्ड के बारे में ख़बरें छपती रही थीं—किसी फ़िल्मी तारिका के बारे में कुछ—या वह अमरीकी करोड़पति के बारे में था?

कुदरती तौर पर ये जगहें बड़े सस्ते में जाती थीं—टापू सबको माफ़िक नहीं आते थे। वे टापू पर रहने के विचार को बहुत रूमानी मानते थे, लेकिन जब वे वहाँ रहने आते तो उन्हें एहसास होता कि कितनी असुविधाएँ थीं वहाँ तब वे इन टापुओं को बेचने में ही भलाई समझते और ख़ुश होते।

एमिली ब्रेण्ट ने मन-ही-मन ख़ुद से कहा : 'जो भी हो मुझे तो मुफ़्त में छुट्टियाँ बिताने का मौक़ा मिलेगा।'

आमदनी के इतना घट जाने पर और इतने सारे डिविडेंडों का पैसा आने पर, यह तो सचमुच सोचने लायक़ बात थी ही। बस, काश, वे उन श्रीमती—या क्या वह मिस थी—ऑलिवर के बारे में कुछ और याद कर पातीं?

V

जनरल मैकार्थर ने डिब्बे की खिड़की के बाहर नज़र डाली। रेलगाड़ी ऐक्ज़ेटर में दाख़िल होने वाली थी जहाँ उन्हें गाड़ियाँ बदलनी थीं। कमबख़्त, ये धीमी शाखा वाली रेलगाड़ियाँ ! यह जगह सोल्जर आइलैण्ड दरअसल सीधी रेखा पर चलें तो कोई फ़ासला था ही नहीं।

उन्हें साफ़-साफ़ पता नहीं चल पाया था कि यह बन्दा ओवेन था कौन। प्रकट ही स्पूफ़ लेगार्ड का मित्र था—और जॉनी डायर का भी।

'...तुम्हारे एक या दो पुराने लँगोटिया यार भी आ रहे हैं...पुराने जमाने की बातें करके बड़ा मज़ा आयेगा।'

ख़ैर, पुराने दिनों की चर्चा तो वे ख़ुद भी पसन्द करेंगे। हाल के दिनों में उन्हें जाने क्यों वहम-सा हो रहा था कि बन्दे उनसे कुछ-कुछ कतराने लगे

थे। सब उस कमबख़्त अफ़वाह की वजह से। भगवान की क़सम, ख़ासी मुश्किल थी... अब तो लगभग तीस साल गुज़र गये थे। उनके ख़याल में आर्मिटेज ने मुँह खोला था। नन्हा-सा पिल्ला न हो तो। वह क्या जानता था उस बारे में? ख़ैर, इन चीजों के बारे में उधेड़-बुन से कोई फ़ायदा नहीं। कभी-कभी यों ही वहम हो जाता है—वहम कि कोई बन्दा आपको अजीब निगाहों से देख रहा था।

अब यह सोल्जर आइलैण्ड—उसको देख कर उन्हें मज़ा आयेगा। बड़ी अफ़वाहें उड़ रही थीं इधर-उधर। लगता था कि उस अफ़वाह में कुछ दम है कि नौसेना या युद्ध मन्त्रालय या वायुसेना ने उसे कब्ज़े में ले लिया था...

उस अमरीकी करोड़पति युवक एल्मर रॉबसन ने ही वाक़ई उस जगह को बनाया था। कहा जाता था कि उस पर हज़ारों खर्च कर दिये थे। हर तरह की सुविधा...

एक्ज़ेटर ! और एक घण्टे का इन्तज़ार ! और वे इन्तज़ार नहीं करना चाहते थे। वे चाहते थे फ़ौरन चल दें...

VI

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग अपनी मॉरिस कार में बैठ कर सॉल्सबरी प्लेन पार कर रहे थे। वे बहुत थक गये थे... सफलता के अपने जुरमाने और दण्ड होते हैं। एक समय था जब वे हार्ले स्ट्रीट में अपने परामर्श कक्ष में बैठते थे, सही ढंग के कपड़े पहने, नवीनतम उपकरणों और अत्यन्त सुविधाजनक साज-सज्जा से घिरे हुए और इन्तज़ार करते थे—ख़ाली दिनों के बीच इन्तज़ार करते थे कि उनका उद्यम सफल हो या नाकाम हो जाये...

ख़ैर, वह सफल हो गया था ! वे ख़ुशक़िस्मत थे ! ख़ुशक़िस्मत और निश्चय ही कुशल भी। अपने काम में वे माहिर थे—लेकिन कामयाबी के लिए महज़ उतना काफ़ी नहीं था। क़िस्मत भी साथ होनी चाहिए थी। और उन्हें यह साथ मिला था। सही, सटीक निदान, दो-तीन आभारी महिला मरीज—पैसे और प्रतिष्ठा वाली महिलाएँ—और बात फैल गयी थी। 'तुम्हें

आर्मस्ट्रॉन्ग को आज़माना चाहिए—*काफ़ी* युवा है अभी—लेकिन *इतना* अक़्लमन्द—पैम तो बरसों से हर तरह के लोगों के पास जाती रही थी और उसने फ़ौरन तकलीफ़ पर उँगली रख दी !' पहिया लुढ़कने लगा था।

और अब डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने मंज़िल हासिल कर ली थी। उनके दिन सुबह से शाम तक भरे रहते थे। उन्हें बहुत कम फ़ुरसत मिल पाती। और इसीलिए, आज सुबह उन्हें ख़ुशी थी कि वे लन्दन छोड़कर जा रहे थे और कुछ दिन डेवन के समुद्र-तट पर एक टापू में बितायेंगे। ऐसा नहीं था कि यह सही-सही छुट्टियाँ मनाने का मामला था। जो पत्र उन्हें मिला था उसमें शर्तें कुछ गोल-मोल-सी थीं, मगर उसके साथ जो चेक नत्थी था, उसमें कोई गोल-मोल वाली बात नहीं थी। अच्छी ख़ासी फ़ीस थी। ये ओवेन दम्पती पैसों में लोट रहे होंगे। लगता है थोड़ी-सी कठिनाई थी; एक पति जो अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के बारे में चिन्तित था और चाहता था कि बिना उसे चौंकाये, उसकी सेहत के बारे में एक रिपोर्ट मिल जाये। वह डॉक्टर को दिखाने के लिए तैयार न थी। उसकी नसें...

नसें ! डॉक्टर की भवें चढ़ गयीं। ये औरतें और उनकी नसें ! ख़ैर, कुल-मिला कर उनके काम-धन्धे के लिहाज़ से तो अच्छा ही था यह। उनसे राय-मशविरा करने के लिए आने वाली आधी औरतों के साथ ऊब के अलावा कोई समस्या नहीं थी, लेकिन अगर आप बस यही उन्हें बता दें तो आपको धन्यवाद भी नहीं मिलने वाला था। और बन्दा आम तौर पर कुछ-न-कुछ तो खोज ही सकता था।

'बस (वे एक लम्बा-सा शब्द बोलते) की थोड़ी-सी गड़बड़ी है, कुछ गम्भीर नहीं,—मगर वक़्त रहते ही उसे ठीक करना ज़रूरी है। सीधा-सा इलाज है।'

बहरहाल, देखा जाय तो चिकित्सा अधिकतर मामलों में विश्वास के बल पर उपचार का मामला था। और डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग के तौर-तरीक़े अच्छे थे—वे उम्मीद और विश्वास का संचार कर सकते थे।

कितनी क़िस्मत की बात थी कि वे समय से ख़ुद को सँभाल सके थे...उस मामले के बाद...दस...नहीं, पन्द्रह साल पहले। बाल-बाल बचे थे

वे। वे बिखरते जा रहे थे। उस सदमे ने उनको फिर से खड़ा कर दिया था। उन्होंने शराब बिलकुल छोड़ दी थी। हालाँकि, खाई के किनारे पहुँच कर सँभले थे वे, क़सम से...

हॉर्न के एक कान फाड़ने वाले धमाकेदार विस्फोट के साथ एक विशाल सुपर-स्पोर्ट डालमेन कार अस्सी मील प्रति घण्टे की रफ़्तार से उनकी बग़ल से गुज़र गयी। डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग सड़क के किनारे की झाड़ियों में जाते-जाते बचे। उन्हीं युवा मूर्खों में से कोई होगा जो सड़कों को रौंदते फिरते थे। उन्हें उनसे नफ़रत थी। यह भी बहुत नज़दीक से बचने का मामला था। गधा कहीं का।

VII

मेयर शहर में धड़धड़ा कर घुसते हुए टोनी मार्सटन सोच रहा था :

'सड़कों पर इतनी सारी रेंगती हुई कारें एक मुसीबत हैं। हमेशा कुछ-न-कुछ आपके रास्ते में रुकावट पैदा कर देता है। *और* फिर वे चलायेंगे भी सड़क के बीचों-बीच ! इंग्लैण्ड में कार चलाना भी एक आफ़त है... फ़्रान्स की तरह नहीं, जहाँ आप सचमुच सारे बन्धन तोड़ कर...'

क्या वह यहाँ एक ड्रिंक के लिए रुके या बढ़ जाये? ढेरों समय था अभी ! बस, ले-दे कर सौ मील के क़रीब बचे थे जिन्हें पार करना था। वह एक जिन और जिंजर बियर लेगा। दिन बहुत गर्म था।

यह टापू वाली जगह ज़रूर मस्त होगी—अगर मौसम ठीक रहा तो। कौन *थे* ये ओवेन दम्पति? वह इसी सोच-विचार में उलझा हुआ था। पैसों से गँधा रहे थे शायद। बैजर ऐसे लोगों को सूँघ कर खोज निकालने में माहिर था। बेशक, वह इसके सिवा और करता भी क्या, उसके पास अपना तो कुछ पैसा था नहीं...

उम्मीद है पीने-पिलाने को वहाँ अच्छा मिलेगा। इन लोगों के बारे में कुछ पता नहीं चलता था जिन्होंने अपने पैसे बनाये होते, जो पैदाइशी अमीर न होते। अफ़सोस कि ग्रेबियल टर्ल द्वारा सोल्जर आइलैण्ड को ख़रीदने का वह क़िस्सा सच नहीं था। फ़िल्मी सितारों के उस जमावड़े का

हिस्सा बनने में उसे मज़ा आता।

ख़ैर, उसका अन्दाज़ा था कि वहाँ कुछ लड़कियाँ तो ज़रूर होंगी...

होटल से बाहर आकर उसने अँगड़ाई लेते हुए बाँहें तानीं, जम्हाई ली, नीले आकाश को देखा और डालमेन में सवार हो गया।

कई युवतियों ने प्रशंसा-भरी निगाहों से उसे देखा—उसका छै फ़ुटा सुडौल शरीर, हवा में उड़ते बाल, धूप से तँबियाया चेहरा और गहरी नीली आँखें...

उसने क्लच छोड़ा और एक दहाड़ के साथ सँकरी सड़क पर उछलता हुआ बढ़ा। बूढ़े लोग और छोटे-मोटे काम करने वाले छोकरे बचने के लिए किनारे हो गये। छोकरे कार को प्रशंसा से देखते रहे।

ऐण्टनी मार्सटन ने अपनी विजय यात्रा जारी रखी।

VIII

ब्लोर प्लाईमाउथ से आ रही धीमी गाड़ी में था। उसके डिब्बे में सिर्फ़ एक और आदमी था—धुँधली आँखों वाला उम्रदराज़ बन्दा जो समुद्री नाविक रहा होगा। इस वक़्त वह बैठे-बैठे सो गया था।

ब्लोर सावधानी से अपनी नोटबुक में दर्ज कर रहा था।

'यही हैं सब-के-सब', वह अपने आप से बुदबुदाया। 'एमिली ब्रेण्ट, वेरा क्लेथॉर्न, डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग, ऐण्टनी मार्सटन, बूढ़े न्यायाधीश वॉरग्रेव, फ़िलिप लॉम्बार्ड, जनरल मैकार्थर, सी. एम. जी., डी. एस. ओ.। सेवक और उसकी पत्नी—रॉजर्स और श्रीमती रॉजर्स।'

उसने नोटबुक बन्द करके उसे वापस अपनी जेब के हवाले किया। फिर दूसरे कोने की तरफ़ और वहाँ नींद में डूबे आदमी को देखा।

'एक ड्रिंक ज़्यादा हो गयी है', ब्लोर ने सटीक निदान किया।

उसने अपने दिमाग़ में हर चीज़ को सावधानी और सलीक़े से दोहराया।

'काम तो काफ़ी आसान होना चाहिए', उसने सोचा। 'इसमें कोई ग़लती कैसे हो सकती है। उम्मीद है मैं ठीक-ठाक दिख रहा हूँ।'

वह उठ कर खड़ा हो गया और उसने चिन्ता-भरे अन्दाज़ में ख़ुद को

शीशे में जाँचा। जो चेहरा वहाँ प्रतिबिम्बित था, वह कुछ-कुछ फ़ौजी नाक-नक्शे वाला था, मूँछ के साथ। उस पर बहुत कम भाव थे। आँखें सलेटी थीं और एक-दूसरे के काफ़ी क़रीब थीं।

'फ़ौज में मेज़र हो सकता है', ब्लोर ने कहा। 'नहीं, मेरे ध्यान से उतर गया। वह वह बूढ़ा फ़ौजी होगा। वह मुझे फ़ौरन भाँप जायेगा।'

'दक्षिण अफ़्रीका', उसने फिर कहा। 'हाँ, यही रास्ता अपनाऊँगा। इन लोगों में से किसी का भी दक्षिण अफ़्रीका से कुछ लेना-देना नहीं होगा और मैं अभी-अभी वह पर्यटन पुस्तिका पढ़ चुका हूँ, इसलिए उसके बारे में ठीक-ठाक बातें भी कर सकता हूँ।'

क़िस्मत से उपनिवेशों के साथ जुड़े हर तरह के लोग थे। ब्लोर का ख़याल था कि दक्षिण अफ़्रीका से आये सम्पन्न व्यक्ति के रूप में वह बेखटके किसी भी समूह में शामिल हो सकता था ।

सोल्जर आइलैण्ड ! उसे लड़कपन के दिनों में देखा गया सोल्जर आइलैण्ड याद था... सागर-पाखियों से भरी, गँधाती हुई बड़ी-सी चट्टान—तट से एक मील की दूरी पर।

और फिर जा कर उस पर मकान बनाना—अजीबो-ग़रीब ख़याल था। बुरे मौसम में तो भयानक था। लेकिन ये करोड़पति मनमौजी क़िस्म के लोग होते हैं—सनकी भी।

कोने में ऊँघ रहा बूढ़ा जाग गया और बोला :

'समुद्र पर कभी कुछ कहा नहीं जा सकता—कभी नहीं !'

ब्लोर ने बहलाते हुए कहा, 'ठीक कहा। नहीं कहा जा सकता।'

बूढ़े ने दो हिचकियाँ लीं और शिकायती लहजे में कहा, 'आँधी आने वाली है।'

ब्लोर ने कहा :

'नहीं, नहीं, साथी, बहुत सुन्दर खुला दिन है आज।'

बूढ़े ने गुस्से से कहा :

'आगे आँधी आने वाली है। मुझे उसकी *महक* आ रही है।'

'हो सकता है आप सही हों', ब्लोर ने शान्ति के साथ कहा।

रेलगाड़ी एक स्टेशन पर रुक गयी और वह बूढ़ा डगमगाते हुए उठ खड़ा हुआ।

'मैं यही उतरूँगा', उसने खिड़की खोलने की लटपटाती कोशिश की। ब्लोर ने उसकी मदद की।

बूढ़ा दरवाज़े में खड़ा हो गया। उसने गम्भीरता से हाथ उठाया और अपनी धुँधली आँखें मिचमिचायीं।

'देखो और दुआ करो', वह बोला। 'देखो और दुआ करो। फ़ैसले का दिन क़रीब है।'

वह दरवाज़े से प्लैटफार्म पर ढह गया। लेटे-लेटे ही उसने नज़र ऊपर उठा कर ब्लोर को देखा और बेहद गरिमा के साथ कहा।

'मैं *तुमसे* बात कर रहा हूँ जवान। फ़ैसले का दिन बहुत नज़दीक है।'

अपनी सीट पर धँसते हुए ब्लोर ने मन-ही-मन ख़ुद से कहा : मुझसे ज़्यादा तो फ़ैसले के दिन के ज़्यादा क़रीब वह है।

लेकिन यहाँ, जैसा कि होता है, वह ग़लत था...

अध्याय 2

I

ओकब्रिज स्टेशन के बाहर लोगों का एक छोटा-सा जत्था क्षणिक अनिश्चय में खड़ा था। लोगों के पीछे सूटकेसों के साथ कुली खड़े थे। इनमें से एक ने आवाज़ दी 'जिम !'

एक टैक्सी ड्राइवर आगे बढ़ा।

'आप लोग सोल्जर आइलैण्ड जा रहे हैं, शायद?' उसने डेवन की मुलायम आवाज़ में पूछा। चार आवाज़ों ने हामी भरी—और उसके फ़ौरन बाद एक-दूसरे की तरफ़ सरसरी निगाह डाली।

ड्राइवर ने जस्टिस वॉरग्रेव को दल के बुज़ुर्ग सदस्य के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा :

'सर, यहाँ दो टैक्सियाँ हैं। उनमें से एक को तब तक रुकना होगा जब तक एग्ज़ेटर से आने वाली धीमी गाड़ी नहीं आ जाती—पाँच मिनट का सवाल है—एक सज्जन उससे आ रहे हैं। शायद आप में से एक को रुकने में एतराज़ नहीं होगा? उस तरह आप को ज़्यादा आराम भी रहेगा।'

वेरा क्लेथॉर्न ने अपनी सेक्रेटरी वाली हैसियत को दिमाग़ में बिलकुल साफ़ रखते हुए फ़ौरन कहा :

'मैं रुकूँगी', वह बोली, 'अगर आप लोग आगे बढ़ेंगे?' उसने बाक़ी तीनों को देखा, उसकी निगाह और आवाज़ में हुक्म का वह हल्का-सा संकेत था जो अधिकार वाली जगह पर रहे होने से आता है। लगता था अपने तईं वह लड़कियों को हिदायत दे रही थी कि वे टेनिस की कौन-कौन-सी बाज़ी खेलें।

मिस ब्रेण्ट ने अपने लिये दिये लहजे में कहा, 'धन्यवाद', सिर झुकाया और उनमें से एक टैक्सी में दाख़िल हो गयीं जिसका दरवाज़ा ड्राइवर ने खोल रखा था।

जस्टिस वॉरग्रेव उनके पीछे-पीछे टैक्सी में आ बैठे।

कैप्टन लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं इन्तज़ार करूँगा मिस—'

'क्लेथॉर्न,' वेरा ने कहा।

'मेरा नाम लॉम्बार्ड है। फ़िलिप लॉम्बार्ड।'

कुली उस टैक्सी में सामान लाद रहे थे। अन्दर जस्टिस वॉरग्रेव ने आवश्यक क़ानूनी सतर्कता के साथ कहा :

'बड़ा ख़ूबसूरत मौसम है आजकल।'

मिस ब्रेण्ट ने कहा :

'जी हाँ, बिलकुल।'

बड़े सम्मानित बूढ़े सज्जन हैं, मिस ब्रेण्ट ने ख़ुद से कहा। समुद्र-तट के गेस्ट हाउसों में पाये जाने वाले आम आदमियों से काफ़ी अलग। प्रकट ही श्रीमती या मिस ऑलिवर के अच्छे-खासे सम्पर्क थे।

मिस्टर जस्टिस वॉरग्रेव ने पूछा :

'क्या आप दुनिया के इस हिस्से को अच्छी तरह जानती हैं?'

'मैं कॉर्नवॉल और टॉरकी तक आयी हूँ, लेकिन डेवन की यह मेरी पहली यात्रा है।'

न्यायाधीश ने कहा :

'मैं भी दुनिया के इस हिस्से से नावाक़िफ़ हूँ।'

टैक्सी इस बीच चल दी।

दूसरी टैक्सी के ड्राइवर ने कहा :

'अन्दर बैठकर इन्तज़ार करना पसन्द करेंगे?'

वेरा ने पक्का इरादा ज़ाहिर करते हुए कहा :

'बिलकुल नहीं।'

कैप्टन लॉम्बार्ड मुस्कराया। उसने कहा :

'वह दीवार पर पड़ रही धूप ज़्यादा अच्छी लग रही है। या फिर आप स्टेशन के अन्दर जाना पसन्द करेंगी?'

'नहीं, नहीं। रेलगाड़ी के उस घुटे-घुटे डिब्बे से बाहर निकलना इतना अच्छा लग रहा है।'

लॉम्बार्ड ने जवाब में कहा :

'हाँ, रेलगाड़ी से सफ़र करना इस मौसम में थोड़ा परेशान करता ही

है।'

वेरा ने फ़र्ज़-सा निभाते हुए कहा :

'यही मनाती हूँ कि बना रहे—मेरा मतलब है, यह मौसम। हमारे इंग्लैण्ड की गर्मियों को कुछ पता तो चलता नहीं। ऐसे धोखा दे जाती हैं ये।'

थोड़े-से पिटे-पिटाये ढंग से लॉम्बार्ड ने पूछा :

'क्या आप दुनिया के इस हिस्से को अच्छी तरह जानती हैं?'

'नहीं, मैं पहले कभी यहाँ नहीं आयी।' उसने ज़िम्मेदारी के साथ अपनी स्थिति को साफ़ करने के इरादे से फ़ौरन आगे कहा, 'मैंने तो अभी उनको भी नहीं देखा जिन्होंने मुझे काम पर रखा है।'

'काम पर?'

'हाँ, मैं श्रीमती ओवेन की सेक्रेटरी हूँ।'

'अच्छा, अच्छा', बेहद नामालूम ढंग से उसका रंग-ढंग बदल गया। उसमें कुछ और इत्मीनान का भाव आ गया—लहजा भी थोड़ा और सहज हो गया। उसने कहा : 'यह कुछ अजीब-सा नहीं है?'

वेरा हँसी।

'ओह, नहीं, मैं ऐसा नहीं सोचती। उनकी अपनी सेक्रेटरी अचानक बीमार पड़ गयी और उन्होंने एक एवज़ी के लिए एजेन्सी को तार दी और उन्होंने मुझे भेज दिया।'

'तो ऐसे हुआ यह सब। और फ़र्ज़ करो जब तुम वहाँ पहुँचो और नौकरी तुम्हें पसन्द न आये तब?'

वेरा फिर हँसी।

'ओह, यह तो महज़ कच्ची है—छुट्टियों वाली नौकरी। मेरी पक्की नौकरी तो लड़कियों के एक स्कूल में है। सच्ची बात है कि मुझे तो सोल्जर आइलैण्ड को देखने की सम्भावना से ही सनसनी हो रही है। अख़बारों में इसके बारे में इतना छपता रहा है। यह सचमुच दिल को बहुत लुभाने वाला है।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'जानता नहीं। मैंने उसे देखा नहीं है।'

'सचमुच? ओवेन दम्पति तो इस पर लट्टू हैं, मेरे ख़याल में। कैसे लोग हैं वे? ज़रा बताओ तो?'

लॉम्बार्ड ने सोचा : बड़ा अटपटा सवाल है यह—क्या कहना है मुझे—मैं उनसे मिला हूँ या नहीं? उसने जल्दी से कहा :

'अरे, देखो, तुम्हारी बाँह पर एक बर्र रेंग रही है। नहीं, नहीं, हिलो मत बिलकुल।' उसने विश्वसनीय ढंग से झपट्टा मारा। 'लो, उड़ गयी।'

'ओह, शुक्रिया। इन गर्मियों में बहुत-सी बर्रें उड़ रही हैं यहाँ-वहाँ।'

'हाँ। मेरा ख़याल है गर्मी की वजह से है। क्या तुम्हें पता है, हम किसका इन्तज़ार कर रहे हैं?'

'मुझे रत्ती भर अन्दाज़ा नहीं है।'

तभी स्टेशन की तरफ़ आ रही एक रेलगाड़ी की ऊँची, देर तक गूँजने वाली चीख़ सुनाई दी। लॉम्बार्ड ने कहा :

'यही वह रेलगाड़ी होगी।'

कुछ देर बाद एक लम्बा, फ़ौजी रंग-ढंग वाला बूढ़ा आदमी प्लैटफ़ार्म की तरफ़ से निकलने वाले द्वार पर नमूदार हुआ। उसके खिचड़ी बाल छोटे-छोटे कटे थे और उसकी सफ़ाई से छँटी मूँछ सफ़ेद थी।

उसके कुली ने ठोस चमड़े के सूटकेस के बोझ के नीचे हल्के-से लड़खड़ाते हुए वेरा और लॉम्बार्ड की तरफ़ इशारा किया।

वेरा बड़ी चुस्ती और कुशलता से आगे बढ़ी। उसने कहा :

'मैं श्रीमती ओवेन की सेक्रेटरी हूँ। यहाँ एक कार इन्तज़ार कर रही है।' उसने आगे कहा, 'ये मिस्टर लॉम्बार्ड हैं।'

फीकी नीली आँखों ने, जो उमर के बावजूद चतुराई-भरी थीं, लॉम्बार्ड को आँका। पल भर के लिए उनमें एक फ़ैसले की झलक कौंधी—उसे पढ़ने वाला कोई वहाँ होता तो पढ़ सकता था।

'ख़ूबसूरत नौजवान है। बस, कुछ थोड़ा-सा ऐब कहीं झलकता है उससे...'

तीनों इन्तज़ार कर रही टैक्सी में बैठ गये। छोटे-से ओकब्रिज कस्बे

की उनींदी सड़कों से होकर वे बढ़े और लगभग मील भर मुख्य प्लाईमाउथ रोड पर गये। उसके बाद वे देहाती इलाके की आड़ी-तिरछी, खड़ी चढ़ाई वाली, हरी और सँकरी गलियों की भूल-भुलैया में घुस गये।

जनरल मैकार्थर ने कहा :

'डेवन के इस हिस्से को मैं बिलकुल नहीं जानता। मेरी छोटी-सी जगह पूर्वी डेवन में है—डॉर्सेट की सीमा के बिलकुल नज़दीक।'

वेरा ने कहा :

'सचमुच यह जगह बहुत प्यारी है। पहाड़ियाँ और लाल मिट्टी और हर चीज़ इतनी हरी और देखने में इतनी घनी और भरी-भरी।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने शिकायती अन्दाज़ में कहा :

'थोड़ी बन्द-बन्द है... मुझे खुला इलाक़ा पसन्द है। जहाँ तुम देख सकते हो क्या आ रहा है...'

जनरल मैकार्थर ने उससे कहा :

'तुमने दुनिया का काफ़ी कुछ देख रखा है मेरे ख़याल में?'

लॉम्बार्ड ने उपेक्षा से कन्धे उचकाये।

'इधर-उधर की ठोकरें खायी हैं मैंने, सर।'

उसने मन-ही-मन ख़ुद से कहा : 'अब वह मुझसे पूछेगा कि क्या मेरी उमर इतनी थी कि मैंने युद्ध में हिस्सा लिया था। ये पुराने लोग हमेशा पूछते हैं।'

लेकिन जनरल मैकार्थर ने युद्ध का कोई ज़िक्र नहीं किया।

II

वे एक ऊँची पहाड़ी पार करके आड़े-तिरछे घुमावदार रास्ते पर उतरते हुए स्टिकलहेवन पहुँचे थे—छोटे-छोटे बँगलों का झुण्ड और तट पर खींच कर बाँधी गयी एक-दो मछली मारने वाली नावें।

डूबते सूरज की रोशनी में उन्हें दक्षिण में समुद्र से बाहर को उभरे सोल्जर आइलैण्ड की पहली झलक मिली।

चकित होकर वेरा बोली :

'किनारे से काफ़ी दूर है यह तो।'

उसने मन में उसकी अलग ही तस्वीर बना रखी थी—तट के नज़दीक, एक सुन्दर सफ़ेद मकान को मुकुट की तरह धारण किये हुए। लेकिन कोई मकान नहीं दिख रहा था, महज़ उस चट्टान की गहरी छायाकृति जो एक विशाल सिर की हलकी-हलकी झलक देती थी। उसमें कुछ रहस्यमय, कुछ शैतानी-सा था। वेरा ने हल्की-सी झुरझुरी ली।"

'सात सितारे' नाम की सराय के बाहर तीन लोग बैठे हुए थे। जस्टिस वॉरग्रेव की झुकी हुई बुज़ुर्गाना आकृति थी, मिस ब्रेण्ट का तना हुआ सीधा आकार और एक तीसरा—बड़ा-सा हट्टा-कट्टा आदमी जिसने आगे बढ़ कर अपना परिचय दिया।

'हमने सोचा आप लोगों का इन्तज़ार कर लिया जाये', उसने कहा। 'एक ही बार में सब चले जायेंगे। मैं अपना परिचय दे दूँ। नाम है डेविस। नटाल, दक्षिण अफ़्रीका मेरी टाल है।'

वह ठठा कर हँसा।

जस्टिस वॉरग्रेव ने ज़बरदस्त दुर्भावना से उसे देखा। ऐसा लगा कि उनकी इच्छा हो रही थी अदालत को ख़ाली करने का हुक्म दे दें। मिस एमिली ब्रेण्ट को साफ़ तौर पर यह यक़ीन नहीं था कि वे उपनिवेशों से आये लोगों को पसन्द करती थीं या नहीं।

'नाव में बैठने से पहले कोई एक छोटी-सी ड्रिंक लेना चाहेगा?' मिस्टर डेविस ने आव-भगत करने के अन्दाज़ में पूछा।

जब किसी ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया तो मिस्टर डेविस ने मुड़कर एक उँगली उठायी।

'तब देर नहीं करनी चाहिए। हमारे भले मेज़बान और उनकी पत्नी हमारा इन्तज़ार कर रहे होंगे', वह बोला।

हो सकता है उसने ग़ौर किया हो कि दल के अन्य सदस्यों पर एक अजीब-सा संकोच छा गया। मानो अतिथियों पर उनके मेज़बान और उसकी पत्नी के नाम का अजीब-सा सुन्न कर देने वाला असर हुआ।

डेविस की उठी हुई उँगली के जवाब में एक आदमी ने ख़ुद को पास ही की एक दीवार से अलग किया जिससे उसने टेक लगा रखी थी और

उनके पास आया। उसकी लुढ़कती हुई चाल उसके मल्लाह होने की चुग़ली खा रही थी। उसके चेहरे पर मौसम के उतार चढ़ाव की छाप थी, आँखें गहरे रंग की थीं और उनमें हल्का-सा ऐसा भाव था मानो वह नज़रें चुरा रहा हो। उसने अपने मुलायम डेवन वाले लहजे में बात की।

'क्या आप टापू के लिए चलने को तैयार हैं? नाव इन्तज़ार कर रही हैं। दो लोग कार से आ रहे हैं लेकिन मिस्टर ओवेन का आदेश था कि उनके लिए रुका न जाये, क्योंकि वे किसी भी समय आ सकते हैं।'

सब लोग उठ खड़े हुए। उनका गाइड उन्हें पत्थर के छोटे-से घाट पर ले गया। उसके साथ एक मोटर बोट बँधी हुई थी।

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'यह तो बहुत छोटी नाव है।'

नाव के मालिक ने मनाने के अन्दाज़ में कहा :

'बहुत उम्दा नाव है, मैडम। आप इसमें प्लाईमाउथ तक इतनी आसानी से जा सकती हैं जितनी आसानी से पलक झपकती है।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने तीखे स्वर में कहा :

'हम काफ़ी लोग हैं।'

'यह इससे दुगने लोगों को ले जायेगी, सर।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने अपनी सहज खिली हुई आवाज़ में कहा :

'सब ठीक है। मौसम बढ़िया है—लहरें शान्त हैं।'

थोड़े सन्देह के साथ मिस ब्रेण्ट ने इस बात की इजाज़त दी कि उनकी मदद करके उन्हें नाव में सवार कराया जाये। बाक़ी लोग भी उनके पीछे-पीछे नाव में चले आये। अभी तक दल के लोगों में कोई मेल-मिलाप नहीं हुआ था। ऐसा लगता था हर सदस्य दूसरे सदस्यों को देख कर चकराया हुआ था।

वे चलने को थे जब उनका गाइड हाथ में नाव की कटिया थामे रुक गया।

गाँव में जो रास्ता खड़ी ढलान पर उतरता हुआ आता था, उस पर एक कार आती दिखायी दे रही थी। यह कार ऐसी गज़ब की ताक़तवर थी,

ऐसी गजब की ख़ूबसूरत थी कि वह दिव्य जान पड़ती थी। उसकी स्टीयरिंग ह्वील पर एक युवक था जिसके बाल हवा में पीछे को उड़ रहे थे। ढलते सूरज की लौ में वह पुरुष नहीं बल्कि कोई देवता नज़र आता था, किसी उत्तरी महाकाव्य का देवता-सरीखा नायक।

उसने हॉर्न पर हाथ रखा और खाड़ी की चट्टानों में एक दहाड़ती हुई आवाज़ गूँज गयी।

यह एक अद्‌भुत क्षण था। इसमें ऐण्टनी मार्सटन मनुष्य से अधिक जान पड़ता था। बाद में इस जगह उपस्थित लोगों में एक से अधिक लोग इस क्षण को याद करने वाले थे।

III

फ्रेड नैराकॉट मोटरबोट के इंजन के पास बैठा मन-ही-मन विचार कर रहा था कि यह एक अजीब जमावड़ा था। उसने अपने मन में मिस्टर ओवेन के मेहमानों की जो तस्वीर बना रखी थी, उसमें ये लोग अँटते नहीं थे। उसने तो उम्मीद की थी कि वे कुल-मिलाकर और ऊँची क़िस्म के और शानदार होंगे। बढ़िया कपड़े पहने औरतें और नाविकों वाली वेश-भूषा में पुरुष और सब-के-सब देखने से ही अमीर और महत्वपूर्ण नज़र आते हुए।

ये लोग मिस्टर एल्मर रॉबसन की पार्टियों में आने वाले लोगों जैसे भी क़तई नहीं थे। करोड़पति अमरीकी के मेहमानों को याद करके फ्रेड नैराकॉट के होंटों पर एक बेहद हल्की-सी मुस्कान आ गयी। वह थी जिसे पार्टी कहते हैं—और जो पीना-पिलाना हुआ था उसमें, खुदा की क़सम !

ये मिस्टर ओवेन बहुत अलग क़िस्म के आदमी होंगे। अजीब बात थी, फ्रेड ने सोचा, कि उसने अभी तक मिस्टर ओवेन के दर्शन नहीं किये थे—न उनकी पत्नी के। अभी तक वे यहाँ नहीं आये थे। हर चीज़ का आदेश और भुगतान उस मिस्टर मॉरिस ने किया था। हिदायतें बिलकुल स्पष्ट और भुगतान फ़ौरन होता था, लेकिन इस पर भी यह सब अजीब तो था ही। अख़बार कहते थे कि मिस्टर ओवेन के बारे में कुछ रहस्य था। नैराकॉट उनसे सहमत था।

शायद टापू को आख़िरकार मिस गेब्रिएल टर्ल ने ही ख़रीदा था।

लेकिन वह धारणा फ़ौरन उसके दिमाग़ ने इन सवारियों का जायज़ा लेते ही ख़ारिज कर दी। ये लोग नहीं—इनमें से एक भी ऐसा नहीं लगता था जिसका किसी फ़िल्मी सितारे से कुछ लेना-देना हो।

उसने ठण्डे दिल से उन्हें परखा।

एक बुढ़िया—बदमिज़ाज क़िस्म की—वह उन्हें अच्छी तरह जानता था। पूरी तानाशाह थी, वह शर्त बद सकता था। बूढ़ा फ़ौजी बुज़ुर्ग—चाल-ढाल में असली फ़ौजी लग रहा था। सुन्दर जवान महिला—लेकिन मामूली, कोई तड़क-भड़क नहीं—कहीं से भी हॉलीवुड का कोई निशान नहीं। वह हट्टा-कट्टा ख़ुशमिज़ाज आदमी—*वह* असली सज्जन नहीं था। अवकाश-प्राप्त कारोबारी—यही है वह, फ़्रेड नैराकॉट ने सोचा। दूसरा बन्दा, वह पतला-छरहरा, तीखा-सा आदमी, तेज़ आँखों वाला, अजीब-सा था वह, सचमुच। हो सकता था कि *शायद* उसका कोई ताल्लुक़ फ़िल्मों से हो।

नहीं, नाव में सिर्फ़ एक सन्तोषजनक सवारी थी। वह आख़िरी मेहमान—जो अपनी कार में आया था। और कार भी कैसी ! जैसी कभी स्टिकलहेवन में देखी नहीं गयी थी। सैकड़ों, हज़ारों में क़ीमत होगी उस कार की। वह सही क़िस्म का बन्दा था। मुँह में चाँदी का चम्मच लेकर पैदा हुआ था, ज़रूर। अगर पूरा जत्था उस जैसे लोगों का होता... तो उसकी समझ में आता...

सोचा जाय तो बड़ा अजीब मामला था—पूरा सिलसिला ही अजीब था—बहुत अजीब...

IV

नाव पानी को चीरती हुई चट्टान का चक्कर काट कर दूसरी तरफ़ जा पहुँची। अब मकान नज़र आने लगा। टापू का दक्षिणी हिस्सा काफ़ी अलग था। वह धीरे-धीरे सीढ़ियों की तरह समुद्र में उतरता था। मकान वहीं था—दक्षिण की ओर मुँह किये—नीचा और चौकोर और देखने में आधुनिक—गोल खिड़कियों वाला जिनसे भरपूर रोशनी आती थी।

उत्तेजित करने वाला मकान—ऐसा मकान जो उम्मीदों पर खरा

उतरता था।

फ़्रेड नैराकॉट ने इंजन बन्द कर दिया और वे बहुत आहिस्ता से चट्टानों के बीच एक छोटे-से कुदरती घाट में सरकते चले गये।

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने होशियारी से कहा :

'ख़राब मौसम में यहाँ उतरना बहुत मुश्किल होता होगा।'

फ़्रैड नैराकॉट ने ख़ुशमिज़ाजी से कहा :

'जब दक्खिनी हवा हो तो सोल्जर आइलैण्ड पर नहीं उतर सकते। कभी-कभी तो यह हफ्ता भर या उससे भी ज़्यादा कटा रहता है।'

वेरा क्लेथॉर्न सोच रही थी :

'खाने-पीने की व्यवस्था भी बहुत कठिन होगी। टापू के साथ यही सबसे बड़ी ख़राबी है। सारी-की-सारी घरेलू समस्याएँ इतना परेशान करती हैं।'

नाव चट्टानों से रगड़ खा कर रुक गयी। फ़्रेड नैराकॉट कूद कर बाहर आया और उसने लॉम्बार्ड के साथ मिलकर दूसरों को उतरने में मदद दी। नैराकॉट ने नाव को चट्टान में ठोंके गये एक छल्ले से कस कर बाँधा। फिर वह चट्टानी कगार में काटी गयी सीढ़ियों पर सबको रास्ता दिखाता आगे-आगे बढ़ा।

जनरल मैकार्थर ने कहा :

'वाह ! उम्दा जगह है।'

लेकिन वे बेचैनी-सी महसूस कर रहे थे। बड़ी अजीब-सी जगह थी कमबख़्त।

सीढ़ियाँ चढ़ कर ऊपर टेरेस पर आते ही सबकी तबियत खिल उठी। मकान के खुले दरवाज़े में एक सही क़िस्म का बटलर उनका इन्तज़ार कर रहा था और उसकी गम्भीरता में कुछ था जिससे उन्हें तसल्ली मिली। और फिर मकान तो ख़ुद अपने में बेहद ख़ूबसूरत था, टेरेस से समुद्र का नजारा शानदार था...

बटलर हल्का-सा झुकते हुए आगे बढ़ा। वह एक लम्बा, दुबला-पतला आदमी था, खिचड़ी बालों वाला और बहुत रख-रखाव वाला। उसने कहा

:

'कृपा करके इधर आ जाइए।'

लम्बे-चौड़े हॉल में पीने-पिलाने का सामान तैयार था। बोतलें क़तारों में सजी थीं। ऐण्टनी मार्सटन की तबियत कुछ खिल उठी। वह सोचता आ रहा था कि यह कैसा ताम-झाम था। इन लोगों में से कोई भी उसके संगी-साथियों जैसा नहीं था। बैजर ने क्या सोच कर उसे इस चक्कर में डाला था? बहरहाल, पीने का सामान ठीक-ठाक था। बर्फ़ भी भरपूर थी।

यह बटलर बन्दा क्या कह रहा था?

मिस्टर ओवेन—बदक़िस्मती से कहीं फँस गये हैं—कल से पहले नहीं आ पायेंगे। हिदायतें—जो भी वे चाहें—हर चीज़ है—अगर वे अपने कमरों में जाना चाहें—रात का खाना आठ बजे होगा...

V

वेरा श्रीमती रॉजर्स के पीछे-पीछे ऊपर गयी थी। उस औरत ने एक गलियारे के आख़िर में एक दरवाज़ा खोल दिया था और वे एक ख़ूबसूरत-से शयन-कक्ष में दाख़िल हुए थे जिसकी एक बड़ी खिड़की समुद्र की तरफ़ खुलती थी और दूसरी पूरब की ओर। वेरा के मुँह से बेसाख़्ता ख़ुशी की एक आवाज़ निकली।

श्रीमती रॉजर्स कह रही थी :

'उम्मीद है आपको जो चाहिए वह आपके पास है, मिस?'

वेरा ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी। उसका सामान यहाँ ऊपर लाकर खोल दिया गया था। कमरे की एक तरफ़ खुले दरवाज़े से हल्की नीली टाइलों वाले ग़ुसलख़ाने की झलक दिख रही थी।

उसने जल्दी से कहा :

'हाँ, मेरा ख़याल है सब कुछ है।'

'अगर आपको किसी चीज़ की ज़रूरत हो, मिस, तो घण्टी बजा दीजिएगा।'

श्रीमती रॉजर्स की आवाज़ सपाट और एकरस थी। वेरा ने उत्सुकता से उसे परखा। कैसी बिना ख़ून की, प्रेत-सरीखी औरत थी ! काफ़ी

इज़्ज़तदार लगती थी, बाल चेहरे से पीछे को खींचे और काली पोशाक पहने। हल्के रंग की अजीब-सी आँखें जो हर वक़्त एक जगह से दूसरी जगह नाचती रहती थीं।

वेरा ने सोचा :

'यह तो ख़ुद अपनी छाया से भयभीत जान पड़ती है।'

हाँ, यही बात थी—भयभीत !

वह ऐसी औरत लगती थी जो जानलेवा डर के साये में जीती हो...

हल्की-सी झुरझुरी वेरा की रीढ़ के साथ-साथ दौड़ गयी। भला किस चीज़ से इतना आतंकित थी यह औरत?

उसने मिलनसार लहजे में कहा :

'मैं श्रीमती ओवेन की नयी सेक्रेटरी हूँ। मुझे उम्मीद है, तुम्हें यह मालूम है।'

श्रीमती रॉजर्स ने कहा :

'नहीं मिस, मैं कुछ नहीं जानती। बस, महिला और सज्जनों की एक सूची और कौन-से कमरों में उन्हें ठहराना है।'

वेरा ने कहा :

'श्रीमती ओवेन ने मेरा ज़िक्र नहीं किया?'

श्रीमती रॉजर्स की बरौनियाँ फड़फड़ायीं।

'मैंने श्रीमती ओवेन को नहीं देखा है—अभी तक नहीं। हम तो दो दिन पहले ही यहाँ आये हैं।'

बड़े अजीब लोग हैं, ये ओवेन दम्पति, वेरा ने सोचा। फिर आवाज़ ऊँची करते हुए उसने पूछा :

'और कितने काम करने वाले हैं यहाँ?'

'बस मैं और मेरे पति रॉजर्स, मिस।'

वेरा की त्योरियाँ चढ़ गयीं। घर में आठ लोग—मेज़बान दम्पति को लेकर दस—और इन सब के लिए सिर्फ़ एक शादीशुदा जोड़ा।

श्रीमती रॉजर्स ने कहा :

'मैं अच्छा खाना बना लेती हूँ और रॉजर्स ऊपर का सारा काम सँभाल

लेता है। बेशक, मुझे नहीं मालूम था कि इतने सारे लोग यहाँ आ रहे होंगे।'

'लेकिन तुम चला तो लोगी?' वेरा ने कहा।

'हाँ, हाँ, मिस, मैं चला लूँगी। अगर अक्सर बड़ी पार्टियाँ होनी हैं तो शायद श्रीमती ओवेन कुछ और मददगार बुलवा लेंगी।'

वेरा ने कहा, 'मेरा भी यही ख़याल था।'

श्रीमती रॉजर्स जाने के लिए मुड़ी। उसके पैर बिना आवाज़ किये फ़र्श पर पड़ रहे थे। वह किसी छाया की तरह कमरे से उड़ती हुई निकल गयी।

वेरा खिड़की तक चली गयी और खिड़की की चौखट में बनी पटिया पर जा बैठी। वह हल्की-सी बेचैन थी। हर चीज़—किसी-न-किसी रूप में—कुछ अजीब-सी थी। ओवेन दम्पति का न होना, पीली प्रेत-सरीखी श्रीमती रॉजर्स। और मेहमान ! हाँ, मेहमान भी अजीबो-ग़रीब थे। अजीब बेमेल-सा झुण्ड था।

वेरा सोच रही थी :

'काश, मैंने ओवेन दम्पति को देखा होता, उनसे मिली होती...काश, मुझे मालूम होता वे कैसे हैं।'

वह उठ खड़ी हुई और बेचैनी से कमरे में चहलक़दमी करने लगी।

बेजोड़ शयन-कक्ष था, एकदम आधुनिक शैली में सजा हुआ। लकड़ी के चौकोर टुकड़ों से बने चम-चम करते फ़र्श पर फीके सफ़ेद रंग के कालीन और दरियाँ—हल्के रंग वाली दीवारें—रोशनियों से घिरा लम्बा-सा आईना। दीवार में बनी अँगीठी के ऊपर की पटिया पर सजावट के नाम पर भालू के आकार का सफ़ेद संगमरमर का बहुत बड़ा पत्थर—आधुनिक शिल्प का नमूना—जिसमें जगह काट कर एक घड़ी बैठायी गयी थी। उसके ऊपर चमकते हुए क्रोमियम के चौखटे में काग़ज़ का बड़ा-सा चौकोर टुकड़ा था जिस पर एक कविता दर्ज थी।

वह अँगीठी के सामने खड़ी होकर उसे पढ़ने लगी। वह एक पुरानी बच्चों की कविता थी जो उसे अपने बचपन के दिनों से याद थी।

दस नन्हे फ़ौजी लड़के गये खाने को
गला घुट गया एक युवक का बाक़ी बच गये नौ

नौ नन्हे फ़ौजी लड़के जागे देर-अबेर
एक रह गया सोते-सोते बाक़ी बच गये आठ
आठ नन्हे फ़ौजी लड़के गये मज़े से डेवन घूमने
कहा एक ने वहीं रहेगा बाक़ी बच गये सात
सात नन्हे फ़ौजी लड़के काट रहे थे लकड़ी
एक ने ख़ुद को काट दिया फिर बाक़ी बच गये छै
छै नन्हे फ़ौजी लड़के खेल रहे थे छत्ते से
भौंरे ने फिर डँसा एक को बाक़ी बच गये पाँच
पाँच नन्हे फ़ौजी लड़के पढ़ने गये क़ानून
एक पहुँच गया अभिलेखों में बाक़ी बच गये चार
चार नन्हे फ़ौजी लड़के गये घूमने सागर में
एक निगल गया नक़ली चारा और बचे फिर तीन
तीन नन्हे फ़ौजी लड़के टहल रहे चिड़ियाघर में
एक को पकड़ा भालू ने फिर बाक़ी बच गये दो
दो नन्हे फ़ौजी लड़के धूप रहे थे सेंक
एक भुन गया पूरा-पूरा बाक़ी बच गया एक
एक नन्हा फ़ौजी लड़का रह गया निपट अकेला
उसने फन्दा लगा लिया फिर बाक़ी बचा न कोई

वेरा मुस्करायी। बेशक। यह सोल्जर आइलैण्ड था। फ़ौजी टापू।

वह फिर खिड़की में जा बैठी और बाहर समन्दर को देखने लगी।

कितना विशाल था यह सागर ! यहाँ से कहीं कोई ज़मीन नज़र नहीं आती थी—बस, शाम के सूरज की रोशनी में झिलमिल करता नीले पानी का असीम विस्तार।

यह सागर... आज, इतना शान्त—कभी-कभी इतना निर्मम... सागर जो आपको अपनी गहराइयों में खींच ले जाता था... डुबो देता था... डूबा पाया गया... समुद्र में डूबा... डूबा... डूबा...

नहीं, वह याद नहीं करेगी... वह उसके बारे में नहीं सोचेगी।

वह सब बीत चुका था...

VI

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग उस समय सोल्जर आइलैण्ड पहुँचे जब सूरज समुद्र में डूब रहा था। पार उतराई के दौरान उन्होंने नाववाले से—वह यहीं का रहने वाला था—बातचीत की थी। वे उन लोगों के बारे में कुछ जानने के लिए व्यग्र थे जो सोल्जर आइलैण्ड के मालिक थे, लेकिन बड़ी अजीब बात थी कि उस आदमी नैराकॉट को कोई जानकारी नहीं थी, या शायद वह बात नहीं करना चाहता था।

लिहाज़ा डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने इसकी बजाय मौसम और मछली पकड़ने की बात की थी।

वे कार के लम्बे सफ़र से थके हुए थे। उनकी आँखें दर्द कर रही थीं। पश्चिम की ओर कार चलाते समय सूरज सीधा आँखों में पड़ता था।

हाँ, वे बहुत थक गये थे। समुद्र और पूरी शान्ति—इसी की उन्हें ज़रूरत थी। दरअसल, वे एक लम्बी छुट्टी लेना पसन्द करते। लेकिन ऐसा वे कर नहीं सकते थे। आर्थिक रूप से निश्चय ही कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन वे गोल हो जाना गवारा नहीं कर सकते थे। आजकल आपको बहुत जल्दी भुला दिया जाता था। नहीं, अब जब कि वे इस मुक़ाम पर पहुँच गये थे, उन्हें चक्की तो पीसते ही रहना था।

वे सोच रहे थे :

'तो भी, आज शाम मैं अपने आप से कल्पना करूँगा कि मैं वापस नहीं जा रहा—भर पाया हूँ मैं लन्दन और हार्ले स्ट्रीट से और बाक़ी सब कुछ से।'

टापुओं के साथ कुछ जादू की-सी कैफ़ियत होती थी—द्वीप—टापू—महज़ यह शब्द कल्पना लोक का संकेत देता था। दुनिया से आपका रिश्ता टूट जाता था—टापू अपने आप में एक दुनिया था। ऐसी दुनिया, जिससे शायद आप कभी वापस न आयें।

'मैं अपनी आम रोज़मर्रा की ज़िन्दगी अपने पीछे छोड़ कर आ रहा हूँ', उन्होंने सोचा।

और, अपने आप से मुस्कराते हुए वे योजनाएँ बनाने लगे—भविष्य

की विचित्र, विलक्षण योजनाएँ। चट्टान में कटी सीढ़ी पर चढ़ते हुए भी वे मुस्करा रहे थे।

टेरेस पर एक कुर्सी में एक बूढ़े सज्जन बैठे थे और उनका चेहरा डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग को मोटे तौर पर पहचाना-सा लगा। कहाँ देखा था उन्होंने यह मेंढक जैसा चेहरा, यह कछुए जैसी गरदन, यह बैठने का तरीक़ा जैसे कूबड़ निकल आया हो—हाँ, और वे फीकी-सी चालाक छोटी-छोटी आँखें? यक़ीनन—जस्टिस वॉरग्रेव। वे उनके सामने एक बार गवाही दे चुके थे। हमेशा आधी नींद में लगते थे, लेकिन जब क़ानून की कोई बारीक़ी होती तो चतुराई की हद न होती। जूरी पर अच्छी पकड़ रखते थे—कहा जाता था कि वे किसी भी समय उनका मन बना सकते थे। एक-दो बड़े ग़ैर-मामूली क़िस्म के फ़ैसले उन्होंने जूरी से कराये थे। फाँसी वाले जज—यही नाम था जो कुछ लोगों ने उन्हें दिया था।

कैसी अजीब जगह इनसे मुलाक़ात हुई... यहाँ—दुनिया से दूर।

VII

जस्टिस वॉरग्रेव सोच रहे थे :

'आर्मस्ट्रॉन्ग? गवाहों के कटघरे में देखा था, ऐसा याद है। बहुत सही और सतर्क। सारे डॉक्टर एकदम बेवक़ूफ़ होते हैं। हार्ले स्ट्रीट वाले तो सबसे बेकार हैं।' और उनके मन ने द्वेष की भावना से उस बातचीत को याद किया जो हाल के दिनों में उसी हार्ले स्ट्रीट की एक चिकनी-चुपड़ी बातें बनाने वाली शख़्सियत से हुई थी।

मुनमुनाते हुए उन्होंने कहा :

'पीने-पिलाने का सामान हॉल में है।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'पहले मुझे अपने मेज़बान दम्पति के पास जा कर सलाम-दुआ करना है।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने फिर अपनी आँखें बन्द कर लीं। वे बिला शक किसी साँप जैसे दिखने लगे। उन्होंने कहा :

'तुम ऐसा नहीं कर सकते।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग चौंके।

'क्यों नहीं?'

जज ने कहा :

'मेज़बान दम्पति में से कोई यहाँ नहीं है। बड़ा अजीब मामला है। यह जगह समझ में नहीं आ रही।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग एक मिनट तक उन्हें घूरते रहे। जब उन्होंने सोचा कि बूढ़े जज वाक़ई सो गये थे, तभी अचानक वॉरग्रेव ने कहा :

'कॉन्स्टेंस कल्मिंगटन को जानते हो?'

'अ-नहीं, मेरा ख़याल है, नहीं जानता।'

'कोई बात नहीं', जज ने कहा। 'बड़ी गोल-मोल-सी औरत है—और लगभग अपठनीय लिखावट। मैं तो यही सोच रहा था कि कहीं ग़लत जगह तो नहीं आ गया।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने सिर हिलाया और ऊपर मकान के अन्दर चले गये।

जस्टिस वॉरग्रेव कॉन्स्टेंस कल्मिंगटन के बारे में सोच-विचार करते रहे। भरोसे के क़तई क़ाबिल नहीं, सभी औरतों की तरह।

उनका दिमाग़ घर में मौजूद दो औरतों की तरफ़ चला गया—कसे होंटों वाली वह बुढ़िया और वह लड़की। लड़की उन्हें पसन्द नहीं थी; ठण्डी, भावना रहित पतुरिया। नहीं, तीन औरतें थीं, अगर रॉजर्स की औरत को भी गिन लो तो। अजीब-सी औरत थी, बुरी तरह डरी हुई लगती थी। यों इज़्ज़त वाले पति-पत्नी थे और अपना काम जानते थे।

उसी वक़्त रॉजर्स बाहर टेरेस पर आया तो जज ने उससे पूछा :

'क्या तुम्हें पता है कि लेडी कॉन्स्टेंस कल्मिंगटन के भी आने की उम्मीद है कोई?'

रॉजर्स ने उन्हें एकटक देखा।

'नहीं सर, मेरी जानकारी में तो नहीं।'

जज की त्योरियाँ चढ़ गयीं। लेकिन उन्होंने सिर्फ़ हुंकारा भरा।

उन्होंने सोचा :

'सोल्जर आइलैण्ड? दाल में काला है यक़ीनन !'

VIII

ऐण्टनी मार्सटन अपने ग़ुसलख़ाने में था। वह तेज़ गरम पानी का मज़ा ले रहा था। कार से लम्बा फ़ासला तय करने की वजह से उसके अंग अकड़ गये थे। उसके दिमाग़ में बहुत कम विचार आ-जा रहे थे। ऐण्टनी जोश और सनसनी वाला बन्दा था—और करने-कराने वाला भी।

उसने मन-ही-मन ख़ुद से कहा :

'मेरा ख़याल है, इसे झेलना ही पड़ेगा', और इसके बाद उसने अपने दिमाग़ से सब कुछ ख़ारिज कर दिया।

गरम, भाप छोड़ता पानी—थके हुए अंग—जल्दी ही शेव—कॉकटेल —खाना।

और उसके बाद—?

IX

ब्लोर अपनी टाई बाँध रहा था। वह इस तरह के काम में बहुत माहिर नहीं था।

क्या वह ठीक-ठाक नज़र आ रहा था? उसका तो यही ख़याल था।

किसी ने भी उससे सही तौर पर मेल-मिलाप वाला बरताव नहीं किया था।... अजीब था जिस तरह वे एक-दूसरे को देखते थे—मानो उन्हें मालूम था...

ख़ैर, करना तो उसे था।

इस काम में घपला करने का उसका कोई इरादा नहीं था।

उसने आतिशदान के ऊपर चौखटे में मढ़ी बच्चों की तुकबन्दी पर निगाह डाली।

अच्छा ख़याल था, इसे यहाँ टाँगना।

उसने सोचा :

लड़कपन के दिनों का यह टापू याद है। कभी सोचा नहीं था कि मैं कभी इस तरह का काम यहाँ एक मकान में करूँगा। अच्छा ही है कि हम भविष्य को पहले ही देख नहीं पाते।

X

जनरल मैकार्थर की त्योरियाँ चढ़ी हुई थीं।

भाड़ में जाये यह सब, पूरा मामला बड़ा अजीब था ! क़तई वैसा नहीं जैसा उन्हें उम्मीद करायी गयी थी...

पलक झपकते ही वे बहाना बना कर यहाँ से चल देते... सारे काम-धाम को फेंक-फाँक कर...

लेकिन मोटरबोट वापस स्टिकलहेवन चली गयी थी।

उन्हें रुकना पड़ेगा।

वह बन्दा लॉम्बार्ड, अजीब-सा आदमी था वह।

ईमानदार नहीं था। वे क़सम खाने को तैयार थे कि वह सीधा-सादा नहीं था।

XI

खाने की घण्टी बजी तो फ़िलिप लॉम्बार्ड अपने कमरे से बाहर आकर सीढ़ियों के ऊपर तक आ गया। वह किसी तेंदुए की तरह चलता था—रवानी से, बेआवाज़, कुल-मिला कर उसके इर्द-गिर्द तेंदुए जैसा कुछ था। शिकारी जानवर—देखने में आकर्षक।

वह ख़ुद अपने से मुस्करा रहा था।

एक हफ़्ता, ऐं?

वह इस हफ़्ते का आनन्द लेने वाला था।

XII

अपने सोने के कमरे में एमिली ब्रेण्ट, काला रेशमी लिबास पहने, खाने के लिए तैयार, बाइबल पढ़ रही थीं।

शब्दों को बेआवाज़ पढ़ते हुए उनके होंट हिल रहे थे :

'विधर्मी उस गड्ढे में जा पड़े हैं जिसे उन्होंने बनाया था : जो जाल उन्होंने बिछाया था उसमें उनका अपना पैर जा फँसा है। परमात्मा उस फ़ैसले से जाना जाता है जो वह लागू करता है : दुष्ट ख़ुद अपने हाथ के किये काम में फँसता है। दुष्ट को नरक में भेज दिया जायेगा।'

उनके होंट कस कर बन्द हो गये। उन्होंने बाइबल बन्द कर दी।

उठते हुए उन्होंने केयर्नगॉर्म नगीने का ब्रूच अपने गले में बाँध लिया और खाने के लिए नीचे चली गयीं।

अध्याय 3

I

खाना लगभग खाया जा चुका था।

खाने की चीज़ें उम्दा थीं, मदिरा बेहतरीन। रॉजर्स बहुत कुशलता से परोसता था।

हरेक बेहतर महसूस कर रहा था। वे पहले से ज़्यादा आज़ादी और अन्तरंगता से एक-दूसरे के साथ बात करने लगे थे।

जस्टिस वॉरग्रेव, उम्दा पोर्ट वाइन के असर में नरम हो कर चुटीले अन्दाज़ में मनोरंजन कर रहे थे, डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग और टोनी मार्सटन उनकी बातें सुन रहे थे। मिस ब्रेण्ट जनरल मैकार्थर से बतिया रही थीं, उन्होंने कुछ आपसी परिचित खोज लिये थे। वेरा क्लेथॉर्न डेविस से दक्षिण अफ़्रीका के बारे में सूझ-बूझ वाले सवाल पूछ रही थी। डेविस इस विषय पर धारा प्रवाह बात कर रहा था। लॉम्बार्ड इस बातचीत पर कान लगाये हुए था। एक या दो बार उसने तेज़ी से नज़रें उठायीं और उसकी आँखें सिकुड़ गयीं। बीच-बीच में उसकी आँखें मेज़ का चक्कर लगाते हुए दूसरों को परखतीं।

अचानक ऐण्टनी मार्सटन ने कहा :

'अजीब हैं न ये चीज़ें, क्यों?'

गोल मेज़ के बीचों-बीच, काँच के एक गोल आधार पर चीनी मिट्टी की कुछ छोटी-छोटी आकृतियाँ थीं।

'फ़ौजी', टोनी ने कहा। 'सोल्जर आइलैण्ड, फ़ौजी टापू। मेरी समझ में इसके पीछे यही ख़याल है।'

वेरा आगे झुकी।

'हैरत है। कितने हैं ये? दस?'

'हाँ—दस हैं यहाँ।'

वेरा चिल्लायी :

'कितना मज़ेदार है। यही बच्चों के उस गीत के दस नन्हे फ़ौजी लड़के हैं, मेरे ख़याल से। मेरे सोने के कमरे में वह गीत एक चौखटे में अँगीठी के

ऊपर टँगा हुआ है।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मेरे कमरे में भी।'

'और मेरे में भी।'

'और मेरे में भी।'

सबने सुर में सुर मिला दिया। वेरा ने कहा :

'दिलचस्प ख़याल है न?'

जस्टिस वॉरग्रेव भुनभुनाये :

'बेहद बचकाना', और उन्होंने थोड़ी और पोर्ट वाइन अपने गिलास में ढाल ली।

एमिली ब्रेण्ट ने वेरा क्लेथॉर्न की तरफ़ देखा। वेरा क्लेथॉर्न ने मिस ब्रेण्ट की तरफ़ देखा। दोनों औरतें उठीं।

बैठक में आदमक़द फ़्रान्सीसी खिड़कियाँ टेरेस पर जाने के लिए खुली थीं और चट्टानों पर टकराते सागर की हलकी हरहराती आवाज़ उन तक आ रही थी।

एमिली ब्रेण्ट ने कहा, 'कितनी अच्छी आवाज़ है।'

वेरा ने तीखेपन से कहा, 'मुझे नफ़रत है इससे।'

मिस ब्रेण्ट ने उसकी तरफ़ हैरत से देखा। वेरा का चेहरा लाल हो गया। उसने ख़ुद पर और क़ाबू पा कर कहा :

'मुझे नहीं लगता कि यह जगह तूफ़ान में बहुत अच्छी लगेगी।'

एमिली ब्रेण्ट ने सहमति व्यक्त की।

'मुझे कोई शक नहीं है कि घर सर्दियों में बन्द कर दिया जाता है', उन्होंने कहा। 'नौकर ही नहीं मिलेंगे यहाँ रहने के लिए।'

वेरा बुदबुदायी :

'नौकरों की दिक़्क़त तो हर हाल में होती होगी।'

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'श्रीमती ऑलिवर क़िस्मतवाली हैं कि उन्हें ये दो तो मिल गये। वह औरत खाना अच्छा बनाती है।'

वेरा ने सोचा :

'कैसी मज़ेदार बात है कि बूढ़े लोग नाम हमेशा ग़लत लेते हैं।'

उसने कहा :

'हाँ, मेरे ख़याल से श्रीमती ओवेन सचमुच बहुत ख़ुशक़िस्मत हैं।'

एमिली ब्रेण्ट ने कढ़ाई का एक छोटा-सा टुकड़ा अपने बैग से निकाल लिया था। अब, सुई में धागा डालते समय वे रुकीं।

तीखी आवाज़ में उन्होंने कहा :

'ओवेन? क्या तुमने ओवेन कहा?'

'हाँ।'

एमिली ब्रेण्ट ने फिर तीखे अन्दाज़ में कहा :

'मैं ज़िन्दगी में कभी ओवेन नाम के किसी व्यक्ति से नहीं मिली।'

वेरा उन्हें देखती रही।

'लेकिन निश्चय ही...'

उसने अपना वाक्य ख़त्म नहीं किया। दरवाज़ा खुला और मर्द उनसे आ मिले। रॉजर्स उनके पीछे-पीछे कॉफ़ी की ट्रे लिये हुए आया।

जस्टिस वॉरग्रेव एमिली ब्रेण्ट के पास आ कर बैठ गये। आर्मस्ट्रॉन्ग वेरा की तरफ़ चले आये। टोनी मार्सटन खुली खिड़की तक टहलता हुआ गया। ब्लोर भोले आश्चर्य से पीतल की एक प्रतिमा को परख रहा था—इस विस्मय में शायद कि उसकी अजीबो-ग़रीब रेखाएँ सचमुच स्त्री की आकृति थीं। जनरल मैकार्थर अँगीठी की ओर पीठ करके खड़े थे। वे अपनी छोटी-सी सफ़ेद मूँछ को हल्के-हल्के खींच रहे थे। बहुत उम्दा खाना था। उनकी तबियत खिल रही थी। लॉम्बार्ड "*पंच पत्रिका*" के पन्ने पलट रहा था जो दीवार के साथ रखी मेज़ पर दूसरे काग़ज़ों के साथ रखी थी।

रॉजर्स कॉफ़ी ट्रे लिये सबको पेश कर रहा था। कॉफ़ी बढ़िया थी—सचमुच काली और बहुत गर्म।

सभी लोगों ने अच्छी तरह भोजन किया था। वे ख़ुद से और जीवन से सन्तुष्ट थे। घड़ी की सुइयाँ नौ बजकर बीस मिनट बजा रही थीं। एक चुप्पी छायी हुई थी—एक आरामदेह तृप्त चुप्पी।

इस चुप्पी में एक आवाज़ उभरी। बिना चेतावनी दिये, अमानवीय, चीरती हुई...

'देवियो और सज्जनो! कृपया शान्त हो जाइए!'

सभी चौंक पड़े। वे इधर-उधर देखने लगे—एक दूसरे की तरफ़—दीवारों की ओर। कौन बोल रहा था?

आवाज़ जारी रही—ऊँची साफ़ आवाज़ :

'आप सब पर आगे बताये जा रहे अभियोग लगाये जा रहे हैं :

'एडवर्ड जॉन आर्मस्ट्रॉन्ग—तुम्हारे कारण 14 मार्च, 1925 को लुइजा मेरी क्लीस की मृत्यु हुई।'

'एमिली कैरोलीन ब्रेण्ट—5 नवम्बर 1931 को तुम बिऐट्रिस टेलर की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार हो।'

'विलियम हेनरी ब्लोर—तुम 10 अक्टूबर 1928 को जेम्स स्टीफ़न लैण्डर की मौत की वजह थे।'

'वेरा एलिज़ाबेथ क्लेथॉर्न—तुमने 11 अगस्त 1935 को सिरिल ओगिलवी हैमिल्टन को मार डाला।'

'फ़िलिप लॉम्बार्ड—फ़रवरी 1932 की एक तारीख़ को तुम पूर्वी अफ़्रीका के एक क़बीले के 21 लोगों की मौत के दोषी हो।'

'जॉन गॉर्डन मैकार्थर—4 जनवरी 1917 को तुमने जान-बूझ कर अपनी पत्नी के प्रेमी आर्थर रिचमण्ड को मरने के लिए भेजा।'

'ऐण्टनी जेम्स मार्सटन—पिछले साल की 14 नवम्बर को तुम जॉन और लूसी कोम्स की हत्या के दोषी हो।'

'टॉमस रॉजर्स और एथेल रॉजर्स—6 मई 1929 को जेनिफ़र ब्रेडी की मौत तुम्हारी वजह से हुई।'

'लॉरेंस जॉन वॉरग्रेव—10 जून 1930 को तुम एडवर्ड सेटन की हत्या के दोषी हो।'

'कटघरे में खड़े कैदियों क्या तुम्हें अपने बचाव में कुछ कहना है।'

II

आवाज़ रुक गयी थी।

एक पल तक पथराई ख़ामोशी छायी रही, फिर एक धमाका हुआ। रॉजर्स ने कॉफ़ी की ट्रे गिरा दी थी।

उसी समय कमरे के बाहर कहीं से एक चीख़ और धड़ाम की आवाज़ आयी।

लॉम्बार्ड सबसे पहले हिला। वह उछल कर दरवाज़े तक गया और उसने उसे खोल दिया। बाहर श्रीमती रॉजर्स ढेर हुई पड़ी थी।

लॉम्बार्ड ने आवाज़ दी :

'मार्सटन।'

ऐण्टनी उसकी मदद करने कूद कर गया। दोनों ने मिल कर उस औरत को उठाया और उसे बैठक में ले आये।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग तेज़ी से उन तक आये। उन्होंने श्रीमती रॉजर्स को सोफ़े पर लिटाने में उन दोनों की मदद की और झुक कर उसका मुआयना किया।

'कुछ नहीं है। वह बेहोश हो गयी है। मिनट-दो मिनट में होश आ जायेगा।'

लॉम्बार्ड ने रॉजर्स से कहा :

'थोड़ी-सी ब्रैण्डी लाओ।'

रॉजर्स ने, जिसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और हाथ काँप रहे थे, बुदबुदा कर कहा :

'जी सर', और तेज़ी से कमरे के बाहर सरक गया।

वेरा चिल्ला उठी :

'*वह कौन बोल रहा था?* कहाँ था वह? सुनने में ऐसा लगा—ऐसा लगा—'

जनरल मैकार्थर ने तेज़ी से लटपटाते हुए कहा :

'यहाँ हो क्या रहा है? यह किस क़िस्म की मस्ख़री थी?'

उनके हाथ काँप रहे थे। कन्धे ढलक आये थे। वे अचानक दस साल बूढ़े नज़र आने लगे थे।

ब्लोर रूमाल से अपना चेहरा पोंछ रहा था।

सिर्फ़ जस्टिस वॉरग्रेव और मिस ब्रेण्ट पर कोई असर हुआ नहीं लगता था। एमिली ब्रेण्ट सिर ऊँचा किये, सीधी तनी बैठी थीं। उनके दोनों गालों पर गहरी सुर्ख़ी के दो धब्बे थे। जज अपनी हमेशा की मुद्रा में बैठे थे, सिर गर्दन में गाड़े। एक हाथ से वे हल्के-हल्के अपने कान को खुजा रहे थे। सिर्फ़ उनकी आँखें गतिशील थीं, कमरे में चारों तरफ़ नाचती हुईं, चकराई, चौकन्नी, सूझ-बूझ के साथ मुस्तैद।

एक बार फिर लॉम्बार्ड ने क़दम उठाया। आर्मस्ट्रॉन्ग बेहोश औरत के साथ व्यस्त थे, इसलिए लॉम्बार्ड एक बार फिर पहलक़दमी के लिए आज़ाद था।

उसने कहा :

'वह आवाज़? सुनने में ऐसी लगी जैसे वह कमरे में थी।'

वेरा चिल्लायी :

'*कौन था वह?* किसकी आवाज़ थी? हम में से तो कोई नहीं था।'

जज की तरह लॉम्बार्ड की आँखें धीरे-धीरे कमरे में घूमीं। वे पल भर के लिए खुली हुई खिड़की पर टिकीं, फिर उसने सिर को निर्णायक ढंग से हिलाया। अचानक उसकी आँखें चमक उठीं। वह तेज़ी से उस तरफ़ बढ़ा जहाँ आतिशदान के नज़दीक एक दरवाज़ा बग़ल के कमरे में खुलता था।

तेज़ी से हरकत में आते हुए उसने हत्था पकड़ा और दरवाज़े को खोल दिया। वह अन्दर दाख़िल हुआ और फ़ौरन ही सन्तोष से चीखा।

'आह ! यह रहा !' उसने कहा।

दूसरे उसके पीछे-पीछे जा पहुँचे। सिर्फ़ मिस ब्रेण्ट अकेली रह गयीं—अपनी कुर्सी पर सीधी तनी बैठी हुईं।

दूसरे कमरे के अन्दर एक मेज़ दोनों कमरों के बीच की दीवार के नज़दीक ला कर रख दी गयी थी। मेज़ पर एक ग्रामोफ़ोन था—पुरानी चाल का—बड़े से भोंपू वाला। भोंपू का मुँह दीवार की तरफ़ था और लॉम्बार्ड ने उसे बग़ल को खिसकाते हुए उस जगह इशारा किया जहाँ दीवार में दो-तीन छोटे-छोटे छेद बनाये गये थे।

ग्रामोफ़ोन को ठीक-ठाक करते हुई उसने सुई को फिर से रिकॉर्ड पर

रख दिया और फ़ौरन ही उन्हें सुनायी दिया : '*आप सब पर आगे बताये जा रहे अभियोग लगाये जा रहे हैं—*'

वेरा चीख़ी :

'बन्द कर दो इसे। बन्द कर दो इसे। बहुत ख़राब है।'

लॉम्बार्ड ने वैसा ही किया।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने राहत की साँस छोड़ते हुए कहा :

'बहुत ही शर्मनाक और पत्थरदिल क़िस्म का मज़ाक है, मेरे ख़याल में।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने अपनी मद्धिम साफ़ आवाज़ में बुदबुदा कर कहा :

'तो तुम सोचते हो यह मज़ाक है? क्यों?'

डॉक्टर ने उन्हें देखा।

'और क्या हो सकता है यह?'

जज ने अपने हाथ से धीरे-धीरे ऊपर के होंट को सहलाया।

वे बोले :

'इस समय मैं कोई राय ज़ाहिर करने को तैयार नहीं हूँ।'

ऐण्टनी मार्सटन बीच में बोल पड़ा।

'सुनिए ज़रा', उसने कहा, 'एक बात आप लोग भूल ही गये। भला किसने इसे यहाँ रख कर चालू किया?'

वॉरग्रेव बुदबुदाये :

'हाँ, मेरा ख़याल है हमें इसके बारे में पूछ-ताछ करनी चाहिए।'

वे बैठक में वापस आ गये। बाक़ी लोग उनके पीछे-पीछे थे।

रॉजर्स अभी-अभी ब्रैण्डी का गिलास ले कर आया था। मिस ब्रेण्ट कराहती हुई श्रीमती रॉजर्स के ऊपर झुकी हुई थीं।

होशियारी से रॉजर्स दोनों औरतों के बीच सरक गया।

'मैं इससे बात करता हूँ, मैडम। एथेल—एथेल—सब ठीक है। ठीक है सब, सुन रही हो? अपने को सँभालो।'

श्रीमती रॉजर्स की साँस तेज़-तेज़ झटकों में आने-जाने लगी। उसकी आँखें, घूरती हुई, डरी-डरी आँखें, चेहरों के घेरे में घूमने लगीं। रॉजर्स की

आवाज़ में एक दबाव था।

'अपने को सँभालो, एथेल।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने ढाढ़स बँधाते हुए उससे बात की।

'तुम अभी ठीक हो जाओगी, श्रीमती रॉजर्स। ज़रा-सा चक्कर आ गया था तुम्हें।'

वह बोली :

'क्या मैं बेहोश हो गयी थी, सर?'

'हाँ।'

'उस आवाज़ की वजह से ऐसा हुआ—वह भयानक आवाज़—किसी फ़ैसले की तरह—'

उसका चेहरा फिर सँवलाने लगा और पलकें फड़फड़ायीं।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने तेज़ी से कहा :

'वह ब्रैण्डी कहाँ है?'

रॉजर्स ने उसे एक छोटी-सी मेज़ पर रख दिया था। किसी ने उसे डॉक्टर को पकड़ा दिया और वे उसे हाथ में लिये, तेज़-तेज़ साँस लेती औरत पर झुक गये।

'इसे पी लो श्रीमती रॉजर्स।'

उसने ब्रैण्डी पी ली। वह थोड़ा-सा उसके गले में फँसी और उसका हांफना जारी रहा। लेकिन जल्द ही उससे फ़ायदा हुआ। उसके चेहरे पर रंग आ गया। वह बोली :

'मैं ठीक हूँ अब। उसने...उसने दिमाग़ चकरा दिया था।'

रॉजर्स ने जल्दी से कहा :

'बिलकुल चकरा दिया होगा। मैं ख़ुद चकरा गया था। देखो, ट्रे ही गिरा बैठा। गन्दे झूठ थे वे ! मैं जानना चाहता हूँ...'

वह बात पूरी नहीं कर सका। उसे बीच ही में रोक दिया गया। वह सिर्फ़ एक खाँसी थी—हलकी-सी सूखी खाँसी, लेकिन उसने रॉजर्स को एकदम रुकने पर विवश कर दिया। वह जस्टिस वॉरग्रेव को एकटक देखता रहा और वे एक बार और खाँसे। फिर उन्होंने कहा :

'ग्रामोफ़ोन पर वह रिकॉर्ड किसने लगाया? क्या तुमने लगाया था, रॉजर्स?'

रॉजर्स चिल्लाया :

'मुझे पता भी नहीं था कि वह क्या था। ईश्वर साक्षी है, मुझे पता नहीं था। अगर पता होता तो मैं कभी ऐसा नहीं करता।'

जज ने रुखाई से कहा :

'यह शायद सच है, रॉजर्स। लेकिन मैं सोचता हूँ तुम्हें इसकी सफ़ाई देनी चाहिए।'

बटलर ने रूमाल से अपना चेहरा पोंछा। फिर उसने गम्भीरता से कहा :

'मैं सिर्फ़ आदेशों का पालन कर रहा था, सर, बस।'

'किसके आदेशों का?'

'मिस्टर ओवेन के।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'ज़रा मुझको इसे बिलकुल साफ़-साफ़ समझने दो। मिस्टर ओवेन के आदेश—क्या थे भला?'

रॉजर्स ने कहा :

'मुझे एक रिकॉर्ड ग्रामोफ़ोन पर लगाना था। मुझे वह रिकॉर्ड मेज़ के दराज़ से लेना था और जब मैं कॉफ़ी की ट्रे ले कर अन्दर जाता तो मेरी पत्नी को ग्रामोफ़ोन चला देना था।'

जज ने बुदबुदा कर कहा :

'बड़ी अजीब कहानी है।'

रॉजर्स चिल्लाया :

'यह सच है, सर। मैं क़सम खा कर कहता हूँ, यह सच है। मुझे मालूम ही नहीं था कि वह क्या था—पल भर के लिए भी नहीं मालूम था। उस पर एक नाम लिखा था—मैंने सोचा कि वह कोई संगीत होगा।'

वॉरग्रेव ने लॉम्बार्ड की तरफ़ देखा।

'क्या उस पर कोई नाम था?'

लॉम्बार्ड ने हामी में सिर हिलाया। अचानक वह अपने सफ़ेद नुकीले दाँत दिखाता हुआ मुस्कराया। उसने कहा :

'इसने सही कहा सर। रिकॉर्ड का शीर्षक था '*अन्तिम गीत...*'

III

जनरल मैकार्थर सहसा भड़क उठे। वे चीखे :

'पूरे-का-पूरा मामला वाहियात है—हाँ, वाहियात। इस तरह से आरोप लगाना। इसके बारे में कुछ करना होगा। यह बन्दा ओवेन—जो भी है...'

एमिली ब्रेण्ट ने हस्तक्षेप किया। तीखी आवाज़ में बोलीं :

'यही तो, कौन है वह?'

जस्टिस वॉरग्रेव ने बीच में बात काटी। जीवन-भर अदालतों में जो हुकुम चलाने की आदत उन्होंने डाली थी, उसके बल पर उन्होंने कहा :

'इसी को हमें बहुत सावधानी से परखना है। मैं तो सुझाव दूँगा कि तुम सबसे पहले अपनी पत्नी के सोने का बन्दोबस्त करो, रॉजर्स। फिर यहाँ वापस आओ।'

'जी, अच्छा।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'चलो, मैं तुम्हारी मदद करता हूँ, रॉजर्स।'

दोनों आदमियों का सहारा लिये, श्रीमती रॉजर्स लड़खड़ाती हुई कमरे से बाहर चली गयी। जब वे सब चले गये तो टोनी मार्सटन ने कहा :

'मैं आपके बारे में तो नहीं जानता, सर, लेकिन मुझे तो कुछ पीने की ज़रूरत महसूस हो रही है।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मुझे भी।'

टोनी ने कहा :

'मैं जा कर खोजता हूँ।'

वह कमरे के बाहर चला गया।

कुछ पल बाद वह लौटा।

'ट्रे में सब सजा-सजाया मौजूद था बाहर, बस लाने की देर थी।'

उसने ट्रे को सावधानी से मेज़ पर रखा। अगले कुछ मिनट शराब ढालने और लोगों को देने में लगे। जनरल मैकार्थर ने कड़ी ह्विस्की ली और जस्टिस वॉरग्रेव ने भी। हरेक को कुछ पीने की इच्छा हो रही थी जिससे बुझी-बुझी तबियत ताज़ा हो सके। सिर्फ़ ऐमिली ब्रेण्ट ने पानी के एक गिलास की फ़रमाइश की।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग फिर से कमरे में दाख़िल हुए।

'वह ठीक है अब', उन्होंने कहा। 'मैंने उसे नर्सें शान्त करने की दवाई दे दी है। आप लोग ड्रिंक ले रहे हैं क्या? लाइए, मुझे भी इसकी ज़रूरत है।'

कई लोगों ने दोबारा अपने गिलास भरे। कुछ पल बाद रॉजर्स कमरे में वापस आया।

जस्टिस वॉरग्रेव ने बागडोर अपने हाथ में सँभाल ली और बैठक मानो अदालत में तब्दील हो गयी।

जज ने कहा :

'अब सुनो रॉजर्स, हमें इसकी तह तक जाना है। कौन हैं ये मिस्टर ऑवेन?'

रॉजर ने उन्हें एकटक देखा।

'वे इस जगह के मालिक हैं, सर।'

'यह तो मैं जानता हूँ। जो मैं चाहता हूँ, तुम हमें बताओ, वह यह कि तुम ख़ुद उनके बारे में क्या जानते हो।'

रॉजर्स ने सिर हिलाया।

'कह नहीं सकता, सर। बात यह है, मैंने उन्हें कभी देखा नहीं।'

कमरे में थोड़ी-सी हलचल हुई।

जनरल मैकार्थर ने कहा :

'तुमने उन्हें कभी नहीं देखा? मतलब क्या है तुम्हारा?'

'हमें यहाँ आये हफ़्ते से भी कम हुआ है, सर, मुझे और मेरी पत्नी को। हमें नौकरियों का बन्दोबस्त करने वाली एजेन्सी के ज़रिये काम पर रखा गया था। प्लाईमाउथ की रेजीना एजेन्सी की मार्फ़त पत्र आया था।'

ब्लोर ने सिर हिलाया।

'पुरानी एजेन्सी है', उसने कहा।

वॉरग्रेव ने पूछा :

'क्या तुम्हारे पास वह चिट्ठी है?'

'जिस चिट्ठी से हमें काम पर रखा गया? नहीं, सर वह तो मैंने नहीं रखी।'

'चलो, अपना क़िस्सा आगे बढ़ाओ। तुम्हें चिट्ठी द्वारा काम पर रखा गया था, जैसा तुमने बताया।'

'जी, सर। हमें यहाँ एक ख़ास दिन आना था। हम आये। हर चीज़ यहाँ सजी-सजाई तैयार थी। खाने-पीने का काफ़ी सामान और सब कुछ बिलकुल ठीक-ठाक। बस, झाड़ने-पोंछने की ज़रूरत थी।'

'आगे?'

'आगे कुछ नहीं सर। हमें आदेश मिले—एक बार फिर चिट्ठी में—कि घर को एक पार्टी के लिए तैयार कर दें और फिर कल दोपहर की डाक से मुझे मिस्टर ओवेन का एक और पत्र मिला। उसमें लिखा था कि वे और श्रीमती ओवेन कहीं रुक गये हैं, बाद में आयेंगे और हम लोग भरसक सारा इन्तज़ाम कर दें और उसी में रात के खाने और कॉफ़ी और ग्रामोफ़ोन चालू करने के बारे में हिदायत थी।'

जज ने अचानक पूछा :

'यह चिट्ठी तो यक़ीनन तुम्हारे पास होगी?'

'जी, यह देखिए, मेरे पास ही है।'

उसने जेब से चिट्ठी निकाल कर जज को दी।

'हूँ-ऊँ', वॉरग्रेव ने कहा। 'ऊपर रिट्ज़ होटल छपा है और चिट्ठी टाइपराइटर से लिखी गयी है।'

चुस्ती से ब्लोर लपक कर जज के पास पहुँचा।

'ज़रा मुझे देखने दीजिए तो', उसने कहा।

जज के हाथ से खींच कर उसने चिट्ठी को परखा।

'कॉरोनेशन मशीन से लिखी गयी है। नयी, कोई ऐब नहीं, उसने कहा।

एनसाइन काग़ज़ है—जो सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होता है। इससे कुछ पता चलने वाला नहीं है। उँगलियों के निशान भी होंगे, इसमें शक है।'

वॉरग्रेव ने अचानक दिलचस्पी और ध्यान से ब्लोर को देखा।

ऐण्टनी मार्सटन ब्लोर की बग़ल में खड़ा उसके कन्धे के ऊपर से चिट्ठी देख रहा था। उसने कहा :

'कुछ बड़े अजीब क़िस्म के नाम हैं इसके, नहीं? उलिक नॉर्मन ओवेन। काफ़ी भारी-भरकम।'

बूढ़े जस्टिस वॉरग्रेव ने अचानक चौक कर कहा :

'मैं आपका आभारी हूँ, मिस्टर मार्सटन। आपने मेरा ध्यान एक अजीब-सी बात की तरफ़ खींचा है।'

उन्होंने दूसरों की तरफ़ नज़र घुमा कर देखा और किसी नाराज़ कछुए की तरह अपनी गरदन बाहर को निकाल कर वे बोले :

'मेरा ख़याल है, समय आ गया है कि हम सब अपनी-अपनी जानकारी एक जगह इकट्ठा कर लें। मैं सोचता हूँ कि सभी के लिए यह अच्छा होगा कि उन्हें इस मकान के मालिक के बारे में जो कुछ भी पता हो, वे सामने रख दें।' वे रुके, फिर उन्होंने आगे कहा : 'हम सभी उनके मेहमान हैं। मेरे ख़याल से यह भी फ़ायदेमन्द होगा अगर हम में से हरेक यह भी बता दे कि यह न्योता कैसे मिला।'

पल भर के लिए ख़ामोशी रही, फिर एमिली ब्रेण्ट ने मज़बूती से बात शुरू की।

'इस सबके बारे में कुछ है जो बहुत अजीब है', उन्होंने कहा। 'मुझे एक चिट्ठी मिली जिसमें हस्ताक्षर आसानी से पढ़े नहीं जा रहे थे। वह ऐसी औरत से आयी जान पड़ती थी जिससे मैं दो-तीन साल पहले गर्मियों की एक ख़ास सैरगाह में मिली थी। मैंने उस नाम को ऑग्डेन या ऑलिवर समझा था। मैं श्रीमती ऑलिवर नाम की एक महिला से भी परिचित हूँ और मिस ऑग्डेन नाम की महिला से भी। मुझे पूरा यक़ीन है कि मैं कभी ओवेन नाम के किसी व्यक्ति से नहीं मिली, न मेरी दोस्ती हुई।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'आपके पास वह चिट्ठी है, मिस ब्रेण्ट?'

'हाँ, मैं उसे लाती हूँ।'

वे गयीं और मिनट भर बाद पत्र के साथ लौट आयीं।

जज ने उसे पढ़ा। उन्होंने कहा :

'समझने लगा हूँ... मिस क्लेथॉर्न?'

वेरा ने सेक्रेटरी बनने की अपनी परिस्थितियों के बारे में बताया।

जज ने कहा :

'मार्सटन?'

ऐण्टनी ने कहा :

'एक दोस्त—बैजर बार्कले ने तार भेजा था। उस समय मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ था क्योंकि मेरा ख़याल था कि वह घोड़ेराम नॉर्वे गया हुआ है। मुझसे कहा कि मैं यहाँ आ जाऊँ।'

एक बार फिर वॉरग्रेव ने सिर हिलाया। उसने कहा :

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग?

'मुझे तो डॉक्टर की हैसियत में बुलाया गया था।'

'अच्छा। आपका इस परिवार से पहले कोई परिचय नहीं था?'

'नहीं। चिट्ठी में मेरे एक साथी डॉक्टर के नाम का ज़िक्र था।'

जज ने कहा :

'सच्चाई का आभास देने के लिए... हाँ, और वह साथी, मेरा अन्दाज़ा है, कुछ समय के लिए तुम्हारे सम्पर्क से बाहर था?'

'हाँ, कुछ ऐसा ही था।'

लॉम्बार्ड, जो ब्लोर की तरफ़ घूरता रहा था, अचानक बोला :

'सुनो ज़रा, मुझे अभी-अभी एक ख़याल आया है...'

जज ने एक हाथ उठाया।

'एक मिनट बाद...'

'लेकिन मैं...'

'हम एक-एक करके मामलों को उठायेंगे, मिस्टर लॉम्बार्ड। इस समय हम उन कारणों की जाँच कर रहे हैं जिनकी वजह से हम आज रात यहाँ

इकट्ठा हुए हैं। जनरल मैकार्थर?'

अपनी मूँछ को हल्के-हल्के झटके देते हुए जनरल मैकार्थर बुदबुदाये :

'चिट्ठी मिली थी—इस बन्दे ओवेन से—मेरे कुछ पुराने दोस्तों का ज़िक्र किया। जो यहाँ मिलने वाले थे—उम्मीद की कि मैं औपचारिक निमन्त्रण के न होने को ख़ातिर में नहीं लाऊँगा। चिट्ठी मैंने रखी नहीं।'

वॉरग्रेव ने कहा : 'मिस्टर लॉम्बार्ड?'

लॉम्बार्ड का दिमाग़ तेज़ी से हरकत में आ गया। क्या वह सब कुछ खुल कर बताये या नहीं? उसने अपना मन बना लिया।

'वही मेरे साथ भी हुआ', वह बोला। 'निमन्त्रण, आपसी दोस्तों का ज़िक्र—मैं फ़ौरन राज़ी हो गया। चिट्ठी अलबत्ता मैंने फाड़ दी है।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने अपना ध्यान ब्लोर की तरफ़ किया। उनकी उँगली ऊपर के होंट को सहला रही थी और आवाज़ ख़तरनाक ढंग शिष्ट थी।

उन्होंने कहा :

'अभी-अभी हम एक बेचैन कर देने वाले अनुभव से गुजरे हैं। प्रकट रूप से एक अशरीरी आवाज़ ने हम सब का नाम लेकर बात की और हम सब पर साफ़-साफ़ आरोप लगाये। हम इन आरोपों से जल्दी ही निपटेंगे। इस समय एक छोटे-से मामले में मेरी दिलचस्पी है। जो नाम लिये गये उनमें एक नाम था विलयम हेनरी ब्लोर। लेकिन जहाँ तक हमें मालूम है हमारे बीच विलियम हेनरी ब्लोर नाम का कोई आदमी नहीं है। डेविस के नाम का ज़िक्र नहीं हुआ। इसके बारे में आपको क्या कहना है मिस्टर डेविस?'

ब्लोर ने खिन्न भाव से कहा :

'बात खुल गयी लगती है। मेरा ख़याल है मैं बता ही दूँ कि मेरा नाम डेविस नहीं है।'

'तुम विलियम हेनरी ब्लोर हो?'

'हाँ।'

'मैं इसमें कुछ जोड़ूँगा', लॉम्बार्ड ने कहा। 'न सिर्फ़ तुम यहाँ एक

नक़ली नाम पर आये हुए हो, मिस्टर ब्लोर, बल्कि इसके साथ-साथ मैंने आज शाम यह भी ग़ौर किया है कि तुम अव्वल दर्जे के झूठे हो। तुम दावा करते हो कि तुम नटाल, दक्षिण अफ़्रीका से आये हो। मैं दक्षिण अफ़्रीका से वाक़िफ़ हूँ और क़सम खाने को तैयार हूँ कि तुमने अपनी ज़िन्दगी में कभी दक्षिण अफ़्रीका में क़दम भी नहीं रखा।'

सारी आँखें ब्लोर की तरफ़ घूम गयीं। नाराज़ और शक से भरी आँखें। ऐण्टनी मार्सटन एक क़दम उसकी तरफ़ बढ़ा। उसकी मुट्ठियाँ आप-से-आप कस गयीं।

'अब बता सुअर', वह बोला। 'कोई सफ़ाई है तुम्हारे पास?'

ब्लोर ने अपना सिर पीछे को झटका और उसका चौकोर जबड़ा कस गया।

'आप सब लोगों ने मुझे ग़लत समझा है', उसने कहा। 'मेरे पास अपने सबूत हैं और आप लोग उन्हें देख सकते हैं। मैं सी. आई. डी. से निकला आदमी हूँ और प्लाईमाउथ में अपनी ख़ुद की डिटेक्टिव संस्था चलाता हूँ। मुझे यहाँ काम से बुलाया गया था।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने पूछा :

'किसने बुलाया था?'

'इसी आदमी ओवेन ने। ख़र्चे-पानी के लिए अच्छा-सा मनीआर्डर भेजा और मुझे हिदायत दी कि मुझे क्या करना था। मुझे मेहमान के भेस में इस पार्टी में शामिल होना था। मुझे आप सबके नाम दिये गये थे। मुझे आप सब पर नज़र रखनी थी।'

'कोई कारण दिया गया था?'

'श्रीमती ओवेन के ज़ेवरात। सब बकवास ! मुझे नहीं विश्वास कि ऐसी कोई औरत है भी।'

एक बार फिर जज ने अपनी उँगली से होंट सहलाया, इस बार प्रशंसा में।

'तुम्हारे निष्कर्ष, मेरे ख़याल में, उचित ही हैं', वे बोले। 'उलिक नॉर्मन ओवेन। मिस ब्रेण्ट की चिट्ठी में हालाँकि कुल नाम वाला। हस्ताक्षर

घिचपिच ही है, पहले नाम काफ़ी साफ़ हैं—उना नैन्सी—दोनों ही मामलों में पहले अक्षर एक से हैं। उलिक नॉर्मन ओवेन—उना नैन्सी ओवेन—हर बार—यानी यू. एन. ओवेन या थोड़ी-सी कल्पना लगायें तो 'अननोन' यानी अनजान।'

वेरा चिल्लायी :

'लेकिन यह तो बहुत बेसिर-पैर का है—पागलपन है !'

जज ने धीमे-धीमे सिर ऊपर-नीचे हिलाया।

उन्होंने कहा :

'बिलकुल। मेरे मन में कोई शक नहीं है कि हमें यहाँ किसी पागल आदमी ने बुलाया है—शायद किसी ख़तरनाक पागल हत्यारे ने।'

अध्याय 4

I

पल भर के लिए ख़ामोशी छा गयी। हैरानी और भौंचक्केपन से भरी ख़ामोशी। फिर जज ने अपनी मद्धम साफ़ आवाज़ में बातों का सिरा फिर एक बार थाम लिया।

'अब हम अपनी जाँच-पड़ताल के अगले पड़ाव की तरफ़ बढ़ेंगे। लेकिन पहले मैं अपना सबूत भी इस सूची में जोड़ दूँ।'

उन्होंने अपनी जेब से एक चिट्ठी निकाली और उसे मेज़ पर फेंक दिया।

'यह पत्र ज़ाहिरा तौर पर मेरी एक पुरानी मित्र, लेडी कॉन्स्टेंस कल्मिंगटन ने लिखा है। मैं उससे कई वर्षों से नहीं मिला हूँ। वह पूर्वी देशों की ओर निकल गयी थी। यह ठीक उसी क़िस्म की गोल-मोल असम्बद्ध-सी चिट्ठी है जो वह लिखती। इसमें उसने मुझे यहाँ उससे मिलने के लिए कहा था और मेज़बान दम्पति का हवाला बेहद गोल-मोल ढंग से दिया था। आप देखेंगे, इसमें भी वही तरीक़ा अपनाया गया है। मैं इसका ज़िक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि वह बाक़ी सबूतों से मेल खाता है—जिसे कुल-मिलाकर देखने पर एक दिलचस्प बात उभर कर सामने आती है। *जिसने भी हमें यहाँ लुभाकर बुलाया, वह या तो हमारे बारे में काफ़ी कुछ जानता था या फिर उसने जानने के लिए काफ़ी कष्ट उठाया।* जो भी वह हो, उसे लेडी कॉन्स्टेंस से मेरी मित्रता के बारे में पता है और वह उसके पत्र लिखने की शैली से परिचित है। वह डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग के साथियों के बारे में जानता है और यह भी कि वे कहाँ हैं। वह मिस्टर मार्सटन के दोस्त का बुलाने का नाम जानता है और वह कैसे तार भेजता है, यह भी। उसे मालूम है दो साल पहले मिस ब्रेण्ट छुट्टियाँ मनाने कहाँ गयी थीं और वहाँ कैसे लोगों से मिली थीं। उसे जनरल मैकार्थर के पुराने संगियों के बारे में भी पता है।'

वे रुके। फिर उन्होंने कहा :

'*तो देखा आपने, वह काफ़ी कुछ जानता है* और हमारे बारे में इस

जानकारी से उसने कुछ स्पष्ट आरोप लगाये हैं।'

फ़ौरन एक शोर बरपा हो गया।

जनरल मैकार्थर ने चिल्ला कर कहा :

'झूठों का पुलिन्दा है सब-का-सब ! झूठी अफ़वाहें हैं।'

वेरा चिल्लायी :

'दुष्टता है !' उसकी साँस तेज़-तेज़ चल रही थी : 'शैतानीपन है।'

रॉजर्स ने भर्राये गले से कहा :

'झूठ है—सरासर झूठ है—हमने कभी नहीं... हम दोनों ने ही।'

ऐण्टनी मार्सटन ग़ुर्राया :

'मैं तो इस सबका मतलब ही समझ नहीं पा रहा।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने हाथ उठाकर कोलाहल को शान्त किया। फिर उन्होंने अपने शब्दों को सावधानी से चुनते हुए कहा :

'मैं यह कहना चाहता हूँ। हमारे अनजान दोस्त ने मुझ पर एडवर्ड सेटन नाम के एक आदमी की हत्या का आरोप लगाया है। मुझे सेटन अच्छी तरह याद है। वह जून 1930 में मेरी अदालत में सुनवाई के लिए आया था। उस पर एक उमरदार औरत की हत्या का आरोप था। उसका बचाव बड़ी कुशलता से किया गया था और जूरी पर उसने अच्छा प्रभाव डाला था। इसके बावजूद सबूतों के आधार पर वह निश्चय ही दोषी था। मैंने उसी प्रकार मुक़दमे का निचोड़ पेश किया और जूरी ने उसे दोषी क़रार दिया। मृत्यु दण्ड देते हुए मैंने जूरी के फ़ैसले का समर्थन किया। इस फ़ैसले की अपील की गयी, लेकिन अपील ख़ारिज हो गयी और उस आदमी को फाँसी दे दी गयी। मैं आप लोगों के सामने यह कहना चाहता हूँ कि इस मामले में मेरी आत्मा बिलकुल साफ़ है। मैंने अपना कर्तव्य किया, बस, और कुछ नहीं। मैंने सही तौर पर दोषी पाये गये आदमी को सज़ा सुनायी थी।'

आर्मस्ट्रॉन्ग को अब याद आ रहा था। सेटन वाला मामला ! फ़ैसले पर सबको बहुत हैरत हुई थी। वह सुनवाई के दौरान मैथ्यूज़ वकील से एक दिन किसी रेस्तराँ में खाने के वक़्त मिला था। मैथ्यूज़ ने पक्के यक़ीन से

कहा था, 'फ़ैसले में कोई शक नहीं है। बरी हो जायेगा, तय है।' और फिर बाद में उन्होंने लोगों की बातें सुनी थीं : 'जज पूरी तरह उसके ख़िलाफ़ था। जूरी को पूरी तरह घुमा दिया और उन्होंने उसे दोषी घोषित कर दिया। बिलकुल क़ानूनी था, हालाँकि ! बुड्ढा वॉरग्रेव क़ानून जानता है। यह तो ऐसा था मानो उसे मुजरिम से कोई निजी रंजिश थी।'

ये सारी यादें डॉक्टर के दिमाग़ में गुज़र गयीं। इससे पहले कि वे अपने सवाल की अक़्लमन्दी के बारे में सोच सकें, उन्होंने जोश में आ कर पूछ लिया था :

'क्या आप सेटन को जानते थे? मेरा मतलब है मुक़दमे से पहले?'

रेंगने वाले जानवरों की-सी पलकों वाली आँखें उनकी ओर उठीं। साफ़ आवाज़ में जज ने कहा :

'मुक़दमे से पहले मुझे सेटन के बारे में कुछ मालूम नहीं था।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने ख़ुद से कहा :

'यह झूठ बोल रहा है—मैं जानता हूँ यह झूठ बोल रहा है।'

II

वेरा क्लेथॉर्न ने काँपती आवाज़ में कहा :

'मैं आप सबको उस बच्चे के बारे में बताना चाहती हूँ—सिरिल हैमिल्टन के बारे में। मैं उसकी गवर्नेस थी। उसे दूर तक तैरने की मनाही थी। एक दिन जब मेरा ध्यान दूसरी तरफ़ था, वह चल दिया। मैं उसके पीछे-पीछे तैरती हुई गयी... मैं समय पर वहाँ नहीं पहुँच सकी... भयानक था... लेकिन उसमें मेरी ग़लती नहीं थी... अदालती जाँच में अधिकारी ने मुझे बरी कर दिया था। और उसकी माँ—वह बहुत समझदार और दयालु थी। अगर उसने भी मुझे दोषी नहीं माना तो फिर...तो फिर...यह भयानक बात क्यों कही जाये? यह इन्साफ़ नहीं है, सही नहीं है...' वह बुरी तरह रोती हुई फूट पड़ी।

जनरल मैकार्थर ने उसका कन्धा थपथपाया। उन्होंने कहा :

'बस, बस। निश्चय ही यह सही नहीं है। यह बन्दा तो पागल है। पागल ! सनक चढ़ गयी है उसे। हर तरफ उलटी धारा बहा रहा है।'

वे तन कर खड़े हो गये, कन्धों को सीधा करते हुए। फिर ज़ोर से बोले :

'सबसे अच्छा तो यही है कि ऐसी बातों का जवाब ही न दिया जाय। लेकिन मेरा ख़याल है मुझे यह कहना चाहिए कि जो उसने उस नौजवान आर्थर रिचमण्ड के बारे में कहा—उसमें—अ—कोई सच्चाई नहीं है। रिचमण्ड मेरे नीचे तैनात अफ़सरों में था। मैंने उसे टोह लगाने के लिए भेजा था। वहाँ वह मारा गया। युद्ध में यह कुदरती तौर पर होता है। बाक़ी—मेरी पत्नी पर जो कीचड़ उछाला गया—उस पर मुझे बहुत ग़ुस्सा है। सचमुच बंहुत अच्छी औरत—'

जनरल मैकार्थर बैठ गये। उनका काँपता हुआ हाथ उनकी मूँछ को खींचता रहा। बोलने में उन्हें काफ़ी मेहनत लगी थी।

लॉम्बार्ड ने बात शुरू की उसकी आँखों में दिलचस्पी थी। उसने कहा :

'क़बीले के उन लोगों के बारे में—'

मार्सटन ने कहा :

'क्या कहना है उनके बारे में?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड के दाँत फैल गये।

'कहानी काफ़ी हद तक सच्ची है। मैं उन्हें छोड़ आया था। आत्म-रक्षा का मामला था। हम अफ़्रीका के जंगल में खो गये थे। मैं और दो-एक दूसरे लोग—हमने जो भी खाने को था वहाँ, उसे लिया और चले आये—'

जनरल मैकार्थर ने कठोरता से कहा :

'तुमने अपने जवानों को छोड़ दिया—भूखे मरने को छोड़ दिया?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'पक्के अंग्रेज़ साहब जैसा काम तो नहीं था, मानता हूँ। लेकिन आत्म-रक्षा आदमी का पहला फ़र्ज़ है। और फिर वे आदिवासी—क़बीले वाले—उन्हें मरने से बुरा नहीं लगता। वे उसके बारे में वैसे नहीं सोचते जैसे यूरोप वाले।'

वेरा ने अपने हाथों में छिपे चेहरे को ऊपर उठाया। फिर उसने

लॉम्बार्ड को घूरते हुए कहा :

'तुम उन्हें छोड़ आये—मरने के लिए?'

लॉम्बार्ड ने जवाब दिया :

'मैं उन्हें मरने के लिए छोड़ आया।'

उसकी आँखों में दिलचस्पी का भाव था और वेरा की आँखों में भय और आतंकित होने का।

ऐण्टनी मार्सटन में धीमी चकराई आवाज़ में कहा :

'मैं इस बीच सोचता रहा हूँ। जॉन और लूसी कोम्स। ज़रूर वही दो बच्चे रहे होंगे जो केम्ब्रिज के पास मेरी गाड़ी के नीचे आ गये थे। बड़ी ख़राब क़िस्मत थी।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने तीखे स्वर में पूछा :

'उनकी या तुम्हारी?'

ऐण्टनी ने कहा :

'ख़ैर, मैं सोच रहा था—मेरी—लेकिन निश्चय ही आप ठीक कह रहे हैं, सर, उनके लिए बहुत ख़राब रहा। लेकिन वह एक दुर्घटना ही थी। वे किसी बँगले से अचानक भागते हुए निकले थे। साल भर तक मेरा लाइसेन्स रद्द रहा। अच्छा सिरदर्द था।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने जोश में आकर कहा :

'यह तेज़ गाड़ी चलाना ग़लत है—बहुत ग़लत। तुम्हारे जैसे नौजवान समाज के लिए ख़तरा हैं।'

ऐण्टनी ने कन्धे उचकाये। उसने कहा :

'तेज़ रफ्तार तो अब आ ही गयी है। इंग्लैण्ड की सड़कें बहुत बेकार हैं। उन पर कहीं भी क़ायदे से पहुँचा नहीं जा सकता।'

उसने अपने गिलास के लिए इधर-उधर नज़र दौड़ायी, एक मेज़ से उसे उठाया और किनारे रखी मेज़ तक जा कर अपने लिए एक और ह्विस्की और सोडा ढाला। कन्धे की तरफ़ मुँह मोड़कर उसने कहा :

'ख़ैर, हर हाल में ग़लती मेरी नहीं थी। वह सिर्फ़ एक दुर्घटना थी।'

III

बटलर रॉजर्स होंटों पर जीभ फिराता और हाथों को मसोसता रहा था। अब उसने एक धीमी आदरसूचक आवाज़ में कहा :

'मुझे कुछ कहने का मौक़ा मिले, सर।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'बोलो, रॉजर्स, क्या कहना है?'

रॉजर्स ने गला साफ़ किया और एक बार फिर अपने होंटों पर ज़बान फिरायी।

'मेरा और श्रीमती रॉजर्स का भी नाम लिया गया था सर। और मिस ब्रेडी का भी। उसमें रत्ती भर सच नहीं है, सर। मेरी पत्नी और मैं मिस ब्रेडी के साथ उनके मरने तक रहे। उनकी तबियत हमेशा ख़राब रहती थी, उसी समय से जब से हम वहाँ आये। उस रात आँधी आयी थी—जिस रात उनकी तबियत ख़राब हुई। टेलिफ़ोन ख़राब था। हम डॉक्टर को बुला नहीं पा रहे थे। मैं डॉक्टर को बुलाने पैदल गया। लेकिन वह बहुत देर में पहुँचा। हम मिस ब्रेडी के लिए जो भी कर सकते थे, हमने किया। उनसे लगाव था हम को। कोई भी आदमी आपको यह बता देगा। हमारे ख़िलाफ़ एक शब्द भी किसी ने नहीं कहा। एक शब्द भी नहीं।'

लॉम्बार्ड ने उस आदमी के रह-रह कर फड़कते चेहरे, उसके सूखे होंठों, उसकी आँखों से झलकते डर की तरफ़ देखा। उसे कॉफ़ी की ट्रे का गिरना याद आया। उसने सोचा, पर कहा नहीं : 'सचमुच?'

ब्लोर बोल पड़ा—अपने ख़ुशदिल, धौंस जमाने वाले सरकारी लहजे में उसने रॉजर्स को सम्बोधित किया।

वह बोला :

'लेकिन मौत पर एक छोटी-सी रक़म तुम्हें तो मिली थी, क्यों?'

रॉजर्स तन कर खड़ा हो गया।

'मिस ब्रेडी ने हमारी सेवा को मानते हुए विरासत में हमारे लिए कुछ छोड़ा था। और क्यों न छोड़तीं, मैं जानना चाहूँगा।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'और तुम्हारा मामला क्या था, मिस्टर ब्लोर?'

'मेरा मामला?'

'तुम्हारा नाम भी तो सूची में शामिल था न?'

ब्लोर का चेहरा बैंगनी हो गया।

'तुम्हारा मतलब लैण्डर से है? वह बैंक डकैती वाला मामला था—लण्डन ऐण्ड कमर्शियल बैंक डकैती का।'

जस्टिस वॉरग्रेव हरकत में आये। उन्होंने कहा :

'मुझे याद है। वह मेरे सामने पेश नहीं हुआ था, मगर मुझे मामला याद है। लैण्डर तुम्हारी गवाही पर दोषी पाया गया था। तुम्हीं पुलिस अधिकारी थे न, जिसके हाथ में यह मामला था?'

ब्लोर ने कहा :

'हाँ, मैं ही था।'

'लैण्डर को उमर क़ैद की सज़ा मिली थी और वह साल भर बाद डार्टमूर जेल में मर गया। वह नाज़ुक-सा आदमी था।'

ब्लोर ने कहा :

'वह ठग था। वही था जिसने रात के पहरेदार को ठोंक दिया था। मामला एकदम साफ़ उसके ख़िलाफ़ था।'

वॉरग्रेव ने धीरे-धीरे कहा :

'तुम्हारी तो तारीफ़ हुई थी, मेरा ख़याल है, मामले को कुशलता से निपटाने की ख़ातिर?'

ब्लोर ने उखड़े-उखड़े भाव से कहा :

'मुझे तरक़्क़ी मिली थी।'

उसने भारी आवाज़ में जोड़ा :

'मैं सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ निभा रहा था।'

लॉम्बार्ड हँस दिया—अचानक, खनकती हुई हँसी। उसने कहा :

'हम सब-के-सब कितने फ़र्ज़ निभाने वाले, क़ानून का पालन करने वाले लोग जान पड़ते हैं। मुझे छोड़ कर। आपके सिलसिले में क्या है, डॉक्टर—और आपकी छोटी-सी पेशेवर ग़लती के सिलसिले में? ग़ैरक़ानूनी ऑपरेशन था क्या?'

एमिली ब्रेण्ट ने तीखी नापसन्दगी से उसे देखा और थोड़ा दूर हो गयी।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग को पूरी तरह अपने पर क़ाबू था। उन्होंने ख़ुश-मिज़ाजी से सिर हिलाया।

'मैं तो मामला ही नहीं समझ पा रहा हूँ', वे बोले। 'वह नाम जब लिया गया तो उसका मेरे लिए कोई मतलब नहीं था। क्या था वह—क्लीस? क्लोस? मुझे सचमुच इस नाम के किसी मरीज़ की याद नहीं, न किसी भी तरह किसी मौत से जुड़े होने की। यह मेरे लिए पूरी तरह एक रहस्य है। निश्चय ही, बहुत साल भी तो हो गये हैं। हो सकता है हस्पताल में मेरा कोई ऑपरेशन वाला मरीज़ हो। वे इतनी देर से आते हैं, इनमें से इतने सारे लोग। फिर जब मरीज़ की मौत हो जाती है तो वे हमेशा इसे डॉक्टर की ग़लती बताते हैं।'

सिर हिलाते हुए उन्होंने लम्बी साँस छोड़ी।

वे सोच रहे थे :

'नशे में था—यही हुआ था—पी रखी थी... और मैंने ऑपरेशन किया था! नर्सें ढीली पड़ी हुई थीं—हाथ काँप रहे थे—मैंने उसे मार दिया था, यह सही है। बेचारी—बुढ़िया—होश में होता तो आसान-सा काम था। क़िस्मत की बात है कि हमारे पेशे में वफ़ादारी है। सिस्टर को यक़ीनन पता था—लेकिन उसने मुँह नहीं खोला था। हे ईश्वर, कैसा झटका लगा था मुझे। आगे के लिए सबक़ मिल गया था। लेकिन इतने साल बाद—किसे पता होगा उसके बारे में?'

IV

कमरे में चुप्पी थी। हर कोई छिपे या खुले तौर पर एमिली ब्रेण्ट की तरफ़ देख रहा था। इससे पहले कि उनको लोगों की अपेक्षाओं का अन्दाज़ा होता, दो-एक मिनट गुज़र चुके थे। उनके छोटे-से माथे पर त्योरियाँ चढ़ गयीं। उन्होंने कहा :

'क्या आप लोग मेरे कुछ कहने का इन्तज़ार कर रहे हैं? मेरे पास कहने को कुछ नहीं है।'

जज ने पूछा : 'कुछ भी नहीं, मिस ब्रेण्ट?'

'कुछ भी नहीं।'

उनके होंट मिंच गये।

जज ने अपने चेहरे को सहलाया। उन्होंने नरमी से कहा :

'आपको अपने बचाव में जो कहना है, क्या आप उसे सुरक्षित रखती हैं?'

मिस ब्रेण्ट ने ठण्डे लहजे में कहा :

'बचाव का कोई सवाल ही नहीं है। मैंने हमेशा अपनी अन्तरात्मा के निर्देशों पर काम किया है। ऐसा कुछ नहीं है जिसके लिए मैं ख़ुद को दोषी ठहराऊँ।'

हवा में असन्तोष की भावना थी। लेकिन एमिली ब्रेण्ट उन लोगों में नहीं थीं जो आम राय से प्रभावित हो जाते हैं। वे बिना झुके बैठी रहीं।

जज ने एक-दो बार गला साफ़ किया। फिर उन्होंने कहा : 'हमारी जाँच यहाँ ख़त्म होती है। अब यह बताओ, रॉजर्स, हम लोगों और तुम और तुम्हारी पत्नी के अलावा इस टापू पर और कौन है?'

'कोई नहीं, सर। कोई भी नहीं।'

'तुम्हें पक्का मालूम है?'

'जी, काफ़ी हद तक पक्का।'

वॉरग्रेव ने कहा :

'मेरे सामने अभी तक वह उद्देश्य साफ़ नहीं हुआ जिसके लिए हमारे अनजान मेज़बान ने हम सब को यहाँ इकट्ठा किया है। लेकिन मेरा ख़याल है कि यह आदमी—जो भी वह है—उन अर्थों में समझदार नहीं है जैसा कि हम समझते हैं। वह ख़तरनाक भी हो सकता है। मेरी राय तो यही है कि हम जितनी जल्दी इस जगह से चल दें, वह हमारे लिए बेहतर होगा। मेरा सुझाव है कि हम आज रात चलें।'

रॉजर्स ने कहा :

'माफ कीजिए, सर, पर टापू पर कोई नाव नहीं हैं।'

'कोई नाव नहीं है?'

'जी नहीं।'

'उस किनारे से तुम्हारा सम्पर्क कैसे होता है?'

'फ़्रेड नैराकॉट हर सुबह आता है, सर। वह डबल रोटी, दूध और डाक लाता है और आदेश ले जाता है।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'फिर मेरी राय में यह ठीक ही होगा अगर हम सब कल सुबह, जैसे ही नैराकॉट की नाव आये, यहाँ से चल दें।'

सबने इस बात से सहमति जतायी। असहमति का सिर्फ़ एक स्वर गूँजा। यह ऐण्टनी मार्सटन था जिसने बिलकुल अलग राय ज़ाहिर की।

'यह तो कोई बात न हुई। मैदान छोड़ने जैसा लगता है, नहीं?' उसने कहा। 'जाने से पहले हम लोगों को इस रहस्य का पता तो लगा ही लेना चाहिए। पूरा मामला किसी जासूसी कहानी की तरह है। एकदम सनसनीख़ेज़।'

जज ने तीखे तेज़ाबी अन्दाज़ में कहा :

'इस उमर में पहुँच कर मुझे ''सनसनी'' में कोई दिलचस्पी नहीं है, जैसा कि तुम उसे बता रहे हो।'

ऐण्टनी ने चौड़ी मुस्कान के साथ कहा :

'क़ानून की ज़िन्दगी नज़र को तंग बनाती है ! मैं तो सदा जुर्म के पक्ष में हूँ। इसी बात पर एक जाम।'

उसने अपना गिलास उठाया और एक ही घूँट में उसे ख़ाली कर दिया।

बहुत जल्दी, शायद। उसका गला घुट गया—बुरी तरह घुट गया। उसका चेहरा बिगड़ गया और बैंगनी हो गया। वह साँस के लिए हाँफा—फिर कुर्सी से फिसल कर नीचे आ गिरा, गिलास उसके हाथ से छूट कर लुढ़क गया।

अध्याय 5

I

सब कुछ इतना अचानक और उम्मीद से परे था कि सबकी साँस रुक गयी। सब-के-सब फ़र्श पर ढेर पड़े शरीर को बेवक़ूफ़ों की तरह देखते रहे।

फिर डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग उछल कर उठे और उसके क़रीब जाकर उन्होंने घुटने टेक कर उसका मुआयना किया। जब उन्होंने सिर ऊपर उठाया तो उनकी आँखें चकरायी हुई थीं।

धीमे, आतंकित स्वर में उन्होंने कहा :

'हे भगवान, यह तो मर चुका है।'

बात उनके अन्दर तक नहीं समायी। फ़ौरन नहीं।

मर गया है? *मर गया है?* ताक़त और सेहत की बुलन्दी पर वह देवता-सरीखा नौजवान। पल भर ही में इस तरह फ़र्श पर लोट गया। स्वस्थ जवान आदमी इस तरह नहीं मरा करते, सिर्फ़ एक ह्विस्की और सोडे से गला घुट जाने पर...

नहीं, अभी यह बात उनके भीतर नहीं दर्ज हो रही थी।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग मरे हुए आदमी के चेहरे को परख रहे थे। उन्होंने नीले, ऐंठे हुए होंटों को सूँघा। फिर उन्होंने वह गिलास उठाया जिससे ऐण्टनी मार्सटन शराब पी रहा था।

जनरल मैकार्थर ने कहा :

'मर गया है? तुम्हारा मतलब है कि इसका बस गला घुट गया और यह मर गया?'

डॉक्टर ने कहा :

'आप चाहें तो इसे गला घुटना कह सकते हैं। वह मरा तो साँस रुकने से ही।'

वे अब गिलास को सूँघ रहे थे। उन्होंने तलछट में इकट्ठा ड्रिंक में उँगली डुबोयी और बड़ी हिफ़ाज़त से उँगली को बस ज़बान की नोक से छुआ।

उनके चेहरे का भाव बदल गया।

जनरल मैकार्थर ने कहा :

'आज तक ऐसा बन्दा नहीं देखा जो इस तरह मरा हो—महज़ गला घुट जाने के दौरे से।'

एमिली ब्रेण्ट ने साफ़ आवाज़ में कहा :

'ज़िन्दगी के बीचों-बीच हम मौत के आमने-सामने होते हैं।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग खड़े हो गये। उन्होंने रुखाई से कहा :

'नहीं, कोई आदमी महज़ गला घुट जाने के दौरे से नहीं मरता। मार्सटन की मौत जिसे हम स्वाभाविक मौत कहते हैं, वह नहीं थी।'

वेरा ने लगभग फुसफुसाते हुए पूछा :

'क्या उसमें—ह्विस्की में—कुछ था?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने सिर हिलाया।

'हाँ। ठीक-ठीक नहीं कह सकता। हर चीज़ किसी-न-किसी क़िस्म के साइनाइड की तरफ़ इशारा कर रही है। प्रूसिक ऐसिड की कोई गन्ध नहीं है, शायद पोटाशियम साइनाइड हो। वह फ़ौरन असर करता है।'

जज ने तीखे स्वर में कहा :

'वह उसके गिलास में था?'

'हाँ।'

डॉक्टर उस मेज़ तक गये जहाँ पीने का सामान रखा था। उन्होंने ह्विस्की का ढक्कन खोला और उसे सूँघा और चखा। फिर उन्होंने सोडे को चखा। उन्होंने सिर हिलाया।

'ये दोनों ठीक हैं।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'आपका मतलब है—उसने वह चीज़ अपने गिलास में ख़ुद डाली होगी?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने अजीब ढंग से असन्तुष्ट भाव से सिर हिला कर हामी भरी। उन्होंने कहा :

'लगता ऐसा ही है।'

ब्लोर ने कहा :

'आत्महत्या? यह तो अनोखी बात है।'

वेरा ने धीरे-धीरे कहा :

'आप कभी सोच भी नहीं सकते थे कि वह ख़ुदकुशी करेगा। कितना ज़िन्दा था वह। वह—ओह—मज़े ले रहा था भरपूर। जब वह अपनी कार में पहाड़ी से नीचे आ रहा था आज शाम तो वह—तो वह कैसा दिखता था —ओह, मैं बता नहीं सकती।'

लेकिन उन्हें मालूम था वह क्या कहना चाहती थी। अपनी जवानी और मर्दानगी की बुलन्दी पर ऐण्टनी मार्सटन ऐसे जीव की तरह लगता था जो अमर हो। और अब मुचड़ा और टूटा, वह फ़र्श पर पड़ा था।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'आत्महत्या के अलावा और कोई सम्भावना है?'

धीरे-धीरे हरेक ने अपना सिर हिला दिया। कोई और सफ़ाई नहीं दी जा सकती थी। पीने के सामान को किसी ने हाथ नहीं लगाया था। उन सबने ऐण्टनी मार्सटन को जाकर अपना गिलास भरते देखा था। इसलिए नतीजा यही निकलता था कि गिलास में जो भी साइनाइड था वह ऐण्टनी मार्सटन ने ही उसमें डाला होगा। लेकिन—फिर भी—ऐण्टनी मार्सटन ख़ुदकुशी क्यों करता भला?

ब्लोर ने सोचते हुए कहा :

'पता है डॉक्टर, मुझे यह कुछ ठीक नहीं लग रहा। मैं कभी मिस्टर मार्सटन को आत्महत्या करने वाला आदमी नहीं कह सकता था।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने जवाब दिया :

'मैं भी यही मानता हूँ।'

II

उन्होंने उसे वैसे ही छोड़ दिया था। इसके अलावा और कहा भी क्या जा सकता था?

आर्मस्ट्रॉन्ग और लॉम्बार्ड मिल कर ऐण्टनी मार्सटन के बेहरकत शरीर को उसके सोने के कमरे में ले गये थे और उसे वहाँ चादर ओढ़ा कर लिटा दिया था।

जब वे फिर नीचे आये तो दूसरे लोग झुण्ड बनाये खड़े थे और हालाँकि रात ठण्डी नहीं थी, वे थोड़ा-थोड़ा काँप रहे थे।

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'अच्छा होगा अगर हम सोने चलें। काफ़ी देर हो गयी है।'

बारह बजे से ऊपर का वक़्त था। सुझाव अक़्लमन्दी का था, तो भी सब लोग हिचकिचा रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे तसल्ली पाने के लिए एक-दूसरे के संग-साथ से चिपके हुए थे।

जज ने कहा :

'हाँ, हमें कुछ देर सो लेना चाहिए।'

रॉजर्स ने कहा :

'अभी खाने के कमरे से बर्तन वग़ैरा नहीं उठाये हैं।'

लॉम्बार्ड ने रूखे स्वर में कहा :

'सुबह कर लेना साफ़-सफ़ाई।'

आर्मस्ट्रॉन्स ने उससे पूछा :

'तुम्हारी पत्नी ठीक है अब?'

'मैं जा कर देखता हूँ, सर।'

वह दो-एक मिनट बाद लौटा।

'मज़े से सो रही है सर।'

'ठीक', डॉक्टर ने कहा। 'उसे तंग मत करना।'

'नहीं सर। मैं खाने के कमरे में सब ठीक-ठाक कर दूँ और पक्का कर लूँ कि सब ठीक से बन्द है। फिर मैं भी सोने जाऊँगा।'

वह हॉल को पार करके खाने के कमरे में चला गया।

दूसरे लोग ऊपर को चले। एक धीमा अनमना जुलूस।

अगर यह कोई पुराना मकान होता, चर्र-मर्र करती लकड़ी और अँधेरी छायाओं वाला, लकड़ी के तख्तों से जड़ी दीवारों वाला तो शायद एक रहस्यमय, डरावनी भावना सबको सता सकती थी। लेकिन यह मकान एकदम आधुनिक था। न तो कोई अँधेरे कोने-अँतरे थे—न सरकने वाले दरवाज़े—बिजली की रोशनी से नहा रहा था—हर चीज़ नयी और

चमकदार थी। इस घर में कुछ भी छिपा नहीं था, कुछ भी लुकाया नहीं गया था। उसकी कोई अपनी फ़िज़ा नहीं थी।

लेकिन जाने कैसे यही सबसे डरावनी बात थी...

उन्होंने सीढ़ियों के ऊपर एक-दूसरे से विदा ली। उनमें से हरेक अपने कमरे में चला गया और हरेक ने आप-से-आप, बिना चेतन रूप से सोचे, अपने दरवाज़े को बन्द करके अन्दर से चिटखनी लगा ली...

III

अपने सुखद हल्के रंगों वाले कमरे में जस्टिस वॉरग्रेव ने अपने कपड़े उतारने और रात के सोने की तैयारी की।

वे एडवर्ड सेटन के बारे में सोच रहे थे।

उन्हें सेटन अच्छी तरह याद था। उसके हल्के रंग के बाल, नीली आँखें, निश्छल भाव से सीधे आपके चेहरे को देखने की उसकी आदत। यही सब था जिसने जूरी के सदस्यों पर अच्छा असर डाला था।

सरकारी वकील ल्यूवेलिन ने मामले में थोड़ा घपला कर दिया था। वह ज़रूरत से ज़्यादा हिंसक हो गया था, उसने ज़रूरत से ज़्यादा साबित करने की कोशिश की थी।

दूसरी तरफ़ बचाव पक्ष के वकील मैथ्यूज़ ने बड़े ढंग से अपना पक्ष रखा था। उसके बिन्दुओं में जान थी। उसकी जिरह बहुत घातक थी और कटघरे में अपने मुवक्किल सेटन से उसके सवाल-जवाब बड़ी कुशलता से संचालित किये गये थे।

और सेटन जिरह की अग्नि-परीक्षा से सही-सलामत निकल आया था। न तो वह उत्तेजित हुआ था, न ज़रूरत से ज़्यादा कटु। जूरी पर अनुकूल असर पड़ा था और मैथ्यूज़ को शायद यह महसूस होने लगा था कि ख़ुशियाँ मनाने में अब ज़्यादा देर नहीं थी।

जज ने अपनी घड़ी में सावधानी से चाभी दी और उसे पलँग के पास रख दिया।

उन्हें याद आया कि वहाँ अदालत में बैठे हुए उन्हें ठीक-ठीक कैसा लगा था—सुनते, छोटे-छोटे बिन्दु दर्ज करते, हर चीज़ को समझते, कैदी

के ख़िलाफ़ सबूत के हर छोटे-से-छोटे टुकड़े को परख कर उसकी तालिका बनाते।

उन्हें मामले में मज़ा आया था। मैथ्यूज़ का अन्तिम भाषण अव्वल दर्जे का था। उसके बाद अपनी तकरीर से ल्यूवेलिन उस प्रभाव को दूर करने में सफल नहीं हुआ था जो मैथ्यूज़ ने जूरी पर डाला था।

और इसके बाद उनके अपने मूल्यांकन की बारी आयी थी...

ध्यान से जस्टिस वॉरग्रेव ने अपने नक़ली दाँत निकाले और उन्हें पानी से भरे गिलास में डाल दिया। उनके होंट अन्दर को सिकुड़ गये। अब उनका मुँह क्रूर नज़र आने लगा, क्रूर और किसी शिकारी पशु सरीखा।

अपनी भारी पलकों को गिराते हुए जज अपने से मुस्कराये।

उन्होंने सेटन को तो ठिकाने लगा ही दिया था।

गठिये की हलकी-सी कराह के साथ वे बिस्तर पर जा लेटे और उन्होंने बत्ती गुल कर दी।

IV

नीचे खाने के कमरे में रॉजर्स चकराया हुआ खड़ा था।

वह मेज़ के बीचों-बीच रखी चीनी मिट्टी की आकृतियों को देख रहा था।

उसने ख़ुद से बुदबुदा कर कहा :

'यह तो सचमुच अजीब है। मैं क़सम खाकर कह सकता हूँ कि वहाँ दस फ़ौजी थे।'

V

जनरल मैकार्थर दायें-बायें करवटें बदल रहे थे।

नींद आने का नाम नहीं ले रही थी।

अँधेरे में उन्हें लगातार आर्थर रिचमण्ड का चेहरा नज़र आ रहा था।

उन्हें आर्थर पसन्द था—उससे उन्हें बेहद लगाव था। उन्हें ख़ुशी थी कि लेज़ली भी उसे पसन्द करती थी।

लेज़ली कितनी मनमौजी थी। ढेरों अच्छे लोग थे जिन पर वह नाक चढ़ा कर उन्हें 'नीरस' करार देती। 'नीरस !' बस, इसी तरह।

लेकिन आर्थर रिचमण्ड उसे नीरस नहीं लगा था। शुरू ही से उनकी अच्छी बनने लगी थी। वे साथ-साथ नाटकों और संगीत और फ़िल्मों की बातें करते। लेज़ली उसे चिढ़ाती, उसका मज़ाक़ उड़ाती, उसे तंग करती। और मैकार्थर को इस ख़याल से बड़ी ख़ुशी मिलती कि लेज़ली आर्थर में काफ़ी माँओं जैसी दिलचस्पी ले रही थी।

माँओं जैसी? वे कितने बेवक़ूफ़ थे जो यह नहीं याद रख पाये कि रिचमण्ड अट्ठाईस का था और लेज़ली उन्तीस की।

वे लेज़ली को प्यार करते थे। अब भी वे उसे देख सकते थे। उसका गोल चेहरा, नाचती हुई गहरी सलेटी आँखें और घने, भूरे, घुँघराले बाल। वे लेज़ली को प्यार करते थे और उसमें पूरी तरह विश्वास करते थे।

वहाँ, फ़्रान्स में, उस सारे नरक के बीच वह उन्हें याद आती और वे उसकी तस्वीर अपनी कमीज़ की सामने वाली जेब से निकाल कर देखते।

और तब—उन्हें अचानक पता चल गया था।

सब कुछ वैसे ही हुआ था जैसे किताबों में होता है। ग़लत लिफ़ाफ़े में चिट्ठी। लेज़ली ने उन दोनों को पत्र लिखे थे लेकिन उसने रिचमण्ड को लिखा पत्र अपने पति के लिफ़ाफ़े में रख दिया था। अब भी, इतने वर्षों के बाद भी जनरल मैकार्थर उस धक्के को—उस दर्द को—महसूस कर सकते थे...

हे भगवान ! कितनी तकलीफ़ हुई थी।

और यह मामला कुछ समय से चल रहा था। उस चिट्ठी से यह भी साफ़ हो गया था। सप्ताह के अन्त की छुट्टियाँ, रिचमण्ड का आख़िरी अवकाश...

लेज़ली—लेज़ली और आर्थर !

ख़ुदा की मार उस पर ! भाड़ में जाये उसका मुस्कराता चेहरा, उसका चुस्ती से 'येस, सर', कहना। झूठा और पाखण्डी। दूसरे आदमी की बीवी को चुरा ले जाने वाला।

धीरे-धीरे वह जमा होता चला गया था—वह ठण्डा, हत्यारा क्रोध।

वे अपना आम व्यवहार करते रहे थे—ताकि कुछ नज़र न आये।

उन्होंने रिचमण्ड के प्रति भी अपना बरताव ठीक पहले जैसा ही रखा था।

क्या वे सफल हुए थे? उनका तो यही ख़याल था। रिचमण्ड को कोई सन्देह नहीं हुआ था। मिज़ाज के उतार-चढ़ाव को बड़ी आसानी से वहाँ नज़रन्दाज़ कर दिया जाता था जहाँ लोगों की नसों पर हमेशा दबाव बना रहता था।

सिर्फ़ नौजवान आर्मिटेज ने एक-दो बार उनकी तरफ़ कुछ अजीब-सी दिलचस्पी से देखा था। अभी वह युवक ही था, लेकिन उसकी नज़र तेज़ थी, उस लड़के की।

जब समय आया—तब शायद आर्मिटेज ने भाँप लिया था।

उन्होंने जान-बूझ कर रिचमण्ड को मौत के पास भेज दिया था। सिर्फ़ एक चमत्कार ही उसे सही-सलामत वापस ला सकता था। वह चमत्कार घटित नहीं हुआ। हाँ, उन्होंने रिचमण्ड को मरने भेज दिया था और उन्हें अफ़सोस नहीं था। आसान था ऐसा करना। ग़लतियाँ आये दिन होती रहती थीं और अफ़सरों को बिना ज़रूरत ही मौत के मुँह में भेज दिया जाता था। हर तरफ़ अफ़रा-तफ़री थी, घबराहट थी। बाद में हो सकता था, लोग कहें 'मैकार्थर थोड़ा दबाव में आ कर नसों पर क़ाबू खो बैठा, कुछ भयंकर भूलें की, अपने कुछ बेहतरीन फ़ौजियों की क़ुर्बानी दे दी।' इससे ज़्यादा वे नहीं कह पाते।

लेकिन युवा आर्मिटेज अलग था। उसने अपने कमांडिंग अफ़सर को बड़ी अजीब निगाहों से देखा था। शायद उसे पता था कि रिचमण्ड को जान-बूझ कर मौत के मुँह में धकेला जा रहा था।

(लड़ाई के ख़त्म हो जाने के बाद—क्या आर्मिटेज ने कोई बात की थी?)

लेज़ली को पता नहीं चला था। लेज़ली अपने प्रेमी के लिए रोयी होगी (मैकार्थर ने अन्दाज़ा लगाया था) लेकिन जब तक वे इंग्लैण्ड वापस आये थे, रोना-धोना ख़त्म हो चुका था। उन्होंने उस पर कभी ज़ाहिर नहीं किया था कि उन्हें पता चल गया था। वे साथ रहते रहे थे—बस, जाने कैसे, वह अब पहले जैसी असली नहीं लगती थी। और फिर तीन या चार साल बाद

उसे डबल न्यूमोनिया हो गया था जिसमें वह जाती रही।

वह अर्सा पहले की बात थी। पन्द्रह साल—सोलह साल?

और उन्होंने फ़ौज छोड़ दी थी और डेवन में रहने आ गये थे—छोटी-सी जगह ख़रीद ली थी, जैसी वे हमेशा से चाहते थे। अच्छे पड़ोसी—दुनिया का एक अच्छा-सा कोना। थोड़ा-बहुत शिकार और मछली मारना भी। वे इतवार को गिरजे भी जाते। (लेकिन उस दिन नहीं जब बाइबल का वह हिस्सा पढ़ा जाने वाला था जिसमें डेविड उरिया को लड़ाई के सबसे अगले मोर्चे पर भेज देता है। इस हिस्से का सामना करना उनके लिए मुश्किल था। उन्हें बेचैनी-सी होने लगती थी।)

सबका रवैया बड़ा दोस्ताना और मिलनसार था। यानी, शुरू-शुरू में। बाद में उन्हें एक बेचैन-सा एहसास होने लगा था कि लोग उनकी पीठ-पीछे उनके बारे में बात कर रहे थे। जाने कैसे, पर वे उन्हें कुछ अलग ढंग से देखने लगे थे। मानो लोगों के कानों में कुछ पड़ा हो—कोई झूठी अफ़वाह...

(आर्मिटेज? फ़र्ज़ करें आर्मिटेज ने कुछ कहा हो)

उसके बाद वे लोगों से कतराने लगे थे—अपने में सिमट गये थे। यह महसूस करना सुखद नहीं था कि लोग आपकी चर्चा कर रहे थे।

और सब इतने अर्सा पहले की बात थी। अब-अब इतनी निरुद्देश्य लगती थी। लेज़ली पीछे कहीं विलीन हो गयी थी और आर्थर रिचमण्ड भी। जो कुछ हुआ था, उसका अब कोई मतलब नहीं जान पड़ता था।

हालाँकि इससे ज़िन्दगी में एक अकेलापन घर कर गया था। उन्होंने पुराने फ़ौजी दोस्तों से कतराना शुरू कर दिया था।

(अगर आर्मिटेज ने कुछ कहा होगा तो वे उस मामले के बारे में जान जायेंगे।)

और अब—इस शाम—एक छिपी हुई आवाज़ ने उस पुरानी कहानी को ऊँचे-ऊँचे सुना दिया था।

क्या उन्होंने उसका सामना ठीक ढंग से किया था? मज़बूत बने रहे थे? सही भावना का प्रदर्शन किया था—क्रोध, नफ़रत, लेकिन अपराध का

कोई भाव नहीं, कोई परेशानी नहीं? बताना मुश्किल था।

यक़ीनन किसी ने भी उस आरोप को गम्भीरता से नहीं लिया होगा। दूसरी बकवास भी तो थी ढेर सारी, उतनी ही मनघड़न्त। वह आकर्षक लड़की—आवाज़ ने उस पर एक बच्चे को डुबोने का आरोप लगाया था। मूर्खता थी ! कोई पागल था—बेसिर-पैर के इल्जाम इधर-उधर लगाता हुआ।

एमिली ब्रेण्ड ही को देखो। फ़ौजी रेजिमेंट के पुराने अफ़सर टॉम ब्रेण्ट की भतीजी। उस पर हत्या करने का आरोप जड़ दिया था। कोई भी एक आँख से देख सकता था कि वह औरत बेहद धर्म परायण थी—उन औरतों में से थी जो पादरियों के साथ उठती-बैठती हैं।

बेहद अजीबो-ग़रीब था यह सारा मामला ! पागलपन था। और कुछ नहीं।

जब से वे यहाँ आये थे—कब की बात है यह? अरे, कमबख़्त, इसी दोपहर की तो बात थी। लगती उससे बहुत ज़्यादा थी। उन्होंने सोचा : 'यही सोच रहा हूँ हम फिर कब यहाँ से निकल सकेंगे?' कल, निश्चय ही, जब उधर के तट से मोटरबोट आयेगी। अजीब है, ठीक इस क्षण उन्हें इस टापू से निकल भागने का बहुत मन नहीं कर रहा था... वापस दूसरे किनारे पर जाने का, अपने छोटे-से घर को लौटने का, वापस सभी परेशानियों और चिन्ताओं की तरफ़ जाने का। खुली हुई खिड़की से वे चट्टानों से टकराती लहरों को सुन सकते थे— थोड़ा पहले शाम को शोर जितना था, उससे थोड़ा और बढ़ गया था। हवा भी तेज़ होती जा रही थी...उन्होंने सोचा : सुकून-भरी आवाज़। सुकून-भरी जगह...उन्होंने सोचा : टापू के साथ सबसे अच्छी बात यह है कि एक बार वहाँ पहुँच जायें तो और आगे नहीं जाया जा सकता... आप चीज़ों के अन्त तक आ गये होते हैं...

अचानक वे जान गये कि वे टापू को छोड़ कर जाना नहीं चाहते थे।

VI

वेरा क्लेथॉर्न बिस्तर पर लेटी थी, एकदम जगी हुई, एकटक छत को घूरती हुई।

उसकी बग़ल में रखी बत्ती जल रही थी। उसे अँधेरे से डर लगता था।

वह सोच रही थी :

'ह्यूगो... ह्यूगो... जाने क्यों मुझे यह लग रहा है कि तुम आज रात मेरे इतना क़रीब हो?... कहीं बहुत नज़दीक हो...

'कहाँ है वह दरअसल? मैं नहीं जानती। मुझे कभी पता नहीं चलेगा। वह बस चला गया—सीधे—मेरी ज़िन्दगी से बाहर।'

ह्यूगो के बारे में न सोचने की कोशिश करना बेकार था। वह उसके पास था। उसे उसके बारे में सोचना ही था... याद करना था...कॉर्नवॉल का इलाक़ा...

काली चट्टानें, सपाट पीली रेत। हट्टी-कट्टी, ख़ुशमिज़ाज श्रीमती हैमिल्टन। सिरिल, हमेशा की तरह थोड़ा रिरियाता हुआ, उसके हाथ को खींचता हुआ।

'मैं उस चट्टान तक तैर कर जाना चाहता हूँ, मिस क्लेथॉर्न। मैं उस चट्टान तक क्यों तैर कर नहीं जा सकता?'

निगाहें उठा कर—ह्यूगों से आँखें चार करना—जो उसे देख रहा था।

वे शामें जब सिरिल सो गया होता।

'आइए थोड़ा टहलने चलें, मिस क्लेथॉर्न।'

'मेरा ख़याल है मैं चल सकती हूँ।'

समुद्र-तट तक वह मर्यादित चहलक़दमी। चाँदनी—अतलान्तिक की नरम हवा।

और फिर उसके गिर्द ह्यूगो की बाँहें।

'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ, प्यार करता हूँ, तुम जानती हो वेरा?'

हाँ, वह जानती थी।

(या सोचती थी कि वह जानती थी।)

'मैं तुमसे यह भी नहीं कह सकता कि मुझसे शादी कर लो। मेरे पास एक पैसा नहीं है। अपना ही ख़र्च चला लूँ तो बड़ी बात है। अजीब है, एक बार, तीन महीने तक मेरे सामने यह मौक़ा था कि मैं आगे चल कर एक अमीर आदमी बनने के बारे में सोच सकूँ। सिरिल का जन्म मॉरिस की

मौत के तीन महीने बाद हुआ था। अगर वह लड़की होता तो...'

अगर वह लड़की होता तो ह्यूगो को सारी जायदाद मिल जाती—सब कुछ। उसने माना था कि उसे निराशा हुई थी।

'मैंने उस पर कोई उम्मीदें नहीं बाँध रखी थीं। तो भी थोड़ा-सा झटका तो लगा ही था। ख़ैर, क़िस्मत का खेल है। सिरिल अच्छा बच्चा है। मुझे बेहद पसन्द है।' और वह सचमुच उसे पसन्द करता था। अपने छोटे-से भतीजे को ख़ुश करने या उसके साथ खेलने के लिए हमेशा तैयार रहता। ह्यूगो के स्वभाव में कोई द्वेष नहीं था।

सिरिल तगड़ा नहीं था। छोटा-सा कमज़ोर बच्चा था—कोई दम नहीं था उसमें। ऐसा बच्चा था जो बड़ा होने तक शायद ज़िन्दा न रह पाये...

और फिर—?

'मिस क्लेथॉर्न, मैं उस चट्टान तक क्यों नहीं तैर सकता?'

खिझाती हुई रिरियाहट, बार-बार।

'वह बहुत दूर है सिरिल!'

'लेकिन मिस क्लेथॉर्न...'

वेरा उठ खड़ी हुई। वह सिंगार मेज़ तक गयी और उसने ऐस्पिरिन की तीन गोलियाँ निगल लीं।

वह सोच रही थी :

'काश, मेरे पास नींद की कोई सही दवा होती।'

उसने सोचा :

'अगर *मैं* ख़ुदकुशी कर रही होती तो मैं वेरोनाल की ज़रूरत से ज़्यादा ख़ूराक लेती—या ऐसी ही कोई चीज़—साइनाइड नहीं।'

ऐण्टनी मार्सटन का बैंगनी विकृत चेहरा याद करके उसके शरीर में झुरझुरी उठी।

अँगीठी के पास से गुज़रते हुए उसने निगाहें उठा कर फ्रेम में मढ़ी तुकबन्दी को देखा :

'दस नन्हे फ़ौजी लड़के गये खाने को
गला घुट गया एक युवक का बाक़ी बच गये नौ।'

उसने सोचा :

'कितना भयंकर है—*ठीक आज शाम की तरह...*'

ऐण्टनी मार्सटन ने क्यों मरना चाहा था?

वह तो मरना नहीं चाहती थी।

वह तो मरने की इच्छा की कल्पना भी नहीं कर सकती थी...

मौत तो... दूसरे लोगों के लिए थी...

अध्याय 6

I

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग सपना देख रहे थे...

ऑपरेशन-कक्ष में बहुत गर्मी थी...

निश्चय ही उन्होंने तापमान बहुत ऊँचा कर रखा था? पसीना उनके चेहरे पर बह रहा था। उनके हाथ चिपचिपा रहे थे। नश्तर को मज़बूती से पकड़े रहना मुश्किल था...

कितना तेज़ था वह...

ऐसे तेज़ चाकू से हत्या करना आसान था। और यक़ीनन वे हत्या ही कर रहे थे...

उस औरत का शरीर कुछ अलग-सा दिख रहा था। वह एक भारी-भरकम, ढीला-ढाला शरीर था। यह तो दुबली-पतली देह थी। और चेहरा छिपा हुआ था।

कौन था जिसे उन्हें मारना था?

उन्हें याद नहीं आ रहा था। लेकिन उन्हें जानना ही था। क्या वे सिस्टर से पूछें?

सिस्टर उन्हें देख रही थी। नहीं, वे उससे नहीं पूछ सकते थे। वे देख सकते थे कि सिस्टर के मन में शक था।

लेकिन ऑपरेशन के लिए यह किसे मेज़ पर लिटाया गया था?

उन्हें चेहरा इस तरह ढँकना नहीं चाहिए था।

काश, वे सिर्फ़ चेहरा ही देख पाते...

आह, यह बेहतर था। एक युवा डॉक्टर रूमाल हटा रहा था।

एमिली ब्रेण्ट, बेशक। ये एमिली ब्रेण्ट थीं जिन्हें उन्हें मारना था। कैसी दुर्भावना थी उनकी आँखों में ! उनके होंट हिल रहे थे। क्या कह रही थीं वे?

'ज़िन्दगी के बीचों बीच हम मौत के आमने-सामने हैं।'

वे अब हँस रही थीं। नहीं, नर्स, रूमाल वापस मत रखो। मुझे देखना है। मुझे बेहोशी की दवा देनी है। ईथर कहाँ है? मैं ईथर अपने साथ ज़रूर

लाया हूँगा। तुमने ईथर का क्या किया है, सिस्टर? यह तो इत्र है, फ़्रान्सीसी। हाँ, इससे भी बख़ूबी काम चल जायेगा।

रूमाल हटा लो, नर्स।

बेशक ! मैं हमेशा से जानता था। यह ऐण्टनी मार्सटन है ! उसका चेहरा नीला और ऐंठा हुआ है। लेकिन वह मरा नहीं है, वह हँस रहा है। मैं बता रहा हूँ तुम्हें, वह हँस रहा है। वह ऑपरेशन की मेज़ को हिलाये दे रहा है।

देखो, सँभलो ज़रा, भले आदमी। नर्स, थामो इसे, सँभालो...

एक झटके से डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग जाग गये। सुबह हो चुकी थी। धूप कमरे में आ रही थी।

और कोई उनके ऊपर झुका हुआ था—उन्हें हिला रहा था। रॉजर्स था। रॉजर्स, जिसका चेहरा सफ़ेद पड़ा हुआ था, कह रहा था:

'डॉक्टर-डॉक्टर !'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग पूरी तरह जाग गये।

वे बिस्तर में उठ बैठे। उन्होंने तीखे स्वर में कहा :

'क्या बात है?'

'मेरी पत्नी, डॉक्टर। *मैं उसे जगा रहा हूँ, वह उठती नहीं।* हे भगवान ! वह जाग ही नहीं रही। और...और मुझे तो वह ठीक नहीं लग रही।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग जल्दी से उठे और ड्रेसिंग गाउन पहन कर रॉजर्स के पीछे-पीछे गये।

उन्होंने उस पलँग पर झुक कर उस औरत का मुआयना किया जो एकदम शान्ति से एक करवट लेटी हुई थी। उन्होंने उसका ठण्डा हाथ उठाया, पलकें उठा कर आँखें देखीं। कुछ मिनट बाद वे सीधे हुए और पलँग से मुड़े।

रॉजर्स फुसफुसाया :

'क्या—वह—क्या वह—?'

उसने अपने सूखे होंटों पर ज़बान फेरी।

आर्मस्ट्रॉन्ग ने सिर हिलाया।

'हाँ, वह गुज़र गयी है।'

उनकी आँखें अपने सामने खड़े आदमी पर सोचते हुए अन्दाज़ में टिकीं। फिर वे पलँग के पास रखी मेज़ से होते हुए वॉश बेसिन तक गयीं और फिर लौट कर लेटी हुई औरत पर आ गयीं।

रॉजर्स ने कहा :

'क्या यह—क्या यह—दिल का दौरा था, डॉक्टर?'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग मिनट-दो मिनट ख़ामोश रहे। फिर उन्होंने कहा :

'आम तौर पर इसकी सेहत कैसी थी?'

रॉजर्स ने कहा :

'थोड़ी-सी गठिये की शिकायत थी।'

'हाल में किसी डॉक्टर का इलाज चल रहा था?'

'डॉक्टर?' रॉजर्स एकटक उन्हें देखता रहा। 'बरसों से किसी डॉक्टर के पास नहीं गये—हम में से कोई भी।'

'तुम्हें यह अन्दाज़ा तो नहीं था कि उसे दिल की बीमारी थी?'

'नहीं डॉक्टर, मुझे तो कुछ नहीं मालूम।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने पूछा :

'क्या इसे ठीक से नींद आती थी?'

अब रॉजर्स की आँखें उनकी आँखों से कतरा गयीं। उसके हाथ एक-दूसरे से जुड़ कर ऐंठने लगे। उसने बुदबुदा कर कहा :

'वह बहुत अच्छी तरह नहीं सोती थी...'

डॉक्टर ने फ़ौरन पूछा :

'क्या वह नींद के लिए कुछ लेती थी?'

रॉजर्स उन्हें चकित होकर घूरता रह गया।

'कुछ लेती थी? नींद लाने के लिए? मेरी जानकारी में तो नहीं। मुझे विश्वास है, वह नहीं लेती थी।'

आर्मस्ट्रॉन्ग वॉश बेसिन के पास गये।

उसके ऊपर बने ताक में कुछ बोतलें थीं। सिर में लगाने का तेल, गुलाब जल, हाथों को नरम करने के लिए ग्लिसरीन, दाँत का मंजन और

कुछ और इसी तरह का सामान।

रॉजर्स ने सिंगार-मेज़ के दराज़ खोल-खोल कर मदद की। वहाँ से वे दूसरी दराज़ों वाली अलमारी पर गये। लेकिन नींद की दवा या गोलियों का कोई निशान नहीं था।

रॉजर्स ने कहा :

'इसने कल रात और कुछ नहीं लिया सिवा उसके जो आपने दिया था...'

II

जब नौ बजे नाश्ते की घण्टी बजी तो सभी उठ चुके थे और बुलाये जाने का इन्तज़ार कर रहे थे।

जनरल मैकार्थर और जस्टिस वॉरग्रेव बाहर टेरेस पर चहल-क़दमी करते हुए, राजनैतिक स्थिति पर बेमन से टीका-टिप्पणी कर रहे थे।

वेरा क्लेथॉर्न और फ़िलिप लॉम्बार्ड घर के पीछे टापू के शिखर तक गये थे। वहाँ उन्होंने विलियम हेनरी ब्लोर को खड़े-खड़े दूसरे किनारे की तरफ़ एकटक देखते पाया था।

उसने कहा :

'अभी तक उस मोटरबोट का कोई नाम-निशान नहीं। मैं उसकी ताक लगाये हुए हूँ।'

वेरा ने मुस्कराते हुए कहा :

'डेवन के लोग सोने में माहिर हैं। यहाँ सब कुछ आम तौर पर देर से होता है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड दूसरी तरफ़ देख रहा था—दूर, समुद्र की ओर।

उसने अचानक कहा :

'मौसम के बारे में क्या ख़याल है?'

आसमान की तरफ़ देखते हुए, ब्लोर ने कहा :

'मुझे तो ठीक ही लगता है।'

लॉम्बार्ड ने सीटी बजाने के अन्दाज़ में होंटों को सिकोड़ा।

उसने कहा :

'दिन के ख़त्म होने से पहले तेज़ हवा चलने लगेगी।'

ब्लोर ने कहा :

'आँधी आयेगी, क्या?'

उन्हें नीचे से घण्टी की आवाज़ सुनायी दी।

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'नाश्ता? इसी की ज़रूरत थी।'

गहरी ढलान पर उतरते हुए ब्लोर ने सोचने के अन्दाज़ में लॉम्बार्ड से कहा :

'पता है, मुझे समझ में नहीं आया—वह नौजवान अपनी जान क्यों लेना चाहता था? मैं सारी रात उसके बारे में सोचता रहा हूँ।'

वेरा थोड़ा आगे बढ़ गयी थी। लॉम्बार्ड थोड़ा पीछे को हो गया। उसने कहा :

'कोई दूसरा ख़याल है?'

'सबूत चाहिए होगा। सबसे पहले तो कारण, उद्देश्य। मेरे हिसाब से तो अच्छा पैसे वाला था।'

एमिली ब्रेण्ट बैठक की आदम-क़द खिड़की से बाहर उनसे मिलने चली आयीं।

उन्होंने तीखी आवाज़ में पूछा :

'नाव आ रही है?'

'अभी नहीं', वेरा बोली।

वे नाश्ते के लिए अन्दर गये। दीवार से लगी बड़ी सी मेज़ पर एक बहुत बड़ी प्लेट पर तले हुए अण्डे और बेकन रखा था और उसके साथ ही चाय और कॉफ़ी।

रॉजर्स ने उनके गुज़रने के लिए दरवाज़ा खोले रखा, फिर उसे बाहर से बन्द कर दिया।

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'इस आदमी की तबियत ख़राब लग रही है, आज सुबह।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने, जो खिड़की के पास खड़े थे, अपना गला साफ़

किया और बोले :

'आप सब को किसी भी कमी को—अ—नज़रन्दाज़ करना होगा आज सुबह। रॉजर्स को सब काम अकेले दम करना पड़ा है। श्रीमती रॉजर्स—अ—आज सुबह हाथ नहीं बटा पायी।'

एमिली ब्रेण्ट ने फ़ौरन पूछा :

'क्या हुआ है उस औरत को?'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने सहज भाव से कहा :

'आइए नाश्ता शुरू करें। ठण्डा हो जायेगा। बाद में कई बातें हैं जिनकी चर्चा मैं आप सबसे करना चाहता हूँ।'

उन्होंने इशारा समझ लिया। तश्तरियों में नाश्ता लिया गया, कॉफ़ी और चाय ढाली गयी और नाश्ता शुरू हुआ।

टापू की चर्चा पर आपसी सहमति से पाबन्दी लगी हुई थी। इसकी बजाय वे उखड़े-उखड़े ढंग से ताज़ा ख़बरों के बारे में बातें करते रहे। विदेश की ख़बरें, खेल जगत की घटनाएँ, वग़ैरा, वग़ैरा।

फिर, जब तश्तरियाँ हटा ली गयीं, तब डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने अपनी कुर्सी थोड़ा पीछे सरकायी, गला साफ़ करते हुए सबका ध्यान अपनी तरफ़ खींचा और बात शुरू की।

उन्होंने कहा :

'मैंने सोचा था कि बेहतर होगा, नाश्ता ख़त्म कर लिया जाये और तभी आपको एक बुरी ख़बर बतायी जाये। श्रीमती रॉजर्स कल रात नींद ही में चल बसीं।'

उनकी बात सुनकर चौंकी हुई और सदमे से भरी प्रतिक्रियाएँ आयीं।

वेरा ने उत्तेजित स्वर में कहा :

'कैसी भयानक बात है ! जब से हम आये इस टापू पर दो मौतें भी हो गयीं।'

आँखें सिकोड़ कर जस्ट्रिस वॉरग्रेव ने अपनी हल्की, स्पष्ट, दो-टूक आवाज़ में कहा :

'हूँ...ऊ।—यह तो बहुत अजीब है—मौत की वजह क्या थी?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कन्धे उचका दिये।

'ऐसे तो कहना असम्भव है।'

'लाश की जाँच तो होगी?'

'मैं निश्चय ही कोई सर्टिफ़िकेट नहीं दे सकता। मुझे उस औरत की सेहत के बारे में कोई जानकारी नहीं है।'

वेरा ने कहा :

'वह बहुत घबरायी-घबरायी दिखने वाली औरत थी। और कल रात उसे धक्का भी लगा। हो सकता है, दिल की धड़कन रुक गयी हो?'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने रुखाई से कहा :

'उसके दिल ने तो निश्चय ही धड़कना बन्द कर दिया था—लेकिन किस कारण से बन्द हुआ यही सवाल है।'

एमिली ब्रेण्ट के मुँह से बस एक शब्द निकला और वह सुनने वालों के झुण्ड में सख्ती से और साफ़-साफ़ जा गिरा।

'अन्तरात्मा !' उन्होंने कहा।

आर्मस्ट्रॉन्ग उनकी तरफ़ मुड़े।

'इससे आपका सही-सही क्या मतलब है, मिस ब्रेण्ट?'

एमिली ब्रेण्ट, जिनके होंट कसे हुए और सख़्त थे, बोलीं :

'आप सबने सुना। उस पर आरोप था कि उसने जान-बूझकर अपने पति के साथ मिल कर अपनी पुरानी मालकिन—एक बूढ़ी औरत—की हत्या कर दी थी।'

'और आपका ख़याल है...?'

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'मेरा ख़याल है कि वह आरोप सच्चा है। आप सबने उसे कल रात देखा था। वह पूरी तरह टूट गयी और बेहोश होकर गिर पड़ी। अपनी दुष्टता को इस तरह सबके सामने उजागर होते देखने का सदमा उस पर भारी पड़ा। वह डर के मारे मर गयी।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने सन्देह से सिर हिलाया।

'हो सकता है यह धारणा सम्भव हो', वे बोले। 'लेकिन बिना उसकी

सेहत की हालत का सही पता लगाये, इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। अगर दिल की कमज़ोरी थी...'

एमिली ब्रेण्ट ने आहिस्ता से कहा :

'आपको ठीक लगे तो आप इसे ईश्वर की करनी कह लीजिए।'

ऐसा लगा कि सभी को झटका लगा है। ब्लोर ने बेचैन लहजे में कहा :

'यह तो बात को बहुत दूर तक खींचना हुआ, मिस ब्रेण्ट।'

मिस ब्रेण्ट ने उन्हें चमकती हुई आँखों से देखा। उनकी ठोढ़ी तन गयी। उन्होंने कहा :

'आप इसे असम्भव समझते हैं कि किसी पापी को ईश्वर का क्रोध भुगतना पड़े, लेकिन मैं ऐसा नहीं मानती।'

जज ने अपनी ठोढ़ी सहलायी। उन्होंने हल्के-से व्यंग-भरे लहजे में कहा :

'मिस ब्रेण्ट, बुरे कामों के सिलसिले में मेरा अनुभव यही रहा है कि विधाता अपराधी घोषित करने और सज़ा देने का काम हम मनुष्यों को ही सौंप देता है और यह काम अनेक कठिनाइयों से भरा है। इसमें कोई छोटा रास्ता नहीं है।'

एमिली ब्रेण्ट ने अपने कन्धे उचका दिये।

ब्लोर ने अचानक पूछा :

'रात को जब वह सोने के लिए ऊपर गयी तो उसके बाद उसने क्या खाया-पिया?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'कुछ नहीं।'

'उसने कुछ नहीं खाया-पिया? चाय? या पानी? मैं शर्त लगा सकता हूँ, उसने चाय पी होगी। उस तरह के लोग हमेशा पीते हैं।'

'रॉजर्स ने मुझे पक्के तौर पर कहा है कि उसकी पत्नी ने कुछ नहीं खाया-पिया था।'

'आह !' ब्लोर ने कहा। 'मगर वह तो ऐसा कहेगा ही।'

उसके लहजे में कुछ ऐसा था कि डॉक्टर ने तेज़ निगाह से उसे घूरा।

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'तो यह तुम्हारा विचार है?'

ब्लोर ने आक्रामक स्वर में कहा :

'ख़ैर, क्यों नहीं? हम सबने कल रात वह आरोप सुना ही था। हो सकता है, पूरी बकवास हो—महज़ पागलपन ! दूसरी तरफ़ ऐसा नहीं भी हो सकता। पल भर के लिए मान कर देखो कि वह सच है। रॉजर्स और उसकी पत्नी ने उस बूढ़ी औरत को ठिकाने लगा दिया। कहाँ पहुँचे आप? वे तो उसके बारे में काफ़ी सुरक्षित और सुखी महसूस करते रहे हैं।'

वेरा ने बीच में बात काटी। धीमी आवाज़ में उसने कहा—

'नहीं, मेरे ख़याल से श्रीमती रॉजर्स ने कभी ख़ुद को सुरक्षित नहीं महसूस किया।'

ब्लोर इस हस्तक्षेप से थोड़ा खीझा हुआ लगा। उसकी निगाह जैसे कह रही थी, 'बिलकुल औरतों की तरह।'

उसने बात जारी रखी :

'हो सकता है ऐसा हो। बहरहाल, जहाँ तक उन्हें पता है, उन पर कोई ख़तरा नहीं मँडरा रहा। फिर कल रात कोई अनजान पागल भाँडा फोड़ देता है। क्या होता है? वह औरत टूट जाती है—बिखर जाती है। देखिए, जब उसे होश आ रहा था तो उसका पति कैसे उस पर मँडरा रहा था। यह सब पति की चिन्ता-फ़िक्र नहीं थी। बिलकुल नहीं। वह गरम ईंटों पर बिल्ली की तरह नाच रहा था। डरा हुआ था कि जाने उसकी बीवी क्या न कह दे। और यह है स्थिति—आप सब के लिए। उन्होंने एक हत्या की और बेदाग़ बच निकले। लेकिन अगर गड़े मुर्दे उखाड़े जायेंगे तब क्या होगा? वह औरत शर्तिया तौर पर भेद खोल देगी। उसमें खड़े होकर मुक़ाबला करने का दम नहीं है। वह अपने पति के लिए जीता-जागता ख़तरा है। बिलकुल, यही है वह। आदमी ठीक है। वह अन्त तक चेहरे पर शिकन लाये बग़ैर झूठ बोलता रहेगा—लेकिन वह औरत के बारे में पक्के तौर पर भरोसा नहीं कर सकता। और अगर उसने अपना आपा खो दिया तो यह गया काम से। इसलिए वह चाय में कुछ मिला देता है और इस बात का

पक्का इन्तज़ाम कर लेता है कि उसका मुँह हमेशा के लिए बन्द रहे।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने धीरे-धीरे कहा :

'उसके पलँग के पास कोई ख़ाली प्याला नहीं था—वहाँ कुछ भी नहीं था। मैंने तलाश किया था।'

ब्लोर ने नाक से साँस छोड़ते हुए कहा :

'यक़ीनन वहाँ कुछ न होता। पहला काम वह यही करता कि जैसे ही वह चाय पी लेती, वह कप-प्लेट ले जा कर सावधानी से धो देता।'

चुप्पी छा गयी। फिर जनरल मैकार्थर ने सन्देह के साथ कहा :

'हो सकता है। लेकिन मुझे यह मानने में एतराज़ है कि कोई आदमी ऐसा करेगा—अपनी पत्नी के साथ।'

ब्लोर संक्षिप्त-सी हँसी हँसा।

वह बोला :

'जब किसी आदमी की गर्दन फँसी हो तो वह भावना आदि के बारे में बहुत सोच-विचार नहीं करता।'

ख़ामोशी छा गयी। इससे पहले कि कोई बोल पाता, दरवाज़ा खुला और रॉजर्स अन्दर आया।

एक-एक करके सब पर नज़र डालते हुए उसने पूछा :

'क्या मुझे आपके लिए कुछ और लाना है?'

जस्टिस वॉरग्रेव अपनी कुर्सी में थोड़ा हिले।

उन्होंने पूछा :

'आम तौर पर मोटरबोट किस समय यहाँ आती है?'

'सात और आठ बजे के बीच, सर। कभी-कभी आठ से थोड़ा ऊपर हो जाता है। पता नहीं फ़्रेड नैराकॉट आज सुबह क्या कर रहा होगा। अगर उसकी तबियत ख़राब होती तो वह अपने भाई को भेज देता।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'अब क्या समय है?'

'दस बजने में दस मिनट बाक़ी हैं, सर।'

लॉम्बार्ड की त्योरियाँ चढ़ गयीं। उसने धीरे-धीरे सिर ऊपर-नीचे

हिलाया।

रॉजर्स एक-दो मिनट रुका रहा।

जनरल मैकार्थर अचानक और फट पड़ते हुए बोले :

'तुम्हारी पत्नी का सुनकर अफ़सोस हुआ, रॉजर्स। डॉक्टर ने अभी अभी बताया।'

'जी, सर। शुक्रिया।'

उसने ख़ाली बरतन उठाये और बाहर चला गया।

फिर एक बार चुप्पी छा गयी।

III

बाहर टेरेस पर फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'उस मोटरबोट के बारे में...'

ब्लोर ने उसकी तरफ़ देखा।

ब्लोर ने सिर हिलाया।

उसने कहा :

'मैं जानता हूँ आप क्या सोच रहे हैं, मिस्टर लॉम्बार्ड। मैंने ख़ुद से भी यही सवाल किया है। मोटरबोट को तो दो घण्टे पहले ही यहाँ आ जाना चाहिए था। वह आयी नहीं। क्यों भला?'

'कोई जवाब है?' लॉम्बार्ड ने पूछा।

'*यह संयोग नहीं है*—यही मैं कहता हूँ। यह इस पूरे मामले का हिस्सा है। यह सब एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'तुम्हारा ख़याल है, वह आयेगी नहीं?'

उनके पीछे से एक आवाज़ आयी—चिड़चिड़ी और अधीर।

'मोटरबोट नहीं आने वाली', उसने कहा।

ब्लोर ने अपने चौड़े कन्धे को थोड़ा-सा मोड़ा और सोचते हुए बोलने वाले पर निगाह डाली।

'आप भी ऐसा ही सोचते हैं, जनरल?'

जनरल मैकार्थर ने तीखी आवाज़ में कहा :

'यह पक्का है कि वह नहीं आयेगी। हम मोटरबोट पर आस लगाये बैठे हैं कि वह हमें इस टापू से निकाल ले जाये। यही इस पूरे कारोबार का मतलब है। *हम टापू से बाहर नहीं निकलने वाले*... हम में से कोई नहीं निकल पायेगा... यह अन्त है... समझे... हर चीज़ का अन्त...'

वे रुके, फिर उन्होंने अजीब-सी धीमी आवाज़ में कहा :

'यह शान्ति है—असली शान्ति। अन्त तक पहुँचना... फिर आगे न जाना... हाँ, शान्ति...'

वे अचानक मुड़े और फिर दूसरी दिशा में चले गये। टेरेस के साथ-साथ, फिर ढलान पर समुद्र की तरफ़—तिरछे—टापू के छोर पर जहाँ ढीली, लुढ़की चट्टानें पानी के अन्दर तक चली गयी थीं।

वे थोड़ा डगमगाते हुए चल रहे थे, जैसे आधा जगा आदमी।

ब्लोर ने कहा :

'वे रहे एक और जो खिसके हुए हैं ! लगता है अन्त यही होगा कि सब ऐसे ही हो जायेंगे।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'मेरे ख़याल में *तुम* इस रास्ते नहीं जाओगे।'

पूर्व-इंस्पेक्टर हँसा।

'मेरा दिमाग़ इतनी आसानी से ख़राब नहीं होने वाला', उसने रुखाई से आगे जोड़ा। 'और मुझे नहीं लगता आप भी उस राह पर जायेंगे, मिस्टर लॉम्बार्ड।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं इस वक़्त तो अपने पूरे होश-हवास में हूँ, तुम्हारी कृपा से।'

IV

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग टेरेस पर निकल आये। वे हिचकिचाते हुए वहाँ खड़े रहे। उनकी बायीं तरफ़ ब्लोर और लॉम्बार्ड था। उनकी दायीं तरफ़ जस्टिस वॉरग्रेव, जो सिर झुकाये धीरे-धीरे चहलक़दमी कर रहे थे।

थोड़ी देर की शशो-पंज के बाद आर्मस्ट्रॉन्ग जज की तरफ़ मुड़े।

लेकिन उसी समय रॉजर्स तेज़ी से घर के बाहर निकला।

'क्या मैं आपसे एक बात कर सकता हूँ, सर?'

आर्मस्ट्रॉन्ग मुड़े।

उन्होंने जो देखा उससे वे हैरत में पड़ गये।

रॉजर्स का चेहरा फड़क रहा था। उसका रंग सलेटी-हरा हो गया था। उसके हाथ हिल रहे थे।

कुछ मिनट पहले के उसके संयम से यह इतना उलट था कि आर्मस्ट्रॉन्ग को काफ़ी धक्का लगा।

'सर, अगर आप एक मिनट के लिए अन्दर आ जायें, आपसे एक बात करनी है।'

डॉक्टर मुड़े और घबराये हुए बटलर के साथ दोबारा घर में दाख़िल हुए। उन्होंने कहा :

'क्या बात है, रॉजर्स? क़ाबू करो ख़ुद पर।'

'यहाँ सर, इधर आइए।'

उसने खाने के कमरे का दरवाज़ा खोला। डॉक्टर अन्दर चले गये। रॉजर्स उनके पीछे आया और उसने अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर दिया।

'हाँ, अब कहो', आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा, 'क्या मामला है?'

रॉजर्स के गले की पेशियाँ हिल रही थीं। वह थूक गटक रहा था। उसने झटके से कहा :

'कुछ ऐसा हो रहा है, सर, जो मेरी समझ में नहीं आ रहा।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कड़ी आवाज़ में कहा :

'ऐसा क्या? क्या हो रहा है?'

'आप सोचेंगे, मैं पगला गया हूँ सर। आप कहेंगे कि कुछ नहीं हुआ है। लेकिन इसकी कोई तो सफ़ाई होनी चाहिए। क्योंकि इसका कुछ मतलब नहीं निकल रहा।'

'पहेलियाँ मत बुझाओ, रॉजर्स। साफ़-साफ़ बताओ।'

रॉजर्स ने फिर थूक निगला।

वह बोला :

'वो छोटे-छोटे पुतले, सर। मेज़ के बीच में। चीनी मिट्टी के पुतले। दस

थे वहाँ। मैं क़सम खा सकता हूँ, दस थे।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'हाँ, दस थे। हमने कल रात खाने के समय गिना था उन्हें।'

रॉजर्स और पास आ गया।

'यही बात है, सर। कल रात जब मैं साफ़-सफ़ाई कर रहा था, तो नौ थे सर। मैंने ग़ौर किया था और सोचा कि बहुत अजीब है। और अब सर, आज सुबह, जब मैंने नाश्ता लगाया तो ध्यान नहीं दिया। मैं परेशान था, सर। लेकिन अभी जब मैं नाश्ते के बाद सफ़ाई कर रहा था तो मैंने देखा। आप भी देखिए, सर, अगर आपको मुझ पर भरोसा नहीं है। *वहाँ सिर्फ़ आठ हैं, सर!* सिर्फ़ आठ। इसका क्या मतलब है, सर?... *सिर्फ़ आठ...*'

अध्याय 7

I

नाश्ते के बाद एमिली ब्रेण्ट ने वेरा क्लेथॉर्न के सामने सुझाव रखा था कि वे एक बार फिर चोटी पर चल कर नाव को देखें। वेरा तैयार हो गयी।

हवा तेज़ हो गयी थी। समुद्र की लहरों पर फेन के छोटे-छोटे शिखर बन रहे थे। मछुआरों की एक भी नाव नहीं निकली थी और मोटरबोट का भी कोई निशान नहीं था।

स्टिकलहेवन का गाँव तो दिखायी नहीं दे रहा था, सिर्फ़ उसके ऊपर की पहाड़ी नज़र आ रही थी—बाहर को निकला लाल चट्टानी कगार जिसने असली छोटी-सी खाड़ी को छिपा रखा था।

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'जो आदमी कल हमें यहाँ लाया था, वह भरोसे योग्य आदमी लगता था। यह सचमुच बहुत अजीब है कि आज सुबह उसने इतनी देर कर दी।'

वेरा ने जवाब नहीं दिया। वेरा अन्दर से उठती घबराहट की लहर को दबाने की कोशिश कर रही थी।

उसने मन-ही-मन गुस्से से कहा :

'तुम्हें दिमाग़ को ठण्डा रखना है। ऐसा तो तुम्हारा स्वभाव नहीं ही है। तुम्हें तो हमेशा अपनी नसों पर क़ाबू रहा है।'

एक-दो मिनट के बाद उसने मिस ब्रेण्ट से कहा :

'काश, वह आ जाता। मैं—मैं यहाँ से निकलना चाहती हूँ।'

एमिली ब्रेण्ट ने रुखाई से कहा :

'बेशक, हम सब यही चाहते हैं।'

वेरा ने कहा :

'यह सब इतना अनोखा है... इसमें कोई तुक नहीं लगता, ज़रा भी नहीं।'

उसके बग़ल में खड़ी बुज़ुर्ग महिला ने तेज़ी से कहा :

'मैं अपने पर नाराज़ हूँ कि इतनी आसानी से धोखे में आ गयी। सचमुच, जब क़ायदे से देखा जाय तो वह चिट्ठी बिलकुल बेतुकी है।

लेकिन उस समय मुझे कोई सन्देह नहीं हुआ—रत्ती भर नहीं।'

वेरा ने मशीनी ढंग से कहा : 'हाँ, मैं भी यही सोचती हूँ।'

'हम लोग बहुत जल्दी भरोसा कर लेते हैं', एमिली ब्रेण्ट ने कहा।

'वेरा ने गहरी साँस ली और उसे झुरझुरी आयी।'

उसने कहा :

'क्या आप सचमुच वही सोचती हैं—जो आपने नाश्ते के वक़्त कहा?'

'थोड़ा और साफ़-साफ़ कहो, बच्ची। किस चीज़ के बारे में बात कर रही हो?'

वेरा ने धीमी आवाज़ में कहा :

'क्या आपको सचमुच लगता है कि रॉजर्स और उसकी पत्नी ने उस बूढ़ी महिला को ठिकाने लगाया?'

एमिली ब्रेण्ट ने सोचते हुए दूर समुद्र की तरफ़ निहारा। फिर वे बोलीं :

'निजी तौर पर, मुझे इसका पूरा विश्वास है। तुम्हारा क्या ख़याल है?'

'मुझे कुछ पता नहीं कि क्या सोचूँ।'

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'हर बात इस विचार को पक्का करती है। जिस तरह वह औरत बेहोश हुई। और उस आदमी के हाथ से ट्रे गिरी, याद है। फिर जिस तरह उसने उस बारे में बात की—उसमें सच्चाई नहीं झलक रही थी। मुझे तो पूरा यक़ीन है कि उन्होंने वह किया था।'

वेरा बोली :

'जैसा वह दिख रही थी—ख़ुद अपनी छाया से डरी हुई। मैंने कभी किसी औरत को इतना डरा हुआ नहीं देखा... उस पर वह घटना हमेशा हावी रही होगी...'

मिस ब्रेण्ट ने बुदबुदा कर कहा :

'मुझे एक बात याद है जो बचपन में मेरे कमरे में लिख कर टाँगी गयी थी। *''याद रखो तुम्हारे पाप तुम्हें खोज लेंगे।''* यह बात बहुत सच है, हाँ। *याद रखो तुम्हारे पाप तुम्हें खोज लेंगे।'*

वेरा उठ कर खड़ी हो गयी। उसने कहा :

'लेकिन मिस ब्रेण्ट—मिस ब्रेण्ट—उस हालत में—'

'हाँ, हाँ, कहो?'

'दूसरे लोग? दूसरे लोगों का क्या होगा?'

'मुझे तुम्हारी बात समझ में नहीं आयी।'

'बाक़ी दूसरे आरोप—वे—वे सच्चे नहीं थे? लेकिन अगर वे रॉजर्स और श्रीमती रॉजर्स के बारे में सही हैं तो—' वह रुक गयी—अपने उलझे हुए विचारों को स्पष्ट न कर पाने के कारण।

एमिली ब्रेण्ट के माथे पर जो बल पड़े हुए थे, वे साफ़ हो गये।

उन्होंने कहा :

'आह, अब मैं तुम्हारी बात समझी। ख़ैर, देखो मिस्टर लॉम्बार्ड को। वे मानते हैं कि उन्होंने बीस लोगों को मरने के लिए छोड़ दिया था।'

वेरा ने कहा : 'वे सिर्फ़ आदिवासी थे...'

एमिली ब्रेण्ट ने तीखे स्वर में कहा :

'काले थे या गोरे, वे हमारे भाई थे।'

वेरा ने सोचा :

'हमारे काले भाई—हमारे काले भाई। ओह, मुझे हँसी आ रही है। पगला रही हूँ मैं। अपने आपे में नहीं हूँ...'

एमिली ब्रेण्ट ने सोचते हुए बात जारी रखी।

'यह ठीक है कि उनमें से कुछ आरोप हास्यास्पद और मनघड़न्त-से लगते थे। मिसाल के लिए जज के ख़िलाफ़, जो सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ पूरा कर रहा था। और उस इंस्पेक्टर के बारे में। मेरे अपने मामले में भी।'

वे रुकीं फिर कहती गयीं :

'कुदरती तौर पर, परिस्थितियों को देखते हुए, मैं कल रात कुछ नहीं कहने वाली थी। वह इन भद्र लोगों के सामने बात करने लायक़ विषय नहीं था।'

'नहीं?'

वेरा दिलचस्पी से सुनती रही। मिस ब्रेण्ट इत्मीनान से बताती रहीं।

'बिएट्रिस टेलर मेरे यहाँ काम करती थी। *अच्छी लड़की नहीं थी—*

जैसा कि मुझे बहुत देर से पता चला। उसे ले कर मुझे बहुत धोखा हुआ। उसका रंग-ढंग अच्छा था और वह बहुत साफ़-सुथरी लगने वाली थी। मैं उससे बहुत ख़ुश थी। लेकिन वह सब पाखण्ड था। उसका चाल-चलन ठीक नहीं था और वह एक गिरी हुई लड़की थी। नफ़रत के लायक़। कुछ समय बीत चुका था जब मुझे पता चला कि वह जिसे कहते हैं "परेशानी में" थी।' वे रुकीं। उनकी नाक घृणा से सिकुड़ गयी। 'मुझे बहुत झटका लगा। उसके माता-पिता भी भले लोग थे जिन्होंने उसे कड़ाई से पाला-पोसा था। मुझे यह कहते हुए ख़ुशी है कि उन्होंने भी उसकी करतूत को ठीक नहीं कहा।'

वेरा ने मिस ब्रेण्ट को एकटक देखते हुए पूछा :

'क्या हुआ?'

'मैंने उसे एक घण्टा भी अपने घर में रहने नहीं दिया। कोई कभी यह नहीं कह सकता कि मैंने बुरे चाल-चलन को मंज़ूर किया है।'

वेरा ने धीमी आवाज़ में कहा :

'फिर उसे क्या हुआ?'

'उस गिरी हुई लड़की ने अपनी आत्मा पर एक पाप के बोझ पर उससे भी बड़े पाप का बोझ लाद लिया। उसने ख़ुद अपनी जान ले ली।'

वेरा ने आतंकित स्वर में फुसफुसा कर कहा :

'उसने आत्म-हत्या कर ली?'

'हाँ, वह नदी में कूद गयी।'

वेरा को कँपकँपी आयी।

उसने मिस ब्रेण्ट के शान्त नाज़ुक चेहरे को देखा। उसने कहा :

'जब आपको पता चला कि उसने ऐसा कर लिया है तो आपको कैसा लगा? क्या आपको अफ़सोस नहीं हुआ? आपने ख़ुद को दोषी नहीं ठहराया?'

मिस ब्रेण्ट सीधी तन गयीं।

'मैं? मैंने ऐसा कुछ नहीं किया था कि अपनी लानत-मलामत करती।'

वेरा बोली :

'लेकिन अगर आपकी कठोरता ने उसे यह क़दम उठाने को मजबूर किया तो?'

एमिली ब्रेण्ट ने तीखे स्वर में कहा :

'उसकी अपनी करतूत—उसका अपना पाप—वही था जिसने उसे उस तरफ़ धकेला। अगर उसने एक भली नेक औरत की तरह बरताव किया होता तो ऐसा कुछ भी नहीं होता।'

उन्होंने मुड़ कर वेरा को देखा। उनकी आँखों में कोई ग्लानि, कोई बेचैनी नहीं थी। वे कठोर और निर्मम थीं। उनमें दम्भ था। एमिली ब्रेण्ट सोल्जर आइलैण्ड के शिखर पर ख़ुद अपने सदाचार का लबादा ओढ़े बैठी थीं।

अब वह बुज़ुर्ग अविवाहित महिला वेरा के लिए थोड़ी-सी हास्यास्पद, थोड़ी-सी सनकी नहीं रह गयी थीं।

अचानक—वे भयानक बन गयी थीं।

II

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्स खाने के कमरे से निकले और एक बार फिर टेरेस पर चले गये।

जस्टिस वॉरग्रेव अब एक कुर्सी में बैठे, शान्त भाव से समुद्र को निहार रहे थे।

लॉम्बार्ड और ब्लोर बायीं तरफ थे; वे सिगरेट पी रहे थे, मगर ख़ामोश थे।

पहले की तरह डॉक्टर पल भर हिचकिचाये। उनकी आँखें कुछ अन्दाज़ा-सा लगाती हुईं जस्टिस वॉरग्रेव पर टिकीं। वे किसी से सलाह-मशविरा करना चाहते थे। उन्हें जज के पैने तार्किक दिमाग़ का अन्दाज़ा था। इसके बावजूद वे शशोपंज में पड़े रहे। जस्टिस वॉरग्रेव का दिमाग़ भले ही अच्छा हो, लेकिन वे बुज़ुर्ग आदमी थे। इस मुक़ाम पर आर्मस्ट्रॉन्ग को महसूस हुआ कि उन्हें कुछ कर गुज़रने वाले आदमी की तलाश थी।

उन्होंने मन बना लिया।

'लॉम्बार्ड, क्या मैं एक मिनट तुमसे बात कर सकता हूँ?'

फ़िलिप चौंका।

'हाँ, हाँ, ज़रूर।'

दोनों आदमी टेरेस से उतर आये और ढाल पर टहलते हुए पानी की दिशा में बढ़े। जब वे सुनने की हद के पार चले आये तो आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मुझे एक मशविरा चाहिए।'

लॉम्बार्ड की भवें ऊपर को चढ़ गयीं। उसने कहा :

'लेकिन डॉक्टर, मुझे डॉक्टरी की कोई जानकारी नहीं है।'

'नहीं, नहीं, मेरा मतलब इस आम हालत से था।'

'आह, तब बात दूसरी है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'सच-सच बताओ, हालत के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है।'

लॉम्बार्ड ने मिनट भर सोचा। फिर बोला :

'अभी पक्का तो कुछ भी नहीं है, बस संकेत ही हैं।'

'उस औरत के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है? क्या तुम्हें ब्लोर की बात ठीक लगती है?'

फ़िलिप ने एक-दो कश लिये। फिर कहा :

'मानी जाने लायक़ है—अगर सिर्फ़ उसी को लिया जाय।'

'यही तो।'

आर्मस्ट्रॉन्ग के लहजे से लगा कि उन्हें राहत मिली है। फ़िलिप लॉम्बार्ड मूर्ख नहीं था।

उसने कहा :

'यानी यह मानते हुए कि अपने वक़्त में रॉजर्स और श्रीमती रॉजर्स हत्या करके बेदाग़ बच निकले थे। और मेरी नज़र में तो ठीक ही था। क्या ख़याल है आपका, क्या किया था उन्होंने? उस बूढ़ी औरत को ज़हर दिया था?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने धीरे-धीरे कहा :

'इससे ज़्यादा सीधा-सादा मामला रहा होगा। मैंने आज सुबह रॉजर्स से पूछा था कि मिस ब्रेडी को तकलीफ़ क्या थी। उसके जवाब से पता चला। मुझे डॉक्टरी ब्योरों में जाने की ज़रूरत नहीं, लेकिन दिल की बीमारी के कुछ मामलों में एमिल नाइट्रेट इस्तेमाल की जाती है। जब दौरा पड़ता है तो एमिल नाइट्रेट की शीशी तोड़कर उसे सुँघाया जाता है। अगर एमिल नाइट्रेट न दी जाय उस वक़्त—तो ख़ैर, नतीजे जानलेवा हो सकते हैं।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने सोचते हुए कहा :

'इतना आसान। तब तो मामला लुभाने वाला रहा होगा।'

डॉक्टर ने सिर हिला कर हामी भरी।

'हाँ, अपनी तरफ़ से कुछ करना-धरना नहीं। ज़हर खोज कर—हासिल करके—खिलाने की कोई ज़हमत नहीं—बस हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहना। और उस रात रॉजर्स जल्दी से डॉक्टर बुलाने चला गया और उन दोनों को भरोसा हो गया कि किसी को पता नहीं चलेगा।'

'और अगर किसी को पता भी चलता तो उनके ख़िलाफ़ कभी कुछ साबित न हो पाता', फ़िलिप लॉम्बार्ड ने आगे जोड़ा।

अचानक उसकी त्योरियाँ चढ़ गयीं।

'आह, यक़ीनन—इससे तो बहुत कुछ साफ़ हो जाता है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने चकराकर पूछा :

'क्या मतलब?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मेरा मतलब है—इससे सोल्जर आइलैण्ड के बारे में साफ़ हो जाता है। ऐसे अपराध होते हैं जिन्हें साबित करके उन्हें करने वालों को पकड़ा नहीं जा सकता। मिसाल के लिए रॉजर्स पति-पत्नी। दूसरी मिसाल बूढ़े वॉरग्रेव की है, जिन्होंने क़ानून के नियमों के अन्दर रहते हुए हत्या की।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने तीखे स्वर में कहा : 'तुम्हें उस कहानी पर विश्वास है?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड मुस्कराया।

'बिलकुल। वॉरग्रेव ने सेटन की हत्या की थी, इतने पक्के ढंग से हत्या

की थी मानो उन्होंने कटार उसे भोंक दी थी। लेकिन उन्होंने वह काम जज की कुर्सी पर बैठ कर किया था। इसलिए आम तरीक़े से कोई उन्हें इस जुर्म का दोषी नहीं ठहरा सकता।'

अचानक आर्मस्ट्रॉन्ग के दिमाग़ में बिजली की तरह कुछ कौंधा।

'हस्पताल में हत्या। ऑपरेशन की मेज़ पर हत्या। सुरक्षित—हाँ, पूरी तरह सुरक्षित'

फ़िलिप लॉम्बार्ड कह रहा था :

'इसीलिए — मिस्टर ओवेन — इसीलिए — सोल्जर आइलैण्ड।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने एक लम्बी साँस खींची।

'अब हम मुद्दे पर आ रहे हैं। हमें यहाँ ला कर इकट्ठा करने का असली उद्देश्य क्या है?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'आपका क्या ख़याल है?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने अचानक कहा :

'मिनट भर के लिए इस औरत की मौत पर लौटें। क्या-क्या सम्भावित करण हो सकते हैं? रॉजर्स ने उसे मार दिया, क्योंकि उसे डर था वह भेद खोल देगी। दूसरी सम्भावना : वह घबरा गयी और उसने ख़ुद बाहर निकलने का आसान रास्ता चुना।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'आत्महत्या?'

'उसके बारे में क्या कहना है?'

'हाँ, हो सकती थी—हाँ—अगर मार्सटन की मौत न हुई होती। बारह घण्टे के भीतर दो आत्म-हत्याएँ गले के नीचे मुश्किल ही से उतरेंगी। और अगर आप मुझसे कहें कि यह बैल मार्सटन, जिसमें न तो भावना थी, न ज़्यादा दिमाग़, महज़ इस कारण दुखी हो गया कि उसने दो बच्चों को कुचल दिया था और इस वजह से ख़ुदकुशी कर ली तो—ख़ैर, यह ख़याल ही हँसने लायक़ है। और फिर उसने वह ज़हर हासिल कहाँ से किया? जितना कुछ मैंने सुना है, लोग पोटाशियम साइनाइड अपनी वास्केट की

जेब में नहीं लिये फिरते। लेकिन वह तो आपका इलाक़ा है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'कोई भी अपने सही होश-हवास में पोटाशियम साइनाइड नहीं लिये फिरता। हो सकता है ऐसा उसने किया हो जो बर्रों का छत्ता नष्ट करने वाला था।'

'यानी जोशीला बाग़बान या ज़मींदार? यानी ऐण्टनी मार्सटन नहीं। मुझे तो लगता है कि साइनाइड के इस मामले की कुछ सफ़ाई की ज़रूरत है। या तो ऐण्टनी मार्सटन यहाँ आने से पहले ही ख़ुदकुशी करने का इरादा रखता था और इसलिए तैयार होकर आया था—या फिर—'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने उसे उकसाया।

'या फिर?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड मुस्कराया।

'मुझे क्यों मजबूर करते हैं जबकि वह आपकी ज़बान पर भी है। *ऐण्टनी मार्सटन का ख़ून किया गया था, निश्चय ही।*'

III

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने गहरी साँस ली।

'और श्रीमती रॉजर्स?'

लॉम्बार्ड ने धीरे-धीरे कहा :

'मैं श्रीमती रॉजर्स की ख़ुदकुशी में विश्वास कर लेता अगर ऐण्टनी मार्सटन का मामला न होता। मैं विश्वास कर सकता हूँ कि रॉजर्स ने अपनी पत्नी को रास्ते से हटा दिया—अगर ऐण्टनी मार्सटन की अनपेक्षित मौत न हुई होती। लेकिन हमें ऐसा हल चाहिए जो दो मौतों को समझा सके जो एक के बाद एक तेज़ी से हुई हैं।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'शायद मैं तुम्हें उस दिशा में थोड़ी-सी मदद दे सकता हूँ।'

और उन्होंने चीनी मिट्टी के उन दो छोटे-छोटे पुतलों के ग़ायब होने के बारे में रॉजर्स की बतायी बातों को दोहरा दिया।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'हाँ, छोटे-छोटे चीनी मिट्टी के पुतले... यह पक्का है कि कल रात खाने के वक़्त दस थे। और अब आप कहते हैं कि आठ हैं?'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कविता सुनायी :

'दस नन्हे फ़ौजी लड़के गये खाने को
गला घुट गया एक युवक का बाक़ी बच गये नौ'
'नौ नन्हे लड़के जाने देर अखेर
एक रह गया सोते सोते बाक़ी बच गये आठ'

दोनों आदमियों ने एक दूसरे को देखा। फ़िलिप लॉम्बार्ड मुस्कराया और उसने अपना सिगरेट दूर फेंक दिया।

'कमबख़्त इतना सटीक बैठता है कि इसे संयोग कहना मुश्किल है। मार्सटन की मौत कल रात खाने के बाद गला घुटने से हुई और श्रीमती रॉजर्स मानो मन में ठान कर सोती रह गयी।'

'और इसलिए?' आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा।

लॉम्बार्ड ने बात का सिरा थाम लिया।

'और इसलिए एक और क़िस्म का फ़ौजी। अनजान फ़ौजी। एक्स। मिस्टर ओवेन। यू. एन. ओवेन ! एक अनजान पागल छुट्टा घूम रहा है।'

'आह !' आर्मस्ट्रॉन्ग ने राहत की साँस ली। 'तुम सहमत हो। लेकिन तुम देख रहे हो मामला कैसी करवट ले रहा है? रॉजर्स ने क़सम खा कर कहा था कि टापू पर हम लोगों और उसे और उसकी पत्नी को छोड़ कर कोई भी नहीं था।'

'रॉजर्स ग़लत है। या शायद रॉजर्स झूठ बोल रहा है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने सिर हिलाया।

'मुझे नहीं लगता कि वह झूठ बोल रहा है। वह आदमी डरा हुआ है। वह इतना डरा हुआ कि उसे होश नहीं रह गया है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने सिर हिलाया।

उसने कहा :

'आज सुबह मोटरबोट का कुछ अता-पता नहीं। यह भी मेल खाता है। मिस्टर ओवेन के बन्दोबस्त का एक और नमूना। सोल्जर आइलैण्ड

तब तक अलग-थलग रहेगा जब तक मिस्टर ओवेन अपना काम न ख़त्म कर लें।'

आर्मस्ट्रॉन्ग का चेहरा पीला पड़ गया था। उन्होंने कहा :

'तुम समझ रहे हो—यह आदमी बिलकुल पागल होगा।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'एक बात है जो शायद मिस्टर ओवेन ने ध्यान में न रखी हो।'

उसकी आवाज़ में एक नयी खनक थी।

'वह क्या?'

'यह टापू कुल-मिला कर चट्टान ही है। हम इसकी तलाशी का काम शुरू करेंगे और जल्दी ही मिस्टर ओवेन को खोज निकालेंगे।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने चेतावनी देते हुए कहा :

'वह ख़तरनाक साबित हो सकता है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड हँसा।

'ख़तरनाक? हुआ करे ख़तरनाक। कौन डरता है? ख़तरनाक तो मैं हूँगा जब वह मेरे हाथ लगेगा।'

वह रुका और उसने कहा :

'बेहतर हो कि हम ब्लोर को भी अपनी मदद के लिए बुला लें। मुसीबत में वह बढ़िया आदमी साबित होगा। बेहतर हो कि औरतों को न बतायें। रही बात दूसरों की तो जनरल तो बेकार है, मेरे ख़याल में और बूढ़े वॉरग्रेव का गुण है कुछ न करना। हम तीनों ही इस काम को करें तो अच्छा होगा।'

अध्याय 8

I

ब्लोर आसानी से तैयार हो गया। उसने उनके तर्कों से फ़ौरन रज़ामन्दी ज़ाहिर की।

'आपने जो कुछ चीनी मिट्टी के इन पुतलों के बारे में कहा है, उससे सारा फ़र्क़ पड़ गया है। यह पागलपन है, हाँ। बस, एक बात है। आपको यह नहीं लगता कि ओवेन का विचार इस काम को किसी के ज़रिये कराने का भी हो सकता है?'

'ज़रा समझा कर बताओ।'

'मेरा मतलब यह है। कल रात की उस हलचल के बाद यह नौजवान मार्सटन घबरा जाता है और ज़हर खा लेता है। और रॉजर्स, वह भी घबरा कर अपनी बीवी को ठिकाने लगा देता है। सब उस ओवेन की योजना के मुताबिक़।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने अपना सिर हिलाया। उन्होंने साइनाइड वाले नुक़्ते पर ज़ोर दिया। ब्लोर राज़ी हो गया।

'हाँ, यह तो मैं भूल ही गया था। ऐसी आम चीज़ नहीं थी वह जो कोई साथ लिये-लिये फिरे। लेकिन वह उसकी ड्रिंक में कैसे पहुँची?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं इस बारे में सोचता रहा हूँ। मार्सटन ने उस रात कई बार ड्रिंक ली थी। उसने जिस समय अपनी आख़िरी ड्रिंक ली और जिस समय उससे पहले वाली ख़त्म की—इनके बीच काफ़ी समय गुज़रा था। उस दौरान उसका गिलास किसी-न-किसी मेज़ पर रखा हुआ था। मेरा ख़याल है—हालाँकि मैं पक्के तौर पर नहीं कह सकता—वह खिड़की के पास रखी छोटी मेज़ पर था। खिड़की खुली थी। कोई चुपके से गिलास में साइनाइड डाल सकता था।'

ब्लोर ने अविश्वास के साथ कहा :

'बिना हमारे देखे?'

लॉम्बार्ड ने रुखाई से कहा :

'हम सभी लोग—किसी दूसरी परेशानी से निपट रहे थे।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने धीरे-धीरे कहा :

'यह सच है। हम सभी पर आरोप लगे थे। हम इधर-उधर चल रहे थे, कमरे में घूम रहे थे। बहस कर रहे थे, नाराज़ थे, अपने मामले को लेकर परेशान थे। मेरा ख़याल है कि ऐसा किया जा सकता था...'

ब्लोर ने कन्धे उचका दिये।

'सच तो यह है कि वैसा किया तो गया ही होगा। तो आइए, अब शुरू करें। किसी के पास रिवॉल्वर तो नहीं है, इत्तफ़ाक़ से? मेरा ख़याल है, इसकी आशा करना बेकार है।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मेरे पास है।' उसने अपने जेब थपथपायी।

ब्लोर की आँखें चौड़ी हो गयीं। उसने ज़रूरत से ज़्यादा इत्मीनान से कहा :

'हमेशा अपने साथ लिये रहते हैं इसे?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'आम तौर पर। मैं कई बार मुश्किल में फँस चुका हूँ।'

'आह !' ब्लोर ने कहा और जोड़ा। 'ख़ैर, जितनी मुश्किल में आप आज हैं, इससे ज़्यादा मुश्किल में आप इससे पहले कभी नहीं रहे। अगर इस टापू पर कोई पागल छिपा हुआ है तो उसके पास काफ़ी हथियार होंगे —चाकू-छुरे की तो गिनती ही अलग है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने खाँस कर कहा :

'यहाँ तुम ग़लत हो सकते हो ब्लोर। बहुत-से हत्यारे पागल बहुत शान्त स्वभाव के लोग होते हैं। भले और मिलनसार।'

ब्लोर ने कहा :

'मुझे नहीं लगता यह उस क़िस्म का होगा, डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग।'

II

तीनों आदमी टापू के दौरे पर निकल पड़े।

वह इतना सीधा-सादा साबित हुआ जितने की उन्हें उम्मीद नहीं थी।

उत्तर-पश्चिमी सिरे पर, तट की ओर, कगार सीधे समुद्र में गिरते थे, उनकी सतह कहीं से भी टूटी-फूटी नहीं थी।

टापू के बाक़ी हिस्से पर कोई पेड़ नहीं थे और छिपने की बहुत कम जगह थी। तीनों आदमी सावधानी से और सिलसिलेवार ढंग से टापू की चोटी से पानी के छोर तक जाँचते-परखते आये। उन्होंने चट्टान में छोटी-से-छोटी दरार को भी छान मारा जो किसी गुफा में जाने का रास्ता हो सकती थी। लेकिन वहाँ कोई गुफा नहीं थी।

आख़िरकार, पानी के छोर को पार करते हुए वे उस जगह आये जहाँ जनरल मैकार्थर बैठे समुद्र की तरफ़ देख रहे थे। यहाँ काफ़ी शान्ति थी और लहरें धीरे-धीरे आकर चट्टानों पर छप-छप कर रही थीं। बूढ़े जनरल एकदम सीधे तने बैठे थे और उनकी आँखें दूर कहीं क्षितिज पर गड़ी थीं।

खोजने वालों के आने पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। उनकी बेध्यानी ने उन लोगों में हलकी-सी बेचैनी पैदा कर दी।

ब्लोर ने सोचा :

'यह कुदरती नहीं है—लगता है जैसे ये किसी समाधि वग़ैरा में चले गये हैं।'

उसने अपना गला साफ़ किया और बात करने के अन्दाज़ में कहा :

'बहुत अच्छी शान्त जगह आपने खोजी है अपने लिए, सर।'

जनरल ने मुँह बनाया। उन्होंने तेज़ी से कन्धे के ऊपर से एक निगाह डाली और कहा :

'इतना कम समय है—इतना कम। मुझे सचमुच कहना पड़ेगा कि कोई मुझे छेड़े नहीं।'

ब्लोर ने नरमी से कहा :

'हम आपको तंग नहीं करेंगे। हम तो टापू का दौरा कर रहे हैं, एक तरह से। बस यही सोच रहे थे, कोई इस पर छिपा तो नहीं।'

जनरल ने त्योरियाँ चढ़ायीं और कहा :

'तुम समझ नहीं रहे—तुम बिलकुल समझ नहीं रहे। मेहरबानी करके चले जाओ।'

ब्लोर पीछे हट आया। बाक़ी दोनों में आ मिलते हुए वह बोला :

'वह पागल है... उससे बात करना बेकार है।'

लॉम्बार्ड ने थोड़ी उत्सुकता से पूछा :

'क्या कहा उन्होंने?'

ब्लोर ने कन्धे उचकाये।

'कुछ ऐसा कि समय बहुत कम है और उन्हें तंग न किया जाये।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग का चेहरा सिकुड़ गया।

वे बुदबुदाये :

'मैं यही सोच रहा हूँ कि...'

III

टापू की तलाशी एक तरह से पूरी हो चुकी थी। तीनों आदमी सबसे ऊँची जगह खड़े उधर ज़मीन की तरफ़ देख रहे थे। कोई नाव नहीं निकली थी। हवा तेज़ होती जा रही थी।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मछुआरों की नावें नहीं निकली हैं। आँधी आ रही है। कैसी मुसीबत है कि गाँव यहाँ से दिखायी नहीं दे रहा। हम कोई संकेत दे सकते थे।'

ब्लोर ने कहा :

'हम आज रात अलाव जला सकते हैं।'

लॉम्बार्ड ने त्योरियाँ चढ़ा कर कहा :

'दिक़्क़त यह है कि शायद उस सबका भी बन्दोबस्त हो चुका है।'

'किस तरह, सर?'

'मैं कैसे जानूँ? बताया गया हो कि यह सब मज़ाक है। हम सबको यहाँ पड़े रहना है, किसी भी तरह के संकेत पर ध्यान न दिया जाये। शायद गाँव वालों को बताया गया हो कि कोई शर्त-वर्त लगी है। बहरहाल, कुछ भी कह दिया गया हो।'

ब्लोर ने सन्देह-भरे स्वर में कहा :

'आपका ख़याल है, वे मान लेंगे?'

लॉम्बार्ड ने रुखाई से कहा :

'सच से ज़्यादा विश्वास करने क़ाबिल है यह। अगर गाँववालों से कहा जाता कि टापू को तब तक अलग-थलग रखा जाना है जब तक मिस्टर ओवेन चुपचाप अपने सभी मेहमानों का ख़ून न कर लें—तो क्या तुम्हारे ख़याल में वे मान लेते?'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'ऐसे मौक़े आते हैं जब मैं ख़ुद इस पर विश्वास नहीं कर पाता। फिर भी—'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने मुँह बनाते हुए कहा :

'*फिर भी*—यही बात है। आपने कह दिया, डॉक्टर।'

ब्लोर पानी की तरफ़ देख रहा था।

'कोई इधर से तो नहीं चढ़ा हो सकता?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने सिर हिलाया।

'मुझे शक है। बहुत खड़ी चढ़ाई है। और वह छिपता कहाँ?'

ब्लोर ने कहा :

'कगार में कोई छेद हो सकता है। अगर हमारे पास नाव होती तो हम टापू की उस तरफ़ जा सकते थे।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'अगर हमारे पास नाव होती तो अब तक हम उधर के तट का आधा रास्ता पार कर चुके होते।'

'सही कहा, सर।'

लॉम्बार्ड ने अचानक कहा :

'हम इस कगार को तो जाँच कर देख सकते हैं। यहाँ सिर्फ़ एक जगह है जहाँ एक ताक जैसी जगह हो *सकती* है—यहाँ नीचे थोड़ा दाहिनी तरफ़। अगर आप लोग एक रस्सी ले आयें तो मैं नीचे उतर कर पक्का कर सकता हूँ।'

ब्लोर ने कहा :

'पक्का कर *लेना ही* ठीक होगा। हालाँकि बड़ा बेतुका लगता है—मैं देखता हूँ कि कुछ मिल जाये तो ले आऊँ।'

वह तेज़ी से मकान की तरफ़ चल दिया।

लॉम्बार्ड ने आसमान की तरफ़ देखा। बादल घिरने लगे थे और हवा की रफ़्तार बढ़ रही थी।

उसने कनखी से आर्मस्ट्रॉन्ग को देखा और कहा :

'आप बड़े ख़ामोश हैं, डॉक्टर। क्या सोच रहे हैं?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने धीरे से कहा :

'मैं सोच रहा था कि बूढ़े जनरल मैकार्थर सही तौर पर कितने पागल थे...'

IV

वेरा सारी सुबह बेचैन रही थी। उसे एमिली ब्रेण्ट से एक अजीब क़िस्म की झुरझुरी पैदा करने वाली अरुचि महसूस हो रही थी और इसी कारण वो उनसे कतराती रही।

मिस ब्रेण्ट ने ख़ुद मकान के कोने की परली तरफ़ एक कुर्सी रखवा ली थी ताकि हवा न लगे। वे वहाँ बैठी बुनाई कर रही थीं।

हर बार वेरा उन्हें देखती तो एक डूबी हुई लड़की का पीला चेहरा उसके दिमाग़ में कौंध जाता जिसके बालों में सिवार उलझी हुई थी... एक चेहरा जो कभी सुन्दर था—ढिठाई से सुन्दर शायद—लेकिन जो अब दया या आतंक के परे जा चुका था।

और एमिली ब्रेण्ट, निश्चल और न्याय-भरी, बैठी बुनाई कर रही थीं।

टेरेस के मुख्य भाग पर जस्टिस वॉरग्रेव एक छोटी कुर्सी में दुबके हुए थे। उनका सिर उनकी गरदन में गहरे धँसा हुआ था।

जब वेरा उन्हें देखती तो उसे एक आदमी कटघरे में खड़ा नज़र आता —एक युवक, सुनहरे बालों और नीली आँखों वाला—जिसके चेहरे पर भौंचक्कापन और डर था। एडवर्ड सेटन। और अपनी कल्पना में वह जज को अपनी काली टोपी पहन कर सज़ा सुनाते देखती।

कुछ समय बाद वेरा धीरे-धीरे टहलती हुई समुद्र तक गयी। वह टापू के दूसरे छोर तक चलती गयी जहाँ एक बूढ़ा आदमी बैठा क्षितिज को देख रहा था।

उसके आने की आहट पर जनरल मैकार्थर हिले। उनका सिर घूमा— उनकी निगाह में सवाल और आशंका की अजीब-सी मिलावट थी। उसने वेरा को चौंका दिया। वे उसकी तरफ़ दो-एक मिनट तक एकटक देखते रहे।

वेरा ने सोचा :

'कितना अजीब है। लगभग ऐसे कि जैसे उन्हें पता था...'

जनरल ने कहा :

'आह, तुम हो। आ गयी हो...'

वेरा उनके पास जा बैठी। उसने कहा :

'क्या आपको यहाँ बैठकर समुद्र की तरफ़ देखना पसन्द है?'

उन्होंने धीरे से अपना सिर हिलाया।

'हाँ', वे बोले। 'अच्छा लगता है। यह मेरे ख़याल से इन्तज़ार करने के लिए अच्छी जगह है।'

'इन्तज़ार करने के लिए?' वेरा ने पलट कर पूछा। 'आप किसका इन्तज़ार कर रहे हैं?'

उन्होंने नरमी से कहा :

'अन्त का। लेकिन मेरा ख़याल यह तुम्हें पता होना चाहिए। नहीं? यह सच है न? हम सभी अन्त का इन्तज़ार कर रहे हैं।'

वेरा ने अस्थिर भाव से कहा :

'क्या मतलब है आपका?'

जनरल मैकार्थर ने गम्भीर स्वर में कहा :

'*हम में से कोई इस टापू से निकल नहीं पायेगा।* यही योजना है। तुम इस बात को जानती हो, अच्छी तरह। जो तुम समझ नहीं पा रही हो, वह राहत है।'

वेरा ने सोचते हुए कहा :

'राहत?'

वे बोले :

'हाँ। निश्चय ही, तुम अभी जवान हो... तुम अभी वहाँ तक नहीं

पहुँचीं। लेकिन वह आती है ! वरदान सरीखी राहत जब तुम्हें पता होता है कि तुमने सब पूरा कर लिया है—अब तुम्हें वह बोझ और आगे नहीं ढोना है। तुम्हें भी यह महसूस होगा, किसी दिन...'

वेरा ने भर्राये गले से कहा :

'मुझे आपकी बातें समझ में नहीं आ रहीं।'

उसकी उँगलियाँ रह-रह कर हरकत करने लगीं। उसे अचानक इस शान्त-से बूढ़े फ़ौजी से डर लगने लगा।

जनरल ने याद करते हुए कहा :

'बात यह है मैं लेज़ली को प्यार करता था। उसे बहुत प्यार करता था...'

वेरा ने सवाल किया :

'क्या लेज़ली आपकी पत्नी थी?'

'हाँ, मेरी पत्नी... मैं उसे प्यार करता था—और मुझे उस पर बहुत गर्व था। वह इतनी सुन्दर—और इतनी ख़ुशमिज़ाज थी।'

वे एक-दो मिनट ख़ामोश रहे, फिर उन्होंने कहा :

'हाँ, मैं लेज़ली को प्यार करता था। इसीलिए मैंने वह किया था।'

वेरा ने कहा :

'आपका मतलब है—' और रुक गयी।

जनरल मैकार्थर ने धीरे-धीरे सिर हिलाया :

'अब उससे इनकार करने से कोई फ़ायदा नहीं—कोई फ़ायदा नहीं जब हम सभी मरने वाले हैं। *मैंने रिचमण्ड को मौत के मुँह में भेज दिया।* मेरे ख़याल में, एक तरह से, वह हत्या ही थी। अजीब है, *हत्या*—और मैं हमेशा ही से क़ानून का पालन करने वाला आदमी रहा हूँ। लेकिन उस समय यह ऐसा नहीं लगा था। मुझे कोई अफ़सोस नहीं था। ''अच्छा सबक़ मिलेगा उसे।'' यही मैंने सोचा था। लेकिन बाद में—'

सख़्त आवाज़ में वेरा ने कहा :

'ख़ैर, बाद में?'

उन्होंने अस्पष्ट भाव से सिर हिलाया। वे चकराये और थोड़ा

परेशान-से लग रहे थे।

'मैं नहीं जानता। मैं—नहीं जानता। सब कुछ इतना अलग-सा था, समझीं। मुझे पता नहीं कि लेज़ली ने इसे कभी भाँपा या नहीं... मेरे ख़याल से तो नहीं। लेकिन मैं उसके बाद उसके बारे में कुछ नहीं जानता था। वह इतनी दूर चली गयी थी जहाँ मैं उस तक पहुँच नहीं सकता था। और फिर वह गुज़र गयी—और मैं अकेला रह गया...'

वेरा ने कहा,

'अकेला...अकेला...' और उसकी आवाज़ की गूँज चट्टानों से वापस उस तक आयी।

जनरल मैकार्थर ने कहा :

'तुम्हें भी ख़ुशी होगी जब अन्त आयेगा।'

वेरा उठ खड़ी हुई। उसने तीखी आवाज़ में कहा :

'मुझे कुछ पता नहीं कि आपका मतलब क्या है।'

उन्होंने कहा :

'मैं *जानता* हूँ, बच्ची। मैं *जानता* हूँ...'

'आप नहीं जानते। आप कुछ समझते ही नहीं...'

जनरल मैकार्थर ने फिर समुद्र की तरफ़ देखा। उन्हें जैसे अपने पीछे उसकी मौजूदगी का एहसास नहीं था।

उन्होंने बहुत नरमी और आहिस्ता से कहा :

'लेज़ली...?'

V

जब ब्लोर मकान से रस्सी लेकर लौटा तो उसने आर्मस्ट्रॉन्ग को वहीं पाया जहाँ उन्हें वह छोड़ गया था। वे नीचे गहराई में झाँक रहे थे।

ब्लोर ने तेज़-तेज़ साँस लेते हुए कहा :

'मिस्टर लॉम्बार्ड कहाँ हैं?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने लापरवाही से कहा :

'किसी-न-किसी अटकल को जाँचने गया है। अभी एक-दो मिनट में आ जायेगा। सुनो ब्लोर, मुझे चिन्ता हो रही है।'

'मैं तो कहूँगा, हम सभी को चिन्ता हो रही है।'

डॉक्टर ने अधीरता से हाथ लहराया।

'हाँ-हाँ। मेरा वह मतलब नहीं है। मैं बूढ़े मैकार्थर के बारे में सोच रहा हूँ।'

'उनके बारे में क्या, सर?'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कड़ाई से कहा :

'हम एक पागल की तलाश कर रहे हैं। *मैकार्थर के बारे में क्या ख़याल है?*'

ब्लोर ने अविश्वास से कहा :

'आपका मतलब है उनमें हत्या का रुझान है?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने सन्देह-भरे स्वर में कहा :

'मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था। मिनट भर के लिए भी नहीं। लेकिन फिर मैं मानसिक रोगों का विशेषज्ञ नहीं हूँ। मैंने उनसे ठीक-ठाक बातचीत भी नहीं की है—मैंने उन्हें उस नज़रिये से परखा भी नहीं है।'

ब्लोर ने हिचकिचाते हुए कहा :

'खिसके हुए तो हो सकते हैं—लेकिन मैं उन्हें—'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने उसे ऐसे आदमी की तरह टोका जिसने ख़ुद पर क़ाबू पा लिया हो।

'तुम शायद ठीक हो। फिर भी कमबख़्त इस टापू पर कोई ज़रूर छिपा होगा। लो, लॉम्बार्ड आ गया।'

उन्होंने रस्सी को सावधानी से बाँधा।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं जहाँ तक हो सकेगा, अपना ख़याल रखूँगा। बस, रस्सी अचानक खिंचे तो ख़याल रखना।'

एक-दो मिनट तक वे लॉम्बार्ड को नीचे जाते देखते रहे, फिर ब्लोर ने कहा :

'बिल्ली की तरह चढ़ता है न?'

उसकी आवाज़ में कुछ अजीब-सा था।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मेरा ख़याल है,यह अपने समय में पहाड़ों पर काफ़ी चढ़ा-उतरा है।'

'हो सकता है।'

कुछ देर ख़ामोशी रही, फिर पूर्व इन्स्पेक्टर ने कहा :

'कुल मिलाकर अजीब बन्दा है। पता है, मैं क्या सोचता हूँ?'

'क्या?'

'यह गड़बड़ आदमी है !'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने सन्देह भरी आवाज़ में कहा :

'किस तरह?'

ब्लोर के गले से घुरघुराहट की आवाज़ निकली। फिर वह बोला :

'मैं जानता नहीं—सही-सही। लेकिन मैं इस पर ज़रा भी भरोसा न करूँ।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मेरे ख़याल में काफ़ी उतार-चढ़ाव देखा है इसने।'

ब्लोर ने कहा :

'मैं शर्त लगा सकता हूँ कि इसकी कुछ कारगुज़ारियाँ तो बहुत हद तक अँधेरे में रखने लायक़ होंगी।' वह रुका, फिर आगे बोला : 'क्या आप अपने साथ रिवॉल्वर लाये हैं, डॉक्टर?'

डॉक्टर उसे घूरता रह गया।

'मैं? हे भगवान, नहीं। क्यों लाता मैं?'

ब्लोर ने कहा :

'*फिर लॉम्बार्ड क्यों लाया?*'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने अनिश्चय से कहा :

'मेरा ख़याल है—आदत की वजह से।'

ब्लोर ने नाक से साँस छोड़ी।

रस्सी पर अचानक एक झटका महसूस हुआ। कुछ पलों तक वे उसी में जुटे रहे। फिर जब रस्सी ढीली पड़ी तो ब्लोर ने कहा :

'आदतों आदतों में फ़र्क़ होता है। मिस्टर लॉम्बार्ड अनजान जगहों पर

रिवॉल्वर ले जाते हैं, और एक प्राइमस स्टोव और स्लीपिंग बैग और खटमल-पिस्सू मारने का पाउडर भी। चलो ठीक है। लेकिन उन्हें यह सब सामान यहाँ लाने की क्या ज़रूरत थी भला। यह आदत की वजह से नहीं है। यह सिर्फ़ किताबों में ही होता है कि लोग आम तौर पर रिवॉल्वर लिये घूमते हैं।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने अपना सिर भौंचक्केपन से हिलाया।

वे झुक कर लॉम्बार्ड की प्रगति देखते रहे। वह अच्छी तरह जाँच रहा था और वे देख सकते थे कि उससे कोई नतीजा नहीं निकला था। जल्दी ही वह कगार के सिरे के ऊपर से होकर आ गया। उसने माथे से पसीना पोछा।

'ख़ैर', उसने कहा। 'अब और कोई रास्ता नहीं। अब सिर्फ़ मकान है और कोई दूसरी जगह नहीं।'

VI

घर की तलाशी आसानी से ले ली गयी। पहले उन्होंने बाहर की कुछ इमारतों को छाना और फिर मुख्य भवन की तरफ़ ध्यान दिया। श्रीमती रॉजर्स ने रसोई-घर के दराज़ में जो फ़ीता रखा था उससे उन्होंने मदद ली। लेकिन ऐसी कोई छिपी हुई जगह नहीं थी जो उन्हें न दिखी हो। हर चीज़ सीधी-सादी थी—एक आधुनिक मकान जिसमें छिपने-छिपाने की गुंजाइशें नहीं थीं। पहले उन्होंने नीचे की मंज़िल की तलाशी ली। फिर जब वे दूसरी मंज़िल पर सोने के कमरों में जाने के लिए सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे उन्होंने ऊपर की खिड़की से रॉजर्स को एक ट्रे पर पीने का सामान लेकर टेरेस की तरफ़ जाते देखा।

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने हल्के-फुल्के अन्दाज़ में कहा :

'अद्भुत जीव है। अच्छा नौकर। चेहरे पर कोई शिकन लाये बिना काम करता रहता है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने तारीफ़ करते हुए कहा :

'इतना ज़रूर कहूँगा कि रॉजर्स बहुत बढ़िया बटलर है।'

ब्लोर ने कहा :

'उसकी पत्नी बहुत अच्छा खाना बनाती थी। कल रात—वह खाना —'

वे पहले शयन-कक्ष में दाख़िल हुए।

पाँच मिनट बाद वे फिर सीढ़ियों के ऊपर की परछत्ती पर थे। उन्हें छिपने की कोई जगह नहीं मिली थी। वहाँ उसकी गुंजाइश भी नहीं थी।

ब्लोर ने कहा :

'एक छोटी-सी सीढ़ी है यहाँ।'

'वह ऊपर नौकरों के कमरे की तरफ़ जाती है', डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग बोले।

ब्लोर ने कहा :

'छत के नीचे कोई जगह होगी—जहाँ पानी की टंकी वग़ैरा है। वही एक जगह है—और तो कोई नहीं।'

और तभी जब वे वहाँ खड़े थे उन्हें ऊपर से वह आवाज़ सुनायी दी। एक मद्धम-सी, दबी-दबी पदचाप।

उन सभी ने उसे सुना। आर्मस्ट्रॉन्ग ने ब्लोर की बाँह पकड़ ली। लॉम्बार्ड ने उन्हें होशियार करते हुए एक उँगली उठायी।

'ख़ामोश—सुनो।'

आवाज़ फिर आयी—कोई बहुत आहिस्ता से, दबे-दबे क़दमों से ऊपर चल रहा था।

आर्मस्ट्रॉन्ग ने फुसफुसा कर कहा :

'वह ऊपर सोने के कमरे में है। जिस कमरे में श्रीमती रॉजर्स की लाश रखी है।'

ब्लोर ने भी फुसफुसा कर जवाब दिया।

'बेशक। छिपने के लिए उसने सबसे अच्छी जगह चुनी है। किसी के भी वहाँ जाने की सम्भावना नहीं। अब बहुत चुपचाप चलिए।'

वे क़दम दबा-दबा कर रखते हुए ऊपर चढ़े।

सोने के कमरे के बाहर छोटी-सी परछत्ती पर वे फिर रुके। हाँ, कमरे में कोई था ज़रूर। अन्दर से हल्की-सी आवाज़ आयी।

ब्लोर ने दबी आवाज़ में कहा :

'चलिए।'

उसने तेज़ी से दरवाज़ा खोला और झपट कर अन्दर गया, बाक़ी दो भी उसके पीछे-पीछे थे।

फिर तीनों-के-तीनों ठिठक कर खड़े हो गये।

अन्दर रॉजर्स था, उसके हाथों में कपड़े थे।

VII

सबसे पहले ब्लोर ने ख़ुद को सँभाला। उसने कहा :

'माफ़ करना—अ—रॉजर्स। हमने किसी को यहाँ चलते-फिरते सुना और सोचा—ख़ैर।'

वह चुप हो गया।

रॉजर्स ने कहा :

'माफ़ कीजिए, सर। मैं अपना सामान यहाँ से हटा रहा था। मेरे ख़याल में किसी को एतराज़ नहीं होगा अगर मैं नीचे की मंज़िल पर मेहमानों के ख़ाली कमरों में से एक अपने लिए ले लूँ।'

वह आर्मस्ट्रॉन्ग से बात कर रहा था और आर्मस्ट्रॉन्ग ने जवाब दिया :

'हाँ, हाँ ! ठीक है। ऐसा कर लो।'

उन्होंने अपनी नज़रें पलँग पर चादर से ढकी लाश से दूर ही रखीं।

रॉजर्स ने कहा :

'धन्यवाद, सर।'

वह अपनी बाँहों में अपना सामान उठाये कमरे के बाहर चला गया और नीचे की मंज़िल को जाने वाली सीढ़ियाँ उतर गया।

आर्मस्ट्रॉन्ग बिस्तर तक गये और चादर उठा कर उन्होंने मरी हुई औरत के शान्त चेहरे को देखा। वहाँ अब डर का कोई निशान नहीं था। सिर्फ़ ख़ालीपन था।

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'काश, मेरा सब सामान यहाँ होता। मैं जान सकता कि कौन-सी दवा इसे दी गयी।'

फिर वे दूसरों की तरफ़ मुड़े।

'चलो, इस काम को ख़त्म करें। मुझे अन्दर से लग रहा है कि हमें कुछ नहीं मिलने वाला।'

ब्लोर एक छोटे-से मैनहोल के पेंच ढीले कर रहा था।

उसने कहा :

'वह आदमी बहुत चुपचाप चलता है। मिनट-दो मिनट पहले हमने उसे बगीचे में देखा था। हम में से किसी ने उसे ऊपर आते नहीं सुना।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मेरा ख़याल है, इसीलिए हमने यह सोचा कि यहाँ ऊपर कोई अजनबी चल-फिर रहा होगा।'

ब्लोर ऊपर के अँधेरे में ग़ायब हो गया। लॉम्बार्ड ने अपनी जेब से एक टॉर्च निकाली और उसके पीछे-पीछे गया।

पाँच मिनट बाद तीनों आदमी ऊपर की परछत्ती पर खड़े थे। उन्होंने एक-दूसरे को देखा। वे धूल-मिट्टी में सने थे और उनसे जाले लटक रहे थे और उनके चेहरे गम्भीर और सुते हुए थे।

टापू पर उन आठ लोगों के अलावा और कोई नहीं था।

अध्याय 9

I

लॉम्बार्ड ने धीरे-धीरे कहा :

'तो हम सब ग़लत थे—सारा समय ग़लत थे। महज़ इन दो मौतों की वजह से हमने अन्ध-विश्वास और कल्पना से जाने कैसे-कैसे बुरे सपने देख डाले।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने गम्भीरता से कहा :

'इसके बावजूद, उस तर्क में दम है। मैं डॉक्टर हूँ, मुझे आत्महत्याओं के बारे में पता है। ऐण्टनी मार्सटन ख़ुदकुशी करने वाले लोगों में नहीं था।'

लॉम्बार्ड ने सन्देह प्रकट किया :

'वह कहीं दुर्घटना तो नहीं थी?'

ब्लोर ने क़ायल न होते हुए साँस छोड़ी।

'बड़ी अजीब-सी दुर्घटना थी, फिर तो—' वह बोला।

पल-दो पल की चुप्पी के बाद ब्लोर ने ही कहा :

'और वह औरत—' और वह रुक गया।

'श्रीमती रॉजर्स?'

'हाँ। यह हो सकता है न कि वह भी दुर्घटना रही हो?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'दुर्घटना? किस तरह?'

ब्लोर थोड़ा शर्मिन्दा-सा लगा। उसका लाल चेहरा और भी लाल हो गया। उसके मुँह से शब्द जैसे बेसाख़्ता निकले :

'सुनिए डॉक्टर, आपने उसे कोई दवा दी थी न?'

आर्मस्ट्रॉन्स ने उसे घूर कर देखा :

'दवा? क्या मतलब?'

'कल रात। आपने ख़ुद कहा कि आपने उसे सुलाने के लिए कुछ दिया था।'

'अच्छा वह। हाँ। मामूली नींद की दवा।'

'वह थी क्या?'

'मैंने उसे ट्रायोनल की हल्की-सी ख़ूराक दी थी। यह बिलकुल हानिरहित दवा है।'

ब्लोर और भी लाल हो गया। उसने कहा :

'सुनिए—साफ़ कहूँ तो—कहीं आपने उसे ज़रूरत से ज़्यादा मात्रा में तो नहीं दे दी?'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मुझे नहीं मालूम, तुम कहना क्या चाहते हो?'

ब्लोर ने कहा :

'यह सम्भव तो है न कि आपसे ग़लती हुई हो? कभी-कभार ऐसी बात हो भी जाती है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने तीखे स्वर में कहा :

'मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। यह सोचना ही बेवक़ूफ़ी है।' वे रुक गये और फिर उन्होंने सर्द काटती हुई आवाज़ में जोड़ा : 'या फिर तुम यह सुझाना चाहते हो कि मैंने उसे जान-बूझकर दवा की ज़्यादा ख़ूराक दे दी?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने जल्दी से कहा :

'सुनिए आप दोनों, हमें शान्त रहना है। अब एक-दूसरे पर आरोप लगाने की ज़रूरत नहीं।'

ब्लोर ने खिन्न आवाज़ में कहा :

'मैंने सिर्फ़ इतना कहा था कि डॉक्टर ने शायद ग़लती की हो।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग कोशिश करके मुस्कराये, मगर मुस्कान में फैले उनके होंटों से ख़ुशी नहीं ज़ाहिर हो रही थी :

'डॉक्टर लोग इस तरह की ग़लती करना गवारा नहीं कर सकते, मेरे दोस्त।'

ब्लोर ने सोच-समझ कर कहा :

'अगर उस ग्रामोफ़ोन के रिकार्ड पर विश्वास करें तो—यह पहली ग़लती नहीं होगी जो आपने की।'

आर्मस्ट्रॉन्ग का चेहरा सफ़ेद पड़ गया। फ़िलिप लॉम्बार्ड ने जल्दी से

और नाराज़गी-भरे अन्दाज़ में ब्लोर से कहा :

'बखेड़ा खड़ा करने से क्या फ़ायदा है? हम सब उसी नाव में हैं। हमें साथ रहकर इसका मुक़ाबला करना है। वैसे, तुम पर भी तो झूठी गवाही देने का आरोप है।'

ब्लोर मुट्ठियाँ भींचकर एक क़दम आगे बढ़ा। भारी आवाज़ में उसने कहा :

'झूठी गवाही जाये भाड़ में। वह सरासर झूठ है। आप मुझे चुप कराने की कोशिश कर सकते हैं मिस्टर लॉम्बार्ड लेकिन कुछ बातें मैं भी जानना चाहता हूँ—और उनमें से एक आपके बारे में है।'

'मेरे बारे में?'

'हाँ, मैं जानना चाहता हूँ कि आप सैर-तफ़रीह के लिए यहाँ आते समय अपने साथ एक रिवॉल्वर क्यों लाये?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'तुम जानना चाहते हो?'

'हाँ, मैं जानना चाहता हूँ।'

लॉम्बार्ड ने अचानक कहा :

'पता है, लॉम्बार्ड, तुम उतने बुद्धू नहीं हो जितने नज़र आते हो।'

'हो सकता है। अब रिवॉल्वर के बारे में बताइए?'

लॉम्बार्ड मुस्कराया :

'मैं उसे लाया, क्योंकि मुझे आशंका थी कि शायद मुझे थोड़ी-सी मुसीबत का सामना करना पड़े।'

ब्लोर ने सन्देह-भरी आवाज़ में कहा :

'लेकिन यह आपने कल रात हमें नहीं बताया।'

लॉम्बार्ड ने इनकार में सिर हिलाया।

'आप हमसे कारण छिपा रहे थे?' ब्लोर ने ज़ोर दिया।

'एक तरह से', लॉम्बार्ड ने कहा।

'ख़ैर, अब बता दीजिए।'

लॉम्बार्ड ने धीरे-धीरे कहा :

'मैंने आप सबको यही सोचने दिया कि मुझे भी वैसे ही न्योता देकर बुलाया गया था, जैसे बाक़ी ज़्यादातर लोगों को। यह पूरी तरह सच नहीं है। सच तो यह है कि एक यहूदी ने मुझसे सम्पर्क किया था। उसका नाम मॉरिस था। उसने मुझे सौ गिनी की रकम पेश की कि मैं यहाँ आऊँ और अपनी आँखें खुली रखूँ—उसी ने कहा कि मेरे बारे में लोग कहते हैं मुझे मुसीबत से निपटना आता है।'

'तो?' ब्लोर ने अधीरता से कहा।

'तो कुछ नहीं, बस, यही है।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने होशियारी से कहा :

'मगर उसने यक़ीनन तुम्हें इससे ज़्यादा बताया होगा?'

'न, बिलकुल नहीं। वह इसके आगे कुछ नहीं बोला। उसके शब्द थे—चाहो तो काम ले लो, वरना छोड़ दो। मैं तंगी में था। मैंने ले लिया।'

ऐसा लग रहा था कि ब्लोर को अब भी विश्वास नहीं हुआ था। उसने कहा :

'आपने यह सब कल रात हमें क्यों नहीं बताया?'

'मेरे भाई', लॉम्बार्ड ने अपने कन्धे उचकाये। 'मुझे कैसे पता चलता कि कल रात जो हुआ, उसी क़िस्म की घटना के लिए मुझे यहाँ लाया गया था? मैं चुप रहा और मैंने एक आम क़िस्सा सुना दिया।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने उसे घेरने की कोशिश की—

'लेकिन अब—तुम्हारा ख़याल बदल गया है।'

लॉम्बार्ड का चेहरा बदल गया। उसका रंग गहरा गया और वह सख़्त हो गया।

'हाँ। अब मुझे विश्वास है कि मैं उसी मुसीबत में हूँ जिसमें आप सभी बाक़ी लोग। सौ गिनी की वह रकम तो मिस्टर ओवेन का चारा था ताकि मैं आप सब के साथ जाल में आ फँसूँ।'

उसने धीरे-धीरे बात जारी रखी :

'*क्योंकि हम जाल में फँसे हुए हैं*—मैं क़सम से कह सकता हूँ। श्रीमती रॉजर्स की मृत्यु। टोनी मार्सटन की मौत। खाने की मेज़ से ग़ायब होते

पुतले। इस सब में मिस्टर ओवेन का हाथ साफ़-साफ़ नज़र आता है—
लेकिन ये मिस्टर ओवेन हैं कहाँ?'

नीचे दोपहर के खाने की घण्टी बजी।

II

रॉजर्स खाने के कमरे के दरवाज़े पर खड़ा था। जब तीनों आदमी सीढ़ी से उतरे तो वह एक-दो क़दम आगे बढ़ आया। धीमी चिन्ता-भरी आवाज़ में उसने कहा :

'उम्मीद है, लंच आपको ठीक लगेगा। गोश्त है और उबले आलू। साथ में पनीर और बिस्कुट और कुछ डिब्बाबन्द फल।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'ठीक ही लगता है। अन्दर सामान तो है न?'

'खाना काफ़ी है, सर—डिब्बेबन्द क़िस्म का। भण्डार में काफ़ी सामान है। इस तरह के टापू में यह ज़रूरी भी है जहाँ कई-कई दिनों तक उस पार की ज़मीन से सम्पर्क कटा रहता है।'

लॉम्बार्ड ने सिर हिला कर हामी भरी।

तीनों आदमियों के पीछे-पीछे खाने के कमरे में जाते हुए रॉजर्स बुदबुदाया :

'मुझे चिन्ता हो रही है कि आज फ़्रेड नैराकॉट नहीं आया। अजीब दुर्भाग्य की बात है।'

'हाँ', लॉम्बार्ड ने कहा, 'अजीब दुर्भाग्य ही कहेंगे इसे।'

मिस ब्रेण्ट कमरे में आयीं। उन्होंने अभी-अभी ऊन का एक गोला गिरा दिया था और सावधानी से उसके सिरे को लपेट रही थीं।

मेज़ पर अपनी जगह बैठते हुए उन्होंने कहा :

'मौसम बदल रहा है। हवा काफ़ी तेज़ हो गयी है और लहरों पर सफ़ेद फेन है।'

जस्टिस वॉरग्रेव भी अन्दर आ गये। वे नपे-तुले ढंग से धीरे-धीरे क़दम रखते हुए आये। अपनी घनी भौंहों के पीछे से उन्होंने खाने के कमरे के अन्य लोगों पर तेज़ निगाहें डालीं, फिर कहा :

'काफ़ी सक्रिय सुबह गुजरी है आप लोगों की।'

उनकी आवाज़ में एक द्वेष-भरी प्रसन्नता थी।

वेरा क्लेथॉर्न जल्दी से अन्दर आयी। उसकी साँस थोड़ी फूली हुई थी।

उसने आते ही कहा :

'उम्मीद है आप लोग मेरे लिए रुके न होंगे। क्या मुझे देर हुई है?'

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'तुम आख़िरी नहीं हो। अभी जनरल भी नहीं आये हैं।'

वे मेज़ के चारों ओर बैठ गये।

रॉजर्स मिस ब्रेण्ट से मुख़ातिब हुआ।

'आप शुरू करेंगी मैडम, या रुकेंगी?'

वेरा ने कहा :

'जनरल मैकार्थर ठीक समुद्र के किनारे बैठे हैं। मुझे नहीं उम्मीद कि उन्हें घण्टी की आवाज़ वहाँ सुनायी देगी। बहरहाल', वह हिचकती हुई बोली—'आज वे कुछ गुमसुम-से हैं।'

रॉजर्स ने जल्दी से कहा :

'मैं नीचे जाकर उन्हें बता देता हूँ कि लंच तैयार है।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग उछल कर उठे।

'मैं जाता हूँ', उन्होंने कहा। 'आप लोग खाना शुरू करें।'

वे कमरे से बाहर निकल आये। अपने पीछे उन्होंने रॉजर्स की आवाज़ सुनी।

'आप क्या लेना पसन्द करेंगी, मैडम?'

III

मेज़ के चारों तरफ़ बैठे पाँचों लोगों को बात करने में मुश्किल-सी लग रही थी। बाहर हवा के झोंके अचानक आते, फिर ठहर जाते।

वेरा ने झुरझुरी ली और बोली :

'आँधी आ रही है।'

ब्लोर ने बात आगे बढ़ायी। उसने किस्सा सुनाने के अन्दाज़ में कहा :

'कल प्लाईमाउथ से रेलगाड़ी में आते समय डिब्बे में एक बूढ़ा था।

वह लगातार कहता रहा कि तूफ़ान आ रहा था। कैसे अद्भुत ढंग से इन बूढ़े लोगों को मौसम का अन्दाज़ा हो जाता है।'

रॉजर्स मेज़ के गिर्द घूम कर प्लेटें उठा रहा था।

अचानक प्लेटों को हाथ में पकड़े-पकड़े वह रुक गया।

उसने एक अजीब-सी डरी हुई आवाज़ में कहा :

'कोई दौड़ता हुआ आ रहा है...'

वे सभी उस आवाज़ को सुन रहे थे—टेरेस के साथ-साथ दौड़ते हुए क़दमों की आहट।

उसी क्षण, उन्हें मालूम हो गया—बिना बताये पता चल गया...

मानो मिले-जुले फ़ैसले के चलते वे सभी खड़े हो गये और दरवाज़े की तरफ़ देखने लगे।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग तेज़-तेज़ साँस लेते हुए प्रकट हुए।

उन्होंने कहा :

'जनरल मैकार्थर—'

'मर गये !' ये शब्द वेरा के मुँह से विस्फोट की तरह निकले।

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'हाँ, वे मर गये हैं...'

ख़ामोशी छा गयी—लम्बी ख़ामोशी।

सात लोग एक-दूसरे को ताक रहे थे और उनके पास कहने को कोई शब्द नहीं थे।

IV

तूफ़ान ठीक उस समय शुरू हुआ जब बूढ़े जनरल का शरीर उठा कर दरवाज़े के अन्दर लाया गया।

दूसरे लोग हॉल में खड़े थे।

अचानक सरसराहट और गरज की आवाज़ के साथ बारिश होने लगी।

ब्लोर और आर्मस्ट्रॉन्ग जैसे ही अपने बोझ के साथ सीढ़ियों पर चढ़े वेरा क्लेथॉर्न अचानक मुड़ी और ख़ाली हो गये खाने के कमरे में चली

गयी।

वह बिलकुल वैसा था जैसे वे उसे छोड़ गये थे। खाने के बाद मीठे का बरतन अनपरोसा बग़ल की मेज़ पर रखा था।

वेरा खाने की मेज़ तक गयी। वह वहीं खड़ी थी जब मिनट-दो मिनट बाद रॉजर्स आहिस्ता से कमरे में आया।

वह उसे देख कर चौंका। फिर उसकी आँखों ने एक सवाल पूछा।

उसने कहा :

'ओह, मिस, मैं—मैं बस देखने आया था...'

ऊँची सख़्त आवाज़ में जिसने ख़ुद वेरा को भी चकित कर दिया, वह बोली :

'तुम बिलकुल सही हो रॉजर्स। ख़ुद देख लो। *सिर्फ़ सात बचे हैं...*'

V

जनरल मैकार्थर को बिस्तर पर लिटा दिया गया था।

एक आख़िरी जाँच करने के बाद डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग कमरे से बाहर आ कर नीचे उतरे। उन्होंने बाक़ी सब लोगों को बैठक में इकट्ठा पाया।

मिस ब्रेण्ट बुनाई कर रही थीं। वेरा क्लेथॉर्न खिड़की के पास खड़ी बारिश को गिरते देख रही थी। ब्लोर अपने हाथ घुटनों पर रखे कुर्सी में अकड़ा बैठा था। लॉम्बार्ड बेचैनी से आगे पीछे टहल रहा था। कमरे के आख़िर में जस्टिस वॉरग्रेव उस ऊँची कुर्सी में बैठे थे जिसे दादा की कुर्सी कहा जाता था। उनकी आँखें आधी बन्द थीं।

कमरे में डॉक्टर के आते ही वे खुल गयीं। उन्होंने सीधी पैनी आवाज़ में कहा :

'हाँ, डॉक्टर?'

आर्मस्ट्रॉन्ग पीले पड़े हुए थे। बोले :

'कोई दिल का दौरा या इस तरह की चीज़ नहीं। मैकार्थर को सिर के पीछे किसी छोटे-से डण्डे या ऐसी ही किसी चीज़ से मारा गया था।'

हल्की-सी बुदबुदाहट सबके बीच फैल गयी, लेकिन जज की साफ़ आवाज़ एक बार फिर उभरी।

'क्या तुम्हें वह हथियार मिला जो वाक़ई इस्तेमाल किया गया था?'

'नहीं।'

'इसके बावजूद तुम्हें अपने तथ्यों पर भरोसा है?'

'काफ़ी भरोसा है।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने धीरे से कहा :

'हमको अब सही-सही मालूम है कि हम कहाँ हैं।'

अब कोई शक नहीं था कि लगाम किसके हाथ में थी। सुबह से अब तक वॉरग्रेव टेरेस पर अपनी कुर्सी में दुपके बैठे थे। किसी तरह की बाहरी सक्रियता में हिस्सा न लेते हुए। अब उन्होंने वर्षों के अभ्यास से क़ायम अधिकार भावना के बल पर आसानी से बागडोर थाम ली थी। वे निश्चित रूप से इस जमावड़े की अध्यक्षता कर रहे थे।

गला साफ़ करते हुए उन्होंने एक बार फिर बात शुरू की।

'आज सुबह जब मैं टेरेस पर बैठा हुआ था मैं आपकी हरकतें देख रहा था। आपके उद्देश्य के बारे में शक का सवाल ही नहीं था। आप एक अनजान हत्यारे के लिए टापू में खोज-बीन कर रहे थे?'

'बिलकुल ठीक कहा, सर', फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा।

जज ने आगे कहा :

'आप लोग बिना शक उसी निष्कर्ष पर पहुँचे जिस पर मैं भी—कि ऐण्टनी मार्सटन और श्रीमती रॉजर्स की मौतें न तो दुर्घटनाएँ थीं, न आत्म-हत्याएँ। इसमें भी सन्देह नहीं कि आप मिस्टर ओवेन के उद्देश्य के बारे में भी एक निष्कर्ष पर पहुँचे जिसे पूरा करने के लिए हम सबों को इस टापू पर बुलाया गया है?'

ब्लोर ने बैठी हुई आवाज़ में कहा :

'वह पागल है ! खिसका हुआ है।'

जज खाँसे।

'यह तो निश्चय ही सही है। लेकिन इससे असली बात पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हमारा सबसे बड़ा सरोकार अब यह है कि हम अपनी जानें बचायें।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने काँपती आवाज़ में कहा :

'टापू पर कोई नहीं है। मैं आपको बता रहा हूँ—कोई नहीं है।'

जज ने अपनी ठोढ़ी को सहलाया।

उन्होंने नरमी से कहा :

'जिस अर्थ में तुम कह रहे हो, उस अर्थ में नहीं। मैं तो उस निष्कर्ष पर आज सुबह-सवेरे ही पहुँच गया था। मैं तुम लोगों को बता सकता था कि तुम्हारी खोज का कोई फल नहीं निकलेगा। इस पर भी मेरी पक्की राय है कि मिस्टर ओवेन (अगर उन्हें वही नाम दिया जाय जो उन्होंने ख़ुद अपने लिए चुना है) इसी टापू पर हैं। बिलकुल। यह योजना जो सामने रखी गयी है जिसका उद्देश्य है ऐसे लोगों को न्याय के घेरे में लाना जिन्हें क़ानून छू नहीं सकता, *सिर्फ़ एक तरीक़े से पूरी हो सकती थी।* मिस्टर ओवेन टापू में सिर्फ़ एक ही तरह आ पाते।'

'बिलकुल साफ़ है। *मिस्टर ओवेन हमीं में से एक आदमी है...*'

VI

'ओह, नहीं, नहीं, नहीं...'

यह वेरा थी जो लगभग एक कराह की तरह फूट पड़ी। जज ने अपनी पैनी नज़र उसकी तरफ़ फेरी।

उन्होंने कहा :

'एक बात समझ लो, सच्चाई से मुँह चुराने का समय नहीं है अब। हम सब गम्भीर संकट में फँसे हैं। हम में से एक यू. एन. ओवेन है। और हम नहीं जानते वह हममें से कौन है। इस टापू पर आने वाले दस लोगों में से तीन तो निश्चित रूप से नहीं थे। ऐण्टनी मार्सटन, श्रीमती रॉजर्स और जनरल मैकार्थर तो सन्देह से परे चले गये हैं। हम में से सात बचे हैं। इन सात में से एक, अगर मैं दूसरी तरह कहूँ तो, नक़ली नन्हा फ़ौजी लड़का है।'

वे रुके और उन्होंने चारों तरफ़ दौड़ायी।

'क्या मैं समझूँ कि आप लोग सहमत हैं?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'यह बेहद अजीब है—लेकिन मेरा ख़याल है कि आप सही कह रहे हैं।'

ब्लोर ने कहा :

'कोई शक नहीं। और अगर आप मुझ से पूछें तो मुझे बहुत सही अन्दाज़ा है कि—'

जस्टिस वॉरग्रेव के हाथ की एक तेज़ हरकत ने उसे रोक दिया। जज ने आहिस्ता से कहा :

'उसकी चर्चा हम जल्दी ही करेंगे। इस समय मैं बस यही तय कर लेना चाहता हूँ कि हम लोग तथ्यों पर सहमत हैं।'

बुनाई करते-करते एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'आपकी दलील मुनासिब लगती है। मैं सहमत हूँ कि हम में से एक शैतान के क़ब्ज़े में है।'

वेरा बुदबुदायी :

'मुझे विश्वास नहीं हो रहा...मैं...'

वॉरग्रेव ने कहा :

'लॉम्बार्ड?'

'मैं सहमत हूँ, सर, बिलकुल।'

जज ने अपना सिर सन्तुष्ट भाव से हिलाया। उन्होंने कहा :

'अब हम सबूत को जाँचें। शुरू करें तो क्या किसी एक व्यक्ति पर सन्देह करने का कोई ख़ास कारण है? मिस्टर ब्लोर, मेरा ख़याल है तुम कुछ कहना चाहते हो।'

ब्लोर तेज़-तेज़ साँस ले रहा था। उसने कहा :

'लॉम्बार्ड के पास एक रिवॉल्वर है। उसने कल रात सच नहीं बोला। वह मानता है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड उपेक्षा से मुस्कराया।

उसने कहा :

'मेरा ख़याल है मैं फिर से सारी बात समझा दूँ।'

उसने वही कहानी संक्षेप में और साफ़-साफ़ दोहरा दी।

ब्लोर ने तीखे स्वर में कहा :

'इसका सबूत क्या है? अपनी कहानी को सही ठहराने के लिए तुम्हारे पास कोई सबूत तो है नहीं।'

जज ने खाँस कर कहा, 'दुर्भाग्य से हम सब इसी हालत में हैं। हमारे पास सामने रखने के लिए अपनी बात के सिवा और कुछ नहीं है।'

वे आगे झुके।

'आप में से किसी ने भी यह नहीं समझा है कि यह कितनी अजीब-सी हालत है। मेरे हिसाब से तो एक ही तरीक़ा है जो हम अपना सकते हैं। क्या कोई है जिसे हम उस सबूत के बल पर जो हमारे पास है पक्के तौर पर सन्देह से बरी कर सकते हैं?'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने जल्दी से कहा :

'मुझे। मैं जाना-माना डॉक्टर हूँ। महज़ यह विचार ही बेतुका है कि मैं...'

एक बार फिर जज के हाथ के इशारे ने बोलने वाले को बात नहीं पूरी करने दी। जस्टिस वॉरग्रेव ने अपनी हल्की-सी साफ़ आवाज़ में कहा :

'मैं भी एक जाना-माना आदमी हूँ। लेकिन इससे कुछ साबित नहीं होता डॉक्टर। इससे पहले डॉक्टर भी पगलाये हैं, जज भी पगलाये हैं और', उन्होंने ब्लोर की तरफ़ देखते हुए कहा, 'पुलिसवाले भी।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'लेकिन हर हाल में, मेरा ख़याल है, आप औरतों को तो इससे बाहर ही रखेंगे।'

जज की भँवें चढ़ गयीं। उन्होंने अपने उस जाने-माने 'तेज़ाबी' लहजे में कहा, जिसे वकील बख़ूबी जानते थे :

'क्या तुम यह दावा कर रहे हो कि औरतें हत्यारे पागलपन का शिकार नहीं हो सकतीं?'

लॉम्बार्ड ने खीझे स्वर में कहा :

'मैं ऐसा नहीं कह रहा, मगर फिर भी, यह मुश्किल ही से सम्भव लगता है कि—'

वह रुक गया। जस्टिस वॉरग्रेव उसी पतली खटास-भरी आवाज़ में आर्मस्ट्रॉन्ग से मुख़ातिब हुए।

'मेरा ख़याल है, डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग कि कोई औरत शारीरिक रूप से इतनी ताक़तवर हो सकती है कि वैसा वार कर सके जिससे बेचारे मैकार्थर की मौत हुई?'

डॉक्टर ने शान्त स्वर में कहा :

'बिलकुल—अगर उसके पास मुनासिब हथियार हो जैसे रबड़ का डण्डा या ऐसी ही कोई चीज़।'

'इसमें कोई अतिरिक्त बल तो नहीं लगाना पड़ेगा?'

'क़तई नहीं।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने अपना कछुए जैसा सिर हिलाया।

'दूसरी मौतें दवा या ज़हर देने से हुई हैं। यह काम तो हलकी-से-हलकी शारीरिक क्षमता से हो सकता है, जिससे कोई भी इनकार नहीं करेगा।'

वेरा गुस्से में चिल्लायी :

'मेरा ख़याल है, आप पागल हैं।'

जज की आँखें धीरे-धीरे घूमीं और उस पर आ टिकीं। वह ऐसे आदमी की निगाह थी जो आदमियों को भावरहित ढंग से तोलने का आदी था। वेरा ने सोचा :

'वह मुझे सिर्फ़ एक नमूने की तरह देख रहा है और—' यह ख़याल उसे चकित कर गया, 'वह मुझे बहुत पसन्द नहीं करता।'

नपे-तुले लहजे में जज कह रहे थे :

'अपनी भावनाओं को क़ाबू में रखने की कोशिश करो। मैं तुम पर आरोप नहीं लगा रहा हूँ।' वे मिस ब्रेण्ट की तरफ़ झुके। 'उम्मीद है, मिस ब्रेण्ट, आप मेरे इस हठ पर नाराज़ नहीं हैं कि हम सब बराबर से सन्देह के घेरे में हैं।'

एमिली ब्रेण्ट बुनाई कर रही थीं। उन्होंने नज़रें नहीं उठायीं। ठण्डी आवाज़ में उन्होंने कहा :

'जो मेरे चरित्र के बारे में कुछ भी जानता है, उसे यह ख़याल ही बेहद बेतुका लगेगा कि मुझे किसी साथी मनुष्य की जान लेने का दोषी ठहराया जाये—तीन-तीन साथी मनुष्यों की तो बात ही छोड़ दीजिए। लेकिन मैं इस बात को अच्छी तरह समझ रही हूँ कि इन परिस्थितियों में किसी को भी पूरे सबूत के बिना बरी नहीं किया जा सकता। जैसा कि मैंने कहा, हमारे बीच एक शैतान है।'

जज ने कहा :

'तो हम सहमत हैं। सिर्फ़ चरित्र और हैसियत के बल पर किसी को निर्दोष नहीं ठहराया जा सकता, सन्देह के घेरे से बाहर नहीं किया जा सकता।'

लॉम्बार्ड ने कहा : 'और रॉजर्स? उसके बारे में?'

जज ने एकटक उसे देखा।

'उसके बारे में क्या?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मेरे ख़याल में तो बहरहाल रॉजर्स इस घेरे से बाहर ही जान पड़ता है।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'अच्छा, किस आधार पर?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'पहली बात तो यह कि उसके पास यह सब करने का दिमाग़ नहीं है। और दूसरी यह कि उसकी पत्नी भी मारे गये लोगों में शामिल है।'

जज की घनी भवें एक बार फिर चढ़ गयीं। उन्होंने कहा :

'मेरे ज़माने में, नौजवान, बहुत-से लोग मेरे सामने अपनी पत्नियों की हत्या करने के आरोप में पेश हुए—और दोषी भी पाये गये।'

'ओह, मैं सहमत हूँ। पत्नी की हत्या बिलकुल सम्भव है—लगभग स्वाभाविक। लेकिन यह वाली नहीं। मैं यह विश्वास कर सकता हूँ कि रॉजर्स अपनी पत्नी को इस डर से मार दे कि कहीं वह टूट-बिखर कर उसका भाँडा न फोड़ दे या इसलिए कि वह उसे नापसन्द करने लगा था

या इसलिए कि वह किसी दूसरी औरत से जुड़ना चाहता था। लेकिन मैं उसे उस पगलैट मिस्टर ओवेन के रूप में नहीं देख पाता जो इस तरह पागलों की तरह न्याय कर रहा हो और ऐसे जुर्म के लिए अपनी पत्नी को ठिकाने लगा रहा हो जो दोनों ने किया था।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'तुम सुनी-सुनायी बात को सबूत मान रहे हो। हमें यह नहीं मालूम है कि रॉजर्स और उसकी पत्नी ने अपने मालिक की हत्या करने की साजिश की थी। हो सकता है, वह एक झूठा बयान हो जो इसलिए दिया गया ताकि रॉजर्स उसी स्थिति में नज़र आये जिसमें हम सब। कल रात श्रीमती रॉजर्स का आतंक इस वजह से हो सकता है कि उसे अन्दाज़ा हो गया हो कि उसका पति मानसिक रूप से अस्थिर है।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'ख़ैर, अपने ही हिसाब से चलिए। यू. एन. ओवेन हमीं में से एक है। कोई अपवाद नहीं इसमें। हम सब शक के दायरे में आते हैं।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'मेरा कहना है कि चरित्र, हैसियत और सम्भावना के आधार पर कोई छूट नहीं मिलनी चाहिए। हमें अब इस बात को जाँचना है कि तथ्यों के आधार पर एक या अधिक व्यक्तियों को छूट देने की क्या सम्भावना है। आसान शब्दों में कहें तो क्या हम में से क्या एक या अधिक व्यक्ति हैं जिन्होंने किसी भी तरह से न तो ऐण्टनी मार्सटन को साइनाइड खिलायी, न श्रीमती रॉजर्स को ज़रूरत से ज़्यादा नींद की दवा दी और जिनके पास जनरल मैकार्थर पर वह वार करने का कोई अवसर नहीं था जिससे उनकी जान गयी?'

ब्लोर का भारी चेहरा दमक उठा। वह आगे को झुका :

'अब आप क़ायदे की बात कर रहे हैं सर !' वह बोला। 'यही तरीक़ा है। आइए इसे देखें। जहाँ तक युवक मार्सटन का सवाल है, मुझे नहीं लगता कुछ किया जा सकता है। यह पहले ही सुझाया गया है कि बाहर से किसी ने उसके गिलास में कुछ डाल दिया—इससे पहले कि उसने उसे

आख़िरी बार भरा। कमरे के अन्दर मौजूद आदमी यह काम और आसानी से कर पाता। मुझे याद नहीं कि रॉजर्स कमरे में था या नहीं, लेकिन बाक़ी हम सब में से कोई भी यह काम निश्चित रूप से कर सकता था।'

वह रुका, फिर आगे कहता गया :

'अब श्रीमती रॉजर्स को लीजिए। जो लोग इस मामले से जुड़े हैं, उनमें रॉजर्स और डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग हैं। इनमें से कोई भी यह काम आसानी से कर सकता था—'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग उछल कर खड़े हो गये। वे काँप रहे थे :

'मैं इसका विरोध करता हूँ। यह बिलकुल ग़लत है। मैं क़सम खाता हूँ कि जो ख़ूराक मैंने उस औरत को दी थी, वह एकदम—'

'डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग।'

वह पतली-सी तेज़ाबी आवाज़ में ताक़त थी। डॉक्टर अपनी बात कहते-कहते बीच ही में एक गये। वह ठण्डी पतली आवाज़ जारी रही :

'आपका गुस्सा बहुत स्वाभाविक है। इसके बावजूद आपको मानना होगा कि सच्चाइयों का तो सामना करना ही होगा। आप या रॉजर्स बड़ी आसानी से जानलेवा ख़ूराक दे सकते थे। आइए, अब यहाँ मौजूद दूसरे लोगों की स्थिति पर विचार करें। ज़हर देने का कौन-सा मौक़ा मेरे पास, इंस्पेक्टर ब्लोर के पास, मिस ब्रेण्ट के पास, मिस क्लेथॉर्न के पास और मिस्टर लॉम्बार्ड के पास था? क्या हम में से कोई पूरी तरह और हर दृष्टि से छोड़ा जा सकता है?' वे रुके। 'मेरा ख़याल है नहीं।'

वेरा ने गुस्से में कहा :

'मैं उस औरत के पास थी ही नहीं। आप सब इसकी तस्दीक कर सकते हैं।'

जस्टिस वॉरग्रेव एक मिनट रुके, फिर उन्होंने कहा :

'जहाँ तक मेरी याददाश्त बताती है, सच यह है—अगर मैं ग़लत हूँ तो कोई बेशक मुझे सही कर दे—श्रीमती रॉजर्स को ऐण्टनी मार्सटन और मिस्टर लॉम्बार्ड ने उठा कर सोफ़े पर लिटाया था और डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग उसकी तरफ़ गये थे। उन्होंने रॉजर्स को ब्राण्डी लाने भेजा। फिर एक

सवाल उठा कि जो आवाज़ हमने सुनी थी, वह आयी कहाँ से थी। मिस ब्रेण्ट को छोड़ कर, जो इसी कमरे में बेहोश औरत के पास रहीं, हम सब बग़ल के कमरे में गये—'

एमिली ब्रेण्ट के गालों पर थोड़ी-सी लाली नज़र आयी। उन्होंने बुनाई रोक दी और कहा :

'यह अन्याय है !'

वह निर्मम पतली आवाज़ जारी रही !

'जब हम इस कमरे में लौट कर आये तो आप, मिस ब्रेण्ट, सोफ़े पर लेटी औरत के ऊपर झुकी हुई थीं।'

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'क्या आम इन्सानियत एक जुर्म है?'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'मैं सिर्फ़ तथ्य बता रहा हूँ। फिर रॉजर्स ब्राण्डी लेकर कमरे में आया जिसमें वह कमरे में आने से पहले बड़ी आसानी से कुछ मिला सकता था। श्रीमती रॉजर्स को ब्राण्डी दी गयी और उसके कुछ ही देर बाद उसके पति और डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने उसे ऊपर जा कर बिस्तर पर लेटने में मदद की जहाँ डॉक्टर ने उसे नींद की दवा दी।'

ब्लोर ने कहा :

'यही हुआ था। एकदम। और इससे जज, मिस्टर लॉम्बार्ड, मैं और मिस क्लेथॉर्न बरी हो जाते हैं।'

उसकी आवाज़ ऊँची और ख़ुश थी। जस्टिस ने सर्द आँखों से उसे देखा और बुदबुदाये :

'आह, क्या सचमुच? हमको *हर सम्भावना पर* ग़ौर करना चाहिए।'

ब्लोर ने उन्हें घूरा। फिर वह बोला :

'आपकी बात मेरे पल्ले नहीं पड़ी।'

जज बात आगे बढ़ाते हुए कहा :

'ऊपर अपने कमरे में श्रीमती रॉजर्स बिस्तर में लेटी है। डॉक्टर ने उसे जो नींद की दवा दी है वह असर करने लगी है। उसे धीरे-धीरे नींद आ रही

है और अपने पर उसका क़ाबू कम हो गया है। फ़र्ज़ करो उसी समय दरवाज़े पर दस्तक होती है और कोई एक गोली या कोई दवा लेकर दाख़िल होता है और उसके पास आ कर कहता है कि "डॉक्टर ने तुम्हें यह लेने के लिए कहा है।" क्या आपका ख़याल है, उसने बिना दो बार उसके बारे में सोचे, उसे फ़ौरन निगल न लिया होगा?'

ख़ामोशी छा गयी। ब्लोर ने अपने पैर खिसकाये और मुँह सिकोड़ा। फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं इस कहानी में पल भर को भी यक़ीन नहीं करता। इसके अलावा उसके बाद हम में से कोई इस कमरे से घण्टों तक बाहर नहीं गया था। मार्सटन की मौत और वह सारा हंगामा जो हुआ था।'

जज ने कहा

'कोई बाद में अपने सोने के कमरे से आ सकता था।'

लॉम्बार्ड ने एतराज़ किया :

'लेकिन तब रॉजर्स वहाँ होता।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग हिले।

'नहीं', उन्होंने कहा। 'रॉजर्स खाने के कमरे और बग़ल के छोटे भण्डार की साफ़-सफ़ाई करने नीचे गया हुआ था। उस समय कोई भी बिना दिखे उस औरत के सोने के कमरे में जा सकता था।'

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'लेकिन डॉक्टर तब तक तो निश्चय ही वह औरत उस दवा के असर में गहरी नींद में रही होगी जो आपने उसे दी थी?'

'सारी सम्भावना तो यही है। लेकिन यह पक्का नहीं है। जब तक किसी मरीज को एक से ज़्यादा बार दवा न दें तब तक अलग-अलग दवाइयों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया का पता नहीं चल सकता। कभी-कभी नींद की दवा को असर करने में काफ़ी समय लगता था। यह उस ख़ास दवाई और मरीज़ की अपनी प्रकृति के तालमेल की बात होती है।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'निश्चय ही आप ऐसा कहेंगे डॉक्टर। यह आपको माफ़िक जो बैठता

है।'

एक बार फिर आर्मस्ट्रॉन्ग का चेहरा गुस्से से सँवला गया।

लेकिन एक बार फिर उस ठण्डी आवेगहीन आवाज़ ने उनके होंटों के शब्दों को रोक दिया।

'एक-दूसरे पर आरोप लगाने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। हमें तथ्यों से मतलब है। यह तो मेरे ख़याल में तय हो गया है कि जैसा खाका मैंने खींचा है, वैसा हो सकता है। मैं मानता हूँ कि उसकी सम्भावना ज़्यादा नहीं है, हालाँकि फिर यह इस पर निर्भर करता है कि वह कौन व्यक्ति रहा होगा। ऐसे काम के सिलसिले में मिस ब्रेण्ट या मिस क्लेथॉर्न का वहाँ जाना मरीज के दिमाग़ में सन्देह न उपजाता। मैं मानता हूँ मेरा या ब्लोर या मिस्टर लॉम्बार्ड का प्रकट होना निश्चित रूप से सामान्य न समझा जाता, लेकिन फिर भी मैं सोचता हूँ इससे मरीज के अन्दर कोई असली शक न पैदा होता।'

ब्लोर ने कहा :

'और यह हमें कहाँ पहुँचाता है?'

VII

अपने होंट को सहलाते और काफ़ी आवेगरहित और अमानवीय-से दिखते हुए जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'हम अब दूसरी हत्या को भी निपटा दिया है और यह सच्चाई क़ायम कर दी है कि हम में से कोई भी शक के परे नहीं जा सकता।'

वे रुके फिर उन्होंने आगे कहा :

'अब हम जनरल मैकार्थर की मौत पर आते हैं। यह आज सुबह हुई। मैं सबसे पहले यही चाहूँगा कि अगर किसी के पास अपने समय के बारे में कोई सबूत हो तो वह साफ़-साफ़ बता दे। मैं फ़ौरन यह बता रहा हूँ कि मेरे पास कोई भरोसे लायक़ सबूत नहीं है। मैं सारी सुबह यहाँ टेरेस पर बैठा उस अनोखी हालत पर सोच-विचार करता रहा हूँ जिसमें हम ख़ुद को पा रहे हैं।'

'मैं उस कुर्सी में वहाँ टेरेस पर सारी सुबह बैठा रहा जब तक खाने की

घण्टी नहीं बजी लेकिन मेरे ख़याल से सुबह के दौरान ऐसे कई मौके रहे होंगे जब कोई मुझे नहीं देख रहा था और जब मैं बड़े आराम से समुद्र तक टहलता हुआ जा सकता था और जनरल को मार कर लौट सकता था। इस तथ्य के लिए कि मैं टेरेस छोड़ कर कहीं नहीं गया, बस मेरा बयान ही है। इन परिस्थितियों में यह काफ़ी नहीं है। सबूत होना चाहिए।'

ब्लोर ने कहा :

'मैं सारी सुबह मिस्टर लॉम्बार्ड और डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग के साथ था। वे इसकी गवाही देंगे।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'तुम रस्सी लाने घर गये थे।'

ब्लोर ने कहा :

'बिलकुल गया था। सीधे वहाँ गया और सीधे ही लौट आया। आप जानते हैं मैंने यही किया था।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'तुमने काफ़ी समय लगाया...'

ब्लोर का चेहरा लाल हो गया। उसने कहा :

'क्या मतलब है आपका डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मैंने तो सिर्फ़ यही कहा कि तुमने काफ़ी समय लगाया।'

'उसे खोजना भी तो था कि नहीं? पहुँचते ही तो रस्सी हाथ में आ नहीं जाती।'

इंस्पेक्टर ब्लोर की ग़ैरहाज़िरी में आप दोनों लोग साथ थे?

आर्मस्ट्रॉन्ग ने गर्मागरम लहजे में कहा :

'निश्चित रूप से। यानी लॉम्बार्ड कुछ मिनट के लिए गया था। मैं वहीं रहा जहाँ मैं था।'

लॉम्बार्ड ने मुस्करा कर कहा :

'मैं जाँचना चाहता था कि उस तरफ़ गाँव को सूरज की कौंध से सन्देश भेजने की क्या सम्भावना है। सबसे अच्छी जगह खोजना चाहता

था। मैं एक या दो मिनट ही ग़ायब था।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने सिर हिला कर हामी भरी और कहा :

'यह सही है। इतना समय नहीं था कि हत्या कर सके, इसका मैं भरोसा दिलाता हूँ।'

जज ने कहा :

'क्या आप में से किसी ने अपनी घड़ियों पर नज़र डाली थी?'

'नहीं।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं तो घड़ी पहने ही नहीं था।'

जज ने सपाट लहजे में कहा

'एक या दो मिनट तो अस्पष्ट-सी बात है।'

उन्होंने अपनी नज़र उस सीधी तनी आकृति की तरफ़ घुमायी जिनकी गोद में बुनाई रखी हुई थी।

'मिस ब्रेण्ट?'

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'मैं मिस क्लेथॉर्न के साथ टहलती हुई टापू की चोटी तक गयी थी। उसके बाद मैं टेरेस पर धूप में बैठी रही।'

जज ने कहा :

'मुझे तो आपको वहाँ देखने का ख़याल नहीं है।'

'नहीं, मैं पूरब की तरफ़ मकान के कोने के उस तरफ़ थी। वहाँ सीधी हवा नहीं लगती थी।'

'और आप वहाँ दोपहर के खाने तक बैठी रहीं?'

'हाँ।'

'मिस क्लेथॉर्न?'

वेरा ने तत्परता से और साफ़-साफ़ जवाब दिया :

'मैं आज सुबह के समय तो मिस ब्रेण्ट के साथ थी। उसके बाद मैं थोड़ी देर इधर-उधर टहलती रही। फिर मैं नीचे गयी और जनरल मैकार्थर से बात करती रही।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने बीच में टोका। वे बोले :

'यह किस वक़्त की बात है?'

पहली बार वेरा कुछ अस्पष्ट-सी थी। उसने कहा :

'मालूम नहीं। मेरा ख़याल है लंच से लगभग एक घण्टा पहले—या हो सकता है इससे कम रहा हो।'

ब्लोर ने पूछा :

'यह उनसे हमारी बातचीत से पहले की बात है या बाद की?'

वेरा ने कहा :

'मुझे पता नहीं। वे—वे बहुत अजीब-से थे।'

उसे झुरझुरी आयी।

'किस तरह अजीब थे?' जज ने जानना चाहा।

वेरा ने धीमी आवाज़ में कहा :

'उन्होंने कहा हम सब मरने वाले थे—उन्होंने कहा वे अन्त की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने—उन्होंने मुझे डरा दिया था।'

जज ने सिर हिलाया। वे बोले :

'इसके बाद तुमने क्या किया?'

'मैं घर की तरफ़ लौट गयी। फिर ठीक लंच से पहले मैं एक बार फिर घर के बाहर गयी—घर के पीछे ऊपर की तरफ़। मैं सारा दिन बेचैन रही हूँ।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने ठोढ़ी को थपथपाया। उन्होंने कहा :

'अब बचा है रॉजर्स। हालाँकि मुझे शक है कि उसकी गवाही हमारे ज्ञान की कुल-जमा में कुछ जोड़ पायेगी।'

रॉजर्स को सबके सामने बुलवाया गया। लेकिन उसके पास बताने को ज़्यादा नहीं था। सारी सुबह वह घरेलू काम-काज और दोपहर के खाने की तैयारी में जुटा रहा। लंच के पहले वह ट्रे में कॉकटेल रख कर टेरेस पर ले गया था और फिर अपना सामान परछत्ती से उतार कर दूसरे कमरे में रखने गया था। उसने सारी सुबह खिड़की से बाहर नहीं देखा था और इसलिए उसने ऐसा कुछ नहीं देखा था जो जनरल मैकार्थर की हत्या पर

रोशनी डाल सके। वह क़सम खाने को तैयार था कि जब वह दोपहर के खाने के लिए मेज़ सजा रहा था तो मेज़ पर चीनी मिट्टी के आठ पुतले थे।

रॉजर्स की गवाही के बाद थोड़ी-सी ख़ामोशी छा गयी।

जस्टिस वॉरग्रेव ने गला साफ़ किया।

लॉम्बार्ड ने बुदबुदा कर वेरा क्लेथॉर्न को कहा :

'अब निचोड़ की बारी है।'

जज ने कहा :

'हमने अपनी क्षमता के अनुसार इन तीन मौतों की परिस्थितियों की जाँच की है। हालाँकि कुछ मामलों में किन्हीं ख़ास लोगों के संलग्न होने के ख़िलाफ़ सम्भावनाएँ हैं, तो भी हम पक्के तौर पर यह नहीं कह सकते कि कोई एक व्यक्ति हर प्रकार से दोष मुक्त है। मैं फिर अपना पक्का यक़ीन दोहराता हूँ कि इस कमरे में इकट्ठा सात लोगों में से एक व्यक्ति ख़तरनाक और शायद पागल अपराधी है। हमारे सामने कोई सबूत नहीं है कि यह आदमी कौन है। इस समय कुल-जमा हम यही कर सकते हैं कि उन साधनों के बारे में सोचें जिनसे हम मदद के लिए उस तरफ़ गाँव से सम्पर्क कर सकते हैं और मदद में देर होने की हालत में (जो मौसम को देखते हुए सम्भव जान पड़ता है) हम अपनी सुरक्षा के लिए कौन-से उपाय कर सकते हैं।

'मैं आप सभी से कहूँगा कि इस सब को सावधानी से जाँचें-परखें और अगर कोई सुझाव आप देना चाहें तो मुझे ज़रूर दें। इस बीच मैं सब को चेता रहा हूँ कि अपनी सुरक्षा के बारे में सतर्क रहें। अब तक हत्यारे का काम आसान रहा है, क्योंकि उसके शिकार शक नहीं कर रहे थे। अब यह हमारा काम होगा कि हम में से हरेक पर सन्देह करें। पहले सावधान किये जाने का मतलब है पहले ही हथियारों से लैस हो जाना। कोई जोखिम मत उठाइए और संकट को ले कर सतर्क रहिए। बस इतना ही कहना है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने फुसफुसा कर कहा :

'अदालत अब मुल्तवी होगी...'

अध्याय 10

I

'क्या तुम इस पर विश्वास करते हो?' वेरा ने पूछा।

वह और फ़िलिप लॉम्बार्ड दोनों कमरे की खिड़की की मुँडेर पर बैठे थे। बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी और तेज़ हवा के झँकोरे खिड़की के शीशों से टकरा रहे थे।

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने जवाब देने से पहले अपने सिर को हल्के से एक तरफ़ उठाया। फिर उसने कहा :

'तुम्हारा मतलब है, क्या मैं विश्वास करता हूँ कि जब वह बूढ़ा वॉरग्रेव कहता है कि हमी में से कोई है तो वह सही कह रहा है?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने धीरे-धीरे कहा।

'कहना मुश्किल है। दलील तो उसकी सही लगती है, लेकिन—'

वेरा ने शब्दों को उसके मुँह से छीन लिया।

'लेकिन यह कितना अजीब और विश्वास से परे लगता है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने मुँह बनाया।

'पूरा मामला ही विश्वास से परे है। लेकिन मैकार्थर की मौत के बाद एक बात को लेकर कोई सन्देह नहीं रह गया है। अब दुर्घटना और आत्म-हत्या का कोई सवाल नहीं है। यह निश्चित रूप से हत्या है। यानी अब तक तीन ख़ून।'

वेरा को कँपकँपी आयी। उसने कहा :

'यह किसी भयानक सपने की तरह है। मुझे बराबर यह महसूस होता रहता है कि इस तरह की बातें हो नहीं सकतीं।'

उसने समझते हुए कहा :

'मैं जानता हूँ। अभी दरवाज़े पर दस्तक होगी और सुबह की चाय लायी जायेगी।'

वेरा ने कहा :

'काश ऐसा हो सकता।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने गम्भीर स्वर में कहा :

'हाँ, पर यह होगा नहीं। हम सब एक सपने में हैं। और अब से हम सबको बराबर सतर्क रहना है।'

वेरा ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा :

'अगर—अगर हमी में से कोई है—तो क्या ख़याल है तुम्हारा, कौन है वह?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड अचानक मुस्कराया। उसने कहा :

'यानी तुम हम दोनों को शामिल नहीं कर रहीं। ख़ैर, ठीक है। मैं इतना अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं ख़ूनी नहीं हूँ और मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे अन्दर किसी क़िस्म का पाग़लपन है। तुम मुझे बहुत समझदार और दुरुस्त होश-हवास वाली लड़की लगती हो। तुम्हारी अक़्लमन्दी पर मैं शर्त लगा सकता हूँ।'

हल्की-सी मुस्कान के साथ वेरा ने कहा :

'शुक्रिया।'

फ़िलिप ने कहा : 'अब यह बताओ मिस वेरा क्लेथॉर्न क्या तुम पलट कर मेरे बारे में कुछ नहीं कहोगी?'

वेरा एक मिनट हिचकी, फिर उसने कहा :

'तुम जानते हो तुम यह मान चुके हो कि आदमी की ज़िन्दगी को तुम वैसा पवित्र नहीं मानते, लेकिन इस सब के बावजूद मैं तुम्हें उस आदमी के रूप में नहीं देख पाती जिसने वह ग्रामोफ़ोन रिकार्ड के आरोप तैयार किये थे।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'ठीक कहा। अगर मुझे एक या एक से ज़्यादा ख़ून करने होते तो इसके पीछे सिर्फ़ एक वजह होती कि मुझे उनसे क्या मिलने वाला था। यह थोक भाव से सफ़ाया करना मेरी फ़ितरत में नहीं है। ठीक, तो हम अपने को हटा कर बाक़ी पाँच साथी कैदियों को परखेंगे। इनमें से कौन यू. एन. ओवेन है? ख़ैर, चूँकि पक्का आधार तो कोई है नहीं, इसलिए अगर अनुमान ही लगाऊँ तो मैं वॉरग्रेव का नाम लूँगा।'

'ओह !' वेरा की आवाज़ में आश्चर्य था। उसने एक-दो मिनट सोचा,

फिर पूछा, 'क्यों?'

'सही तौर पर कहना मुश्किल है। लेकिन सबसे पहले तो वे बूढ़े आदमी हैं और बरसों तक अदालतों में जज का काम करते रहे हैं। यानी वे बरसों तक ख़ुदा की भूमिका निभाते आये हैं। आख़िर में यह आदमी के दिमाग़ को फिरा ही देता है। वह ख़ुद को ऐसी सूरत-शक्ल में देखने लगता है जहाँ मौत और ज़िन्दगी की ताक़त उसके हाथ में है और इसके बाद हो सकता है एक जगह दिमाग़ पूरी तरह घूम जाये और वह एक क़दम आगे बढ़कर जज ही नहीं, जल्लाद का काम भी हाथ में ले ले।'

वेरा ने धीमे से कहा :

'हाँ, मेरा ख़याल है, यह सम्भव है।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'तुम्हारा शक किस पर है?'

बिना हिचक वेरा ने जवाब दिया :

'डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग।'

लॉम्बार्ड ने हल्के से सीटी बजायी।

'डॉक्टर? पता है, मैं उसे सबसे आख़िर में रखता।'

वेरा ने सिर हिलाया।

'नहीं। दो मौतें ज़हर से हुई हैं। यह किसी डॉक्टर की तरफ़ ही इशारा करता है। और फिर इस तथ्य को नज़रन्दाज़ नहीं किया जा सकता कि हम सिर्फ़ एक बात के बारे में पूरी तरह निश्चित हैं श्रीमती रॉजर्स ने जो दवा पी थी वह वही नींद की दवा थी जो डॉक्टर ने उसे दी थी।'

लॉम्बार्ड ने स्वीकार किया :

'हाँ, यह सही है।'

वेरा आगे कहती रही :

'अगर एक डॉक्टर पागल हो जाये तो इससे पहले कि कोई शक करे, बहुत समय गुज़र जायेगा। और फिर डॉक्टर बहुत काम करते हैं, उन पर दबाव भी बहुत होता है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'हाँ, लेकिन मुझे शक है उन्होंने मैकार्थर को मारा होगा। जब मैं उन्हें छोड़ कर गया तो उन्हें इतना समय ही नहीं मिला होगा—यानी अगर वे तेज़ी से दौड़ कर वहाँ नहीं गये और उसी रफ़्तार से लौटे नहीं। मुझे शक है, उनका शरीर इस तरह की दौड़-भाग के क़ाबिल है।'

वेरा ने कहा :

'उन्होंने उस समय नहीं किया। उन्हें बाद में मौक़ा मिला।'

'कब?'

'जब वे जनरल को लंच के लिए बुलाने गये।'

फ़िलिप ने फिर सीटी बजायी। उसने कहा :

'तो तुम्हारा ख़याल है उन्होंने उस समय किया? बड़ी हिम्मत दिखायी फिर तो।'

वेरा ने अधीरता से कहा :

'कौन-सा ख़तरा था? यहाँ वही हैं जिनके पास इलाज वग़ैरा की जानकारी है। वे क़सम खा सकते हैं कि आदमी को मरे घण्टे भर से ज़्यादा हो गया। कौन उनकी बात काटेगा?'

फ़िलिप ने सोचते हुए वेरा की तरफ़ देखा :

'पता है', वह बोला, 'यह बहुत समझदार ख़याल है तुम्हारा। मैं सोचता हूँ कि—'

II

'कौन है वह, मिस्टर ब्लोर? यही मैं जानना चाहता हूँ। कौन है वह?'

रॉजर्स का चेहरा हरकतज़दा था। उसके हाथ सामान साफ़ करने वाले कपड़े पर कसे हुए थे जो उसने पकड़ रखा था।

पूर्व-इंस्पेक्टर ब्लोर ने कहा :

'यही तो सवाल है, मेरे बन्दे। समझे?'

'जज साहब ने कहा हममें से एक। कौन? यही मैं जानना चाहता हूँ। कौन है आदमी के भेस में भेड़िया?'

'यही तो', ब्लोर ने कहा, 'हम सभी जानना चाहेंगे।'

रॉजर्स ने चतुराई से कहा :

'लेकिन आपको कोई ख़याल आया है, मिस्टर ब्लोर। आया है न?'

'हो सकता है मैंने अन्दाज़ा लगाया हो', ब्लोर ने धीरे-धीरे कहा। 'मगर इसे साबित करना बाक़ी है। हो सकता है मैं ग़लत हूँ। मैं बस यही कह सकता हूँ कि अगर मैं सही हूँ तो जिस आदमी की बात मैं कर रहा हूँ वह सचमुच बहुत शातिर आदमी है, बहुत शातिर।'

रॉजर्स ने माथे से पसीना पोंछा और भर्राये स्वर में कहा :

'किसी बुरे सपने की तरह है यह सब। हाँ, ऐसा ही है।'

ब्लोर ने उसकी तरफ़ उत्सुकता से देखते हुए कहा :

'तुम्हारे मन में कोई ख़याल है, रॉजर्स?'

बटलर ने इनकार में सिर हिला दिया। उसने भारी आवाज़ में कहा :

'मुझे नहीं मालूम। मुझे बिलकुल नहीं मालूम। और इसी वजह से मैं बुरी तरह डरा हुआ हूँ। कि मुझे कोई अन्दाज़ा नहीं है...'

III

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने उग्रता से कहा :

'हमें यहाँ से बाहर निकलना चाहिए—हाँ—निकलना चाहिए। हर क़ीमत पर !'

जस्टिस वॉरग्रेव ने सोचते हुए खिड़की के बाहर देखा। वे अपनी ऐनक की डोरी से खेल रहे थे। बोले :

'मैं मौसम का विशेषज्ञ होने का दावा तो नहीं करता। लेकिन इतना ज़रूर कहूँगा कि इसकी सम्भावना बहुत कम है कि कोई नाव हम तक चौबीस घण्टों से पहले पहुँच पाये—भले ही वे हमारी मुसीबत से वाक़िफ़ हों। और ऐसा भी तभी हो पायेगा अगर हवा रुक जाती है।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने सिर अपने हाथों में टिका लिया और कराहे। उन्होंने कहा :

'और इस बीच हम सभी अपने-अपने बिस्तरों में क़त्ल कर दिये जायें?'

'मुझे तो ऐसी उम्मीद नहीं है', जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा। 'मैं तो सारी सम्भव सावधानी बरतूँगा कि ऐसा न हो।'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग के मन में ख़याल आया कि जज वॉरग्रेव जैसा बूढ़ा आदमी किसी जवान की तुलना में ज़िन्दगी पर ज़्यादा मज़बूती से पकड़ बनाये रखता था। अपनी पेशेवर डॉक्टरी ज़िन्दगी में इस सच्चाई पर अक्सर उन्हें हैरत हुई थी। यहाँ वे थे, जज से लगभग बीस साल छोटे और आत्म-रक्षा की भावना के लिहाज़ से कहीं अधिक कमज़ोर।

जस्टिस वॉरग्रेव सोच रहे थे :

'बिस्तरों में क़त्ल कर दिये जायें। ये डॉक्टर सब एक-से होते हैं। *पिटे-पिटाये* शब्दों में बात करते हैं। बहुत ही मामूली दिमाग़ है।'

डॉक्टर ने कहा :

'तीन लोग पहले ही शिकार बन चुके हैं। यह याद रखिए।'

'बिलकुल। लेकिन तुम्हें याद रखना चाहिए कि वे हमले के लिए पहले से तैयार नहीं थे। हम होशियार हैं।'

डॉ. आर्मस्ट्रॉन्ग ने कड़वाहट से कहा :

'हम कर क्या सकते हैं? देर या सबेर—'

'मेरा ख़याल है', जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा, 'कि हम कई चीज़ें कर सकते हैं।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'हमें तो इसका भी अन्दाज़ा नहीं कि वह कौन हो सकता है।'

जज ने अपनी ठोढ़ी सहलायी और बुदबुदाये :

'ओह, तुम्हें पता है, मैं ऐसा क़तई नहीं कहता।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने जज को घूर कर देखा।

'क्या आपका मतलब है, आप *जानते* हैं?'

जस्टिस वॉरग्रेव ने सतर्कता से कहा :

'जहाँ तक असली सबूत का सवाल है, जैसा अदालत में ज़रूरी होता है, मैं मानता हूँ मेरे पास नहीं है। लेकिन इस सारे मामले पर नज़र दौड़ाते हुए मुझे लगता है कि एक व्यक्ति की तरफ़ इशारा साफ़ है। हाँ, मेरा यही ख़याल है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने एकटक उन्हें देखा।

फिर बोले :

'मैं समझ नहीं पाया।'

IV

मिस ब्रेण्ट ऊपर अपने सोने के कमरे में थीं।

उन्होंने अपनी बाइबल उठायी और जा कर खिड़की के पास बैठ गयी।

उन्होंने बाइबल को खोला। फिर एक मिनट तक हिचकिचाने के बाद उन्होंने उसे अलग रख दिया और सिंगार-मेज़ के पास चली गयीं। उसके एक दराज़ से उन्होंने एक छोटी-सी काली जिल्द वाली नोटबुक बाहर निकाली।

उन्होंने उसे खोला और लिखना शुरू किया।

'एक भयानक बात हुई है। जनरल मैकार्थर गुज़र गये। (उनके चचेरे भाई ने एल्सी मैकफ़र्सन से शादी की थी)। इसमें कोई शक नहीं कि जनरल का ख़ून किया गया। खाने के बाद जज ने हमें एक बहुत दिलचस्प भाषण दिया। उन्हें पक्का यक़ीन है कि हत्यारा हमीं लोगों में से एक है। इसका मतलब यह है कि हम में से एक आदमी शैतान के क़ब्ज़े में है। मुझे पहले ही यह शक हुआ था। कौन है वह हम में से? वे सब ख़ुद से यही सवाल पूछ रहे हैं। सिर्फ़ मैं जानती हूँ...'

वे कुछ समय तक बिना हिले-डुले बैठी रहीं। उनकी आँखें गुमसुम हो गयीं और उन पर एक परत चढ़ गयी। हिलते हुए अक्षरों में उन्होंने लिखा :

हत्यारे का नाम बिऐट्रिस टेलर है...

उनकी आँखें बन्द हो गयीं।

अचानक, झटके से वे जगीं। उन्होंने नोट बुक पर निगाह डाली। गुस्से में चीख़ कर उन्होंने आख़िरी वाक्य के अस्पष्ट-से ऊबड़-खाबड़ अक्षरों पर लकीर फेर दी।

धीमी आवाज़ में उन्होंने कहा :

'क्या मैंने वह लिखा था? मैंने? *मैं ज़रूर पागल होती जा रही हूँ...'*

V

तूफ़ान का ज़ोर बढ़ गया। हवा मकान से टकराती हू-हू करती बह रही थी। सब कोई आम बैठने वाले कमरे में थे। वे बुझे-बुझे से एक-दूसरे के पास दुबके बैठे थे। और चोर निगाहों से वे एक-दूसरे को देख रहे थे। जब रॉजर्स चाय की ट्रे लेकर आया तो वे सब चौंक पड़े। उसने कहा :

'क्या मैं पर्दे गिरा दूँ? इससे थोड़ा अच्छा लगने लगेगा।'

इस पर मंज़ूरी पाने के बाद पर्दे गिरा दिये गये और लैम्प जला दिये गये। कमरा पहले से कम उदास दिखने लगा। उस पर घिरी छाया कुछ-कुछ हल्की हो गयी। यक़ीनन, कल तक तूफ़ान थम जायेगा और कोई आयेगा—नाव आ जायेगी...

वेरा क्लेथॉर्न ने कहा :

'क्या आप चाय ढालेंगी, मिस ब्रेण्ट?'

बुज़ुर्ग औरत ने जवाब दिया :

'नहीं, यह तुम कर दो बच्ची। चाय की केतली बहुत भारी है। और मेरे दो ऊन के गोले गुम हो गये हैं। कैसी मुसीबत है।'

वेरा उठ कर चाय की मेज़ पर चली गयी। चाय के प्यालों की ख़ुशनुमा खटर-पटर होने लगी और वातावरण सामान्य हो गया।

चाय ! हर रोज़ की दोपहर वाली चाय की जय हो ! फ़िलिप लॉम्बार्ड ने ख़ुशदिली से एक टिप्पणी की। ब्लोर ने जवाब दिया। आर्मस्ट्रॉन्ग ने एक लतीफ़ा सुनाया। जस्टिस वॉरग्रेव, जिन्हें आम तौर पर चाय नापसन्द थी, ख़ुशी-ख़ुशी चुस्कियाँ लेते रहे।

इस तनावरहित वातावरण में रॉजर्स दाख़िल हुआ।

और रॉजर्स परेशान था। उसने हल्की-सी घबराहट से बिना किसी भूमिका के कहा :

'माफ़ कीजिए सर, लेकिन क्या किसी को मालूम है बाथरूम के पर्दे का क्या हुआ?'

लॉम्बार्ड का सिर झटके से ऊपर उठा।

'बाथरूम का पर्दा? तुम्हारा मतलब क्या है रॉजर्स?'

'वह ग़ायब है सर, साफ़-साफ़ गुम है। मैं सभी पर्दे गिराता जा रहा था

और जब मैं बाथरूम में पहुँचा तो वहाँ का पर्दा था ही नहीं।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने पूछा :

'क्या वह आज सुबह था?'

'जी हाँ, सर !'

ब्लोर ने कहा :

'कैसा पर्दा था वह?'

'लाल रेशमी था, सर। वह टाइलों से मेल खाता था।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'और वह ग़ायब है?'

'ग़ायब है सर।'

वे एक-दूसरे को ताकने लगे।

ब्लोर ने भारी आवाज़ में कहा :

'ख़ैर—जो भी हो—क्या किया जाये? पागलपन है—लेकिन सब ऐसा ही तो है। बहरहाल, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। किसी को रेशमी पर्दे से नहीं मारा जा सकता। भूल जाओ उसे।'

रॉजर्स ने कहा

'बहुत अच्छा सर, ठीक है।'

वह अपने पीछे दरवाज़ा बन्द करता हुआ बाहर चला गया।

कमरे के अन्दर भय का बादल एक बार फिर घिर आया था।

एक बार फिर वे चोर निगाहों से एक दूसरे पर नज़र रखने लगे।

VI

रात का खाना आया, खाया गया और बर्तन वग़ैरा हटा लिये गये। सीधा-सादा भोजन था, ज़्यादातर डिब्बाबन्द सामान का।

बाद में बैठने वाले कमरे में तनाव बरदाश्त के बाहर हो चला था।

नौ बजे एमिली ब्रेण्ट उठ खड़ी हुईं।

उन्होंने कहा

'मैं सोने जा रही हूँ।'

वेरा ने कहा :

'मैं भी सोने जाऊँगी।'

दोनों औरतें सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर चली गयीं और लॉम्बार्ड और ब्लोर उनके साथ-साथ आये। सीढ़ियों के ऊपर परछत्ती पर खड़े-खड़े दोनों आदमियों ने औरतों को अपने-अपने कमरों में जाते और दरवाज़ा बन्द करते देखा। उन्होंने दो चिटखनियाँ लगाये जाने और ताले में चाभी के घुमाये जाने की आवाज़ सुनी।

ब्लोर ने मुसकरा कर कहा :

'उन्हें यह बताने की कोई ज़रूरत नहीं कि अपने दरवाज़े बन्द कर लें।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'ख़ैर, किसी भी हालत में वे रात भर के लिए तो ठीक-ठाक हैं।'

फिर वह ब्लोर को अपने पीछे-पीछे लिये सीढ़ियाँ उतर गया।

VII

चारों आदमी एक घण्टे बाद सोने चले गये। वे साथ-साथ ऊपर गये।

रॉजर्स ने खाने के कमरे से—जहाँ वह सुबह के नाश्ते के लिए मेज़ सजा रहा था उन्हें ऊपर जाते देखा। उसने उन्हें परछत्ती पर रुकते सुना।

फिर जज की आवाज़ सुनायी दी :

'मुझे आप लोगों को यह सलाह देने की ज़रूरत नहीं कि आप अपने दरवाज़े बन्द करके उनमें ताले लगा लें।'

ब्लोर ने कहा :

'और एक काम और करें, हत्थे के नीचे कुर्सी अड़ा दें। बाहर से हैण्डल को घुमाने के तरीक़े होते हैं।'

लॉम्बार्ड बुदबुदाया :

'साथी ब्लोर, तुम्हारे साथ दिक़्क़त यह है कि तुम बहुत ज़्यादा जानते हो।'

जज ने गम्भीरता से कहा :

'गुड नाइट, सज्जनो। आशा है हम सब कल सुबह सही-सलामत मिलेंगे।'

रॉजर्स खाने के कमरे से आया और आधी सीढ़ियाँ चढ़ गया। उसने चारों लोगों को चार दरवाज़ों के भीतर जाते देखा और फिर चार चिटखनियों और चार तालों के लगाये जाने की आवाज़ सुनीं।

उसने अपना सिर ऊपर-नीचे हिलाया।

'चलो यह ठीक है', उसने बुदबुदा कर कहा।

वह फिर खाने के कमरे में लौटा। हाँ, सुबह के लिए हर चीज़ तैयार थी। उसकी आँखें मेज़ के बीचों-बीच शीशे की तख्ती और चीनी मिट्टी की सात छोटी आकृतियों पर जा टिकी।

अचानक एक मुस्कान ने उसके चेहरे को रूपान्तरित कर दिया।

वह बुदबुदाया :

'मैं देखूँगा कि हर हाल में आज रात कोई किसी क़िस्म की चाल नहीं चलता।'

कमरा पार करके उसने छोटे भण्डारे के दरवाज़े को बन्द किया। फिर दूसरे दरवाज़े से होकर हॉल में जाते हुए उसने दरवाज़े को खींचा, उसमें ताला लगाया और चाभी अपनी जेब में डाल ली।

फिर बत्तियाँ गुल करते हुए वह जल्दी से सीढ़ियाँ चढ़कर अपने नये शयन-कक्ष में चला गया।

उसमें एक ही छिपने की जगह थी—बड़ी आदमक़द अलमारी। उसने फ़ौरन उसके अन्दर नज़र डाली। फिर दरवाज़े को ताला लगा कर चिटखनी बन्द करते हुए वह सोने की तैयारी करने लगा।

उसने ख़ुद से कहा :

'आज रात कोई नन्हे सिपाही वाला खेल नहीं होगा। मैंने इसका बन्दोबस्त कर दिया है...'

अध्याय 11

I

फ़िलिप लॉम्बार्ड भोर होते ही जागने का आदी था। इस सुबह भी उसने यही किया। एक कुहनी के बल पर ख़ुद को आधा उठा कर उसने कान लगा कर सुना। हवा थोड़ी-बहुत धीमी पड़ी थी, लेकिन उसका बहाव नहीं रुका था। बारिश की उसे कोई आवाज़ नहीं सुनायी दी...

आठ बजे हवा का ज़ोर और बढ़ गया, लेकिन लॉम्बार्ड ने उसे नहीं सुना। वह गहरी नींद सोया पड़ा था।

साढ़े नौ बजे वह अपने बिस्तर के किनारे बैठकर अपनी घड़ी को देख रहा था। उसने उसे कान से लगाया। फिर उसके होंट उस अजीब-सी भेड़िये-जैसी मुस्कान में दाँतों से पीछे को फैल गये जो उसकी ख़ासियत थी।

उसने बहुत धीमे स्वर में कहा :

'मेरा ख़याल है अब इसके बारे में कुछ करने का वक़्त आ गया है।'

दस बजने में पच्चीस मिनट पर वह ब्लोर के कमरे के बन्द दरवाज़े को खटखटा रहा था।

ब्लोर ने सावधानी से दरवाज़ा खोला। उसके बाल बिखरे हुए थे और आँखें नींद से अब भी धुँधली थीं।

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने हल्के-फुल्के अन्दाज़ में कहा :

'उठने का इरादा नहीं है? ख़ैर, इससे पता चलता है तुम्हारी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है।'

ब्लोर ने तेज़ी से कहा :

'बात क्या है?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'किसी ने बुलाया तुम्हें?—या चाय-वाय दी? पता है समय क्या हुआ है?'

ब्लोर ने अपने कन्धे के ऊपर से अपने पलँग के बग़ल में रखी छोटी-सी सफ़री घड़ी पर निगाह डाली।

'मेरा ख़याल है अब इसके बारे में कुछ करने का वक़्त आ गया है।'

दस बजने में पच्चीस मिनट पर वह ब्लोर के कमरे के बन्द दरवाज़े को खटखटा रहा था।

ब्लोर ने सावधानी से दरवाज़ा खोला। उसके बाल बिखरे हुए थे और आँखें नींद से अब भी धुँधली थीं।

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने हल्के-फुल्के अन्दाज़ में कहा :

'उठने का इरादा नहीं है? ख़ैर, इससे पता चलता है तुम्हारी आत्मा पर कोई बोझ नहीं है।'

ब्लोर ने तेज़ी से कहा :

'बात क्या है?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'किसी ने बुलाया तुम्हें?—या चाय-वाय दी? पता है समय क्या हुआ है?'

ब्लोर ने अपने कन्धे के ऊपर से अपने पलँग के बग़ल में रखी छोटी-सी सफ़री घड़ी पर निगाह डाली।

उसने कहा :

'दस बजने में पच्चीस। मुझे विश्वास न होता कि मैं इस तरह सो सकता हूँ। रॉजर्स कहाँ है?'

फ़िलिप ने कहा :

'वही क़िस्सा है—गूँज जवाब देती है कहाँ।'

'क्या मतलब', ब्लोर ने तीखी आवाज़ में पूछा।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मतलब है रॉजर्स ग़ायब है। वह न तो अपने कमरे में है, न और कहीं। और रसोई में आग भी नहीं जली और चाय की केतली भी नहीं चढ़ी है।'

ब्लोर ने दबी आवाज़ में कोसा। फिर कहा :

'होगा कहाँ वह? बाहर टापू में कहीं होगा। रुको, मैं कपड़े पहन लूँ। देखो अगर औरों को कुछ पता हो।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने सिर हिलाया और बन्द दरवाज़ों की क़तार के

साथ-साथ बढ़ा।

उसने आर्मस्ट्रॉन्ग को उठा हुआ और लगभग तैयार पाया। जस्टिस वॉरग्रेव को, ब्लोर की तरह, नींद से जगाना पड़ा। वेरा क्लेथॉर्न तैयार थी। एमिली ब्रेण्ट का कमरा ख़ाली था।

यह छोटा-सा दल घर को छानता चला। रॉजर्स का कमरा, जैसा कि फ़िलिप लॉम्बार्ड ने देख लिया था, ख़ाली था। बिस्तर सोया गया लग रहा था और उसका हजामत का सामान गीला था।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'वह जागा तो ठीक-ठाक था।'

वेरा ने धीमी आवाज़ को दृढ़ और मज़बूत बनाने की कोशिश करते हुए कहा :

'तुम यह तो नहीं सोचते कि वह—कहीं छिपा हुआ—हमारा इन्तज़ार कर रहा है?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'सुनो, मैं किसी के बारे में कुछ भी सोचने को तैयार हूँ। मेरी राय है कि जब तक वह मिल न जाये, हम साथ रहें।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'वह बाहर टापू पर कहीं होगा।'

ब्लोर, जो बिना दाढ़ी बनाये, लेकिन कपड़े पहन कर उनके बीच आ मिला था, बोला :

'मिस ब्रेण्ट कहाँ ग़ायब हो गयी हैं—यह अलग रहस्य है?'

लेकिन जैसे ही वे हॉल में पहुँचे, एमिली ब्रेण्ट सामने के दरवाज़े से अन्दर आयीं। उन्होंने एक बरसाती पहन रखी थी। उन्होंने कहा :

'समुद्र में पहले जैसी ऊँची लहरें उठ रही हैं। मुझे नहीं लगता आज कोई नाव समुद्र में निकलेगी।'

ब्लोर ने कहा :

'क्या आप टापू पर अकेले घूमती-फिरती रही हैं? क्या आपको एहसास नहीं है कि ऐसा करना बहुत बेवक़ूफ़ी का काम है?'

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'मैं आपको यक़ीन दिलाती हूँ कि मैंने बहुत सावधानी बरती थी।'

ब्लोर ने हुंकारी भरी। उसने कहा :

'रॉजर्स को देखा आपने?'

मिस ब्रेण्ट की भवें सिकुड़ गयीं।

'रॉजर्स? नहीं, आज सुबह मैंने उसे नहीं देखा। क्यों?'

जस्टिस वॉरग्रेव दाढ़ी बना कर, कपड़े पहन और नक़ली दाँत सही जगह लगाये हुए सीढ़ियाँ उतरे। वे खाने के कमरे के खुले दरवाज़े तक गये। फिर बोले :

'आहा ! नाश्ते के लिए मेज़ सजा दी है उसने।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'हो सकता है, यह काम वह रात को ही कर गया हो।'

वे सब कमरे के अन्दर चले आये। प्लेटें और छुरी काँटे करीने से सजे थे। साइडबोर्ड पर प्यालों की कतार थी और कॉफ़ी के बर्तन के लिए छोटी-छोटी चटाइयाँ भी तैयार थी।

सबसे पहले वेरा का ध्यान गया। उसने जज की बाँह पकड़ ली और उसके मज़बूत हाथों की पकड़ से बूढ़े जज वॉरग्रेव चिंहुक उठे।

वह चिल्लायी :

'वे चीनी मिट्टी के फ़ौजी ! देखो !'

मेज़ के बीचों-बीच सिर्फ़ छै पुतले रखे थे।

II

थोड़ी देर बाद ही उन्होंने उसे ढूँढ लिया।

वह अहाते के उस पार छोटे-से धुलाई-घर में था। रसोई की आग जलाने के लिए वह लकड़ी चीर रहा था। छोटा-सा गँड़ासा अब भी उसके हाथ में था। इससे बड़ा और भारी एक और गँड़ासा दरवाज़े से टिका था। उसकी धातु पर ख़ून जमा हुआ था। उसकी धार रॉजर्स के सिर के पीछे के गहरे ज़ख़्म से मेल खा रही थी।

III

'बिलकुल साफ़ है', आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा। 'हत्यारा दबे पाँव उसके पीछे आया होगा, उसने एक बार गँड़ासे को झुला कर इसके सिर पर उससे चोट की होगी जब यह झुका होगा।'

ब्लोर रसोई की आटा चलनी और गँड़ासे के हत्थे के साथ जुटा हुआ था।

जस्टिस वॉरग्रेव ने पूछा :

'डॉक्टर, क्या इसमें बहुत बल लगा होगा?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने गम्भीर स्वर में कहा :

'कोई औरत भी यह कर सकती थी—अगर आप यह पूछना चाहते हैं।' उन्होंने तेज़ी से चारों तरफ़ नज़र दौड़ायी। वेरा क्लेथॉर्न और एमिली ब्रेण्ट रसोई में चली गयी थीं। 'यह लड़की बड़ी आसानी से कर सकती थी —वह चुस्त कसरती क़िस्म की है। देखने में मिस ब्रेण्ट नाज़ुक लगती हैं, लेकिन उस क़िस्म की औरत में काफ़ी मज़बूती होती है। और यह भी याद रखिए कि जो भी मानसिक रूप से बीमार हो उसमें काफ़ी दबी हुई ताक़त भी होती है।'

जज ने सोचते हुए सिर हिलाया।

ब्लोर साँस छोड़ कर उठा। उसने कहा :

'उँगलियों के निशान नहीं हैं। हत्थे को बाद में पोंछ दिया गया था।'

हँसी की आवाज़ उनके कानों में पड़ी—वे तेज़ी से घूमे। वेरा क्लेथॉर्न अहाते में खड़ी थी। वह—हँसी के बेलगाम झटकों के बीच—ऊँची तीखी आवाज़ में चिल्लायी :

'क्या वे इस टापू पर मधुमक्खियाँ भी पालते हैं? यह बताओ मुझे? हम शहद के लिए कहाँ जाते हैं? हा-हा-हा !'

वे बिना समझे उसे घूर कर देखते रहे। मानो वह ठीक-ठाक सन्तुलित लड़की उनकी आँखों के सामने पागल हो गयी थी। वह उसी ऊँची अस्वाभाविक आवाज़ में कहती रही :

'इस तरह मत घूरिये। जैसे आपने सोचा कि मैं पागल हूँ। जो मैं पूछ रही हूँ वह सही दिमाग़ की बात है। मधुमक्खियाँ, छत्ते, मधुमक्खियाँ।

ओह, क्या आप समझते नहीं? आपने वह बेवक़ूफ़ी-भरी तुकबन्दी नहीं पढ़ी? आप सब के सोने के कमरों में टँगी है—वहाँ आपको पढ़ने के लिए लगायी गयी है। अगर हममें कुछ अक़्ल होती तो हम सीधे यहाँ आते। *सात नन्हे फ़ौजी लड़के काट रहे थे लकड़ी।* और इसका अगला छन्द। मुझे पूरी तुकबन्दी याद है। *छै नन्हे फ़ौजी लड़के खेल रहे थे छत्ते से।* और इसीलिए मैं पूछ रही हूँ—क्या वे इस टापू पर मधुमक्खियाँ पालते हैं?—है न मज़ेदार —है न ख़ूब मज़ेदार?...'

वह फिर बेलगाम ढंग से हँसने लगी। डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग आगे बढ़े। उन्होंने हाथ उठाया और उसके गाल पर एक चाँटा रसीद किया।

उसने झटके से साँस खींची, हिचकी ली और थूक निगली। पल पर वह निश्चल खड़ी रही फिर बोली :

'शुक्रिया... अब मैं ठीक हूँ।'

उसकी आवाज़ एक बार फिर शान्त और नियन्त्रित थी—खेल-कूद सिखाने वाली कुशल अध्यापिका की आवाज़।

वह मुड़ी और अहाता पार करके रसोई-घर में जाते हुए बोली: 'मिस ब्रेण्ट और मैं आप लोगों के लिए नाश्ता तैयार कर रहे हैं। क्या आप आग जलाने के लिए कुछ लकड़ियाँ ला सकते हैं?'

डॉक्टर के हाथ का निशान उसके गाल पर लाल-लाल उभर आया था।

उसके रसोई-घर में जाते ही ब्लोर ने कहा :

'ख़ैर, आपने इस मसले का निपटारा ठीक किया डॉक्टर।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने खेद-भरे स्वर में कहा :

'करना पड़ा। सारी चीजों के ऊपर इस तरह आपा खो देने को झेलना मुश्किल था।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'वह आपा खो देने वालों में नहीं है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने रज़ामन्दी ज़ाहिर की।

'बिलकुल नहीं। अच्छी, स्वस्थ समझदार लड़की है। बस अचानक

सदमे का असर था। किसी के साथ हो सकता है।'

मारे जाने से पहले रॉजर्स ने काफ़ी लकड़ी चीर दी थीं। उन्होंने उसे उठाया और रसोई-घर में ले गये। वेरा और एमिली ब्रेण्ट काम में जुटे थे। मिस ब्रेण्ट स्टोव की राख झाड़ रही थीं और वेरा खाने की चीज़ें तैयार कर रही थी।

एमिली ब्रेण्ट ने कहा :

'शुक्रिया। हम जल्दी-से-जल्दी काम कर लेंगे—आधे-पौने घण्टे में। केतली के पानी को उबलना भी तो होगा।'

IV

पूर्व-इंस्पेक्टर ब्लोर ने धीमी बैठी हुई आवाज़ में फ़िलिप लॉम्बार्ड से कहा :

'पता है, मैं क्या सोच रहा हूँ?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'चूँकि तुम मुझे बताने ही जा रहे हो, इसलिए अटकल लगाना बेकार है।'

पूर्व-इंस्पेक्टर ब्लोर लगन वाला आदमी था। बारीक़ चोट समझना उसके बूते के बाहर था। वह अपने भारी अन्दाज़ में कहता रहा :

'अमरीका में एक मामला था। बूढ़ा और उसकी बीवी—दोनों कुल्हाड़ी से मार डाले गये। सुबह का समय। घर में बेटी और नौकरानी के सिवा और कोई नहीं। साबित हुआ कि नौकरानी नहीं कर सकती थी। लड़की ग़ैरशादीशुदा इज़्ज़तदार अधेड़ उमर की थी। अविश्वसनीय लगता था। इतना कि उन्होंने उसे बरी कर दिया। लेकिन उन्हें और कोई जवाब नहीं मिला।' वह रुका। 'मुझे उसी का ख़याल आया जब मैंने गँड़ासा देखा —और फिर जब मैं रसोई-घर में गया और मैंने उसे देखा—इतनी साफ़-सुथरी और शान्त। मानो कुछ हुआ ही न हो। वह लड़की—इस तरह पगलाती हुई—ख़ैर, वह क़ुदरती बात है—जैसी कि उम्मीद की जा सकती है—क्या ख़याल है?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने नपे-तुले ढंग से कहा :

'हो सकता है।'

ब्लोर आगे कहता रहा :

'लेकिन वे दूसरी। इतनी सलीक़ेदार और गम्भीर—एप्रन बाँधे हुए—श्रीमती रॉजर्स का एप्रन रहा होगा मेरे ख़याल से—कह रही थीं : 'नाश्ता आधे घण्टे में तैयार हो जायेगा।' मुझसे पूछो तो वह औरत खिसकी हुई है। बहुत-सी बूढ़ी कुँआरियाँ ऐसी हो जाती हैं—मेरा मतलब यह नहीं है कि बड़े पैमाने पर हत्या करने लगती हैं, बल्कि दिमाग़ी तौर पर गड़बड़ा जाती हैं। दुर्भाग्य से ये ऐसी ही हो गयी हैं। धरम-करम की सनक—सोचती हैं कि वे ईश्वर का काम कर रही हैं, कुछ ऐसी ही बात। वह अपने कमरे में बैठी बाइबल पढ़ती रहती हैं।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने लम्बी साँस छोड़ी और कहा :

'यह तो खिसके होने का कोई पक्का सबूत नहीं है, ब्लोर।'

लेकिन ब्लोर अपनी बात पर अड़ा रहा :

'और फिर वे बाहर थीं—बरसाती पहने—कहा कि वे समुद्र को देखने गयी थीं।'

लॉम्बार्ड ने सिर्फ़ सिर हिलाया।

उसने कहा :

'रॉजर्स आग के लिए लकड़ी चीरते समय मारा गया—यानी उठने के बाद लगभग फ़ौरन ही। मिस ब्रेण्ट को घण्टों तक बाहर भटकने की कोई ज़रूरत नहीं थी। अगर मुझ से पूछो तो रॉजर्स का हत्यारा तो इस बात का बन्दोबस्त करता कि वह बिस्तर में लेटा खर्राटे लेता पाया जाये।'

ब्लोर ने कहा :

'आप बात नहीं समझ रहे मिस्टर लॉम्बार्ड। अगर वह औरत बेगुनाह थी तो फिर वह इतनी डरी होती कि इस तरह अकेली घूमती न फिरती। वह ऐसा सिर्फ़ तभी करती *जब उसे पता होता कि उसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। यानी अगर वह ख़ुद अपराधी है।*'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'हाँ, यह एक अच्छा नुक़्ता है... मैंने इसके बारे में नहीं सोचा था।'

उसने हल्की-सी मुस्कान के साथ कहा :

'मुझे ख़ुशी है कि तुम अब मुझ पर शक नहीं करते।'

ब्लोर ने कुछ शर्मिन्दगी से कहा :

'मैंने आपके बारे में सोचना तो ज़रूर शुरू किया था—वह रिवॉल्वर—और वह अजीब कहानी जो आपने सुनायी—या नहीं सुनायी। लेकिन अब मुझे एहसास हो गया है कि वह सचमुच बहुत ज़ाहिर सी बात थी।' वह रुका और उसने कहा, 'उम्मीद है आप मेरे बारे में भी ऐसा ही महसूस करते हैं।'

फ़िलिप ने सोचते हुए कहा :

'हो सकता है मैं ग़लत होऊँ, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इस काम के लिए तुम्हारे अन्दर काफ़ी सूझ-बूझ है। मैं बस यही कह सकता हूँ कि अगर तुम अपराधी हो तो तुम बहुत अच्छे अभिनेता हो और मैं तुम्हें सलाम करूँगा।' उसने अपनी आवाज़ धीमी की, 'बस, यह बात हमारे-तुम्हारे बीच में है ब्लोर, और यह ख़याल रखते हुए कि एक दिन और गुज़रने से पहले हम दोनों शायद सिधार जायें, यह बताओ, तुमने वह झूठी गवाही दी थी न?'

ब्लोर ने बेचैनी से एक पैर से दूसरे पैर पर वज़न बदला। अन्त में उसने कहा :

'अब तो ख़ैर बहुत फ़र्क़ पड़ने वाला नहीं है। तो किस्सा यह है कि लैण्डर निर्दोष था। जो गिरोह था उसने मुझे मिला लिया था और हमने मिलकर उसे क़ैद की सज़ा दिलवा दी थी। याद रहे, मैं इसे स्वीकार नहीं करूँगा—'

'अगर कोई गवाह हो तो', लॉम्बार्ड ने बात पूरी की। 'यह तो सिर्फ़ तुम्हारे मेरे बीच की बात है। ख़ैर, उम्मीद है, अच्छी रक़म बनायी होगी?'

'उतनी नहीं, जितनी बनानी चाहिए थी। पर्सेल का गिरोह बहुत कमीना था। अलबत्ता, तरक़्क़ी मुझे मिल गयी थी।'

'और लैण्डर को लम्बी क़ैद मिली और जेल ही में मर गया।'

'मुझे यह तो पता नहीं था कि वह जेल में मर जायेगा?' ब्लोर ने कहा।

'नहीं, वह तुम्हारी बदक़िस्मती थी।'

'मेरी? या उसकी?'

'तुम्हारी भी। क्योंकि ऐसा लगता है उसी का नतीजा है कि तुम्हारी अपनी ज़िन्दगी भी बड़ी बुरी तरह समय से पहले ख़त्म कर दी जाने वाली है।'

'मेरी?' ब्लोर ने उसे घूरा। 'तुम्हारा ख़याल है मैं भी रॉजर्स और उन दूसरे लोगों की तरह जाऊँगा? ना जी। मैं अपने सिलसिले में पूरी सावधानी बरत रहा हूँ, हाँ।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'ख़ैर, मुझे जुए का शौक नहीं है। और वैसे भी अगर तुम न रहे तो मुझे भुगतान कौन करेगा?'

'क्या कहा मिस्टर लॉम्बार्ड, क्या मतलब है आपका?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने दाँत चियार दिये :

'मेरा मतलब है, ब्लोर, कि मेरे हिसाब से तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं है।'

'क्या?'

'तुम्हारी कल्पना की कमी तुम्हें बैठे-बिठाये निशाना बना देगी। यू. एन. ओवेन जैसा अपराधी जब चाहे तुम्हारे गिर्द फन्दा डाल सकता है या सकती है।'

ब्लोर का चेहरा लाल हो गया। उसने नाराज़गी से कहा :

'और अपने बारे में क्या ख़याल है तुम्हारा?'

फ़िलिप लॉम्बार्ड का चेहरा सख़्त और ख़तरनाक हो गया।

उसने कहा :

'मेरे अन्दर ख़ुद अपनी ठीक-ठाक कल्पना और सूझ-बूझ है। मैं पहले भी मुश्किल स्थितियों में रहा हूँ। मेरा ख़याल है—मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कहूँगा लेकिन मेरा *ख़याल* है मैं इससे भी निकल आऊँगा।'

V

अण्डे तले जा रहे थे। वेरा डबल रोटी सेंकते हुए सोच रही थी :

'मैंने इस तरह आपा खोने की बेवकूफ़ी क्यों की? यह ग़लती थी। मुझे शान्त रहना होगा, शान्त रहना होगा।'

आख़िरकार उसे हमेशा अपने सन्तुलित रहने पर गर्व होता था।

'मिस क्लेथॉर्न अद्भुत थीं—अपने होश क़ायम रखे—फ़ौरन सिरिल के पीछे तैरना शुरू कर दिया।'

उसके बारे में अब क्या सोचना? वह सब तो बीत चुका था... बीत चुका था... जब तक वह चट्टान तक पहुँचती, सिरिल बहुत पहले ही ग़ायब हो चुका था। उसने महसूस किया था कि धारा उसे बहाती हुई समुद्र में और आगे ले जा रही थी। उसने ख़ुद को धारा के साथ बहने दिया था, तैरते हुए—जब तक कि आख़िरकार नाव नहीं आ गयी थी...

उन्होंने उसकी हिम्मत और ठण्डे दिमाग़ की तारीफ़ की थी...

लेकिन ह्यूगो ने नहीं। ह्यूगो बस—उसे देखता रहा था...

हे भगवान, कितनी तकलीफ़ होती थी, अब भी, ह्यूगो के बारे में सोचकर...

कहाँ था वह? क्या कर रहा था? क्या उसकी सगाई हुई थी—शादी की थी उसने?...

एमिली ब्रेण्ट ने तीखे स्वर में कहा :

'वेरा, वह टोस्ट जल रहा है।'

'माफ़ कीजिए, मिस ब्रेण्ट। ध्यान हट गया था मेरा।'

एमिली ब्रेण्ट ने आख़िरी तला हुआ अण्डा निकाल कर तश्तरी में रखा।

वेरा ने डबल रोटी का ताज़ा टुकड़ा सेंकने के लिए काँटे पर रखा और उत्सुकता से कहा :

'आप बिलकुल शान्त हैं, मिस ब्रेण्ट।'

एमिली ब्रेण्ट ने होंटों को कसते हुए कहा :

'मुझे बचपन ही से अपने होश क़ायम रखने और कभी बेकार की हाय-तोबा न करने की शिक्षा दी गयी थी।'

वेरा ने आप से आप सोचा :

'बचपन में दबा कर रखी गयी होंगी... इससे बहुत कुछ पता चलता है...'

उसने कहा :

'आप डरती नहीं हैं?'

वह रुकी और फिर उसने जोड़ा :

'या आपको मरने की परवाह नहीं है?'

मरने की? मानो एमिली ब्रेण्ट के दिमाग़ के गडड-मडड ठोस जमाव में एक तीखा तेज़ बर्मा सूराख़ करता चला गया था। मरने की परवाह? लेकिन वे तो मरने नहीं जा रही थीं। दूसरे मरेंगे—हाँ—पर वे, एमिली ब्रेण्ट, नहीं मरेंगी। यह लड़की समझती नहीं थी। एमिली भयभीत नहीं थीं—स्वाभाविक रूप से—ब्रेण्ट परिवार के लोग डरते नहीं थे। उनके सभी रिश्तेदार फ़ौजी लोग थे। वे बिना हिचके मौत का सामना करते थे। वे साफ़-सुथरी ज़िन्दगी जीते थे जैसे उन्होंने—एमिली ब्रेण्ट ने—सिर उठा कर साफ़-सुथरी ज़िन्दगी जी थी... उन्होंने कभी ऐसा कुछ नहीं किया था जिसके लिए वे शर्मिन्दा हों... और इसलिए, कुदरती तौर पर वे नहीं मरने वाली थीं...

'ईश्वर अपनों का ध्यान रखता है।' 'न तो तू रात के आतंक से डर, न दिन में उड़ते तीर से...' अब तो सवेरा हो चुका था—कोई आतंक नहीं था। *'हम में से कोई इस टापू से नहीं जा पायेगा।'* किसने कहा था यह? हाँ, जनरल मैकार्थर ने, जिनके चचेरे भाई ने एल्सी मैकफ़र्सन से शादी की थी। ऐसा लगता था उन्हें *परवाह* नहीं थी। लगा था कि उन्होंने सचमुच इस ख़याल का *स्वागत* किया था। दुष्ट ! ऐसा महसूस करना हमेशा धर्म से डिगना था। कुछ लोग मौत को इतना मामूली समझते थे कि वास्तव में ख़ुद अपनी जान ले लेते थे। *बिऐट्रिस टेलर*... कल रात उन्होंने बिऐट्रिस को सपने में देखा था—देखा था कि वह बाहर थी और अपना चेहरा खिड़की के शीशे पर दबाये अन्दर आने की बिनती करती हुई कराह रही थी। लेकिन एमिली ब्रेण्ट नहीं चाहती थीं कि वह अन्दर आये। क्योंकि अगर वह अन्दर आयी तो कुछ भयानक हो जायेगा...

एमिली झटके से होश में आयीं। वह लड़की बड़ी अजीब नज़रों से उन्हें देख रही थी। उन्होंने फुर्ती से कहा :

'सब कुछ तैयार है न? ख़ैर, तो चलो नाश्ता ले चलें।'

VI

नाश्ता बड़े अजीब ढंग से किया गया। हर कोई बहुत नरमी से पेश आ रहा था।

'क्या मैं आपको थोड़ी कॉफ़ी और दूँ, मिस ब्रेण्ट?'

'मिस क्लेथॉर्न, थोड़ा और हैम?'

'एक और टोस्ट?'

छै लोग बाहर से अपने को क़ाबू में रखते हुए सामान्य नज़र आने की कोशिश कर रहे थे ।

और अन्दर? विचार गोल-गोल चक्कर काटते हुए जैसे पिंजरे में गिलहरियाँ...

'अब क्या? आगे क्या? कौन? किसे?'

'क्या यह काम करेगा? क्या पता। आज़माने लायक़ है। अगर समय हो। हे भगवान, अगर समय हो...'

'धार्मिक सनकें, यही असली बात है... उनको देखते हुए कोई मुश्किल से विश्वास करेगा... फ़र्ज़ करो मैं ग़लत हूँ...'

'यह पागलपन है—सब कुछ उलटा-पलटा है। मैं पगला रही हूँ। इसे समझ नहीं पा रही...'

'मूर्ख, उसने मेरी कही हर बात मान ली। आसान था... मुझे सावधान रहना होगा, बहुत सावधान।'

'वे छोटे चीनी मिट्टी के पुतले... सिर्फ़ छै—कितने होंगे आज रात तक?'

'यह आख़िरी अण्डा कौन लेगा?'

'मार्मलेड?'

'शुक्रिया, क्या मैं आपको थोड़ी-सी ब्रेड दूँ?'

नाश्ते के वक़्त आम दिनों जैसा व्यवहार करते हुए छै लोग...

अध्याय 12

I

नाश्ता ख़त्म हो चुका था।

जस्टिस वॉरग्रेव ने गला साफ़ किया। उन्होंने अपनी पतली रोबदार आवाज़ में कहा :

'मेरा ख़याल है, उचित होगा अगर हम इस हालत पर चर्चा करने के लिए मिल बैठें। आधे घण्टे बाद बैठक में? ठीक रहेगा?'

हरेक ने सहमति प्रकट की।

वेरा प्लेटें इकट्ठी करने लगी।

उसने कहा :

'मैं सब सामान उठा देती हूँ और बर्तन धो देती हूँ।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'हम यह सब सामान छोटे भण्डार तक ले आते हैं।'

'शुक्रिया।'

एमिली ब्रेण्ट उठीं, फिर बैठ गयी। उन्होंने कहा :

'ओफ़्फ़ोह !'

जज ने कहा :

'क्या हुआ मिस ब्रेण्ट?'

एमिली ने अफ़सोस के साथ कहा :

'माफ़ कीजिए, मैं मिस क्लेथॉर्न की मदद तो करना चाहती हूँ, पर पता नहीं क्या हुआ, मुझे थोड़ा-सा चक्कर आ रहा है।'

'चक्कर आ रहा है?' डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग उनकी तरफ़ बढ़े। 'काफ़ी स्वाभाविक है। देर से हुआ सदमे का असर। मैं आपको कुछ दे सकता हूँ जिससे—'

'नहीं !'

यह शब्द उनके मुँह से किसी धमाके की तरह निकला।

सब हैरत में पड़ गये। डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग का चेहरा लाल हो गया।

मिस ब्रेण्ट के चेहरे पर झलक आये भय और सन्देह के बारे में कोई

भूल नहीं हो सकती थी। डॉक्टर ने कड़ाई से कहा :

'जैसा आप चाहें, मिस ब्रेण्ट।'

उन्होंने कहा :

'मैं कुछ नहीं लेना चाहती—कुछ भी नहीं। मैं यहाँ चुपचाप आराम से बैठूँगी जब तक कि चक्कर आना बन्द नहीं हो जाता।'

नाश्ते का सामान हटा कर मेज़ को साफ़ कर दिया गया।

ब्लोर ने कहा :

'मैं घरेलू क़िस्म का आदमी हूँ, मिस क्लेथॉर्न। मैं आपकी मदद करा देता हूँ।'

वेरा ने कहा : 'शुक्रिया।'

एमिली ब्रेण्ट को खाने के कमरे में अकेला बैठा छोड़ दिया गया।

कुछ देर तक वे भण्डार से आती हल्की-हल्की आवाजें सुनती रहीं।

सिर का चकराना ठीक हो रहा था। अब उन्हें नींद-सी आ रही थी, मानो वे आसानी से सो सकती थीं।

उनके कानों में भन-भन की आवाज़ थी—या सचमुच कमरे में भन-भन हो रही थी?

उन्होंने सोचा :

'यह मधुमक्खी जैसी है—भौंरे जैसी।'

जल्दी ही उन्होंने मधुमक्खी को देखा। वह खिड़की के काँच पर ऊपर को रेंग रही थी।

वेरा क्लेथॉन ने आज सुबह मधुमक्खियों के बारे में बात की थी।

मधुमक्खियों और शहद के बारे में...

उन्हें शहद पसन्द था। छत्ते में शहद और ख़ुद उसे मलमल के कपड़े से छान लो। टप, टप, टप...

कमरे में कोई था... कोई पूरी तरह भीगा और टपकता हुआ...

बिऐट्रिस टेलर नदी से वापस आयी हुई...

उन्हें बस अपना सिर घुमाना था और वे उसे देख लेंगी।

लेकिन वे अपना सिर नहीं घुमा पा रही थीं।

अगर वे आवाज़ दें तो...

लेकिन वे आवाज़ भी नहीं दे पा रही थीं...

मकान में कोई और नहीं था। वे बिलकुल अकेली थीं...

उन्हें क़दमों की आहट सुनायी दी—हल्के घिसटते क़दमों की आहट पीछे से अपनी तरफ़ आती हुई। डूबी हुई लड़की के डगमगाते क़दमों की आहट...

उनकी नाक में एक गीली, सड़ती हुई गन्ध भर गयी...

खिड़की के काँच पर मधुमक्खी भन-भन कर रही थी—भन-भन...

और फिर उन्होंने चुभन महसूस की।

गरदन की एक तरफ़ मधुमक्खी का डंक...

II

बैठक में वे सब एमिली ब्रेण्ट का इन्तज़ार कर रहे थे।

वेरा क्लेथॉर्न ने कहा :

'क्या मैं जाकर उन्हें बुला लाऊँ?'

ब्लोर ने जल्दी से कहा :

'एक मिनट।'

वेरा फिर बैठ गयी। सबने सवालिया नज़रों से ब्लोर को देखा। उसने कहा :

'सुनिये आप सब, मेरी राय यह है : हमें इन मौतों के लिए ज़िम्मेदार आदमी के लिए खाने के कमरे से अलग और कहीं खोज-बीन करने की ज़रूरत नहीं। मैं क़सम खा कर कह सकता हूँ कि वही औरत है जिसकी हमें तलाश है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'और उद्देश्य?'

'धार्मिक सनक। आपका क्या ख़याल है डॉक्टर?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'सम्भव तो है एकदम। मुझे इसके ख़िलाफ़ कुछ नहीं कहना है। मगर यह बात ज़रूर है कि हमारे पास कोई सबूत नहीं है।'

वेरा ने कहा :

'रसोइ-घर में जब हम नाश्ता ला रहे थे तो वे बहुत अजीब-सी थीं। उनकी आँखें—' उसने झुरझुरी ली।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'तुम उन्हें उससे नहीं जाँच सकतीं। अब तक हम सभी थोड़ा-बहुत पगला चुके हैं।'

ब्लोर ने कहा :

'एक और बात है। वही हैं जिन्होंने उस ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड के बाद कोई सफ़ाई नहीं दी थी। क्यों? क्योंकि उनके पास कोई थी ही नहीं।'

वेरा अपनी कुर्सी में हिली। उसने कहा :

'यह पूरी तरह सच नहीं है। उन्होंने बाद में मुझे बताया था।'

वॉरग्रेव ने कहा :

'उन्होंने क्या बताया था तुम्हें, मिस क्लेथॉर्न?'

वेरा ने बिऐट्रिस टेलर की कहानी दोहरा दी।

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'बिलकुल सीधी-सादी कहानी है। मुझे ख़ुद इसे स्वीकार करने में कोई मुश्किल नहीं होगी। एक बात बताओ, मिस क्लेथॉर्न, क्या वे इस मामले में अपने रवैये के बारे में किसी अपराध के एहसास या पछतावे की भावना से विचलित नज़र आयीं?'

'बिलकुल नहीं', वेरा ने कहा। 'वे बिलकुल भावरहित थीं।'

ब्लोर ने कहा :

'पत्थर दिल वाली होती हैं ये सदाचारी क़िस्म की अविवाहित महिलाएँ। ज़्यादातर ईर्ष्या से प्रेरित।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'अब ग्यारह बजने में पाँच मिनट रह गये हैं। मेरा ख़याल है हमें मिस ब्रेण्ट को बुलाना चाहिए कि वे इस बैठक में शामिल हों।'

ब्लोर ने कहा :

'क्या आप कोई क़दम नहीं उठायेंगे?'

जज ने कहा :

'मैं देख नहीं पा रहा कि हम कौन-सा क़दम उठा सकते हैं। हमारे शक फ़िलहाल शक ही हैं। मैं डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग से यह ज़रूर कहूँगा कि वे मिस ब्रेण्ट के रंग-ढंग पर सावधानी से नज़र रखें। आइए अब हम खाने के कमरे में चलें।'

उन्होंने एमिली ब्रेण्ट को उसी कुर्सी में बैठे पाया जिसमें वे उन्हें बैठा छोड़ गये थे। पीछे से उन्होंने कुछ भी ग़लत नहीं देखा, सिवा इसके कि लगा उन्होंने कमरे में सबके आने की आवाज़ नहीं सुनी है।

और फिर उन्होंने उनका चेहरा देखा—लाल भभूका, नीले होंटों और बाहर को निकली आँखों के साथ।

ब्लोर ने कहा :

'हे भगवान, ये तो मर गयी हैं।'

III

जस्टिस वॉरग्रेव ने अपनी पतली शान्त आवाज़ में कहा :

'हममें से एक और बरी हो गया—अलबत्ता बहुत देर से।'

आर्मस्ट्रॉन्ग मरी हुई औरत पर झुके हुए थे। उन्होंने होंट सूँघे, सिर हिलाया, पलकें उठाकर देखीं।

लॉम्बार्ड ने अधीरता से कहा :

'ये कैसे मरीं डॉक्टर? जब हम इन्हें यहाँ छोड़ कर गये तो ये ठीक थीं।'

आर्मस्ट्रॉन्ग का ध्यान गर्दन की दायीं तरफ़ एक निशान पर लगा हुआ था।

उन्होंने कहा :

'यह तो इंजेक्शन वाली सुई का निशान है।'

खिड़की से भनभनाहट की आवाज़ सुनायी दी। वेरा चिल्लायी :

'देखो—एक मधुमक्खी—*एक भौंरा*। याद है आज सुबह मैंने जो कहा था।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कठोर गम्भीरता से कहा :

'उस मधुमक्खी ने इन्हें डंक नहीं मारा था। इंजेक्शन की सिरिंज आदमी के हाथ ने पकड़ रखी थी।'

जज ने पूछा :

'कौन-सा ज़हर दिया गया।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'पहली नज़र में कोई साइनाइड। शायद पोटाशियम साइनाइड, ऐण्टनी मार्सटन ही की तरह। ये साँस रुकने से लगभग फ़ौरन ही मर गयी होंगी।'

वेरा चिल्लायी :

'लेकिन वह *मधुमक्खी?* वह तो *संयोग* नहीं हो सकता?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'नहीं, वह संयोग नहीं है। यह तो हमारे क़ातिल की अदा है—थोड़ा मौज-मज़ा लेने की ख़ातिर। वह खिलाड़ी बन्दा है। जहाँ तक सम्भव हो, अपनी उस तुकबन्दी से मेल मिला कर चलना पसन्द करता है।'

पहली बार उसकी आवाज़ असन्तुलित थी, लगभग तीखी। मानो उसकी नसें भी—जोखिम और ख़तरनाक कारगुज़ारियों से लम्बे समय तक निपटने के बाद—अब आख़िरकार जवाब दे रही थीं।

उसने तेज़-तर्रार ढंग से कहा :

'पागलपन है यह—बिलकुल पागलपन—हम सब पागल हैं।'

जज ने शान्त स्वर में कहा :

'मुझे उम्मीद है, हमारे पास अब भी अपनी-अपनी सोचने-समझने की शक्तियाँ हैं। *क्या कोई इस मकान में इंजेक्शन देने वाली सुई लाया था?*'

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने सीधे खड़े होते हुए ऐसी आवाज़ में कहा जिसमें बहुत अधिक विश्वास नहीं था :

'मैं लाया था।'

चार जोड़ी आँखें उन पर आ जमीं। उन्होंने उन आँखों से झलकते गहरे शत्रुतापूर्ण सन्देह के ख़िलाफ़ ख़ुद को हिम्मत बँधायी। उन्होंने कहा :

'हमेशा एक सुई साथ लेकर चलता हूँ। ज़्यादातर डॉक्टर ऐसा करते

हैं।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने इत्मीनान से पूछा !

'ठीक है। क्या आप हमें बतायेंगे डॉक्टर कि वह सिरिंज अब कहाँ है?'

'मेरे कमरे में सूटकेस में।'

वॉरग्रेव ने कहा :

'इस बात की जाँच कर ली जाय?'

पाँचों लोग एक ख़ामोश जुलूस की शक्ल में ऊपर गये।

सूटकेस का सामान फ़र्श पर पलट दिया गया।

इंजेक्शन वाली सिरिंज वहाँ नहीं थी।

IV

आर्मस्ट्रॉन्ग ने भड़क कर कहा :

'कोई उसे ले गया होगा।'

कमरे में ख़ामोशी छा गयी।

आर्मस्ट्रॉन्ग खिड़की की तरफ़ पीठ करके खड़े थे। चार जोड़ी आँखें, शक और इल्जाम से काली, उन पर टिकी थीं। उन्होंने वॉरग्रेव से लेकर वेरा तक नज़र घुमायी और बेबसी से कमज़ोर स्वर में कहा :

'मैं आप को बता रहा हूँ कोई उसे ले गया होगा।'

ब्लोर लॉम्बार्ड की तरफ़ देख रहा था जिसने पलट कर उसे देखा।

जज ने कहा :

'इस कमरे में हम पाँच हैं। हममें से एक ख़ूनी है। यह हालत बहुत ख़तरनाक और गम्भीर है। सब कुछ किया जाना चाहिए ताकि हम चार जो निर्दोष हैं उनकी हिफ़ाज़त हो सके। मैं अब आपसे पूछूँगा डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग, आपके पास कौन-कौन-सी दवाइयाँ हैं?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने जवाब दिया :

'मेरे पास एक छोटा-सा डॉक्टरी बक्सा है। आप उसे देख सकते हैं। उसमें आपको कुछ नींद की दवाइयाँ मिलेंगी—ट्रायोनल और स्ल्फ़ोनल की गोलियाँ—एक पैकेट ब्रोमाइड, सोडा बाइकार्बोनेट, ऐस्पिरिन। और कुछ

नहीं। मेरे पास कोई साइनाइड नहीं है।'

जज ने कहा :

'मेरे पास कुछ नींद की गोलियाँ हैं—सल्फ़ोनल हैं, मेरे ख़याल से। मैं समझता हूँ कि अगर बड़ी मात्रा में दी जायें तो जानलेवा भी हो सकती हैं। तुम्हारे पास, लॉम्बार्ड, एक रिवॉल्वर है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने तीखे स्वर में कहा :

'अगर है तो क्या?'

'सिर्फ़ यह। मेरा प्रस्ताव है कि डॉक्टर की दवाइयाँ, मेरी अपनी सल्फ़ोनल की गोलियाँ, तुम्हारा रिवॉल्वर और इसके अलावा जो भी दवाइयाँ या हथियार हों, उन्हें इकट्ठा करके एक सुरक्षित जगह रख देना चाहिए। यह सब हो जाय तो हम में से हरेक अपनी तलाशी दे—शरीर की भी और सामान की भी।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं अपना रिवॉल्वर नहीं देने वाला।'

वॉरग्रेव ने तेज़ लहजे में कहा :

'मिस्टर लॉम्बार्ड, तुम काफ़ी लम्बे-तगड़े और ताक़तवर युवक हो। लेकिन इंस्पेक्टर ब्लोर भी हट्टा-कट्टा आदमी है। मैं नहीं जानता कि तुम्हारे और उसके बीच संघर्ष का नतीजा क्या होगा, लेकिन यह मैं तुम्हें बता दूँ कि ब्लोर की तरफ़ से मदद करने को मैं, डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग और वेरा क्लेथॉर्न होगी। तुम अब अन्दाज़ा लगा सकते हो कि अगर तुम विरोध करोगे तो किस हद तक सम्भावना तुम्हारे ख़िलाफ़ होगी।'

लॉम्बार्ड ने अपना सिर पीछे को ताना। उसके दाँत लगभग ग़ुर्राहट जैसी मुद्रा में दिखायी देने लगे।

'ओह, ठीक है, फिर। जब सब कुछ पहले ही तय कर चुके हैं आप।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने सिर हिलाया :

'तुम एक समझदार युवक हो। तुम्हारा यह रिवॉल्वर कहाँ है?'

'मेरे पलँग के बग़ल में मेज़ की दराज़ में।'

'ठीक।'

'मैं ले आता हूँ।'

'मेरा ख़याल है, ठीक यही होगा अगर हम तुम्हारे साथ चलें।'

फ़िलिप ने लगभग ग़ुर्रा कर कहा :

'शैतान की तरह शक्की हैं न आप?'

वे गलियारे के साथ-साथ लॉम्बार्ड के कमरे में गये।

फ़िलिप क़दम बढ़ा कर पलँग के बग़ल में रखी मेज़ तक गया और उसने झटके से दराज़ खोला।

फिर वह गाली देते हुए पलटा।

पलँग के बग़ल की मेज़ का दराज़ ख़ाली था।

V

'तसल्ली हो गयी?' लॉम्बार्ड ने पूछा।

उसने सारे कपड़े उतार दिये थे और बाक़ी तीन आदमियों ने उसकी और उसके कमरे की जम कर तलाशी ले डाली थी। वेरा क्लेथॉर्न बाहर गलियारे में थी।

तलाशी इसी तरह बाक़ायदगी से चलती रही। बारी-बारी से आर्मस्ट्रॉन्ग, जज और ब्लोर भी उसी जाँच-पड़ताल से गुज़रे।

चारों आदमी ब्लोर के कमरे से बाहर आकर वेरा के क़रीब पहुँचे। बात जज ने की।

'उम्मीद है, आप इस बात को समझेंगी, मिस क्लेथॉर्न कि हम कोई छूट नहीं दे सकते। रिवॉल्वर का मिलना ज़रूरी है। तुम्हारे पास, मेरा अनुमान है, तैरने का लिबास तो होगा ही?'

वेरा ने हामी में सिर हिलाया।

'फिर मैं चाहूँगा कि तुम अपने कमरे में जाकर उसे पहनकर बाहर चली आओ।'

वेरा ने अपने कमरे में जा कर दरवाज़ा बन्द कर लिया। मिनट भर के अन्दर वह तैरने के एक चुस्त रेशमी लिबास को पहन कर बाहर आ गयी।

वॉरग्रेव ने सिर हिलाकर मंज़ूरी ज़ाहिर की।

'शुक्रिया, मिस क्लेथॉर्न। अब तुम यहाँ इन्तज़ार करो, हम तुम्हारे

कमरे की तलाशी ले लें।'

वेरा धीरज धरे गलियारे में खड़ी रही जब तक कि वे बाहर नहीं आये। फिर वह अन्दर गयी और कपड़े पहन कर वहाँ चली आयी जहाँ वे इकट्ठा थे।

जज ने कहा :

'अब एक बात का हमें भरोसा है। हम में से किसी के पास कोई हथियार या दवाइयाँ वग़ैरा नहीं हैं। यह एक अच्छी बात है। अब हम इन दवाइयों को किसी सुरक्षित जगह में रख देंगे। मेरा ख़याल है कि भण्डार में छुरी-काँटे रखने की एक पेटी है न?'

ब्लोर ने कहा :

'वह सब तो ठीक है, पर चाभी किसके पास रहेगी? आपके पास मेरा ख़याल है।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कोई जवाब नहीं दिया।

वे भण्डार तक गये, बाक़ी लोग उनके पीछे-पीछे थे। वहाँ एक छोटी-सी पेटी थी जिसमें छुरी-काँटे वग़ैरा रखे जाते थे। जज की हिदायतों के मुताबिक़ सारी दवाइयाँ इसमें रख कर पेटी को ताला लगा दिया गया। फिर वॉरग्रेव की अगली हिदायत के मुताबिक़ यह पेटी बरतनों की अलमारी में रख कर उसे भी ताला लगा दिया गया। जज ने फिर पेटी की चाभी फ़िलिप लॉम्बार्ड को और अलमारी की चाभी ब्लोर को दे दी।

उन्होंने कहा :

'तुम दोनों ही शारीरिक रूप से सबसे ताक़तवर हो। तुम में से किसी के लिए भी दूसरे से चाभी लेना मुश्किल होगा। हम में किसी एक के लिए ऐसा करना असम्भव होगा। अलमारी या पेटी को तोड़ना शोर-शराबे वाला दिक़्क़त का काम होगा और बिना दूसरों का ध्यान खींचे ऐसा करना किया भी नहीं जा सकेगा।'

वे रुके, फिर उन्होंने आगे कहा :

'हम अब भी एक गम्भीर समस्या का सामना कर रहे हैं। *मिस्टर लॉम्बार्ड के रिवॉल्वर का क्या हुआ?*'

ब्लोर ने कहा :

'मुझे तो लगता है कि रिवॉल्वर का मालिक ही यह बात बेहतर ढंग से बता सकता है।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड के चेहरे पर खीझ दिखायी दी। उसने कहा :

'अरे बेवक़ूफ़ ! मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि किसी ने उसे चुरा लिया है।'

वॉरग्रेव ने पूछा :

'आख़िरी बार उसे तुमने कब देखा था?'

'कल रात। जब मैं सोने गया तो वह दराज़ में रखा था—कि अगर ज़रूरत पड़े तो तैयार रहे।'

जज ने सिर हिलाया।

वे बोले :

'उसे आज सुबह उठाया गया होगा जब रॉजर्स को खोजने की हलचल मची हुई थी या फिर उसकी लाश के मिलने के बाद।'

वेरा ने कहा :

'वह घर में ही कहीं-न-कहीं छिपा कर रखा गया होगा। हमें उसको खोजना चाहिए।'

जस्टिस वॉरग्रेव की उँगली उनकी ठोढ़ी सहला रही थी। उन्होंने कहा :

'मुझे शक है कि हमारी खोज से कोई नतीजा निकलेगा। हत्यारे को उसे छिपाने के लिए काफ़ी समय मिल चुका है। मुझे नहीं लगता कि वह रिवॉल्वर हमें आसानी से मिलेगा।'

ब्लोर ने ज़ोर दे कर कहा :

'मैं यह तो नहीं जानता कि रिवॉल्वर कहाँ है, लेकिन मैं यह बात शर्तिया जानता हूँ कि एक और चीज़ कहाँ है—इंजेक्शन लगाने की वह सुई। आइए, दिखाऊँ।'

उसने सामने का दरवाज़ा खोला और सबको अपने पीछे-पीछे मकान का चक्कर लगवा कर पीछे ले गया।

खाने के कमरे की खिड़की से थोड़े फ़ासले पर उसने सिरिंज दिखायी। उसके पास ही चीनी मिट्टी का एक चूर-चूर पुतला पड़ा था—

छठा नन्हा फ़ौजी।

ब्लोर ने सन्तुष्ट स्वर में कहा :

'यह इसी जगह हो भी सकती थी। मिस ब्रेण्ट को मारने के बाद उसने खिड़की खोली और सिरिंज बाहर फेंक दी। फिर इस पुतले को उठाया और इसे भी यहाँ फेंक दिया।'

सिरिंज पर उँगलियों के निशान नहीं थे। उसे सावधानी से पोंछ दिया गया था।

वेरा ने मज़बूती से कहा :

'आइए अब हम रिवॉल्वर को ढूँढ़ें।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'ज़रूर ढूँढ़िये। लेकिन ऐसा करते समय हमें सावधान रहना होगा कि सब साथ-साथ रहें। याद रखिए, अगर हम अलग हो जाते हैं तो हत्यारे को मौक़ा मिल जाता है।'

उन्होंने मकान को परछत्ती से लेकर तहख़ाने तक छान मारा, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। रिवॉल्वर ग़ायब ही रहा।

अध्याय 13

I

'हम में से एक... हम में से एक... हम में से एक...'

चार शब्द, लगातार दोहराये जा रहे थे, लगातार पाँच दिमाग़ों में घण्टे-दर-घण्टे बैठाये जा रहे थे।

पाँच लोग—पाँच डरे हुए लोग। पाँच लोग एक-दूसरे पर नज़र रखते हुए अब अपनी घबराहट और तनाव को छिपाने की कोई कोशिश नहीं कर रहे थे।

अब किसी क़िस्म का दिखावा नहीं था—बातचीत का कोई ऊपरी मुलम्मा भी नहीं था। वे पाँच दुश्मन थे जो अपनी रक्षा करने की सहज इच्छा से जुड़े हुए थे।

और वे सभी, अचानक, मनुष्यों से कुछ कम नज़र आने लगे थे। वे लौट कर जानवरों के स्वभाव के नज़दीक पहुँचने लगे थे। सतर्क बूढ़े कछुए की तरह जस्टिस वॉरग्रेव दुबके बैठे थे, उनका शरीर निश्चल था, आँखें तेज़ और चौकन्नी। पूर्व-इंस्पेक्टर ब्लोर अपने रंग-ढंग में और भी अनगढ़ और बेढंगा दिखने लगा था। उसकी चाल धीरे-धीरे धम-धम करके चलने वाले जानवर जैसी थी। उसकी आँखें लाल थीं। उसके चेहरे पर ख़ूंख़ारपने और मूर्खता का मिला-जुला भाव था। वह किसी घिरे हुए जंगली जानवर जैसा था जो अपना पीछा करने वालों पर झपटने को आमादा हो। फ़िलिप लॉम्बार्ड की चेतना मन्द होने की बजाय तेज़ हो गयी लगती थी। उसके कान हल्की-सी आवाज़ पर खड़े हो जाते। उसके क़दम हल्के और फुर्तीले थे, शरीर चुस्त और लचीला। और वह अक्सर मुस्कराता—अपने लम्बे सफ़ेद दाँतों की नुमाइश करता हुआ।

वेरा क्लेथॉर्न बहुत चुप-चुप थी। ज़्यादातर समय वह कुर्सी में धँस कर बैठी रहती। उसकी आँखें सीधे शून्य में ताकतीं और वह चकरायी लगती थी। वह उस चिड़िया की तरह थी जो सिर के बल काँच से टकरा गयी हो और जिसे आदमी ने हाथ में उठा लिया हो। और यह चिड़िया वहीं दुबकी हो, डरी हुई, हिल न पाती हुई, अपने बेहरकत होने के बल पर ख़ुद को

बचाने की उम्मीद में।

आर्मस्ट्रॉन्ग की नसों का हाल बुरा था। वे थिर नहीं हो पा रहे थे। उनका शरीर बार-बार फड़कता और उनके हाथ काँपते। वे एक के बाद दूसरा सिगरेट सुलगाते और उसे फ़ौरन दबा कर बुझा देते। उनकी बेहरकत हालत का असर सबसे ज़्यादा उन्हीं पर हुआ लगता था। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद घबराये हुए शब्दों की एक बौछार उनके मुँह से निकलती।

'हमें—हमें यहाँ हाथ-पर-हाथ धरे नहीं बैठे रहना चाहिए। *कुछ-न-कुछ*—निश्चय ही—*कुछ-न-कुछ* तो हम कर ही सकते हैं। अगर हम एक अलाव जलायें—?'

ब्लोर ने भारी आवाज़ में कहा :

'इस मौसम में?'

बारिश फिर तेज़ी से होने लगी थी। हवा के झँकोरे भी रह-रह कर खिड़कियों से टकराते। बारिश की एकरस आवाज़ उन्हें लगभग पागल किये दे रही थी।

अनकही रज़ामन्दी से उन्होंने काम-काज की योजना बनायी थी। वे सब बड़ी बैठक में एक साथ बैठते थे। एक बार में सिर्फ़ एक व्यक्ति कमरे के बाहर जाता था। बाक़ी चार वहीं इन्तज़ार करते थे जब तक कि पाँचवाँ लौट न आता।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'यह सिर्फ़ समय की बात है। मौसम साफ़ हो जायेगा। तब हम कुछ कर सकेंगे—संकेत दे सकेंगे—आग जला सकेंगे—बेड़ा बना सकेंगे—कुछ भी।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने अचानक अट्टहास करते हुए कहा :

'समय की बात—*समय?* हम समय ही तो गवारा नहीं कर सकते। हम सब तब तक मर चुके होंगे...'

जस्टिस वॉरग्रेव ने अपनी चुप्पी तोड़ी और उनकी पतली साफ़ आवाज़ में आवेग-भरी दृढ़ता थी :

'सावधान रहेंगे तो नहीं। *हमें बहुत सावधान रहना होगा...*'

दोपहर का भोजन समय से कर लिया गया था, लेकिन उसमें पहले जैसी औपचारिकता नहीं थी। पाँचों लोग रसोई-घर में गये थे। भण्डार में उन्हें डिब्बाबन्द भोजन की अच्छी-ख़ासी मात्रा मिली थी। उन्होंने डिब्बे खोले थे और रसोई की मेज़ के गिर्द खड़े-खड़े खाना खाया था। फिर झुण्ड की शक्ल में साथ-साथ वे बैठक में लौट आये थे—वहाँ बैठने के लिए—बैठ कर एक-दूसरे की निगरानी करने के लिए।

और अब तक जो विचार उनके दिमागों में चक्कर काट रहे थे, उनमें कुछ भी सामान्य नहीं रह गया था, उनमें बुख़ार की-सी कैफ़ियत थी, वे बीमार थे...

'वह आर्मस्ट्रॉन्ग ही है... मैंने उसे उस समय कनखी से अपनी तरफ़ नज़र डालते देखा... उसकी आँखें पागलों की-सी हैं... पागलों की सी... शायद वह डॉक्टर है ही नहीं... हाँ, यही बात है यक़ीनन... वह पागल है... किसी डॉक्टर के दवाख़ाने से भागा हुआ... डॉक्टर बनने का नाटक करता हुआ... यह सच है... क्या मैं उन्हें बता दूँ?... क्या मैं चीख़ पड़ूँ?... नहीं, उसे सावधान करना ठीक नहीं होगा... इसके अलावा वह बिलकुल सही दिमाग़ वाला लग सकता है... क्या बजा है?... अभी सिर्फ़ सवा तीन बजे हैं !... हे भगवान, मैं ख़ुद पागल हो जाऊँगा... हाँ, वह *आर्मस्ट्रॉन्ग* ही है... अब भी मुझे देख रहा है...'

'वे *मेरा* कुछ नहीं कर सकेंगे ! मैं अपनी देख-भाल ख़ुद कर सकता हूँ... पहले भी मुश्किल हालात में रहा हूँ... वह कमबख़्त रिवॉल्वर कहाँ है?... कौन ले गया उसे?... किसके पास है?... किसी के पास नहीं है—हम यह जानते हैं... हम सभी की तलाशी ली गयी थी... किसी को वह नहीं मिल सकता... *लेकिन किसी को तो पता है कि वह कहाँ है...*'

'वे पागल होते जा रहे हैं... वे सब पागल हो जायेंगे... मौत से डरते हैं... हम सब मौत से डरते हैं... मैं मौत से डरता हूँ... हाँ, लेकिन इससे मौत का आना रुक नहीं जाता... *"मुर्दा गाड़ी दरवाज़े पर है, सर।"* कहाँ पढ़ा मैंने यह? वह लड़की... मैं उस लड़की पर नज़र रखूँगा...'

'चार बजने में बीस... बस, अभी चार बजने में बीस ही है... शायद घड़ी रुक गयी है... समझ में नहीं आता—नहीं, मुझे समझ में नहीं आता... ऐसा हो नहीं सकता... *हो रहा है*... हम जाग क्यों नहीं जाते? जागो—फ़ैसले का दिन—क़यामत का दिन—नहीं, वह नहीं। काश, मैं सोच पाती... मेरा सिर—मेरे सिर को कुछ हो रहा है—वह फट जायेगा... चूर-चूर हो जायेगा... इस तरह की बात हो नहीं सकती... क्या बजा है?... हे ईश्वर, अभी सिर्फ़ पौने चार बजे हैं...'

'मुझे अपने होश बनाये रखने होंगे... होश बनाये रखने होंगे... बस, मैं होश बनाये रखूँ तो... सब कुछ बिलकुल साफ़ है—सारा हिसाब बैठा लिया गया है। लेकिन किसी को शक नहीं होना चाहिए। हो सकता है यह काम कर जाये। करना ही होगा। कौन है? यही सवाल है—कौन? मेरे ख़याल से—हाँ, मैं यही सोचता हूँ—हाँ—*वही है।*'

जब घड़ी ने पाँच बजाये तो वे सभी चौंक पड़े।

वेरा ने कहा :

'कोई चाय पीना चाहता है?'

एक पल ख़ामोशी रही। ब्लोर ने कहा :

'मैं एक प्याला पी सकता हूँ।'

वेरा उठी। उसने कहा :

'मैं जाकर बनाती हूँ। आप सब यहीं बैठे रह सकते हैं।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने नरमी से कहा :

'मेरा ख़याल है, हम सब वहाँ आ कर तुम्हें चाय बनाते देखना पसन्द करेंगे।'

वेरा चौंकी, फिर एक हल्की सी तनाव-भरी हँसी उसके होंटों से फूटी।

उसने कहा :

'हाँ, हाँ, आप तो चाहेंगे ही।'

पाँचों लोग रसोई-घर में गये, चाय बनी और वेरा और ब्लोर ने पी। बाक़ी तीनों ने ह्विस्की ली—एक नयी बोतल खोल कर।

जज ने मगरमच्छ जैसी मुस्कान के साथ बुदबुदा कर कहा :

'हमें बहुत होशियार रहना चाहिए...'

वे फिर वापस बैठक में चले गये। हालाँकि गर्मियाँ थीं, लेकिन कमरा अँधेरा था। लॉम्बार्ड ने बत्ती जलाने के लिए बटन दबाया, लेकिन बत्ती नहीं जली। उसने कहा :

'कुदरती बात है, रॉजर्स के न होने पर आज इंजन नहीं चला है।'

वह रुका, फिर उसने कहा :

'हम बाहर जा कर उसे चालू कर सकते हैं।'

जस्टिस वॉरग्रेव ने कहा :

'भण्डार में मोमबत्तियों के पैकेट हैं, मैंने देखा था उन्हें, बेहतर है उन्हें इस्तेमाल कर लो।'

लॉम्बार्ड बाहर चला गया। बाक़ी चार बैठे एक-दूसरे को देखते रहे।

थोड़ी देर बाद लॉम्बार्ड मोमबत्तियों का डिब्बा और छोटी तश्तरियाँ ले आया। पाँच मोमबत्तियाँ जला कर कमरे में यहाँ-वहाँ रख दी गयीं।

पौने छै बजे थे।

II

छै बज कर बीस मिनट पर वेरा को लगा कि वहाँ बैठे रहना उसकी बरदाश्त के बाहर था। वह अपने कमरे में जायेगी और अपने दुखते सिर और कनपटियों पर ठण्डा पानी डालेगी।

वह उठी और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ी। फिर उसे याद आया और उसने लौट कर डिब्बे से एक मोमबत्ती निकाली, उसे जलाया, थोड़ी-सी मोम तश्तरी पर गिरायी और मोमबत्ती उस पर चिपका दी। फिर वह दरवाज़े को अपने पीछे बन्द करते और चारों आदमियों को कमरे में बैठा छोड़ते हुए कमरे से बाहर चली गयी। वह सीढ़ियाँ चढ़कर अपने कमरे तक पहुँची।

जैसे ही उसने दरवाज़ा खोला, वह अचानक ठिठक कर जहाँ-की-तहाँ खड़ी हो गयी।

उसकी नाक फड़कने लगी।

समुद्र... सेंट ट्रेडेनिक पर समुद्र की गन्ध।

हाँ, वही थी। वह भूल नहीं कर सकती थी। बेशक, टापू पर हर हाल में

समुद्र की गन्ध आती थी, लेकिन यह अलग थी। यह वही गन्ध थी जो उस दिन समुद्र-तट पर महसूस हुई थी—लहरें पीछे हट गयी थीं और सिवार से ढँकी चट्टानें धूप में सूख रही थीं।

'क्या मैं टापू तक तैर कर जा सकता हूँ, मिस क्लेथॉर्न?'

'मैं टापू तक क्यों नहीं तैर सकता?'

बदतमीज़, रिरियाता, बिगड़ा हुआ छोकरा ! अगर यह न होता तो ह्यूगो अमीर होता... उस लड़की से शादी करने के क़ाबिल जिसे वह प्यार करता था।

ह्यूगो...

यक़ीनन—यक़ीनन—ह्यूगो उसके बग़ल में था? नहीं, कमरे के भीतर उसका इन्तज़ार कर रहा था।...

उसने एक क़दम बढ़ाया। खिड़की से आ रही हवा ने मोमबत्ती की लौ को बुझा दिया।

अँधेरे में अचानक उसे डर लगा...

'पागल मत बनो', वेरा क्लेथॉर्न ने ख़ुद को ढाढ़स बँधाया। 'सब ठीक है। कमरे में कोई नहीं है। हो नहीं सकता। बाक़ी सब नीचे बैठे हैं। चारों-के-चारों। तुम हवा में कल्पना कर रही हो।'

लेकिन वह गन्ध—सेंट ट्रेडेनिक के समुद्र-तट की वह गन्ध... वह तो कल्पना नहीं थी। *वह तो सच थी।*

और कमरे में कोई *था* ज़रूर... उसने कुछ सुना था—निश्चय ही उसने कुछ सुना था।

और तभी, जब वह वहाँ खड़ी कान लगाये सुन रही थी—एक ठण्डे, चिपचिपे हाथ ने उसके गले को छुआ—एक गीले हाथ ने जिसमें समुद्र की गन्ध बसी थी...

III

वेरा चीख़ी। वह चीख़ी और चीख़ती चली गयी—बेहद ख़ौफ़नाक चीख़ें—मदद के लिए बेलगाम, हताश चीत्कार।

उसने नीचे से आती आवाज़ें नहीं सुनीं, कुर्सी पलटे जाने की, दरवाज़े

के खुलने की, सीढ़ियों पर आदमियों के दौड़ कर चढ़ने की। वह एक भीषण आतंक के क़ब्ज़े में थी। उसे सिर्फ़ इसी का आभास था।

फिर उसका होश बहाल करते हुए दरवाज़े में रोशनियाँ फड़फड़ायीं—मोमबत्तियाँ—लोग झपट कर कमरे में आते हुए।

'क्या हुआ?' 'कैसा शोर था?' 'कुछ बोलो भी?'

वह काँपी, एक क़दम आगे बढ़ी और फ़र्श पर ढह गयी।

उसे बस आधा-अधूरा आभास था कि कोई उस पर झुका हुआ था, कोई उसके सिर को उसके घुटनों के बीच दबा रहा था।

फिर एक अचानक आवाज़, एक तेज़ 'अरे, अरे, इसे तो देखो' सुन कर उसके हवास लौट आये। उसने आँखें खोलीं और सिर उठाया। उसने वह चीज़ देखी जिसे मोमबत्ती लिए लोग देख रहे थे।

समुद्री सिवार का एक चौड़ा फ़ीता छत से लटक रहा था। वही था जो अँधेरे में उसके गले से आ टकराया था। उसी को उसने चिपचिपा हाथ समझ लिया था। मौत की दुनिया से लौटा पानी में डूबा हाथ जो उसके अन्दर से उसकी ज़िन्दगी निचोड़ने के लिए आया था।

वह आपा खो कर हँसने लगी। उसने कहा :

'वह सिवार थी, सिर्फ़ सिवार—और यही थी वह गन्ध...'

और फिर एक बार उस पर बेहोशी-सी तारी हो गयी—उबकाइयों की लहरों पर लहरें। फिर किसी ने उसका सिर पकड़ कर उसके घुटनों के बीच दबा दिया।

ऐसा लगा सदियाँ गुज़र गयीं। वे उसे कुछ पीने के लिए दे रहे थे—गिलास को उसके होंटों से लगाते हुए। उसे ब्राण्डी की महक आयी।

वह कृतज्ञता के साथ ब्राण्डी का घूँट भरने ही वाली थी जब अचानक चेतावनी का स्वर—अलार्म की घण्टी की तरह—उसके दिमाग़ में गूँजा। वह उठ बैठी और उसने गिलास पर धकेल दिया।

उसने तीखे स्वर में पूछा : 'यह कहाँ से आयी है?'

ब्लोर की आवाज़ में जवाब आया। वह बोलने से पहले एक मिनट उसे घूरता रहा। उसने कहा :

'मैं नीचे से लाया था इसे।'

वेरा चिल्लायी :

'मैं नहीं पियूँगी इसे...'

पल भर ख़ामोशी रही। फिर लॉम्बार्ड हँसा।

उसने तारीफ़ के अन्दाज़ में कहा :

'अच्छा किया वेरा। भले ही तुम डर से काँप रही हो, पर तुम्हारे होश-हवास क़ाबू में हैं। मैं एक नयी बोतल लाता हूँ जो खोली नहीं गयी है।'

वह तेज़ी से बाहर चला गया।

वेरा ने अनिश्चय के साथ कहा :

'मैं अब ठीक हूँ। थोड़ा पानी लूँगी।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने उसे सहारा दिया और वह हिम्मत करके अपने पैरों पर खड़ी हुई। फिर उन्हें सहारे के लिए थामे, लहराती हुई वह नल तक गयी। नल खोल कर उसने गिलास भरा।

ब्लोर ने शिकायती स्वर में कहा :

'वह ब्रैण्डी ठीक है।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'तुम्हें कैसे मालूम?'

ब्लोर ने गुस्से से कहा :

'मैंने उसमें कुछ नहीं मिलाया है। यही कहना चाहते हैं न आप लोग?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मैं नहीं कह रहा कि तुमने कुछ मिलाया है। तुमने किया हो या किसी और ने इस बोतल के साथ महज़ इस ज़रूरत के वक़्त के लिए छेड़-छाड़ की हो सकती है।'

लॉम्बार्ड तेज़ी से कमरे में वापस आया।

उसके हाथ में ब्राण्डी की एक नयी बोतल थी।

उसने सीलबन्द बोतल वेरा की नाक के नीचे बढ़ा दी।

'यह देख लो बोतल। कोई धोखा नहीं है।' उसने ऊपर की पन्नी हटा

कर ढक्कन खोला। 'यह अच्छी बात है कि घर में हर तरह की शराब की अच्छी मात्रा मौजूद है। यू. एन. ओवेन ने बहुत ध्यान रखा है।'

वेरा ने ज़ोर से झुरझुरी ली।

आर्मस्ट्रॉन्ग ने गिलास थामा और लॉम्बार्ड ने उस में ब्राण्डी ढाली। उसने कहा :

'इसे पी लो मिस क्लेथॉर्न। तुम्हें काफ़ी बुरा झटका लगा है।'

वेरा ने थोड़ी-सी ब्राण्डी पी। उसके चेहरे का रंग वापस आ गया।

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने हँस कर कहा :

'ख़ैर, यह एक हत्या है जो योजना के मुताबिक़ हो ही नहीं पायी।'

वेरा ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा :

'तुम्हारा ख़याल है—यही होना था?'

लॉम्बार्ड ने सिर हिला कर हामी भरी।

'उम्मीद यही थी कि तुम डर कर सिधार जाओगी। कुछ लोग तो चले भी गये होते, क्या ख़याल है डॉक्टर?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने पक्के तौर पर नहीं माना। उन्होंने सन्देह-भरी आवाज़ में कहा :

'कहना मुश्किल है। यह जवान है, स्वस्थ है—दिल की कोई कमज़ोरी नहीं है। सम्भावना तो नहीं है। दूसरी तरफ़—'

उन्होंने ब्राण्डी का वह गिलास उठा लिया जो ब्लोर लाया था। एक उँगली उसमें डुबो कर उन्होंने हिचकिचाते हुए उसे चखा। उनका भाव नहीं बदला। कुछ शक के साथ उन्होंने कहा : 'स्वाद तो ठीक है।'

ब्लोर नाराज़ हो कर एक क़दम आगे बढ़ा। उसने कहा :

'अगर आप कह रहे हैं कि मैंने इसके साथ छेड़-छाड़ की है तो मैं आपको अभी तारे दिखा दूँगा।'

वेरा ने, जिसके होश-हवास ब्राण्डी से दुरुस्त हो गये थे, बात बदलते हुए कहा :

'जज वॉरग्रेव कहाँ हैं?'

तीनों आदमियों ने एक-दूसरे को देखा।

'*यह अजीब है...* मैंने सोचा कि वे हमारे साथ ऊपर आये थे।'

ब्लोर ने कहा :

'*मैंने भी यही सोचा...* क्यों डॉक्टर, सीढ़ियों पर आप मेरे पीछे थे?'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मैंने सोचा वे मेरे पीछे-पीछे आ रहे थे... बेशक, वे हमारी बनिस्बत धीरे-धीरे आते, वे बूढ़े आदमी हैं।'

उन्होंने फिर एक-दूसरे को देखा।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'है बहुत अजीब...'

ब्लोर चिल्लाया :

'हमें उनको खोजना चाहिए।'

वह दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा। दूसरे उसके पीछे-पीछे थे। वेरा सबसे आख़िर में थी।

नीचे उतरते समय आर्मस्ट्रॉन्ग ने कन्धे के ऊपर से कहा :

'हो सकता है वे नीचे की छोटी बैठक में रुक गये हों।'

उन्होंने हॉल पार किया। आर्मस्ट्रॉन्ग ने ऊँची आवाज़ में पुकारा :

'वॉरग्रेव, वॉरग्रेव ! कहाँ हैं आप?'

कोई उत्तर नहीं था। बारिश के हल्के शोर को छोड़ दें तो घर में मौत-सा सन्नाटा पसरा हुआ था।

फिर बैठक के दरवाज़े पर आर्मस्ट्रॉन्ग अचानक ठिठक कर खड़ा हो गया। बाक़ी लोग उसके पीछे इकट्ठा हो गये और उन्होंने उसके कन्धे के ऊपर से झाँका।

किसी के मुँह से चीख़-सी निकली।

जस्टिस वॉरग्रेव कमरे के आख़िर में, ऊँची पीठ वाली कुर्सी पर बैठे थे। उनके दोनों तरफ़ एक-एक मोमबत्ती जल रही थी। लेकिन जिस बात से देखने वालों को धक्का लगा वह यह थी कि वे वहाँ लाल लबादा पहने और सिर पर जज की विग लगाये हुए थे...

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने बाक़ियों को वहीं रहने का इशारा किया और

ख़ुद बढ़कर उस ख़ामोश घूरती आकृति की तरफ़ चले गये। उनकी चाल में शराबियों की-सी लड़खड़ाहट थी।

उन्होंने झुक कर उस बेहरकत चेहरे को जाँचा। फिर तेज़ी से उन्होंने नक़ली बालों की विग उठायी। वह फ़र्श पर गिर गयी और जज का ऊँचा गंजा माथा दिखायी दिया जिसके बीचों-बीच एक गोल धब्बा था जिससे कुछ रिस कर नीचे आया हुआ था।

डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग ने बेजान हाथ को उठाकर नब्ज़ टटोली। फिर वे दूसरों की तरफ़ मुड़े।

उन्होंने भावहीन आवाज़ में कहा—बेजान और दूर से आती आवाज़ में...

'*इन्हें गोली मारी गयी है...*'

ब्लोर ने कहा :

'हे भगवान—*वह रिवॉल्वर!*'

डॉक्टर ने उसी बेजान आवाज़ में कहा :

'इन्हें सिर में गोली लगी। मौत फ़ौरन हो गयी।'

वेरा ने झुक कर विग उठायी। उसने दहशत से काँपती आवाज़ में कहा :

'*मिस ब्रेण्ट की गुम हुई ग्रे ऊन...*'

ब्लोर ने कहा :

'और वह लाल पर्दा जो बाथरूम से ग़ायब हुआ था...'

वेरा ने दबी आवाज़ में कहा :

'तो उन्हें इस सब की ज़रूरत इसलिए थी...'

अचानक फ़िलिप लॉम्बार्ड हँसा—ऊँची अस्वाभाविक हँसी।

'*पाँच नन्हे फ़ौजी लड़के पढ़ने गये क़ानून, एक पहुँच गया अभिलेखों में बाक़ी बच गये चार।* लीजिए, हो गया अन्त जस्टिस वॉरग्रेव का। अब ये कोई सज़ा नहीं सुनायेंगे। इनका काला टोपा पहनना बन्द। यह आख़िरी बार है *जब ये* अदालत लगायेंगे। अब मुक़दमे का सार-संक्षेप बनाना और निर्दोष लोगों को मौत के हवाले करना बन्द। अगर एडवर्ड सेटन यहाँ होता

तो कितना हँसता। सच, कितना हँसता।'

उसके विस्फोट ने सबको सकते में डाल दिया था।

वेरा चिल्लायी :

'आज ही सुबह तुम कह रहे थे कि *वही* है हत्यारा !'

फ़िलिप लॉम्बार्ड के चेहरे का भाव बदला और उस पर गम्भीरता छा गयी।

उसने धीमी आवाज़ में कहा :

'मुझे पता है, मैंने कहा था... ख़ैर, मैं ग़लत था। लो, हम में से एक और निर्दोष साबित हुआ....*काफ़ी* देर से।'

अध्याय 14

I

वे जस्टिस वॉरग्रेव को उठा कर उनके कमरे में ले आये थे और उन्हें बिस्तर पर लिटा दिया गया था।

फिर वे नीचे हॉल में चले आये थे और खड़े होकर एक-दूसरे को देखने लगे थे।

ब्लोर ने भारी आवाज़ में कहा :

'अब हम क्या करें?'

लॉम्बार्ड ने फुर्ती से कहा :

'कुछ खायें। हमें खाना तो होगा ही।'

एक बार फिर वे रसोई-घर में गये। फिर एक बार उन्होंने डिब्बेबन्द खाना निकाला। वे मशीनी ढंग से, लगभग स्वाद लिये बिना खाते रहे।

वेरा ने कहा :

'अब शायद मैं ज़िन्दगी भर डिब्बेबन्द खाना नहीं खाऊँगी।'

उन्होंने खाना-पीना ख़त्म कर लिया और रसोई-घर में रखी मेज़ के गिर्द बैठकर एक-दूसरे को घूरने लगे।

ब्लोर ने कहा :

'सिर्फ़ चार बचे हैं अब हम... *अगला कौन होगा?*'

आर्मस्ट्रॉन्ग एकटक देखते रहे। उन्होंने लगभग मशीनी ढंग से कहा :

'हमें बहुत होशियार रहना होगा—' और फिर वे रुक गये।

ब्लोर ने सिर हिलाया।

'यही *वे* कहते थे... और अब वे मर चुके हैं।'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मैं यही सोचता हूँ, वह हुआ कैसे?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'बहुत चतुराई से धोखा दिया गया। वह सब सामान मिस क्लेथॉर्न के कमरे में ले जा कर रखा था और उसने वही काम किया जिसके लिए उसे रखा गया था। हर कोई ऊपर भागता है, यह सोचकर कि मिस क्लेथॉर्न का

ख़ून हो गया है। और इस तरह—हड़बोंग में—किसी ने बूढ़े जज वॉरग्रेव को औचक में पकड़ लिया।'

ब्लोर ने कहा :

'किसी ने गोली की आवाज़ क्यों नहीं सुनी?'

लॉम्बार्ड ने सिर हिलाया।

'मिस क्लेथॉर्न चीख़ रही थी, हवा का शोर था, हम लोगों ने दौड़-भाग मचा रखी थी, चीख़ रहे थे। नहीं, वह सुनायी नहीं देती।' वह रुका। 'लेकिन यह चाल दोबारा काम नहीं करेगी। उसे अगली बार कुछ और आज़माना होगा।'

ब्लोर ने कहा :

'शायद वह करेगा भी यही।'

उसकी आवाज़ में एक नागवार-सी खनक थी। दोनों आदमियों ने एक-दूसरे को घूरा।

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'हम चार हैं और हमें यह नहीं मालूम कि कौन...'

ब्लोर ने कहा :

'मैं जानता हूँ...'

वेरा ने कहा :

'मुझे ज़रा-सा भी शक नहीं है...'

आर्मस्ट्रॉन्ग ने कहा :

'मेरा ख़याल है मुझे वाक़ई मालूम है...'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं सोच रहा हूँ कि अब मुझे भी अच्छा-ख़ासा अन्दाज़ा हो गया है...'

एक बार फिर उन सबने एक-दूसरे को देखा।

वेरा लड़खड़ाती हुई उठी। उसने कहा :

'मेरी तबियत ठीक नहीं है। मुझे सोना है... मैं एकदम थक गयी हूँ।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'यही ठीक होगा। यह बैठकर एक-दूसरे को घूरने में कोई फ़ायदा

नहीं।'

ब्लोर ने कहा :

'मुझे कोई एतराज़ नहीं...'

डॉक्टर ने बुदबुदा कर कहा :

'इससे बेहतर और कुछ नहीं—हालाँकि मुझे शक है कि हम में से कोई सो पायेगा।'

वे दरवाज़े की तरफ़ बढ़े। ब्लोर ने कहा :

'यही सोचता हूँ कि अब वह रिवॉल्वर कहाँ है...'

II

वे सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर चले गये।

अगली हरकत कुछ-कुछ स्वाँग सरीखी थी।

चारों-के-चारों अपने-अपने कमरे के सामने एक हाथ अपने-अपने दरवाज़े के हत्थे पर रखे खड़े थे। फिर मानो किसी संकेत पर हरेक ने अपने-अपने कमरे में दाख़िल होकर अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर लिया। चिटखनियों और तालों और मेज़-कुर्सी खिसकाने की आवाज़ें आयीं।

चार डरे हुए लोगों की सुबह तक घेरेबन्दी हो गयी थी।

III

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने दरवाज़े के हत्थे के नीचे एक कुर्सी अड़ाने के बाद मुड़कर राहत की एक साँस ली।

वह टहलता हुआ सिंगार-मेज़ तक गया।

मोमबत्ती की टिमटिमाती रोशनी में उसने दिलचस्पी की अपने चेहरे को जाँचा-परखा।

उसने धीमी आवाज़ में ख़ुद से कहा :

'हाँ, इस सारे गोरखधन्धे ने तुम्हें थोड़ा परेशान तो कर ही दिया है।'

अचानक वह अपनी भेड़िये-सरीखी हँसी हँसा।

उसने जल्दी से कपड़े उतारे।

वह पलँग के पास रखी मेज़ पर अपनी कलाई घड़ी रखकर पलँग के पास गया।

फिर उसने मेज़ का दराज़ खोला।

वह वहीं खड़ा उस रिवॉल्वर को घूरता रहा जो उसके अन्दर रखा हुआ था...

IV

वेरा क्लेथॉर्न बिस्तर में लेटी थी।

मोमबत्ती अब भी उसकी बग़ल में जल रही थी।

और फिर भी उसे हिम्मत नहीं हो रही थी कि उसे बुझा दे।

वह अँधेरे से डरती थी...

वह बार-बार ख़ुद से कहती, *'तुम सुबह तक ठीक-ठाक हो। कल रात कुछ नहीं हुआ था। आज रात भी कुछ नहीं होगा। कुछ नहीं हो सकता। तुम्हारा दरवाज़ा बन्द है, चिटखनी और ताला लगा है। कोई तुम्हारे पास नहीं फटक सकता...'*

और अचानक उसने सोचा :

'निश्चय ही मैं यहाँ रह सकती हूँ। यहाँ अपने को बन्द करके रह सकती हूँ। खाना-पीना बहुत मतलब नहीं रखता। मैं यहाँ रह सकती हूँ—सुरक्षित—जब तक कि मदद नहीं आती। भले ही एक दिन लगे, दो दिन लगें...'

यहाँ रहे। हाँ, पर क्या वह यहाँ रह सकेगी? लगातार—बिना किसी से बात किये, *सोचने* के अलावा और कुछ किये बिना...

वह कॉर्नवॉल के बारे में सोचने लगी थी—ह्यूगो के बारे में—जो उसने सिरिल से कहा था उसके बारे में।

शैतान रिरियाता लड़का, हमेशा उसे तंग करता हुआ...

'मिस क्लेथॉर्न, मैं चट्टान तक क्यों तैर कर नहीं जा सकता? मैं जा सकता हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं जा सकता हूँ।'

क्या यह वेरा की आवाज़ थी जिसने जवाब दिया था?

'बिल्कुल, तुम जा सकते हो, सिरिल, सचमुच। मुझे यह मालूम है।'

'क्या मैं जाऊँ फिर, मिस क्लेथॉर्न?'

'देखो सिरिल, तुम्हारी माँ तुम्हारे बारे में बहुत घबरा जाती है। मैं बताऊँ। कल तुम चट्टान तक तैर कर चले जाना। मैं तुम्हारी माँ से बात

करती रहूँगी और उनका ध्यान बँटाये रखूँगी। और फिर जब वे तुम्हें खोजेंगी तो तुम वहाँ चट्टान पर खड़े उन्हें देख कर हाथ हिला रहे होंगे। वे दंग रह जायेंगी।'

'आह, यह तो बहुत अच्छा होगा, मिस क्लेथॉर्न। कितना मज़ा आयेगा !'

'*अब तो वह कह चुकी थी। कल !* ह्यूगो न्यूकी जा रहा था। जब वह लौटेगा—तब तक सब ख़त्म हो चुका होगा।'

हाँ, पर फ़र्ज़ करो न हुआ? फ़र्ज़ करो सब ग़लत हो गया? सिरिल को समय से बचा लिया गया—और तब—तब वह कहेगा—*मिस क्लेथॉर्न ने कहा था मैं जा सकता हूँ।* ख़ैर, तो क्या? थोड़ा-सा जोखिम तो उठाना ही होगा। अगर बात न बनी तो वह ढिठाई से काम लेगी। *'तुम ऐसा गन्दा झूठ कैसे बोल सकते हो सिरिल? मैंने ऐसा कुछ भी नहीं कहा था !'* वे उसकी बात पर निश्चय ही विश्वास कर लेंगे। सिरिल अक्सर कहानियाँ गढ़ा करता था। वह सच नहीं बोलता था। सिरिल को तो बेशक पता होगा। मगर उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था।... और, वैसे भी, कोई गड़बड़ नहीं होगी। वह उसके पीछे तैरने का दिखावा करेगी। लेकिन वह काफ़ी देर से पहुँचेगी... किसी को कभी शक नहीं होगा...

क्या ह्यूगो को शक हुआ था? क्या इसीलिए उसने उसे अजीब-से ढंग से देखा था, मानो दूर से जाँच रहा हो... क्या ह्यूगो को *पता चल गया था?*

क्या इसीलिए वह सरकारी जाँच के बाद इतनी जल्दी चला गया था?

उसने उस चिट्ठी का भी जवाब नहीं दिया था जो उसने उसे लिखी थी...

ह्यूगो...

वेरा ने बेचैनी से बिस्तर में करवट ली। नहीं, नहीं, उसे ह्यूगो के बारे में नहीं सोचना चाहिए। इससे बहुत तकलीफ़ होती थी। वह सब बीत चुका था, ख़त्म हो चुका था... उसे ह्यूगो को भूल जाना चाहिए।

आज की शाम उसे क्यों महसूस हुआ था कि ह्यूगो कमरे में उसके साथ था?

उसने छत को ताका, उस बड़ी-सी काली कटिया को देखा जो कमरे के बीचों-बीच छत में लगी थी।

इस कटिया पर पहले उसका ध्यान नहीं गया था।

समुद्री सिवार इसी से लटकी हुई थी।

अपनी गर्दन पर उस ठण्डे चिपचिपे स्पर्श को याद करके उसे झुरझुरी आयी।

उसे छत में लगी वह कटिया पसन्द नहीं थी। वह उसकी आँखें अपनी तरफ़ खींचती थी, आकर्षित करती थी... बड़ी-सी काली कटिया...

V

पूर्व-इंस्पेक्टर ब्लोर अपने पलँग के किनारे बैठा था।

उसके ठोस चेहरे में उसकी—लाल, सुर्ख़—छोटी-छोटी आँखों में चौकन्नापन था। वह किसी जंगली जानवर की तरह था—हमला करने को तैयार।

उसे सोने की ज़रा-सी भी इच्छा नहीं महसूस हो रही थी।

ख़तरा अब बहुत पास आ रहा था... दस में से छै !

अपनी सारी अक़्लमन्दी, अपनी सारी सावधानी और बुद्धि के बावजूद वह बूढ़ा जज बाक़ी सब की राह पर गया था।

ब्लोर ने जंगली सन्तोष से एक फुफकार छोड़ी।

क्या था जो बुढ़ऊ हमेशा कहते थे?

'हमें बहुत सावधान रहना चाहिए...'

अपने को सही समझने वाला, घमण्डी बूढ़ा पाखण्डी। अदालत में बैठा अपने को सर्वशक्तिमान ईश्वर जैसा महसूस करता हुआ। हो गया कबाड़ा... अब उसे सावधानी की कोई ज़रूरत नहीं...

और अब वे चार बचे थे। वह लड़की, लॉम्बार्ड, आर्मस्ट्रॉन्ग और वह ख़ुद।

बहुत जल्द उनमें से एक और जायेगा... मगर वह विलियम हेनरी ब्लोर नहीं होगा। इस बात का वह पूरा ख़याल रखेगा।

(लेकिन वह रिवॉल्वर... क्या हुआ उस रिवॉल्वर का? यही परेशान

करने वाली बात थी—वह रिवॉल्वर !)

ब्लोर अपने पलँग पर बैठा था, भवें चढ़ी हुई थीं, उसकी छोटी-छोटी आँखें सिकुड़ी और कसी हुई थीं और वह रिवॉल्वर के मसले पर उधेड़-बुन कर रहा था...

ख़ामोशी में वह नीचे घड़ियों के घण्टों की आवाज़ सुन रहा था।

आधी रात।

वह अब थोड़ा ढीला पड़ा—यहाँ तक बिस्तर पर लेट भी गया। लेकिन उसने कपड़े नहीं उतारे।

वह लेटा-लेटा सोचता रहा। उस पूरे मामले को शुरू से परखता रहा, क़ायदे से, मेहनत से जैसा कि वह अपने पुलिसिया दिनों में करता था। अन्त में लगन ही काम आती थी।

मोमबत्ती जल कर खत्म हो रही थी। यह देख कर कि माचिस उसके हाथ की पहुँच के भीतर है, उसने मोमबत्ती बुझा दी।

अजीब ढंग से उसे अँधेरा बेचैन करने लगा। मानो हज़ारों पुराने डर जाग कर उसके दिमाग़ को अखाड़ा बना कर एक-दूसरे से लड़ने लगे। हवा में चेहरे तैरने लगे—उस सलेटी ऊन के स्वांग में सजा जज का चेहरा —श्रीमती रॉजर्स का ठण्डा बेजान चेहरा—ऐण्टनी मार्सटन का बैंगनी सिकुड़ा हुआ चेहरा।

एक और चेहरा—ज़र्द, चश्मा चढ़ाये, भूसे के रंग की छोटी-सी मूँछ वाला।

वह चेहरा उसने कभी-न-कभी देखा था—मगर कब? इस टापू पर नहीं। नहीं, उससे बहुत पहले।

अजीब बात थी कि वह उसके साथ किसी नाम को नहीं याद कर पा रहा था... बुद्धुओं जैसा चेहरा था असल में—बन्दा थोड़ा बेवकूफ-सा लगता था।

अरे, बेशक।

उसे याद करके झटका-सा लगा।

लैण्डर !

यह सोच कर अजीब लगा कि वह बिलकुल भूल गया था कि लैण्डर कैसा दिखता था। अभी कल ही वह उस बन्दे के चेहरे को याद करने की कोशिश कर रहा था और कर नहीं पाया था।

और अब वह सामने था—सारे नख-शिख साफ़-साफ़ मानो उसने उसे कल ही देखा था।

लैण्डर की एक पत्नी भी थी—चिन्ता में डूबे चेहरे वाली पतली-दुबली औरत। एक बच्ची भी थी—लड़की—लगभग चौदह बरस की। पहली बार उसने सोचा कि आख़िर उनका क्या बना था।

(वह रिवॉल्वर। उस रिवॉल्वर का क्या हुआ। यह कहीं ज़्यादा ज़रूरी था।)

जितना ज़्यादा वह उसके बारे में सोचता उतना ही ज़्यादा वह चकरा जाता... इस रिवॉल्वर वाले मामले को वह समझ नहीं पा रहा था।

घर में किसी के हाथ वह रिवॉल्वर लगा था...

नीचे घड़ी ने एक बजाया।

ब्लोर के ख़याल अचानक बीच ही में रुक गये। वह बिस्तर में उठ बैठा, अचानक चौकन्ना हो कर, क्योंकि उसके कानों में एक आवाज़ पड़ी थी—बहुत हल्की-सी आवाज़—उसके सोने वाले कमरे के बाहर कहीं।

अँधेरे घर में कोई चल-फिर रहा था।

उसके माथे पर पसीना आ गया। कौन था जो इस तरह गुप-चुप गलियारे में चल-फिर रहा था? कोई ऐसा जिसके इरादे शर्तिया नेक नहीं थे !

अपनी भारी-भरकम देह के बावजूद बेआवाज़ ढंग से वह बिस्तर से उतरा और दो क़दमों में दरवाज़े तक पहुँच कर कान लगाये सुनने लगा।

लेकिन वह आवाज़ फिर नहीं आयी। तो भी ब्लोर को यक़ीन था कि उससे भूल नहीं हुई है। उसने अपने दरवाज़े के ठीक बाहर पदचाप सुनी थी। उसके सिर के बाल हल्के-हल्के खड़े हो गये। एक बार फिर उसे ख़ौफ़ का एहसास हुआ।

कोई रात में दबे पैरों से चुपचाप घर में फिरता हुआ।

उसने कान लगा कर सुना, पर वह आवाज़ फिर नहीं आयी।

और अब एक नया लालच उसे सताने लगा। उसके मन में बाहर जा कर जाँचने की ज़बरदस्त इच्छा हुई। काश, वह देख पाता कि कौन था जो इस तरह अँधेरे में घूम-फिर रहा था।

लेकिन दरवाज़ा खोलना बेवकूफ़ी होगी। बहुत करके वह दूसरा ठीक इसी का इन्तज़ार कर रहा था। हो सकता है, यह भी उसके इरादे में शामिल रहा हो कि ब्लोर वह सुने जो उसने सुना था ताकि वह खोज-बीन के लिए बाहर आये।

ब्लोर तन कर खड़ा सुनता रहा। अब उसे हर जगह आवाज़ें सुनायी दे रहीं थीं, चर्र-मर्र, सरसराहटें, रहस्य-भरी फुसफुसाहटें—लेकिन असलियत को यह जानने वाला उसका मज़बूत दिमाग़ जानता था कि वास्तव में वे क्या थीं—उसकी अपनी उत्तेजित कल्पना की उपज।

और फिर अचानक उसने कुछ ऐसा सुना जो कल्पना नहीं थी। क़दमों की आहट, बहुत हल्की, बहुत सावधान, लेकिन कान लगाये सुनने वाले के लिए बिलकुल साफ़। ब्लोर सुन रहा था।

पदचाप धीरे-धीरे गलियारे के साथ-साथ आयी। सीढ़ियों से चढ़ने के बाद लॉम्बार्ड और आर्मस्ट्रॉन्ग के कमरे उसके कमरे के आगे थे। पदचाप बिना रुके या हिचके उसके दरवाज़े के सामने से गुज़र गयी।

और जैसे ही यह हुआ ब्लोर ने फ़ैसला कर लिया।

जब ब्लोर कुछ करता तो वह तेज़ी से क़दम उठाता जो उस जैसे भारी-भरकम और सुस्त दिखने वाले आदमी के सिलसिले में हैरत पैदा करता। वह पंजों के बल पलँग तक गया, माचिस अपनी जेब में सरकायी, पलँग की बग़ल में रखे बिजली के लैम्प का प्लग निकाल कर लैम्प को उठा लिया, तार उसी में लपेटते हुए। वह क्रोमियम का था, भारी पेंदे वाला —उपयोगी हथियार।

उसने बिना आवाज़ किये, कमरे को दौड़ कर पार किया, दरवाज़े के हत्थे के नीचे से कुर्सी हटायी और सावधानी के साथ दरवाज़े की चिटखनी और ताला खोल कर गलियारे में क़दम रखा। नीचे हॉल से हल्की-सी

आवाज़ आयी। ब्लोर सिर्फ़ मोज़े पहने बेआवाज़ दौड़ कर सीढ़ियों के ऊपरी हिस्से पर पहुँचा।

उसी समय उसे एहसास हुआ कि उसने वे सारी आवाज़ें इतनी साफ़-साफ़ कैसे सुनी थीं। हवा बिलकुल बन्द हो गयी थी और आसमान खुल चुका होगा। परछत्ती की खिड़की से हल्की-हल्की चाँदनी अन्दर आ रही थी और वह नीचे हॉल को प्रकाशित कर रही थी।

ब्लोर को सामने के दरवाज़े से उसी समय निकल कर बाहर जाती एक आकृति की क्षणिक झलक मिली।

उसका पीछा करने के लिए सीढ़ियों से नीचे भाग कर उतरते हुए वह ठिठक गया।

एक बार फिर वह बेवकूफ़ी करने चला था। यह शायद कोई चाल थी, उसे घर के बाहर लुभा कर लाने की।

लेकिन जो बात वह दूसरा आदमी नहीं समझ रहा था कि वह ग़लती कर बैठा था। उसने ख़ुद को बड़े आराम से ब्लोर के हवाले कर दिया था।

क्योंकि ऊपर के तीन कमरों में से जिनमें लोग ठहरे हुए थे *एक अब ख़ाली होगा।* कुल-जमा यही करना था कि पता लगाया जाये *कौन-सा।*

ब्लोर तेज़ी से गलियारे के साथ-साथ वापस आया।

पहले वह आर्मस्ट्रॉन्ग के दरवाज़े आगे रुका और दस्तक दी। कोई जवाब नहीं आया।

वह एक मिनट रुका, फिर फ़िलिप लॉम्बार्ड के कमरे तक गया।

यहाँ फ़ौरन जवाब मिला।

'कौन है?'

'ब्लोर। मुझे नहीं लगता आर्मस्ट्रॉन्ग अपने कमरे में हैं। एक मिनट रुको।'

वह गलियारे के आख़िर वाले कमरे पर गया और यहाँ उसने फिर दस्तक दी।

'मिस क्लेथॉर्न, मिस क्लेथॉर्न !'

वेरा की चौंकी हुई आवाज़ आयी।

'कौन है? क्या बात है?'

'सब ठीक है, मिस क्लेथॉर्न। एक मिनट रुकिए, मैं आता हूँ।'

वह दौड़ कर लॉम्बार्ड के कमरे तक गया। उसके पहुँचते ही दरवाज़ा खुला। लॉम्बार्ड अपने बायें हाथ में मोमबत्ती थामे खड़ा था। उसने पाजामे पर ही पतलून चढ़ा ली थी। उसका दायाँ हाथ नाइट सूट की जैकेट की जेब में था। उसने तीखे स्वर में कहा :

'यह सब क्या हो रहा है?'

ब्लोर ने जल्दी से समझाया। लॉम्बार्ड की आँखें चमक उठीं।

'*आर्मस्ट्रॉन्ग—ऐसा? तो वह है* हमारा बन्दा।' वह आगे बढ़ कर आर्मस्ट्रॉन्ग के दरवाज़े तक गया। 'माफ करना, ब्लोर, मगर मैं सिर्फ़ बातों पर भरोसा नहीं करता।'

उसने दरवाज़े पर ज़ोर से दस्तक दी।

'आर्मस्ट्रॉन्ग, आर्मस्ट्रॉन्ग !'

कोई जवाब नहीं आया।

लॉम्बार्ड ने घुटनों के बल बैठकर चाभी के छेद से झाँका। उसने अपनी छोटी उँगली हिचकते हुए छेद में डाली।

उसने कहा :

'दरवाज़े की दूसरी तरफ़ छेद में चाभी नहीं लगी है।'

ब्लोर ने कहा :

'इसका मतलब है उन्होंने इसे बाहर से बन्द किया है और अपने साथ ले गये हैं।'

फ़िलिप ने सिर हिला कर हामी भरी।

'मामूली सावधानी बरतनी है। *हम पकड़ लेंगे उसे, ब्लोर।* इस बार *हम उसे पकड़ लेंगे।* एक सेकेण्ड।'

वह दौड़ कर वेरा के कमरे तक गया।

'वेरा।'

'हाँ।'

'हम आर्मस्ट्रॉन्ग को खोज रहे हैं। वह अपने कमरे के बाहर है। तुम

चाहे जो करो, *पर कमरे का दरवाज़ा मत खोलना।* समझीं?'

'हाँ, समझ गयी।'

'अगर आर्मस्ट्रॉन्ग आयें और कहें कि मैं मारा गया हूँ या ब्लोर मारा गया है तो *कोई ध्यान मत देना।* समझीं? अपना दरवाज़ा तभी खोलना *अगर मैं और ब्लोर दोनों तुमसे बात करें।* ठीक है?'

वेरा ने कहा :

'हाँ, मैं एकदम बेवक़ूफ नहीं हूँ।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'बढ़िया।'

वह ब्लोर से आ मिला। उसने कहा :

'और अब—आर्मस्ट्रॉन्ग के पीछे—चलें।'

ब्लोर ने कहा :

'हमें होशियार रहना होगा। याद है उसके पास रिवॉल्वर है।'

सीढ़ियों से सरपट उतरते हुए फ़िलिप लॉम्बार्ड दबी हुई हँसी हँसा। उसने कहा :

'यहीं तुम ग़लत हो।' उसने सामने का दरवाज़ा खोला और कहा, 'देखो, चिटखनी पीछे खिसकायी हुई है ताकि वह दोबारा आसानी से अन्दर आ सके।'

उसने बात जारी रखी :

'वह रिवॉल्वर मेरे पास है !' उसने बात करते हुए उसे जेब से आधा बाहर निकाला। 'आज रात देखा कि वापस मेरे दराज़ में रख दिया गया था।'

ब्लोर दरवाज़े की दहलीज पर ठिठक कर जम गया। उसके चेहरे के भाव बदल गये। फ़िलिप लॉम्बार्ड ने यह देख लिया।

'बेवक़ूफ़ी छोड़ो, ब्लोर ! मैं तुम्हें गोली नहीं मारने जा रहा। चाहो तो जा कर अपने को कमरे में बन्द कर लो। मैं आर्मस्ट्रॉन्ग के पीछे जा रहा हूँ।'

वह चाँदनी में आगे बढ़ गया। मिनट भर के शशो-पंज के बाद ब्लोर

भी उसके पीछे-पीछे चल दिया।

उसने ख़ुद से कहा :

'मेरा ख़याल है, मैं अपनी मुसीबत ख़ुद ही बुला रहा हूँ। आख़िरकार —'

आख़िरकार उसने अब से पहले रिवॉल्वर से लैस मुजरिमों से दो-दो हाथ किये ही थे। ब्लोर में और जो भी कमियाँ हों, साहस की कमी नहीं थी। उसे ख़तरा दिखाओ तो वह हिम्मत के साथ उससे जूझता। उसे खुले हुए ख़तरे का ख़ौफ़ नहीं था, सिर्फ़ अनाम ख़तरे का और उसका भी जिसमें कुछ ग़ैर-कुदरती और रहस्यमय हो।

VI

वेरा जो नतीजों के इन्तज़ार में पीछे छोड़ दी गयी थी, उठी और कपड़े पहन कर तैयार हो गयी।

उसने एक या दो बार दरवाज़े पर निगाह डाली। वह उम्दा ठोस दरवाज़ा था। उसमें चिटखनी भी लगी थी और ताला भी और लकड़ी की एक कुर्सी हत्थे के नीचे अड़ायी गयी थी।

उसे जबरदस्ती तोड़ कर खोलना सम्भव नहीं था। निश्चय ही डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग उसे नहीं खोल सकते थे। वे शारीरिक रूप से शक्तिशाली नहीं थे।

अगर वह आर्मस्ट्रॉन्ग की जगह होती, मन में हत्या का इरादा लिये, तो वह ताक़त नहीं, तरकीब भिड़ाती।

वेरा ने अपनी दिलचस्पी के लिए उन साधनों पर विचार करना शुरू किया जिन्हें डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग आज़मा सकते थे।

हो सकता था कि वे, जैसा फ़िलिप ने सुझाया था, ऐलान करें कि दूसरे दोनों आदमियों में से एक मर चुका था। यह सम्भव है वे ख़ुद बुरी तरह घायल होने का नाटक करें, कराहते हुए अपने को घसीट कर उसके दरवाज़े तक ले आयें।

और भी सम्भावनाएँ थीं। वे उसे सूचित कर सकते थे कि घर में आग लग गयी थी। इससे भी आगे, वे घर को आग लगा भी सकते थे... हाँ, यह

एक सम्भावना हो सकती थी। वे दोनों आदमियों को लुभा कर घर के बाहर ले जाते और फिर इसके पहले ही बिछायी गयी पेट्रोल की लकीर को आग दिखा देते। और वह, मूर्ख की तरह, अपने कमरे को बन्द करके बैठी रहती जब तक कि पानी सिर के ऊपर न चला जाता।

वह चलकर खिड़की के पास आ गयी। यह रास्ता बुरा नहीं था। घिर जाने पर यहाँ से बचा जा सकता था। ऊँचाई के कूदना पड़ेगा—लेकिन वहाँ फूलों की एक सुविधाजनक क्यारी थी।

वह बैठ गयी और अपनी डायरी उठा कर उसमें एक साफ़ रवाँ लिखावट में लिखने लगी।

समय तो किसी तरह बिताना ही था।

अचानक वह चौकन्नी हो कर तन गयी। उसने एक आवाज़ सुनी थी। उसके ख़याल में यह टूटते काँच की-सी आवाज़ थी। और वह नीचे कहीं से आयी थी।

उसने और ध्यान देकर सुना, लेकिन वह आवाज़ फिर नहीं सुनाई दी।

उसने दबे-दबे क़दमों की आवाज़ें, सीढ़ियों की चूँ-चर्र, कपड़ों की सरसराहट सुनी या उसे लगा कि उसने सुनी—लेकिन कुछ भी पक्का नहीं था और उसने यही सोचा—जैसा इससे पहले ब्लोर ने सोचा था—कि इन आवाजों का ताल्लुक़ उसकी कल्पना से था।

लेकिन जल्दी ही उसे ज़्यादा असली आवाज़ें सुनायी दीं। नीचे लोगों का चलना-फिरना, आवाज़ों का दबा-दबा शोर। फिर किसी के सीढ़ियों पर चढ़कर आने की आवाज़ आयी—दरवाज़ों के खुलने और बन्द होने की —ऊपर परछत्ती पर जाने वाले क़दमों की और वहाँ से और हलचल की।

आख़िरकार क़दम गलियारे के साथ-साथ आये। लॉम्बार्ड की आवाज़ ने कहा :

'वेरा, तुम ठीक हो?'

'हाँ। क्या हुआ?'

ब्लोर ने कहा :

'क्या हम अन्दर आ जायें?'

वेरा दरवाज़े तक गयी। उसने हत्थे के नीचे से कुर्सी हटायी, चिटखनी खोली और ताला भी। उसने दरवाज़ा खोला। दोनों आदमी तेज़-तेज़ साँसें ले रहे थे, उनके पैर और पतलूनों के निचले हिस्से बिलकुल गीले थे।

उसने दोबारा पूछा :

'क्या हुआ?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'*आर्मस्ट्रॉन्ग ग़ायब हो गया है...*'

VII

वेरा चिल्लायी :

'क्या कहा?'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'ग़ायब, सफ़ाचट्ट हो गया है टापू से।'

ब्लोर ने सहमति प्रकट की :

'ग़ायब—यही ठीक शब्द है। जैसे जादू का कोई खेल हो।'

वेरा ने अधीरता से कहा

'बकवास। वे कहीं छिपे होंगे।'

ब्लोर ने कहा

'नहीं, ऐसा नहीं है, मैं बता रहा हूँ कि टापू में छिपने के लिए कोई जगह नहीं है। वह तुम्हारी हथेली की तरह साफ़ है। बाहर चाँदनी छिटकी हुई है। दिन की रोशनी जैसी है वह। और वह कहीं मिल नहीं रहा।'

वेरा ने कहा :

'वह दौड़ कर वापस घर के अन्दर आ गया होगा।'

ब्लोर ने कहा :

'हमने इसके बारे में भी सोचा। हमने घर में भी खोजा है। तुमने हमें सुना होगा। *वह यहाँ नहीं है*, मैं कह रहा हूँ। वह चला गया है—साफ़ ग़ायब हो गया है, फूट लिया है...'

वेरा ने अविश्वास के साथ कहा :

'मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'यह सही है डियर।'

वह रुका और फिर बोला :

'एक और छोटी-सी बात है। खाने के कमरे की खिड़की का एक काँच टूटा हुआ है—*और मेज़ पर अब सिर्फ़ तीन नन्हे फ़ौजी लड़के हैं।*'

अध्याय 15

I

तीन लोग रसोई-घर में बैठे नाश्ता कर रहे थे।

बाहर सूरज चमक रहा था। दिन बहुत प्यारा था। आँधी-तूफ़ान बीती हुई बात बन चुका था।

और मौसम के बदलने के साथ ही टापू पर क़ैद लोगों के दिल-दिमाग़ भी बदल गये थे।

वे अब उन लोगों जैसा महसूस कर रहे थे जो अभी-अभी किसी बुरे सपने को देख कर जागे हों। ख़तरा था, मगर वह दिन की रोशनी में ख़तरा था। कल जब हवा हू-हू करती बह रही तब भय और आतंक का जो बेबस कर देने वाला वातावरण उनके गिर्द कम्बल की तरह लिपटा हुआ था, वह जा चुका था।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'हम आज टापू की सबसे ऊँची जगह से शीशे की मदद से संकेत भेजने की कोशिश करेंगे। उधर के किनारे पर कोई समझदार आदमी कगार पर टहलते हुए मदद के इस संकेत को देखेगा तो उम्मीद है इसे पहचान जायेगा। शाम के वक़्त हम अलाव जला सकते हैं—समस्या यही है कि लकड़ी बहुत ज़्यादा नहीं है—और वे यह भी सोच सकते हैं कि हम आग जला कर मौज-मस्ती कर रहे हैं।'

वेरा ने कहा :

'निश्चय ही कोई-न-कोई मोर्स संकेत पढ़ सकता होगा। और फिर वे हमें यहाँ से लेने आ जायेंगे। शाम से काफ़ी पहले ही।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मौसम साफ़ हो गया है, लेकिन समुद्र अभी शान्त नहीं हुआ। लहरें काफ़ी ऊँची-ऊँची हैं। वे कल सुबह से पहले टापू के पास नाव नहीं भेज पायेंगे।'

वेरा चिल्लायी :

'इस जगह एक और रात बितानी पड़ेगी ?'

लॉम्बार्ड ने कन्धे उचकाये।

'इससे मुँह चुराने में कोई फ़ायदा नहीं। मेरे ख़याल में, चौबीस घण्टे में काम बन जाना चाहिए। अगर हम इतना झेल गये तो सब ठीक हो जायेगा।'

ब्लोर ने खँखार कर कहा :

'हमें आपस में कुछ बातें तय कर लेनी चाहिए। *आर्मस्ट्रॉन्ग का क्या हुआ?*'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'हमारे पास एक सबूत तो है। खाने की मेज़ पर अब सिर्फ़ तीन पुतले हैं। लगता है आर्मस्ट्रॉन्ग का खेल भी खत्म हो गया है।'

वेरा ने कहा :

'फिर हमें उसकी लाश क्यों नहीं मिली?'

ब्लोर ने कहा :

'बिलकुल।'

लॉम्बार्ड ने सिर हिलाया :

'बहुत अजीब है—कुछ समझ में नहीं आ रहा।'

ब्लोर ने सन्देह प्रकट किया :

'हो सकता है उसे समुद्र में फेंक दिया हो।'

लॉम्बार्ड ने तीखे स्वर में कहा :

'किसने? तुमने? मैंने? तुमने उसे सामने के दरवाज़े से बाहर जाते देखा। तुमने आकर मुझे मेरे कमरे में पाया। हमने बाहर जाकर साथ-साथ खोज की। तब मुझे उसको मारने और टापू भर में उसकी लाश को उठाकर घूमने का वक़्त भला कब मिला?'

ब्लोर ने कहा :

'मैं नहीं जानता। लेकिन मैं एक बात जानता हूँ।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'वह क्या?'

ब्लोर ने कहा :

'वह रिवॉल्वर। वह आपका रिवॉल्वर था। अब आपके क़ब्ज़े में है। क्या कोई सबूत है कि वह बराबर आपके पास नहीं रहा?'

'यह कैसी बात है? हम सब की तलाशी हुई थी?'

'हाँ, पर उससे पहले ही आपने उसे छिपा दिया था। बाद में आपने उसे फिर उठा लिया।'

'अरे बुद्धू, मैं क़सम खाता हूँ कि उसे वापस मेरे दराज़ में रख दिया गया था। जब मैंने इसे वहाँ देखा तो मुझे बहुत हैरत हुई थी।'

ब्लोर ने कहा :

'आप चाहते हैं, हम इस बात पर विश्वास कर लें। अरे, आर्मस्ट्रॉन्ग या कोई भी दूसरा आदमी इसे वापस क्यों रखेगा?'

लॉम्बार्ड ने निराशा से कन्धे उचकाये।

'मुझे रत्ती भर अन्दाज़ा नहीं। सिर चकरा जाता है। इसकी उम्मीद भी कोई नहीं करेगा। इसका कोई मतलब भी नहीं है।'

ब्लोर ने रज़ामन्दी ज़ाहिर की।

'हाँ, कोई मतलब तो नहीं है। आप इससे बेहतर कहानी सोच सकते थे।'

'यह भी तो सबूत है कि मैं सच बोल रहा हूँ।'

'मैं इसे इस नज़र से नहीं देखता।'

फ़िलिप बोला :

'तुम देखते भी नहीं।'

ब्लोर ने कहा :

'देखिए, मिस्टर लॉम्बार्ड, अगर आप ईमानदार आदमी हैं, जैसा कि आप दिखाते हैं—'

फ़िलिप बड़बड़ाया :

'मैंने कब दावा किया कि मैं ईमानदार आदमी हूँ? मैंने ऐसा कभी नहीं कहा।'

ब्लोर ने धीरज के साथ अपनी बात जारी रखी :

'अगर आप सच बोल रहे हैं—तो एक ही काम किया जा सकता है।

जब तक वह रिवॉल्वर आपके पास है, मिस क्लेथॉर्न और मैं आपकी दया पर निर्भर हैं। मुनासिब यही है कि रिवॉल्वर को उन सारी चीज़ों के साथ रख दिया जाये जो अलमारी में बन्द हैं—और आप और मैं चाभियाँ पहले की तरह रखेंगे।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने एक सिगरेट सुलगाया।

कश लेते हुए उसने कहा :

'बेवकूफ़ी मत करो।'

'आप इस पर राज़ी नहीं होंगे?'

'नहीं। वह रिवॉल्वर मेरा है। मुझे अपनी रक्षा करने के लिए वह चाहिए —और मैं उसे अपने पास रखूँगा।'

ब्लोर ने कहा :

'उस हालत में हमें मजबूरन एक ही नतीजा निकालना पड़ेगा।'

'कि मैं यू. एन. ओवेन हूँ? तुम जो जी चाहे सोचते रहो। लेकिन मैं तुमसे पूछूँगा कि अगर ऐसा है तो मैंने रिवॉल्वर से कल रात ही तुम्हें क्यों नहीं ढेर कर दिया? कम-से-कम बीस बार तो कर ही सकता था।'

ब्लोर ने सिर हिलाया।

उसने कहा :

'मैं नहीं जानता—और यही सच है। आपके पास कोई कारण रहा होगा।'

वेरा ने इस बहस में कोई हिस्सा नहीं लिया था। अब वह हिली और उसने कहा :

'मेरे ख़याल में आप दोनों बेवकूफ़ों की जोड़ी की तरह काम कर रहे हैं।'

लॉम्बार्ड ने उसकी तरफ़ देखा।

'क्या मतलब?'

वेरा ने कहा :

'आप वह तुकबन्दी भूल गये हैं। देखते नहीं, एक संकेत उसके भीतर है?'

वेरा ने तुकबन्दी दोहरायी :

'चार नन्हे फ़ौजी लड़के गये घूमने सागर में

एक निगल गया नक़ली चारा और बचे फिर तीन'

उसने आगे कहा :

'*नक़ली चारा*—यही असली सुराग़ है। *आर्मस्ट्रॉन्ग मरे नहीं हैं*... वे पुतला अपने साथ ले गये, ताकि लोग सोचें कि वे मार डाले गये। आप जो चाहें कहें, वे अब भी टापू पर हैं। उनका ग़ायब होना सिर्फ़ नक़ली चारे जैसा है...'

लॉम्बार्ड फिर बैठ गया।

उसने कहा :

'हो सकता है, तुम सही हो।'

ब्लोर ने कहा :

'हाँ, मगर ऐसा है तो वह कहाँ है? हमने सारी जगह छान मारी। बाहर भी, अन्दर भी।'

वेरा ने झिड़कते हुए कहा :

'हम सबने रिवॉल्वर भी तो ढूँढा था, और खोज नहीं पाये थे? लेकिन वह उस दौरान कहीं-न-कहीं तो था।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'लेकिन एक आदमी और रिवॉल्वर के बीच लम्बाई-चौड़ाई का कितना फ़र्क है, यह भी देखो।'

वेरा ने कहा :

'मुझे इसकी परवाह नहीं है—मुझे यक़ीन है कि मैं सही हूँ।'

ब्लोर ने बुदबुदा कर कहा :

'अपनी पोल आप ही खोल रहा था, नहीं? तुकबन्दी में नक़ली चारे का ज़िक्र करके। वह इसे दूसरी तरह लिख सकता था।'

वेरा चिल्लायी :

'लेकिन आप लोग यह नहीं *देखते* कि वे *पागल* हैं। जज को अदालती लिबास पहनाना, रॉजर्स को लकड़ी चीरते समय मारना—श्रीमती रॉजर्स

को दवाई देना कि वे सोती रह जायें। मिस ब्रेण्ट के मरने के समय भौंरे का इन्तज़ाम करना। मानो कोई भयानक बच्चा खेल करे। सब कुछ कविता के हिसाब से ही होना है।'

ब्लोर ने कहा :

'हाँ, तुम ठीक कह रही हो।' उसने मिनट भर सोचा। 'हर हाल में टापू पर कोई चिड़ियाघर तो है नहीं। उसे तुकबन्दी के इस हिस्से पर परेशानी होगी।'

वेरा चिल्लायी :

'देखते नहीं? *हम लोग ही चिड़ियाघर हैं...* कल रात हम इन्सान कहाँ रह गये थे। *हमीं चिड़ियाघर हैं...*'

II

सुबह का समय उन्होंने कगार पर गुज़ारा और बारी-बारी से शीशे की मदद से उस किनारे सूरज की रोशनी के जरिये संकेत भेजने की कोशिश की।

ऐसी कोई निशानी नहीं दिखी कि किसी ने उन्हें देखा। कोई जवाबी संकेत नहीं आया। दिन उम्दा है, या, हल्की-सी धुन्ध थी। नीचे समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें थीं। कोई नाव नहीं निकली थी।

उन्होंने टापू पर एक बार और खोज-बीन की पर कोई नतीजा नहीं निकला। ग़ायब हुए डॉक्टर का कुछ अता-पता नहीं था।

जहाँ वे खड़े थे, वहाँ से वेरा ने ऊपर देखा।

हल्के से रुँधे गले के साथ उसने कहा :

'यहाँ, बाहर, खुले में कितना सुरक्षित महसूस होता है... आइए हम घर के अन्दर अब जायें ही नहीं।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'बुरा ख़याल नहीं है। यहाँ हम काफ़ी सुरक्षित हैं, कोई हम तक पहुँचे, इससे बहुत पहले ही हम उसे देख लेंगे।'

वेरा कहा :

'हम यही रहेंगे।'

ब्लोर ने कहा :

'रात तो कहीं गुजारनी होगी। तब हमें घर के अन्दर जाना होगा।'

वेरा को कँपकँपी आयी।

'मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकती। एक रात और काटनी मुश्किल लग रही है।'

फ़िलिप ने कहा :

'तुम अपने कमरे में बन्द सुरक्षित रहोगी।'

वेरा बुदबुदायी : 'हाँ, ऐसा ही लगता है।'

उसने अपनी बाँहें फैलायीं और कहा :

'कितना अच्छा है—फिर से धूप में आना।'

उसने सोचा :

'कितनी अजीब बात है... मैं लगभग ख़ुश हूँ। और फिर भी मेरे ख़याल में मुझ पर ख़तरा है... जाने कैसे—अब—किसी बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता... दिन की रोशनी में नहीं... मुझे अपने अन्दर ताक़त का एहसास होता है—लगता है मैं मर नहीं सकती।'

ब्लोर अपनी घड़ी को देख रहा था। उसने कहा :

'दो बज रहे हैं। खाने के बारे में क्या सोचा है?'

वेरा ने हठ करके कहा :

'मैं तो घर के अन्दर नहीं जा रही। यहीं खुले में रहूँगी।'

'अरे, यह हठ छोड़िए, मिस क्लेथॉर्न। अपनी ताक़त तो बनाये रखनी है न?'

वेरा ने कहा :

'मैं डिब्बाबन्द खाना खा कर तंग आ गयी हूँ। मुझे खाना नहीं चाहिए। लोग जब उपवास करते हैं तो कई दिनों तक बिना खाये रह लेते हैं।'

ब्लोर ने कहा :

'ख़ैर, मुझे तो नियमित खाना चाहिए। आप क्या करेंगे मिस्टर लॉम्बार्ड?'

फ़िलिप ने कहा :

'पता है, मुझे भी डिब्बाबन्द खाने की बात कुछ जम नहीं रही। मैं मिस क्लेथॉर्न के साथ यहीं रुकूँगा।'

ब्लोर हिचकिचाया। वेरा बोली :

'मैं ठीक रहूँगी। मुझे नहीं लगता कि तुम्हारे जाते ही यह मुझे गोली मार देगा, अगर तुम्हें इसी का डर है।'

ब्लोर ने कहा :

'आप कहती हैं तो ठीक है, पर हमने तय किया था कि हमें अलग-अलग नहीं होना चाहिए।'

फ़िलिप ने कहा :

'तुम्हीं हो जो शेर की माँद में जाना चाहते हो। तुम चाहो तो मैं तुम्हारे साथ चल सकता हूँ।'

'नहीं, नहीं, तुम यहीं रहो।' ब्लोर ने कहा।

फ़िलिप हँसा :

'तो तुम अब भी मुझसे डरते हो? अरे, मैं चाहता तो तुम दोनों को गोली मार देता।'

ब्लोर ने कहा :

'हाँ, लेकिन तब यह योजना के मुताबिक़ नहीं होता। एक-एक करके जाना है और एक ख़ास ढंग से यह सब होना है।'

'ख़ैर', फ़िलिप ने कहा, 'लगता है तुम्हें इस बारे में सब कुछ पता है।'

'अलबत्ता', ब्लोर ने कहा, 'अकेले उस घर में जाने से थोड़ी घबराहट तो होती है।'

फ़िलिप ने आहिस्ता से कहा :

'और इसलिए, *क्या मैं तुम्हें अपना रिवॉल्वर उधार दूँगा?* जवाब है—नहीं, मैं *नहीं* दूँगा। इतनी आसानी से नहीं।'

ब्लोर ने कन्धे उचकाये और घर की तरफ़ तीखी चढ़ाई चढ़ने लगा।

लॉम्बार्ड ने धीरे-से कहा :

'चिड़ियाघर में खाने का समय हो गया। जानवर अपनी आदतों के पक्के होते हैं।'

वेरा ने चिन्तित स्वर में कहा :

'यह जो कर रहा है, उसमें बहुत जोखिम नहीं है?'

'जिस अर्थ में तुम कह रही हो—नहीं, मैं नहीं समझता। आर्मस्ट्रॉन्ग के पास कोई हथियार नहीं है और वैसे भी ब्लोर ताक़त में उससे दुगना है और एकदम होशियार है। और फिर यह असम्भव है कि आर्मस्ट्रॉन्ग घर के अन्दर हो। मैं जानता हूँ वह नहीं है।'

'लेकिन—फिर और क्या जवाब हो सकता है?'

फ़िलिप ने आहिस्ता से कहा :

'ब्लोर है अभी।'

'ओह—क्या तुम सचमुच सोचते हो कि—'

'सुनो, वेरा। तुमने ब्लोर की कहानी सुनी। तुम्हें यह मानना होगा कि अगर वह सही है तो *आर्मस्ट्रॉन्ग के ग़ायब होने में मेरा कोई हाथ नहीं हो सकता।* उसकी कहानी मुझे बेगुनाह साबित कर देती है। *लेकिन उसे तो नहीं करती।* हमारे पास सिर्फ़ *उसका* बयान है कि उसने क़दमों की आहट सुनी और एक आदमी को नीचे उतरते और सामने के दरवाज़े से बाहर जाते देखा। यह सब झूठ भी हो सकता है। हो सकता है, वह उससे कुछ घण्टे पहले ही आर्मस्ट्रॉन्ग को निपटा आया हो।'

'कैसे?'

लॉम्बार्ड ने कन्धे उचकाये।

'यह हम नहीं जानते। लेकिन अगर तुम मुझसे पूछो तो हमें सिर्फ़ एक ख़तरे से बचना है—और वह ख़तरा ब्लोर है। हम उस बन्दे के बारे में क्या जानते हैं? कुछ भी नहीं। यह सारी पूर्व-इंस्पेक्टर वाली कहानी भी उड़ी-उड़ाई हो सकती है। वह कोई भी हो सकता है—पागल लखपति—खिसका हुआ व्यापारी—पागलख़ाने से भागा कोई रोगी। एक बात पक्की है। वह इनमें से हर जुर्म कर *सकता* था।'

वेरा का चेहरा पीला पड़ गया था। उसने हाँफती हुई आवाज़ में पूछा :

'और फ़र्ज़ करो वह हमें भी शिकार बनाये—तो?'

लॉम्बार्ड ने अपनी जेब में रखे रिवॉल्वर को थपथपाते हुए आहिस्ता से

कहा :

'मैं इस बात का पूरा ख़याल रखूँगा कि वह ऐसा न कर सके।'

फिर उसने दिलचस्पी से वेरा को देखा।

'मुझ पर काफ़ी भरोसा कर रही हो तुम, वेरा? तुम्हें यक़ीन है न कि मैं तुम्हें गोली नहीं मार दूँगा?'

वेरा बोली :

'किसी पर तो भरोसा करना ही होगा... मेरा अब भी यही ख़याल है कि तुम ब्लोर के सिलसिले में ग़लत हो। मैं अब भी सोचती हूँ वह आर्मस्ट्रॉन्ग है।'

वह अचानक उसकी तरफ़ मुड़ी :

'क्या तुम्हें ऐसा महसूस नहीं होता—हर समय—कि कोई है। कोई निगरानी रखता हुआ इन्तज़ार कर रहा है।'

लॉम्बार्ड ने धीरे से कहा :

'यह सब नसों का खेल है।'

वेरा ने उत्सुकता से कहा :

'इसका मतलब है, *तुमने भी* महसूस किया है।'

वह हल्के से काँपी। फिर वह झुक कर थोड़ा और क़रीब हो गयी।

'यह बताओ कि—तुम्हें ऐसा नहीं लगता—' वह रुक गयी, फिर उसने आगे कहा : 'मैंने कभी एक कहानी पढ़ी थी—सुप्रीम कोर्ट के दो जजों के बारे में — जो एक छोटे-से अमरीकी शहर में आये। वे न्याय करते थे—पूरा न्याय। *क्योंकि—वे इस दुनिया के नहीं थे...*'

लॉम्बार्ड ने अपनी भवें चढ़ायीं।

उसने कहा :

'स्वर्ग के यात्री, ऐं? नहीं, मैं ग़ैरकुदरती चीजों में विश्वास नहीं करता। यह मामला तो काफ़ी इन्सानी है।'

वेरा ने धीमी आवाज़ में कहा :

'कभी-कभी—मुझे पक्का नहीं है—'

लॉम्बार्ड ने उसकी तरफ़ देखा। उसने कहा :

'वह अन्तरात्मा है...' पल भर की ख़ामोशी के बाद उसने बहुत आहिस्ता से कहा : 'तो तुमने उस बच्चे को सचमुच डुबो दिया था आख़िरकार?'

वेरा ने आवेग भरे स्वर में कहा :

'मैंने नहीं डुबोया था, नहीं, बिलकुल नहीं। तुम्हें ऐसा कहने का कोई हक़ नहीं है।'

वह इत्मीनान से हँसा।

'तुमने वही किया था। पता नहीं क्यों? मैं कल्पना नहीं कर पाता। शायद इस सब में कहीं कोई आदमी भी था। क्या यही बात थी?'

वेरा के अंगों पर एक अजीब-सी शिथिलता, बेहद थकान का एहसास फैल गया। उसने बेजान आवाज़ में कहा :

'हाँ—एक आदमी था...'

लॉम्बार्ड ने नरमी से कहा :

'बस। मैं यही जानना चाहता था...'

अचानक वेरा उठ बैठी। वह चिल्ला कर बोली :

'यह क्या आवाज़ थी? भूचाल तो नहीं था।'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'नहीं-नहीं। अजीब बात है—एक धमाके से ज़मीन हिली। और मैंने सोचा—क्या तुमने चीख़ने की कोई आवाज़ सुनी? मैंने तो सुनी।'

वे एकटक मकान की तरफ़ देखते रहे।

लॉम्बार्ड कहा :

'आवाज़ वहाँ से आयी थी। बेहतर होगा, हम ऊपर जा कर देखें।'

'नहीं, नहीं, मैं नहीं जा रही।'

'तुम्हारी मर्ज़ी। मैं तो जा रहा हूँ।'

वेरा ने हताशा से कहा :

'ठीक है। मैं तुम्हारे साथ चलती हूँ।'

वे चढ़ाई चढ़ कर घर तक पहुँचे। धूप में टेरेस शान्त और ख़तरे से रहित दिखायी दे रही थी। वे मिनट भर वहाँ रुके फिर सामने के दरवाज़े से

अन्दर दाख़िल होने की बजाय उन्होंने सतर्कता से मकान का एक चक्कर लगाया।

वहीं उन्हें ब्लोर मिला। वह मकान की पूर्वी तरफ़ पत्थर की टेरेस पर हाथ-पैर फैलाये चित पड़ा था, उसका सिर संगमरमर के एक बड़े-से ढोंके से कुचला और चूर-चूर था।

फ़िलिप ने ऊपर देखा। उसने कहा :

'यह ठीक ऊपर वाली खिड़की किसकी है?'

वेरा ने धीमी, काँपती हुई आवाज़ में कहा :

'मेरी है—और *यह तो वह घड़ी है जो मेरी अँगीठी पर रखी थी।* अब मुझे याद आया। वह भालू की शक्ल में बनी थी।'

उसने दोहराया और उसकी आवाज़ थरथरायी और काँपती रही :

'वह भालू की शक्ल में बनी थी...'

III

फ़िलिप ने उसका कन्धा पकड़ लिया।

उसने उत्कट और गम्भीर आवाज़ में कहा :

'तय हो गया। आर्मस्ट्रॉन्ग घर के अन्दर कहीं छिपा हुआ है। मैं उसे दबोचने जा रहा हूँ।'

लेकिन वेरा उससे चिपक गयी। वह चिल्ला कर बोली :

'पागल मत बनो। अब हमारी बारी है। वह चाहता है हम उसे खोजें। उसने इसी पर *दाँव लगा रखा* है।'

फ़िलिप रुक गया। वह सोचते हुए बोला :

'इस बात में कुछ दम है।'

वेरा ने कहा :

'बहरहाल, अब तुम मानते हो न कि मैं सही थी।'

लॉम्बार्ड ने सिर हिला कर हामी भरी।

'हाँ—तुम जीतीं। आर्मस्ट्रॉन्ग ही है हत्यारा। लेकिन कमबख़्त ने ख़ुद को छिपा कहाँ रखा था? हमने तो जैसे छलनी से इस सारी जगह को छान मारा था।'

वेरा ने जोश से कहा :

'अगर तुम कल रात उसे नहीं खोज पाये तो तुम अब भी उसे नहीं खोज पाओगे... सीधी-सी बात है।'

लॉम्बार्ड ने हिचकिचाते हुए कहा :

'हाँ, मगर—'

'उसने पहले ही कोई गुप्त जगह बना रखी होगी—कुदरती बात है—हाँ, यही किया है उसने। समझे, जैसे हवेलियों में साधू-सन्तों की कोठरी होती है।'

'लेकिन यह उस क़िस्म की पुरानी हवेली नहीं है।'

'हो सकता है कि उसने एक बनवा रखी हो।'

फ़िलिप ने सिर हिलाया। उसने कहा :

'हमने इस जगह की नाप-जोख की थी—पहले दिन की सुबह। मैं क़सम खा सकता हूँ कि कोई जगह बची नहीं है।'

वेरा ने कहा :

'ज़रूर होगी...'

लॉम्बार्ड ने कहा :

'मैं देखना चाहूँगा।'

वेरा चिल्ला कर बोली :

'हाँ, तुम देखना चाहोगे। और वह इस बात को जानता है। वह तुम्हारे इन्तज़ार में है—वहाँ।'

लॉम्बार्ड ने रिवॉल्वर को अपनी जेब से आधा निकालते हुए कहा :

'तुम्हें मालूम तो है कि मेरे पास यह है।'

'तुमने कहा था, ब्लोर ठीक-ठाक था—कि आर्मस्ट्रॉन्ग का उससे कोई मुक़ाबला नहीं था। और था भी नहीं शारीरिक रूप से और ब्लोर सतर्क भी था। लेकिन जो बात तुम शायद समझ नहीं पाते कि आर्मस्ट्रॉन्ग पागल है। और एक पागल आदमी को हर तरह का फ़ायदा रहता है। वह होश-हवास वाले आदमी की बनिस्बत दुगना चालाक होता है।'

लॉम्बार्ड ने रिवॉल्वर अपनी जेब में रख लिया और कहा :

'आओ, फिर।'

IV

आख़िरकार लॉम्बार्ड ने कहा :

जब रात आयेगी तब हम क्या करेंगे?

वेरा ने जवाब नहीं दिया। वह आरोप लगाती आवाज़ में कहता गया :

'इसके बारे में नहीं सोचा है न तुमने?'

वह बेबसी से बोली :

'हम कर भी क्या सकते हैं? हे ईश्वर, *मुझे डर लग रहा है...*'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने सोचते हुए कहा :

'मौसम अच्छा है। रात को चाँद होगा। हमें एक जगह खोजनी चाहिए —शायद ऊपर के कगारों पर। हम वहाँ बैठ कर सुबह होने का इन्तज़ार कर सकते हैं। *हमें सोना नहीं होगा...* हमें सारा समय निगरानी करनी होगी। और अगर कोई हमारी तरफ़ आता है, तो मैं गोली चला दूँगा।'

वह रुका :

'इस पतले लिबास में शायद तुम्हें सर्दी लगेगी?'

वेरा ने एक कर्कश हँसी के साथ कहा :

'सर्दी? मरने पर तो बिलकुल ही ठण्डी हो जाऊँगी मैं।'

फ़िलिप लॉम्बार्ड ने सोचते हुए कहा :

'हाँ, यह तो सच है।'

वेरा बेचैनी से हिली।

उसने कहा :

'अगर मैं और कुछ देर यहाँ बैठी रही तो पागल हो जाऊँगी। चलो थोड़ा चलें-फिरें।'

'ठीक है।'

वे धीरे-धीरे आगे-पीछे चहलक़दमी करने लगे—उन चट्टानों के साथ-साथ जिनका रुख़ समुद्र की तरफ़ था। सूरज पश्चिम की तरफ़ लुढ़क रहा था। रोशनी मुलायम और सुनहरी थी। उसने उन्हें एक सुनहरी दमक से घेर दिया।

वेरा ने एक घबरायी हुई हँसी के साथ कहा :

'अफ़सोस, हम समुद्र में नहा नहीं सकते...'

फ़िलिप नीचे समुद्र की तरफ़ देख रहा था। अचानक उसने कहा :

'वह क्या चीज़ है वहाँ? देखो ज़रा—उस बड़ी चट्टान के पास? नहीं—थोड़ा और दाहिनी तरफ़।'

वेरा ताकती रही। फिर बोली :

'किसी के कपड़े जान पड़ते हैं।'

'नहाने वाले के?' लॉम्बार्ड हँसा। 'अजीब। मेरा ख़याल है वह सिर्फ़ सिवार है।'

वेरा ने कहा :

'चलो, चल कर देखें।'

'कपड़े हैं', नज़दीक पहुँचने पर लॉम्बार्ड ने कहा। 'ढेर है कपड़ों का। वह रहा बूट। आओ, यहाँ थोड़ा रेंग कर बढ़ें।'

वे चट्टानों के ऊपर रेंगते हुए बढ़े।

अचानक वेरा रुक गयी और बोली :

'*कपड़े नहीं हैं—कोई आदमी है...*'

वह आदमी दो चट्टानों के बीच फँसा हुआ था। लहरों ने उसे कुछ समय पहले वहाँ फेंक दिया था।

लॉम्बार्ड और वेरा आख़िरी बार रेंग कर उस तक पहुँचे। उन्होंने झुक कर देखा।

एक बैंगनी बेरंग चेहरा—भयानक डूबा हुआ चेहरा...

लॉम्बार्ड ने कहा :

'हे भगवान। यह तो *आर्मस्ट्रॉन्ग* है।'

अध्याय 16

I

सदियाँ बीत गयीं... दुनिया घूमी और नाचने लगी... समय रुक गया... ठिठक गया—हज़ार युगों से गुज़र गया...

नहीं, महज़ एक-दो मिनट ही बीते थे...

दो लोग खड़े एक मरे हुए आदमी को देख रहे थे...

धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, वेरा क्लेथॉर्न और फ़िलिप लॉम्बार्ड ने अपने सिर उठाये और एक-दूसरे की आँखों में देखा...

II

लॉम्बार्ड हँसा।

उसने कहा :

'तो यह है, है न, वेरा?'

वेरा ने कहा :

'टापू पर कोई नहीं है—कोई भी नहीं—सिवा हम दोनों के...'

उसकी आवाज़ सिर्फ़ फुसफुसाहट थी—और कुछ नहीं।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'सही। तो हम जानते हैं हम कहाँ खड़े हैं, है न?'

वेरा ने कहा :

'वह कैसे की गयी—संगमरमर के भालू वाली चाल?'

फ़िलिप ने अपने कन्धे उचकाये।

'जादू का खेल था—काफ़ी अच्छा...'

उनकी आँखें फिर मिलीं।

वेरा ने सोचा :

'मैंने पहले इसका चेहरा ध्यान से क्यों नहीं देखा? भेड़िया है—यही तो है वह—भेड़िये का चेहरा है... वे ख़ौफ़नाक दाँत...'

लॉम्बार्ड ने कहा, और उसकी आवाज़ एक ग़ुर्राहट थी—ख़तरनाक—डरावनी :

'यह अन्त है, समझीं। हम सच्चाई तक पहुँच गये हैं अब। *और यह*

अन्त है।'

वेरा ने आहिस्ता से कहा :

'मैं समझती हूँ...'

उसने समुद्र की ओर देखा। जनरल मैकार्थर भी तो समुद्र की तरफ़ देखते रहे थे—कब—कल ही की तो बात थी? या उससे एक दिन पहले की? उन्होंने भी तो कहा था, '*यह अन्त है...*'

उन्होंने उसे स्वीकार करते हुए कहा था—लगभग स्वागत-सा करते हुए।

लेकिन वेरा के अन्दर इन शब्दों ने—इस ख़याल ने—विरोध पैदा किया था—विद्रोह करने की भावना उकसायी थी।

नहीं, इसे अन्त नहीं होना चाहिए।

उसने नीचे मरे हुए आदमी की तरफ़ देखा और बोली :

'बेचारे डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग...'

लॉम्बार्ड ने व्यंग्य से कहा :

'यह क्या है? औरतों वाली दया?'

वेरा ने कहा :

'क्या ग़लत है? तुममें दया नहीं है?'

उसने जवाब दिया :

'मेरे अन्दर तुम्हारे लिए कोई दया नहीं है। उम्मीद मत रखना।'

वेरा ने एक बार फिर नीचे लाश की तरफ़ देखा। वह बोली :

'हमें इनको यहाँ से हटाना चाहिए। ऊपर मकान तक ले जाना चाहिए।'

'दूसरे शिकारों में शामिल किये जाने के लिए शायद? सब कुछ क़रीने और तरतीब से। जहाँ तक मेरा सवाल है ये जहाँ हैं वहीं रह सकते हैं।'

वेरा ने कहा :

'हर हाल में आओ इन्हें समुद्र की लहरों से तो दूर ले जायें।'

लॉम्बार्ड हँसा और बोला :

'अगर तुम ऐसा ही चाहती हो।'

वह झुका और उसने लाश को खींचा। वेरा भी झुक कर उसकी मदद करने लगी। उसने भी भरसक खींचने की कोशिश की।

लॉम्बार्ड हाँफते हुए बोला :

'इतना आसान काम नहीं है।'

किसी तरह वे लाश को खींच कर पानी की पहुँच से दूर ले आये।

लॉम्बार्ड ने सीधे होते हुए कहा :

'हो गयी तसल्ली?'

वेरा ने कहा :

'काफ़ी कुछ।'

उसके लहजे से फ़िलिप के दिमाग़ में घण्टी-सी बजी। वह तेज़ी से घूमा। जेब पर हाथ मारते ही उसे एहसास हो गया कि वहाँ उसे कुछ नहीं मिलने वाला।

वेरा एक-दो गज़ पीछे हट गयी थी और रिवॉल्वर हाथ में लिये उसके सामने खड़ी थी।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'तो यह वजह थी तुम्हारी औरतों जैसी हमदर्दी की। तुम मेरी जेब ख़ाली करना चाहती थीं?'

वेरा ने सिर हिलाया।

उसने रिवॉल्वर मज़बूती से पकड़ रखा था, बिना हिलाये।

मौत अब फ़िलिप लॉम्बार्ड के बहुत क़रीब थी। उसे पता था कि इतनी पास वह कभी नहीं आयी थी।

फिर भी वह अभी हारा नहीं था।

उसने दृढ़ता से कहा :

'वह रिवॉल्वर मुझे दे दो।'

वेरा हँसी।

लॉम्बार्ड ने कहा :

'चलो भी, दे दो उसे मुझको।'

उसका तेज़ दिमाग़ काम कर रहा था। क्या करे—कौन-सा रास्ता

अपनाये—कौन-सा तरीक़ा—उसे बातों में लगाये—निश्चिन्त कर दे या तेज़ी से लपके—

सारी ज़िन्दगी लॉम्बार्ड ने जोखिम वाला रास्ता चुना था। अब भी उसने वही चुना।

उसने धीरे-धीरे बहस करने के अन्दाज़ में बात की :

'अब मेरी बात तो सुनो, दरअसल मामला यह है—'

और फिर वह लपका। तेंदुए की-सी तेज़ी से—बिल्लियों की तरह...

बिना सोचे वेरा ने घोड़ा दबा दिया...

लॉम्बार्ड का कूदता हुआ शरीर छलाँग के बीच हवा में रुक गया और फिर धमाके के साथ ज़मीन पर आ गिरा।

वेरा सतर्क होकर आगे बढ़ी, रिवॉल्वर उसके हाथ में तैयार था।

लेकिन सावधानी की कोई ज़रूरत नहीं थी।

फ़िलिप लॉम्बार्ड मर चुका था—गोली उसके दिल को चीरती निकल गयी थी...

III

वेरा पर राहत छा गयी—भारी, बेमिसाल राहत।

आख़िरकार वह खत्म हो चुका था।

अब कोई डर नहीं था—नसों को लगातार मज़बूती से ताने रखने की कोई ज़रूरत नहीं थी...

वह टापू पर अकेली थी...

नौ लाशों के साथ अकेली...

लेकिन उससे क्या फ़र्क़ पड़ता था? वह तो ज़िन्दा थी...

वेरा वहीं बैठी रही—बेहद ख़ुश—पूरी तरह शान्त...

अब कोई डर नहीं...

IV

सूरज डूब रहा था जब वेरा आख़िरकार हिली। महज़ प्रतिक्रिया ने उसे बेहरकत बनाये रखा था। उसके अन्दर सुरक्षा की शानदार भावना के सिवा और किसी बात के लिए जगह नहीं थी।

अब उसे एहसास हुआ कि उसे भूख लगी थी और नींद आ रही थी। ज़्यादा ज़ोर नींद का था। वह छलाँग लगा कर पलँग पर लेट जाना चाहती थी ताकि सो सके... सो सके... सो सके...

निर्भय हो कर सो सके क्योंकि वह अब टापू पर अकेली थी। एक नन्हा फ़ौजी लड़का रह गया निपट अकेला।

वह अपने से मुस्करायी।

वह सामने के दरवाज़े से अन्दर दाख़िल हुई। घर भी अजीब ढंग से शान्त महसूस हुआ।

वेरा ने सोचा :

'जब लगभग हर कमरे में एक लाश पड़ी हुई हो तो आम तौर पर कोई सोने की न सोचता।'

क्या वह रसोई-घर में जा कर अपने लिए खाने का कुछ बन्दोबस्त करे?

वह पल भर हिचकिचाई, फिर उसने इरादा छोड़ दिया। वह सचमुच बहुत थक गयी थी...

वह खाने के कमरे के पास रुकी। मेज़ के बीचों-बीच अब भी चीनी मिट्टी के तीन पुतले बचे थे।

वेरा हँसी।

उसने कहा :

'तुम लोग समय के पीछे चल रहे हो, दोस्तों।'

उसने दो पुतले उठाये और उन्हें खिड़की के बाहर फेंक दिया। उसने उन्हें बाहर टेरेस के पत्थर के फ़र्श पर चूर-चूर होते सुना।

तीसरा नन्हा-सा पुतला उसने उठा कर हाथ में ले लिया। वह बोली :

'तुम मेरे साथ आ सकते हो, प्यारे ! हम जीत गये हैं, हम जीत गये हैं।'

शाम की मन्द होती रोशनी हॉल में अँधेरा बढ़ा रही थी।

छोटे-से पुतले को हाथ में पकड़े वेरा सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। धीरे-धीरे, क्योंकि अचानक उसकी टाँगें बहुत थक गयी थीं।

'एक नन्हा फ़ौजी लड़का रह गया निपट अकेला।' कैसे खत्म होती थी वह तुकबन्दी? हाँ ! *'उसकी हो गयी शादी फिर तो बाक़ी बचा न कोई।'*

शादी... अजीब है, कैसे अचानक उसे फिर यह एहसास हुआ कि ह्यूगो इस घर में था...

बहुत गहरा एहसास। हाँ, ह्यूगो ऊपर था, उसका इन्तज़ार कर रहा था।

वेरा ने ख़ुद से कहा :

'बेवक़ूफ़ी मत करो। तुम इतनी थक गयी हो कि अजीबो-ग़रीब बातों की कल्पना करने लगी हो...'

धीरे-धीरे सीढ़ियों के ऊपर...

सीढ़ियों के ऊपर पहुँच कर कोई चीज़ उसके हाथ से छूट कर कालीन पर बेआवाज़ गिर गयी। उसने ध्यान नहीं दिया कि उसने रिवॉल्वर गिरा दिया था। उसे सिर्फ़ इतना ध्यान था कि उसने चीनी मिट्टी का एक पुतला पकड़ रखा था।

घर कितना ख़ामोश था। तो भी वह ख़ाली नहीं लग रहा था...

ह्यूगो, ऊपर, उसका इन्तज़ार कर रहा था...

'एक नन्हा फ़ौजी लड़का रह गया निपट अकेला।' क्या थी वह आख़िरी पंक्ति? शादी के बारे में थी शायद—या फिर किसी और चीज़ के बारे में...?

वह अब अपने कमरे के दरवाज़े पर आ गयी थी। ह्यूगो अन्दर उसका इन्तज़ार कर रहा था—उसे इसका पूरा विश्वास था।

उसने दरवाज़ा खोला...

उसके मुँह से साँस निकली...

यह क्या था—छत की कटिया से लटकता हुआ? *रस्सी जिसमें फन्दा था, बिलकुल तैयार? और खड़े होने के लिए एक कुर्सी—एक कुर्सी जिसे पैरों की ठोकर से गिराया जा सकता था...*

ह्यूगो यही चाहता था...

और फिर उस तुकबन्दी की आख़िरी पंक्ति भी तो थी :

'उसने फन्दा लगा लिया फिर बाक़ी बचा न कोई...'

चीनी मिट्टी का वह नन्हा पुतला उसके हाथ से गिर गया। वह बिना रुके लुढ़कता चला गया और आतिशदान के जँगले से टकरा कर टूट गया।

मशीनी ढंग से वेरा आगे बढ़ी। यह अन्त था—यहाँ जहाँ उस ठण्डे गीले हाथ (स्वाभाविक रूप से सिरिल के हाथ) ने उसके गले को छुआ था...

'तुम चट्टान तक जा सकते हो सिरिल...'

यही थी हत्या—इतनी आसान।

लेकिन बाद में सब कुछ याद आता रहता...

वह कुर्सी पर चढ़ गयी, उसकी आँखें नींद में चलने वालों की तरह सीधे सामने देख रही थीं... उसने फन्दे को अपनी गर्दन में डाल कर गाँठ को कसा।

ह्यूगो यह देखने के लिए वहाँ था कि वेरा को जो करना था, वह उसे पूरा करें।

उसने कुर्सी को ठोकर मारकर परे कर दिया...

उपसंहार

स्कॉटलैण्ड यार्ड में असिस्टेंट कमिश्नर, सर टॉमस लेग ने खीझे हुए स्वर में कहा :

'मगर यह सारा मामला विश्वास के परे है।'

इंस्पेक्टर मेन ने अदब से कहा :

'मैं जानता हूँ, सर।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने आगे कहा :

'एक टापू पर दस लाशें और कोई ज़िन्दा आदमी नहीं। इसका कोई मतलब नहीं निकलता।'

इंस्पेक्टर मेन ने धीरज से कहा :

'इसके बावजूद, सर, *ऐसा ही हुआ है*।'

सर टॉमस लेग ने कहा :

'जो भी हो, मेन, किसी ने तो उन्हें मारा होगा।'

'यही हमारी समस्या है, सर।'

'डॉक्टर की रिपोर्ट से कुछ मदद नहीं मिली?'

'नहीं, सर। वॉरग्रेव और लॉम्बार्ड को गोली मारी गयी थी, वॉरग्रेव को सिर में और लॉम्बार्ड को सीने में। मिस ब्रेण्ट और मार्सटन की मौत साइनाइड ज़हर से हुई, श्रीमती रॉजर्स क्लोरल की ज़रूरत से ज़्यादा ख़ूराक लेने के कारण। रॉजर्स के सिर को चीर दिया गया था, ब्लोर का सिर कुचला गया था। आर्मस्ट्रॉन्ग डूबने से मरा, मैकार्थर की खोपड़ी को पीछे से बार करके तोड़ दिया गया था और वेरा क्लेथॉर्न को फाँसी पर लटकाया गया था।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने मुँह बनाया। वे बोले :

'बुरा मामला है—सारे-का सारा।'

वे एक-दो मिनट तक सोचते रहे फिर चिड़चिड़ा कर बोले :

'तुम्हारा मतलब है तुम्हें स्टिकलहेवन के लोगों से कुछ भी ऐसा नहीं मिला जो मददगार साबित हो? वे कुछ-न-कुछ तो जानते होंगे, कमबख़्त !'

इंस्पेक्टर मेन ने कन्धे उचका दिये।

'वे भले मामूली समुद्र के सहारे जीने वाले लोग हैं। उन्हें पता है कि टापू ओवेन नाम के एक आदमी ने ख़रीदा था—और इससे ज़्यादा उन्हें कुछ नहीं पता।'

'टापू पर रसद वग़ैरा किसने पहुँचायी और दूसरे ज़रूरी बन्दोबस्त किये?'

'मॉरिस नाम का बन्दा, आइज़ैक मॉरिस।'

'और इस सब के बारे में उसका क्या कहना है?'

'वह कुछ नहीं कह सकता सर, वह मर चुका है।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने त्योरियाँ चढ़ायीं और मुँह बिगाड़ा।

'क्या हमें इस मॉरिस के बारे में कुछ पता है?'

जी हाँ, सर, हम उसके बारे में जानते हैं। वह कोई साफ़-सुथरा बन्दा नहीं था, यह मिस्टर मॉरिस। तीन साल पहले वह बेनीटो की शेयर सम्बन्धी

जालसाज़ी में मुब्तिला था—हम इसके बारे में पक्का जानते हैं, हालाँकि हम इसे साबित नहीं कर सकते। और वह ड्रग्स के धन्धे से भी जुड़ा हुआ था। और एक बार फिर हम इसे साबित नहीं कर सकते। वह बहुत सावधान आदमी था।

'और वही इस टापू वाले मामले के भी पीछे था?'

'जी, सर। उसी ने सौदा कराया—हालाँकि उसने साफ़ कर दिया था कि वह सोल्जर आइलैण्ड को किसी तीसरे अनाम पक्ष के लिए ख़रीद रहा था।'

'निश्चय ही वहाँ पैसे के लेन-देन के बारे में तो कुछ पता ही किया जा सकता है?'

इंस्पेक्टर मेन मुस्कराया।

'नहीं सर, अगर आप मॉरिस से परिचित होते तो आप जानते कि वह सौदे के सारे हिसाब-किताब में ऐसा तिकड़म कर सकता है, सर, कि देश के सबसे अच्छे चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट को भी पता न चले कि वह सिर के बल खड़ा है या पैरों के ! हम इसका स्वाद बेनीटो वाले मामले में ले चुके हैं। नहीं, उसने अपने ग्राहक के निशान बड़ी ख़ूबी से छिपाये थे।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने साँस छोड़ी। इंस्पेक्टर मेन ने आगे कहा:

'मॉरिस ने ही स्टिकलहेवन में सारा प्रबन्ध किया था। "मिस्टर ओवेन" की ओर से काम करने वाला प्रतिनिधि बता कर। और उसी ने वहाँ के लोगों को यह समझाया था कि कोई प्रयोग चल रहा था—कोई शर्त —एक हफ़्ते तक किसी "निर्जन टापू" पर रहने के बारे में—उसने यह भी कहा था कि अगर टापू से सहायता की कोई फ़रमाइश की जाये तो कोई ध्यान न दिया जाय।'

सर टॉमस लेग बेचैनी से हिले। उन्होंने कहा :

'और तुम कह रहे हो कि उन लोगों को दाल में काला नहीं लगा? तब भी नहीं?'

मेन ने कन्धे उचका कर कहा :

'आप भूल रहे हैं, सर, कि सोल्जर आइलैण्ड पहले उस अमरीकी

युवक एल्मर रॉबसन का था। उसने वहाँ कुछ बेहद अनोखी पार्टियाँ दी थीं। मुझे कोई शक नहीं है कि वहाँ के रहने वालों की आँखें उन पार्टियों को देखकर फटी-की-फटी रह गयी होंगी। लेकिन वे उनके आदी हो गये और फिर महसूस करने लगे कि सोल्जर आइलैण्ड से जुड़ा कोई भी मामला अनोखा और अजीबो-ग़रीब तो होगा ही। बहुत कुदरती बात है, सर, अगर आप सोचें तो।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने बुझे अन्दाज़ में स्वीकार किया कि उनके ख़याल से ऐसा ही रहा होगा।

मेन ने कहा :

'फ़्रेड नैराकॉट ने—यही वह आदमी है जो उन सब को वहाँ ले गया था —एक बात ज़रूर ऐसी कही जो ग़ौरतलब है। उसने कहा कि उसे यह देख कर आश्चर्य था कि ये कैसे लोग थे। "मिस्टर रॉबसन की पार्टियों वाले लोगों की तरह बिलकुल नहीं।" मेरा ख़याल है कि अगर उसने विपदा वाले संकेतों के बारे में सुनने के बाद मॉरिस की हिदायत को किनारे करके टापू पर नाव ले जाने का फ़ैसला किया तो शायद इसीलिए वे सब इतने सामान्य और शान्त क़िस्म के लोग थे।'

'वह और दूसरे लोग कब गये वहाँ?'

'संकेतों को 11 तारीख की सुबह युवा स्काउटों के एक दल ने देखा था। उस दिन वहाँ जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी। लोग वहाँ 12 तारीख़ की दोपहर को पहुँचे जब पहली बार वहाँ नाव ले जाना सम्भव हुआ। उन सब को पूरा विश्वास है कि उनके वहाँ पहुँचने से पहले कोई टापू से नहीं निकल पाया होगा। तूफ़ान के बाद समुद्र में बड़ी-बड़ी लहरें उठती रही थीं।'

'कोई टापू से तैर कर किनारे पर नहीं आ सका होगा?'

'किनारे तक मील भर से ज़्यादा की दूरी है और समुद्र में भारी हलचल थी और लहरें तट से टकरा रही थीं। और फिर बहुत-से लोग कगार पर खड़े हो कर टापू पर निगरानी रख रहे थे—युवा स्काउट भी और दूसरे भी।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने लम्बी साँस ली और कहा :

'उस ग्रामोफ़ोन रिकॉर्ड का क्या हुआ जो तुम्हें वहाँ घर में मिला? वहाँ नहीं कुछ हाथ लगा जो मदद कर सके?'

इंस्पेक्टर मेन ने कहा :

'मैं उसकी जाँच कर चुका हूँ। उसे एक कम्पनी ने बनाया था जो बहुत-सा नाटकों का काम और फ़िल्मों के लिए रिकॉर्डिंग वग़ैरा करती है। उसे भी आइज़ैक मॉरिस की मार्फ़त यू. एन. ओवेन के नाम भेजा गया था और उनकी समझ से एक नये नाटक के शौक़िया प्रदर्शन के लिए उसकी ज़रूरत थी। उसका टाइप किया हुआ आलेख भी रिकॉर्ड के साथ लौटा दिया गया था।'

लेग ने कहा :

'और रिकॉर्ड पर जो कहा गया था, उसके बारे में क्या पता चला?'

इंस्पेक्टर मेन ने गम्भीरता से कहा :

'मैं उसी विषय पर आ रहा हूँ, सर।'

उसने गला साफ़ किया।

'मैंने इन आरोपों को जितना सम्भव था, उतनी गहराई से परखा है, सर। रॉजर्स दम्पति से शुरू करें तो टापू पर आने वाले लोगों में वे सबसे पहले थे। वे किसी मिस ब्रेडी के यहाँ नौकरी करते थे जिसकी मौत अचानक हुई थी। जो डॉक्टर उसका इलाज कर रहा था, उससे कुछ पक्का नहीं पता चला। उसका कहना है कि उन्होंने निश्चय ही मिस ब्रेडी को ज़हर नहीं दिया या ऐसा कुछ, लेकिन निजी तौर पर उसका विश्वास था कि कुछ गड़बड़झाला ज़रूर था—कि मिस ब्रेडी उनकी तरफ़ से की गयी लापरवाही की वजह से मरी। उसका कहना है कि ऐसी बात को साबित करना लगभग असम्भव होता है।'

'फिर जस्टिस वॉरग्रेव हैं। वहाँ ठीक है, वही जज थे जिन्होंने सेटन को सजा सुनायी थी। वैसे, सेटन दोषी था—पक्के तौर पर दोषी। उसे फाँसी देने के बाद सबूत सामने आये जिन्होंने सिद्ध कर दिया कि शक की छाया भी नहीं थी। लेकिन उस समय काफ़ी टीका-टिप्पणी हुई थी—दस में से नौ

लोग मानते थे कि सेटन निर्दोष था और जज ने जो सार पेश किया था उसमें बदले की भावना थी।'

'वेरा क्लेथॉर्न, मैंने पाया, कि एक परिवार में गवर्नेस थी जहाँ किसी की डूबने से मौत हुई थी। लेकिन लगता है उसका बहुत लेना-देना नहीं था उससे और कहा जाय कि उसने बहुत अच्छा व्यवहार किया था, बचाने के लिए तैर कर गयी भी थी और फिर लहरों के साथ समुद्र में बह गयी थी और ऐन वक़्त पर बचा ली गयी थी।'

'कहते चलो', असिस्टेंट कमिश्नर ने साँस छोड़ते हुए कहा।

मेन ने लम्बी साँस खींची।

'डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग। जाने-माने आदमी। हार्ले स्ट्रीट में क्लिनिक था। पेशे में बिलकुल खरे और सच्चे। कोई अवैध ऑपरेशन या इस क़िस्म की कोई चीज़ नहीं मिली है। यह सच है कि क्लीस नाम की एक औरत का ऑपरेशन उन्होंने बरसों पहले 1925 में लीथमोर में किया था जब वे वहाँ के हस्पताल से जुड़े हुए थे। पेट की सूजन थी और वह ऑपरेशन के दौरान मर गयी थी। हो सकता है ऑपरेशन के समय वे इतने कुशल नहीं थे—आख़िरकार उनका अनुभव भी ज़्यादा नहीं था—लेकिन बेढंगापन अपराध तो नहीं है। कोई और कारण भी नहीं था।'

'फिर मिस एमिली ब्रेण्ट थीं। एक लड़की, बिएट्रिस टेलर उनके यहाँ काम करती थी। बच्चा ठहर गया, मालकिन द्वारा निकाल दी गयी और जा कर डूब मरी। कोई अच्छी घटना नहीं थी—लेकिन निश्चय ही अपराध नहीं था।'

'लगता है यही बात है', असिस्टेंट कमिश्नर ने कहा, 'यू. एन. ओवेन ने उन्हीं मामलों को उठाया जिन्हें क़ानून नहीं छू सकता था।'

मेन धीरज से अपनी फ़ेहरिस्त पूरी करने लगा।

'युवा मार्सटन ख़ासी लापरवाही से कार चलाता था—दो बार उसका लाइसेंस ज़ब्त हुआ और मेरी राय में उसके कार चलाने पर पाबन्दी लगा देनी चाहिए थी। बस, उसके बारे में इतना ही। वे दो नाम जॉन और लूसी कोम्स दो बच्चों के थे जिन्हें मार्सटन ने केम्ब्रिज के पास टक्कर मार दी

थी। उसके कुछ दोस्तों ने उसकी तरफ़ से गवाही दी थी और उसे जुर्माना लगा कर छोड़ दिया गया था।'

'जनरल मैकार्थर के सिलसिले में पक्का कुछ भी नहीं मिला। अच्छा रिकॉर्ड था—युद्ध में भी नाम कमाया था—वग़ैरा, वग़ैरा। आर्थर रिचमण्ड फ़्रान्स में उनके नीचे काम कर रहा था और मुहिम के दौरान मारा गया था। उसके और जनरल के बीच कोई तनातनी नहीं थी। सच तो यह है कि वे अच्छे दोस्त थे। उन्हीं दिनों कुछ घपले भी हुए थे—कमाण्डिंग अफ़सरों ने फ़िज़ूल में आदमियों की क़ुरबानी दी थी—शायद यह उसी क़िस्म का घपला था।'

'हो सकता है', असिस्टेंट कमिश्नर ने कहा।

'अब रहा फ़िलिप लॉम्बार्ड। लॉम्बार्ड विदेशों में कुछ बहुत अजीब-से मामलों से जुड़ा रहा है। एक-दो बार क़ानून तोड़ने के बहुत क़रीब भी आया था। हिम्मत के लिए और सही-ग़लत का बहुत विचार न करने के लिए मशहूर था। ऐसा बन्दा जो किसी अकेली दूर-पार की जगह में कई लोगों को ठिकाने लगाने से परहेज़ न करे।'

'और फिर हम ब्लोर तक पहुँचते हैं', मेन हिचकिचाया, 'वह निश्चय ही हममें से था।'

असिस्टेंट कमिश्नर थोड़ा हिले।

'ब्लोर', उन्होंने ज़ोर दे कर कहा, 'एक बुरा आदमी था।'

'आप ऐसा सोचते हैं, सर?'

असिस्टेंट कमिश्नर ने कहा, 'मैं हमेशा ऐसा ही सोचता था। लेकिन वह चतुराई से बच निकलता था। मेरी राय में उसने लैण्डर के मामले में झूठी गवाही दी थी। उस समय मैं इसके बारे में ख़ुश नहीं था, लेकिन मुझे कुछ मिला नहीं। मैंने हैरिस को इस मामले पर लगाया, पर वह भी कुछ खोज नहीं सका। लेकिन अब भी मेरी राय है कि अगर हमें पता होता कि कैसे पता लगायें तो खोजने लायक़ कुछ था ज़रूर। वह आदमी सीधा-साफ़ नहीं था।'

थोड़ी ख़ामोशी छा गयी। फिर सर टॉमस लेग ने कहा :

'और तुम कहते हो आइज़ैक मॉरिस मर चुका है? कब मरा वह?'

'मैं सोच रहा था आप जल्दी ही इस पर आयेंगे, सर। आइज़ैक मौरिस 8 अगस्त की रात को मरा। नींद की दवा ले ली ज़रूरत से ज़्यादा—जहाँ तक मुझे पता चला आम नींद की गोलियाँ। यह पता नहीं चल सका कि वह दुर्घटना थी या आत्महत्या।'

लेग ने धीरे से कहा :

'जानना चाहोगे, मैं क्या सोचता हूँ, मेन?'

'शायद मैं भाँप सकता हूँ, सर।'

लेग ने भारी मन से कहा :

'मॉरिस की यह मौत बड़े मौक़े से हुई जान पड़ती है।'

इंस्पेक्टर मेन ने सिर हिलाया। उसने कहा :

'मेरा ख़याल था आप यही कहेंगे, सर।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने ज़ोर से मेज़ पर मुक्का लगाया और चिल्ला कर बोले :

'सारा मामला अजीबो-ग़रीब है—असम्भव है। दस लोग एक चट्टानी टापू पर मार दिये गये—और हमें यह नहीं पता है कि किसने उन्हें मारा या क्यों या कैसे।'

मेन ने खाँस कर कहा :

'ख़ैर, यह एकदम ऐसा नहीं है, सर। क्यों का जवाब हम जानते हैं, कमोबेश। कोई सनकी, जिस पर न्याय का भूत सवार है, वह उन लोगों को दण्ड देने पर तुला हुआ था जो क़ानून की पहुँच से बाहर थे। उसने दस लोग चुने—वे सचमुच दोषी थे या नहीं, इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता—'

कमिश्नर हिले। उन्होंने तीखे स्वर में कहा :

'नहीं पड़ता? मुझे तो लगता है—'

वे रुक गये। इंस्पेक्टर मेन अदब से इन्तज़ार करता रहा। लम्बी साँस के साथ असिस्टेंट कमिश्नर ने सिर हिलाया।

'कहते चलो', वे बोले, 'पल भर के लिए मुझे लगा कि मैं कहीं पहुँच चला था। उसका सुराग़ मिल गया था। पर वह पल बीत गया। जो तुम कह

रहे थे, उसे पूरा कर दो।'

मेन ने बात आगे बढ़ायी :

'दस लोग थे जिन्हें—कहा जाय कि मौत की सज़ा मिलनी थी। उन्हें मौत की सज़ा दे दी गयी। यू. एन. ओवेन ने अपना काम पूरा किया। और फिर किसी-न-किसी तरह अपने को टापू से बाहर हवा में ओझल करने में कामयाब हो गया।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने कहा :

'अव्वल दर्जे की ग़ायब होने वाली चाल। लेकिन मेन, कोई-न-कोई समाधान तो होगा।'

मेन ने कहा :

'आप सोच रहे हैं सर कि अगर वह आदमी टापू पर नहीं था, वह टापू से निकला नहीं होगा और जो इस मामले से जुड़े हैं उनके बयान के मुताबिक़ वह कभी टापू पर था ही नहीं। ख़ैर, फिर तो एक ही जवाब है, सर, वह उन दस में से एक था।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने सिर हिलाया।

मेन ने आग्रह के साथ कहा :

'हमने इसके बारे में सोचा सर। इसकी पड़ताल की। अब, यह देखिए कि सोल्जर आइलैण्ड पर क्या हुआ इसे लेकर हम बिलकुल अँधेरे में हों, ऐसा नहीं है। वेरा क्लेथॉर्न डायरी लिखती थी और एमिली ब्रेण्ट भी। बुड्ढे वॉरग्रेव ने भी कुछ नोट बनाये थे—सूखे, क़ानूनी, संक्षिप्त-से। और ब्लोर ने भी नोट तैयार किये थे। ये सारे आपस में मेल खाते हैं। मौतों का सिलसिला यह था—मार्सटन, श्रीमती रॉजर्स, मैकार्थर, रॉजर्स, मिस ब्रेण्ट, वॉरग्रेव। उनकी मौत के बाद वेरा की डायरी कहती है कि आर्मस्ट्रॉन्ग रात में मकान के बाहर गया और लॉम्बार्ड और ब्लोर उसके पीछे गये। ब्लोर की डायरी में बस एक और बात दर्ज है—सिर्फ़ तीन शब्द। 'आर्मस्ट्रॉन्ग ग़ायब है।''

'अब, सर, सब बातों को ध्यान में रखते हुए मुझे ऐसा लगता है कि हमें यहाँ एक बहुत अच्छा हल मिल सकता है। आर्मस्ट्रॉन्ग डूब कर मरा

था, यह आपको पता है। मान लें कि आर्मस्ट्रॉन्ग पागल था, तो फिर उसे बाक़ी सब को मारने के बाद कगार से छलाँग लगा कर आत्महत्या करने से या फिर दूसरे किनारे पर तैर कर जाने से कौन रोकता ?'

'यह अच्छा समाधान था—मगर इससे काम नहीं चलेगा। नहीं, सर, बिलकुल नहीं। सबसे पहले तो पुलिस के डॉक्टर की गवाही है। वह 13 अगस्त की सुबह टापू पर पहुँचा। वह हमारी मदद करने लायक़ कुछ ख़ास नहीं कह सका। कुल मिलाकर उसका कहना यही था कि सभी लोग कम-से-कम छत्तीस घण्टे या इससे भी काफ़ी समय पहले मरे थे। लेकिन आर्मस्ट्रॉन्ग के बारे में उसने काफ़ी पक्के तौर पर बताया। कहा कि उसकी लाश के बह कर आने से पहले वह आठ से दस घण्टे तक पानी में रहा होगा। इससे यह हिसाब बनता है। आर्मस्ट्रॉन्ग 10 और 11 तारीख़ के बीच की रात किसी समय समुद्र में गया होगा और मैं बताता हूँ क्यों। हमने वह जगह खोजी जहाँ उसकी लाश बह कर आयी थी—वह दो चट्टानों के बीच फँसी थी और उन चट्टानों पर कपड़ों के टुकड़े, बाल, वग़ैरा चिपके हुए थे। लाश वहाँ ज्वार के समय 11 तारीख़ को आ फँसी होगी—यानी सुबह 11 बजे के क़रीब। उसके बाद तूफ़ान थम गया और इसके बाद के ज्वार के निशान काफ़ी नीचे हैं।'

'मेरा ख़याल है, आप यह कह सकते हैं कि उस रात समुद्र में जाने से पहले आर्मस्ट्रॉन्ग बाक़ी तीनों को ठिकाने लगाने में सफल हो गया था। लेकिन एक और बात है जिसे नज़रन्दाज़ नहीं किया जा सकता। *आर्मस्ट्रॉन्ग की लाश को घसीट कर पानी की रेखा के ऊपर लाया गया था।* हमने उसे ऐसी जगह पाया जहाँ ऊँची लहरें भी नहीं पहुँच सकती थीं। और वह ज़मीन पर ठीक-ठाक ढंग से लिटाई गयी थी।'

'तो यह एक बात पक्के तौर पर तय कर देता है कि *आर्मस्ट्रॉन्ग के मरने के बाद* टापू पर *कोई* ज़िन्दा बचा था।'

वह रुका, फिर उसने आगे कहा।

'और फिर—ठीक-ठीक क्या बचता है? 11 तारीख़ की सुबह यह स्थिति है—आर्मस्ट्रॉन्ग "ग़ायब" (*डूब गया*) है। अब तीन लोग बचते हैं।

लॉम्बार्ड, ब्लोर और वेरा क्लेथॉर्न। लॉम्बार्ड को गोली मारी गयी थी। उसकी लाश नीचे समुद्र के नज़दीक थी, आर्मस्ट्रॉन्ग की लाश के पास। वेरा क्लेथॉर्न अपने सोने के कमरे में फाँसी पर लटकी पायी गयी। ब्लोर की लाश टेरेस पर थी। उसका सिर संगमरमर की एक भारी घड़ी से कुचला हुआ था जो यही मानना होगा कि ऊपर खिड़की से उस पर गिरायी गयी।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने फ़ौरन कहा :

'किसकी खिड़की से?'

'वेरा क्लेथॉर्न की। अब सर इन सब मामलों को अलग-अलग लीजिए। पहले फ़िलिप लॉम्बार्ड। फ़र्ज़ कीजिए हम कहें कि उसने ब्लोर के सिर पर वह संगमरमर का ढोंका गिराया—फिर उसने वेरा क्लेथॉर्न को बेहोश करके लटकाया। अन्त में समुद्र तट पर जा कर ख़ुद को गोली मार ली।'

'अगर ऐसा है, *तो उससे रिवॉल्वर कौन ले गया?* क्योंकि वह रिवॉल्वर सीढ़ियों के ऊपर दरवाज़े के पास अन्दर को पाया गया—वॉरग्रेव के कमरे के पास।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने कहा :

'उस पर कोई उँगलियों के निशान हैं?'

'जी, वेरा क्लेथॉर्न के।'

'लेकिन तब—'

'मैं जानता हूँ आप क्या कहने जा रहे हैं सर। कि वह वेरा क्लेथॉर्न थी। उसने लॉम्बार्ड को गोली मारी, रिवॉल्वर वापस घर में ले गयी, ब्लोर पर संगमरमर का ढोंका गिराया और फिर ख़ुद को फाँसी लगा ली।'

'और यह एक सीमा तक ठीक लगता है। उसके कमरे में एक कुर्सी है और उस पर सिवार के वैसे ही निशान हैं जैसे उसके जूतों पर। लगता है वह कुर्सी पर खड़ी हुई, फन्दा अपनी गर्दन में डाला और ठोकर से कुर्सी धकेल दी।'

'*लेकिन कुर्सी गिरी हालत में नहीं मिली।* उसे, दूसरी कुर्सियों की

तरह, क़ायदे से दीवार के साथ सजा दिया गया था। *यह वेरा क्लेथॉर्न की मौत के बाद किया गया था—किसी और* के हाथों।'

'अब हमारे पास सिर्फ़ ब्लोर बचता है और अगर कोई कहे कि लॉम्बार्ड को गोली मारने और वेरा क्लेथॉर्न को फाँसी लगाने के लिए उकसाने के बाद उसने जा कर संगमरमर का बड़ा-सा पत्थर अपने ऊपर गिरा लिया—उस पर कोई डोरी बाँध कर या और किसी तरह—तो मैं उस पर विश्वास नहीं करने वाला। आदमी इस तरह आत्महत्या नहीं करते—और फिर ब्लोर उस तरह का आदमी नहीं था। हम ब्लोर को जानते थे—और वह ऐसा आदमी नहीं था जिसमें कभी हवाई क़िस्म के इन्साफ़ की इच्छा हो।'

असिस्टेंट कमिश्नर ने कहा :

'मानता हूँ।'

'और इसलिए, सर, टापू पर *कोई और भी* होना चाहिए था। कोई ऐसा जिसने सारे मामले के ख़त्म होने के बाद सब कुछ क़ायदे से सजा दिया। लेकिन सारा समय वह कहाँ था—और फिर वह गया कहाँ? स्टिकलहेवन के लोगों को पूरा विश्वास है कि बचाने वाली नाव के वहाँ पहुँचने से पहले कोई टापू से निकल नहीं पाया होगा। लेकिन अगर ऐसा है तो—'

वह रुक गया।

असिस्टेंट कमिश्नर ने कहा :

'अगर ऐसा है तो—'

उन्होंने लम्बी साँस छोड़ी, सिर हिलाया और आगे को झुके।

'लेकिन अगर ऐसा है', उन्होंने कहा, '*तो उन सब को मारा किसने?*'

एमा जेन नामक मछली पकड़ने वाली नाव के कप्तान द्वारा स्कॉटलैण्ड यार्ड को भेजा गया एक दस्तावेज़

अपनी जवानी के शुरू के दिनों से ही मुझे यह एहसास हो गया था कि मेरा स्वभाव अन्तर्विरोधों का पुलिन्दा था। पहली बात तो यही है कि मेरे अन्दर एक लाइलाज रूमानी कल्पना है। बचपन में जब मैं साहसी कारगुज़ारियों के किस्से पढ़ता तो बोतल में एक महत्वपूर्ण सन्देश या

दस्तावेज़ रख कर उसे समुद्र में फेंकने की प्रथा मुझे हमेशा रोमांचित कर देती। अब भी वह मुझे रोमांच से भर देती है और इसीलिए मैंने यही रास्ता अपनाया है—अपना बयान दर्ज करके, उसे बोतल में रख कर, बोतल को मुहरबन्द करके लहरों के हवाले करने का रास्ता। मेरा ख़याल है कि सौ में से एक इत्तफ़ाक़ है कि मेरा बयान किसी-न-किसी को मिल जायेगा—और तब (अगर मैं अपनी प्रशंसा ख़ुद न करूँ तो) अपराध का एक अनसुलझा रहस्य खुल जायेगा।

अपनी रूमानी कल्पना के अलावा कुछ अन्य प्रवृत्तियाँ लेकर भी मैं पैदा हुआ था। मुझे मौत को देखने या उसका कारण बनने में एक निश्चित आनन्द मिलता है जो दूसरों को पीड़ा पहुँचाये। मुझे वे प्रयोग याद हैं जो बर्रों के साथ—बाग़ के कीड़े-मकौड़ों के साथ किये गये... बहुत छोटी उमर ही से मैंने अपने अन्दर किसी की जान लेने की हवस को महसूस किया था।

लेकिन इसी के साथ-साथ इसकी विरोधी भावना भी मौजूद थी—न्याय की एक ज़बरदस्त भावना। मेरे लिए यह बरदाश्त के बाहर है कि कोई निर्दोष व्यक्ति या जीव मेरे किसी कार्य से तकलीफ़ पाये या मर जाये। मैंने हमेशा यह बहुत पक्के तौर पर महसूस किया है कि जो उचित है, उसकी जीत होनी चाहिए।

यह समझने की बात है—मेरा ख़याल है कोई मनोविज्ञानी इसे समझ लेगा—कि मेरी मानसिक बनावट जैसी थी, उसमें मुझे क़ानून का पेशा अपनाना ही था। क़ानून का पेशा मेरी लगभग सभी जन्मजात भावनाओं को सन्तुष्ट करता था।

अपराध और उसका दण्ड मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है। मैं हर तरह की अपराध कथा और जासूसी उपन्यास पढ़ना पसन्द करता हूँ। मैंने अपने निजी मनोरंजन के लिए हत्या के अनोखे और चतुर तरीक़े ईजाद किये हैं।

जब समय के साथ मैं अदालत में जज बना तो मेरी वह दूसरी गोपनीय भावना विकसित होने के लिए खाद-पानी पाने लगी। किसी

अभागे अपराधी को कटघरे में तड़पते हुए देखना, अन्त को पल-पल पास आते महसूस करके नरक की यातना भुगतते देखना मुझे बहुत आनन्ददायक लगता। ध्यान रखिए कि किसी निर्दोष व्यक्ति को कटघरे में देख कर मुझे कोई ख़ुशी न होती। कम-से-कम दो मौक़ों पर मैंने मामलों को रोक दिया था जब मेरे हिसाब से मुलज़िम बेगुनाह था और मैंने जूरी को निर्देश दिया था कि कोई मामला नहीं बनता था। लेकिन हमारी पुलिस की कुशलता और ईमानदारी की वजह से अधिकांश आरोपी जो मेरे सामने हत्या के अपराध में पेश हुए, वे दोषी थे।

मैं यहीं यह बात कहूँगा कि एडवर्ड सेटन नामक आदमी के साथ भी ऐसा ही था। उसका नाक-नक़्शा और रंग-ढंग एक धोखा था और उसने जूरी पर अच्छा प्रभाव छोड़ा था। लेकिन न सिर्फ़ गवाहियाँ और सबूत, बल्कि अपराधियों के बारे में मेरे अपने ज्ञान ने मुझे बिना किसी शक के यह बता दिया था कि उस आदमी पर जिस अपराध का आरोप था, वह उसी ने किया था—एक बुज़ुर्ग महिला की निर्मम हत्या जो उस पर भरोसा करती थी।

मेरी शोहरत फाँसी देने वाले जज की है, लेकिन यह नाइन्साफ़ी है। मामले का सार पेश करते समय मैं कड़ाई से न्याय का पालन करता रहा हूँ।

मैंने बस यही किया है कि जूरी को उन भावनाओं में नहीं बहने दिया जो हमारे कुछ वकील जगाने की कोशिश करते हैं। मैंने जूरी का ध्यान वास्तविक सबूतों की तरफ़ खींचा है।

मैं खुले तौर पर यह स्वीकार करूँगा कि *मैं ख़ुद एक हत्या करना चाहता रहा हूँ।* मैंने इसे कलाकार की उस इच्छा के रूप में पहचाना जिससे वह अपने को अभिव्यक्त करने की कोशिश करता है। मैं अपराध की दुनिया में एक कलाकार था, या हो सकता था। मेरी कल्पना, जिस पर मेरे पेशे ने कड़ा अंकुश लगा रखा था, गुप्त रूप से बढ़ती हुई एक ज़बरदस्त ताक़त बन गयी थी।

मुझे एक हत्या करनी थी—करनी थी—*करनी थी।* और इससे भी बढ़

कर यह कि वह कोई आम हत्या नहीं होनी चाहिए थी। वह एक अनोखा, कल्पनातीत अपराध होना चाहिए—कुछ भव्य और विशाल—आम अपराधों से अलग। उस एक पहलू से देखें तो मेरे अन्दर अब भी किसी किशोर की कल्पनाशीलता है।

मैं कुछ ऐसा चाहता था जो नाटकीय हो, असम्भव हो।

मैं ख़ून करना चाहता था... हाँ, मैं ख़ून करना चाहता था।

लेकिन—भले ही कुछ लोगों को यह बेमेल लगे—मुझ पर न्याय की अपनी ही भावना ने बेड़ियाँ डाल रखी थीं। किसी निर्दोष को पीड़ा नहीं होनी चाहिए।

और फिर अचानक ही यह विचार मेरे दिमाग़ में आ गया—आम बातचीत में इत्तफ़ाक़ से की गयी एक टिप्पणी से प्रेरित होकर। कोई डॉक्टर था जिससे मैं बात कर रहा था—कोई मामूली अनजान डॉक्टर। उसने बातों-बातों में ज़िक्र किया कि कितनी बार हत्या इस ढंग से होती है जिसे साबित करना मुश्किल हो जाता है।

और उसने एक ख़ास मामले का उदाहरण दिया—उसकी एक मरीज़ बूढ़ी महिला हाल ही में गुज़र गयी थी। उसने बताया कि उसे पूरा विश्वास था कि महिला की मौत उसकी देख-रेख करने वाले दम्पति द्वारा एक जीवनदायी दवा रोके रखने से हुई थी। इस दम्पति को उसकी मौत से काफ़ी फ़ायदा होने वाला था। उसने समझाया कि उस तरह की बात को साबित करना काफ़ी असम्भव-सा था, तो भी वह अपने दिमाग़ में उनकी करतूत के बारे में बहुत हद तक साफ़ था। उसने कहा कि इस तरह के मामले बराबर होते रहते थे—जान-बूझकर की गयी हत्या के मामले—मगर जिन्हें क़ानून छू नहीं पाता था।

यही इस सारे मामले की शुरुआत थी। मुझे अचानक अपना रास्ता साफ़-साफ़ नज़र आ गया। और मैंने अपने मन में एक नहीं, बल्कि बड़े और शानदार पैमाने पर हत्या करने की ठानी।

मेरे बचपन की एक तुकबन्दी मुझे याद हो आयी—दस नन्हे फ़ौजी लड़कों वाली तुकबन्दी। उसने मुझे बहुत छोटी उम्र में ही मन्त्रमुग्ध किया

था—एक-एक करके ख़त्म होते जाना—होनी से न बच पाने की बेबसी।

मैंने छिपे तौर पर शिकार खोजने शुरू किये।

मैं यहाँ यह बताने में समय ज़ाया नहीं करूँगा कि यह काम मैंने कैसे किया। मेरे पास सवालों का एक बना-बनाया सिलसिला था जो बातचीत के दौरान मैं लोगों से पूछ लिया करता था—लगभग सभी से जिनसे मैं मिलता—और जो नतीजे मुझे हासिल हुए वे हैरतंगेज़ थे। एक बार जब मैं एक नर्सिंग होम में था मुझे डॉ. आर्मस्ट्रॉन्ग के मामले का पता चला। शराब से कट्टर परहेज़ रखने वाली एक सिस्टर ने, जो मेरी देख-रेख कर रही थी, एक दिन शराब की बुराइयों को साबित करने के लिए मुझे बरसों पहले के उस मामले के बारे में बताया जब एक डॉक्टर ने नशे में ऑपरेशन करते समय एक मरीज़ की जान ले ली थी। सिस्टर से बातों-बातों में यह पूछ कर कि उसने कहाँ ट्रेनिंग ली थी, वग़ैरा, वग़ैरा, मैंने ज़रूरी ब्योरे इकट्ठे कर लिये और फिर डॉक्टर और मरीज़ का पता लगा लिया।

मेरे क्लब में दो फ़ौजियों की गप-शप ने मुझे जनरल मैकार्थर का नाम सुझाया। दक्षिणी अमरीका की ऐमेजॉन नदी के इलाक़े से लौटे एक आदमी ने फ़िलिप लॉम्बार्ड की विनाशकारी गतिविधियों की जानकारी दी। एक नाराज़ मेम साहब ने कट्टर धार्मिक एमिली ब्रेण्ट और उसकी अभागी नौकरानी का क़िस्सा सुनाया। ऐण्टनी मार्सटन को मैंने ऐसे ही अपराध करने वाले बड़े समूह से चुना। उसकी बेइन्तहा लापरवाही और जिनकी जानें उसकी वजह से गयी थीं, उनके प्रति ज़रा भी ज़िम्मेदारी न महसूस करने की उसकी फ़ितरत मेरी नज़र में समाज के लिए ख़तरनाक थी और वह जीने के क़ाबिल नहीं था। पूर्व इंस्पेक्टर ब्लोर स्वाभाविक रूप से मेरी नज़र में आ गया। मेरे कुछ हमपेशा लैण्डर वाले मामले की चर्चा कुछ खुले तौर पर रहे थे। मुझे यह अपराध गम्भीर लगा। क़ानून के सेवक होने के नाते पुलिस वालों को ख़ास तौर पर ईमानदार होना चाहिए, क्योंकि उनके शब्दों पर जल्दी विश्वास किया जाता है।

अन्त में वेरा क्लेथॉर्न का मामला था। मैं जहाज़ में अतलान्तिक महासागर पार कर रहा था। एक रात देर गये धूम्रपान वाले कक्ष में मेरे

साथ बस एक और व्यक्ति था। ह्यूगो हैमिल्टन नाम का ख़ूबसूरत नौजवान।

ह्यूगो हैमिल्टन दुखी था। इस दुख को दूर करने के लिए उसने काफ़ी पी ली थी। वह राज़ बाँटने वाली भावुक मनोदशा में था। मुझे नतीजे की बहुत आशा तो नहीं थी, पर मैंने अपने बने-बनाये ढर्रे पर बातचीत शुरू की। उसकी प्रतिक्रिया चौंकाने वाली थी। उसने कहा :

'आप सही कहते हैं। हत्या वह नहीं है जो ज़्यादातर लोग समझते हैं —किसी को ज़हर दे देना—ऊँचाई से धकेल देना—उस तरह का मामला।' वह अपने चेहरे को मेरे चेहरे के क़रीब लाकर बोला, 'मैं एक हत्यारी औरत को जानता था—जानता था। और इससे भी बढ़ कर मैं उस पर पागल था... भगवान मेरी मदद करे, कभी-कभी मुझे लगता है कि अब भी हूँ।... नरक है यह, मैं आपको बताता हूँ, नरक है। बात यह है कि कमोबेश उसने जो किया, वह मेरे लिए किया... यह नहीं कि मैंने कभी सपने में भी ऐसा सोचा था। औरतें शैतान होती हैं—शैतान—आप को कभी नहीं लगेगा कि ऐसी लड़की—सीधी-सादी, मस्त लड़की—ऐसा करेगी कि एक बच्चे को समुद्र में तैरने ले जायेगी और उसे डूब जाने देगी। क्या आप सोच सकते हैं, *वह* ऐसा करेगी?'

मैंने उससे कहा :

'क्या तुम्हें पक्का यक़ीन है कि उसने ऐसा किया था?'

'मुझे पक्का यक़ीन है। किसी और ने ऐसा नहीं सोचा। लेकिन जिस पल मैंने उसे देखा, मुझे पता चल गया... और उसे मालूम हो गया कि मुझे पता चल गया है... उसने जो बात नहीं समझी, वह यह कि मैं उस बच्चे को प्यार करता था।'

उसने और कुछ नहीं कहा, लेकिन मेरे लिए उस क़िस्से का पता लगाना और उसमें रंग भरना मुश्किल नहीं था।

मुझे एक दसवाँ शिकार चाहिए था। वह मुझे मॉरिस नाम के एक आदमी में मिला। वह शातिर क़िस्म का बन्दा था। और बातों के अलावा वह नशीले पदार्थों का धन्धा करता था और मेरे एक मित्र-दम्पति की बेटी

को ड्रग्स की लत लगाने के लिए ज़िम्मेदार था। उस लड़की ने इक्कीस साल की उमर में आत्महत्या कर ली थी।

खोज-तलाश के इस पूरे अर्से में मेरी योजना धीरे-धीरे मेरे दिमाग़ में पकती रही थी। वह अब पूरी थी और उसका आख़िरी ब्योरा हार्ले स्ट्रीट के एक डॉक्टर के साथ मेरी बातचीत ने तय किया। मैंने बताया कि मेरा एक ऑपरेशन हुआ था। हार्ले स्ट्रीट वाले डॉक्टर ने बताया कि एक और आपरेशन बेकार होगा। डॉक्टर ने हालाँकि लीपा-पोती की, पर मैं सच तक पहुँचना जानता हूँ।

मैंने डॉक्टर को अपने फ़ैसले के बारे में नहीं बताया—कि मैं एड़ियाँ रगड़-रगड़ कर नहीं मरने वाला। मेरी मौत उत्तेजना के एक विस्फोट में होगी। मरने से पहले मैं *जिऊँगा*।

और अब टापू वाला बन्दोबस्त। मॉरिस को इस्तेमाल करके, बिना ख़ुद सामने आये, टापू को हासिल करना आसान था। वह उस तरह के सौदों में माहिर था। जो जानकारी मैंने इकट्ठा की थी, उसे तरतीब देते हुए अपने सम्भावित शिकारों के लिए मुनासिब चारे ईजाद करने में मैं कामयाब रहा। मेरी योजना का कोई हिस्सा अधूरा नहीं रहा। मेरे सभी मेहमान सोल्जर आइलैण्ड 8 अगस्त को आ गये। उस दल में मैं भी शामिल था।

मॉरिस का पत्ता पहले ही कट चुका था। उसे बदहज़मी की शिकायत थी। लन्दन से रवाना होने से पहले मैंने उसे एक कैप्सूल दिया कि वह रात को सोते समय ले ले। मैंने कहा इस कैप्सूल से मुझे ख़ुद बहुत फ़ायदा हुआ था। इस बात का मुझे कोई डर नहीं था कि वह कोई फँसाने वाले काग़ज़ वग़ैरा पीछे छोड़ेगा। वह उस तरह का आदमी नहीं था।

टापू पर मौतों के सिलसिले पर मैंने ख़ास तौर पर ग़ौर किया था। मेरे मेहमानों में गुनाह के अलग-अलग दर्जे थे। जिनका गुनाह हल्का था, उन्हें पहले सिधार जाना चाहिए और लम्बी मानसिक वेदना और भय नहीं भुगतना चाहिए जो ज़्यादा ठण्डे दिमाग़ से हत्या करने वालों को भुगतनी थी।

ऐण्टनी मार्सटन और श्रीमती रॉजर्स पहले मरे—एक फ़ौरन और दूसरी शान्ति से नींद में। मार्सटन में नैतिक ज़िम्मेदारी का वह एहसास ही नहीं था जो हम में से ज़्यादातर लोगों में होता है। वह नैतिकता से परे था। श्रीमती रॉजर्स ने, मुझे कोई शक नहीं था, अपने पति के असर में सब किया था।

मुझे विस्तार से यह बताने की ज़रूरत नहीं कि ये दोनों कैसे मरे। पुलिस बड़ी आसानी से इसका पता लगा लेगी। पोटाशियम साइनाइड बड़ी आसानी से घर-गृहस्थी चलाने वालों को मिल जाता है जो बर्रों को मारना चाहते हैं। मेरे पास थोड़ा-सा था और उसे मार्सटन के गिलास में चुपके से सरका देना मुश्किल नहीं था जब ग्रामोफ़ोन के रिकॉर्ड को सुनने के बाद हल्ला मचा हुआ था।

हाल में दर्द के दौरों से निपटने के लिए मुझे नींद की एक दवा दी गयी थी—क्लोरल हाइड्रेट। मैं इसे इकट्ठा करता रहा जब तक कि मेरे पास वह भारी मात्रा में जमा न हो गयी। जब रॉजर्स अपनी पत्नी के लिए ब्राण्डी लाया जिसे उसने एक मेज़ पर रख दिया तो उस मेज़ के पास से गुज़रते हुए मैंने दवा ब्राण्डी में डाल दी। यह सब आसान था क्योंकि तब तक शक-शुब्हे ने अपने पंजे नहीं फैलाये थे।

जनरल मैकार्थर की मौत बड़े आराम से हुई। उन्होंने मुझे अपने पीछे आते नहीं सुना। मुझे टेरेस से जाने और आने का समय बहुत सावधानी से तय करना था, लेकिन सब कुछ ठीक-ठाक रहा।

जैसी कि मैंने उम्मीद की थी, टापू की खोज-बीन की गयी और यह पता चला कि हम सातों के अलावा वहाँ और कोई नहीं था। इसने फ़ौरन सन्देह का एक वातावरण तैयार कर दिया। मेरी योजना के मुताबिक़ मुझे जल्दी ही एक सहयोगी की ज़रूरत पड़ने वाली थी। मैंने डॉक्टर आर्मस्ट्रॉन्ग को चुना। वह सीधा-सादा विश्वासी क़िस्म का आदमी था, मुझे नाम और शोहरत से जानता था और उसके लिए यह सोचना असम्भव था कि मेरी हैसियत का आदमी हत्यारा भी हो सकता था। उसका सारा शक लॉम्बार्ड पर था और मैं इससे राज़ी होने का दिखावा करता रहता। मैंने

उसे संकेत दिया था कि मेरे पास ऐसी योजना है जिससे हत्यारे को फँसा कर अपना भेद ख़ुद खोलने पर विवश किया जा सकेगा।

हालाँकि सबके कमरे की तलाशी ली जा चुकी थी लेकिन लोगों की तलाशी अभी तक नहीं ली गयी थी। वह जल्दी ही ली जाने वाली थी।

मैंने रॉजर्स को 10 अगस्त की सुबह मारा। वह आग जलाने के लिए लकड़ी चीर रहा था और उसने मुझे आते नहीं सुना। खाने के कमरे की चाभी मुझे उसकी जेब में मिली। उसने पिछली रात को उसे बन्द किया था।

रॉजर्स की लाश के मिलने की अफ़रा-तफ़री में मैं चुपके से लॉम्बार्ड के कमरे में गया और उसका रिवॉल्वर उठा लाया। मैं जानता था उसके पास रिवॉल्वर होगा—बल्कि मैंने मॉरिस को हिदायत दी थी कि वह उसे इसका सुझाव दे दे जब वह उससे बात करे।

नाश्ते के वक़्त जब मैं मिस ब्रेण्ट के दोबारा कॉफ़ी दे रहा था, मैंने क्लोरल की आख़िरी ख़ूराक मिस ब्रेण्ट की कॉफ़ी में डाल दी। हम उन्हें खाने के कमरे में छोड़ गये। कुछ समय बाद मैं चुपके से वहाँ गया—वे लगभग बेसुध थीं और उन्हें साइनाइड का इंजेक्शन देना आसान था। भौंरे वाला खेल थोड़ा बचकाना था पर वह मुझे अच्छा लगा। वैसे भी मैं उस तुकबन्दी के अनुसार काम करना चाहता था।

इसके फ़ौरन बाद वही हुआ जिसकी मैंने उम्मीद लगा रखी थी—यहाँ तक कि ख़ुद सुझाया भी था। हम सब की ज़बरदस्त तलाशी हुई। मैंने रिवॉल्वर को पहले ही छिपा दिया था और अब मेरे पास न तो साइनाइड था न क्लोरल।

यही वह समय था जब मैंने आर्मस्ट्रॉन्ग को बताया कि हम अपनी योजना कैसे लागू करेंगे। सीधी बात थी—मुझे अगले शिकार का नाटक करना था। इससे शायद हत्यारा घबरा जाये—वैसे भी जब मुझे मरा हुआ मान लिया जायेगा तो मेरे लिए घर में घूमना-फिरना और अनजान हत्यारे पर नज़र रखना आसान हो जायेगा।

आर्मस्ट्रॉन्ग को यह विचार पसन्द आया था। हमने उस शाम उसे लागू

किया। माथे पर लाल मिट्टी का टीका, लाल पर्दा और ऊन—और मंच तैयार था। मोमबत्तियों की लौ बहुत हिलती थी और इस मद्धिम रोशनी में सिर्फ़ आर्मस्ट्रॉन्ग ही था जो नज़दीक से मेरी जाँच-परख करने वाला था।

यह बहुत शानदार ढंग से सफल रहा। मिस क्लेथॉर्न को जब वह सिवार मिली जो मैंने उसके कमरे में सोच-समझ कर लटकायी थी तो उसने चीख़-चीख़ कर घर को सिर पर उठा लिया। वे सब ऊपर को भागे और मैं क़त्ल किये गये आदमी की तरह कुर्सी पर जा बैठा।

मुझे जब उन्होंने देखा तो उन पर वही असर हुआ जो हमने सोचा था। आर्मस्ट्रॉन्ग ने बड़े पेशेवर ढंग से अपनी भूमिका निभायी। वे मुझे उठा कर ऊपर ले गये और मुझे बिस्तर में लिटा दिया। किसी को मेरी चिन्ता नहीं थी, वे सब आपस ही में बहुत डरे हुए और आतंकित थे।

रात के पौने दो बजे मैं घर के बाहर आर्मस्ट्रॉन्ग से मिला। मैं उसे घर के थोड़ा पीछे कगार के सिरे तक ले गया। मैंने कहा कि यहाँ से हम देख सकेंगे कि कोई हमारी तरफ़ आता है या नहीं और हमें घर से कोई नहीं देख सकेगा। उसे अब भी कोई सन्देह नहीं था—हालाँकि उसे ख़बरदार हो जाना चाहिए था—अगर उसने तुकबन्दी याद रखी होती। 'एक निगल गया नक़ली चारा...' उसने नक़ली चारा बराबर निगल लिया।

बहुत आसान था फिर तो। मैंने उत्तेजित होकर आवाज़ की, कगार से नीचे झाँका, उसे कहा कि वह देखे, नीचे वह गुफा का मुँह तो नहीं था? वह आगे को झुक गया। तेज़ी से एक ज़ोरदार धक्का देने पर उसका सन्तुलन डगमगाया और वह नीचे उछाल मार रही लहरों में जा गिरा। मैं घर की तरफ़ लौट आया। वह मेरी आहट रही होगी जो ब्लोर ने सुनी। आर्मस्ट्रॉन्ग के कमरे में लौटने के कुछ मिनट बाद मैं उससे बाहर आ गया—इस बार थोड़ी-बहुत आवाज़ करता हुआ ताकि कोई सुन ज़रूर ले। सीढ़ियों के नीचे पहुँचने पर मैंने ऊपर एक दरवाज़ा खुलते सुना। उन्हें मेरी झलक मिली होगी जब मैं सामने के दरवाज़े से बाहर गया।

मेरे पीछे आने में उन्हें एक-दो मिनट लगे। इस बीच मैं सीधे घर का चक्कर काट कर खाने के कमरे की खिड़की से अन्दर आ गया जो मैंने

खुली छोड़ दी थी। मैंने खिड़की बन्द कर दी और बाद में काँच तोड़ दिया। फिर मैं ऊपर जा कर अपने पलँग पर लेट गया।

मैंने अन्दाज़ा लगाया था कि वे फिर घर में खोज-बीन करेंगे, लेकिन किसी लाश को नज़दीक से नहीं देखेंगे। बस, जल्दी से चादर को थोड़ा-सा हटा कर तसल्ली कर लेंगे कि आर्मस्ट्रॉन्ग किसी लाश का भेस बनाये नहीं पड़ा है। ठीक ऐसा ही हुआ।

मैं कहना भूल गया कि मैंने रिवॉल्वर को दोबारा लॉम्बार्ड के कमरे में रख दिया था। हो सकता है किसी की दिलचस्पी इसमें हो कि वह कहाँ छिपाया गया था। भण्डार में ढेरों डिब्बाबन्द खाने का सामान था। मैंने सबसे नीचे का एक डिब्बा खोला—बिस्कुट थे उसमें शायद—और रिवॉल्वर उसमें रख कर ढक्कन बन्द कर दिया।

मुझे अनुमान था कि कोई एक-एक डिब्बा खोल कर नहीं देखेगा—ख़ास तौर पर जब ऊपर के सारे डिब्बे टाँका लगा कर बन्द किये गये थे।

लाल पर्दा मैंने बैठक की एक कुर्सी के छींटदार कवर के नीचे तहा कर रख छोड़ा था और ऊन कुर्सी के पेंदे में छोटा-सा छेद बना कर रख दी थी।

और अब आया वह लम्हा जिसकी मैंने उम्मीद की हुई थी—तीन लोग जो एक-दूसरे से बेतरह डरे हुए थे कि कुछ भी हो सकता था—*और उनमें से एक के पास रिवॉल्वर था।* मैं उन पर मकान की खिड़कियों से नज़र रखता रहा। जब ब्लोर अकेला आया तो वह भारी घड़ी मेरे पास तैयार थी। *ब्लोर का प्रस्थान...*

अपनी खिड़की से मैंने वेरा क्लेथॉर्न को लॉम्बार्ड पर गोली चलाते देखा। वह बड़ी हिम्मत वाली और चतुर लड़की थी। मेरा हमेशा से ख़याल था कि वह लॉम्बार्ड पर भारी पड़ती थी। जैसे ही यह हुआ मैंने उसके सोने के कमरे में मंच तैयार कर दिया।

वह एक दिलचस्प मनोवैज्ञानिक प्रयोग था। क्या उसके अपने गुनाह का एहसास, एक आदमी को अभी-अभी गोली मारने से उपजा तनाव इस बात के लिए काफ़ी होगा कि उसके कमरे के वातावरण के असर से मिल कर उसे ख़ुद अपनी जान लेने के लिए आमादा कर दे? मेरा ख़याल था कि

ऐसा ही होगा और मैं सही था। वेरा क्लेथॉर्न ने मेरी आँखों के सामने ख़ुद को फाँसी लगा ली—मैं बड़ी अलमारी की छाया में खड़ा था।

और अब आख़िरी चरण। मैं आगे बढ़ा, कुर्सी उठायी उसे दीवार के साथ सजा दिया। मैंने रिवॉल्वर खोजा और उसे सीढ़ियों के ऊपर पाया जहाँ वेरा ने उसे गिराया था। मैंने ध्यान रखा कि उस पर वेरा की उँगलियों के निशान बने रहें।

और अब?

मैं इसे लिख कर पूरा करूँगा। इसे बोतल में बन्द करके मुहर लगा दूँगा और बोतल को समुद्र में फेंक दूँगा।

क्यों?

हाँ, क्यों?

मेरी ख्वाहिश थी कि ऐसी हत्या का रहस्य *ईजाद* करूँ जिसे कोई खोल न पाये।

लेकिन अब मुझे एहसास है कि कोई कलाकार सिर्फ़ कला से सन्तुष्ट नहीं हो सकता। पहचाने जाने की एक स्वाभाविक लालसा होती है जिसे नज़रन्दाज़ नहीं किया जा सकता।

मेरे अन्दर, मैं विनम्रता से मानता हूँ कि एक दयनीय-सी मानवीय इच्छा है कि कोई यह जाने कि मैं कितना चतुर रहा हूँ...

इस सब में मैं यह मान कर चला हूँ कि सोल्जर आइलैण्ड का रहस्य अनसुलझा ही रहेगा। हो सकता है, पुलिस को मैं जितना चतुर समझता हूँ, उससे ज़्यादा साबित हो। आख़िरकार, तीन सुराग़ तो हैं ही। एक : पुलिस को इस बात की पूरी जानकारी है कि एडवर्ड सेटन दोषी था। इसलिए उन्हें पता होगा कि टापू पर दस लोगों में से एक, किसी भी अर्थ में, हत्यारा नहीं था और इसलिए एक उलटबाँसी के तौर पर वही आदमी तार्किक रूप से वह हत्यारा है जिसकी उन्हें तलाश है। दूसरा सुराग़ तुकबन्दी के सातवें बन्द में छिपा है। आर्मस्ट्रॉन्ग की मौत 'नक़ली चारे' से जुड़ी है जिसे उसने निगल लिया या जो उसे निगल गया। इसका मतलब है कि मामले के किसी पड़ाव पर किसी गड़बड़झाले का संकेत है—और इस बात का भी

कि आर्मस्ट्रॉन्ग उससे धोखा खा कर मौत के मुँह में चला गया। इससे हो सकता है तफ़तीश की अच्छी सूरत बन जाये—क्योंकि उस समय सिर्फ़ चार ही लोग बचे थे और उनमें से भी स्पष्ट रूप से मैं ही था जो उसमें भरोसे की भावना पैदा कर सकता था।

तीसरा सुराग़ प्रतीकात्मक है। मेरी मौत का तरीक़ा—मेरे माथे पर निशान छोड़ता हुआ। गुनहगार की परम्परागत निशानी।

इसके बाद मेरे ख़याल से कहने को बहुत नहीं रह जाता।

बोतल और उसके सन्देश को समुद्र के हवाले करके मैं अपने कमरे में जाऊँगा और बिस्तर पर लेट जाऊँगा। मेरे चश्मे से एक बारीक़ काली डोरी बँधी हुई है—लेकिन वह इलास्टिक की डोरी है। मैं शरीर का वज़न चश्मे पर डाल दूँगा। डोरी को मैं दरवाज़े के हत्थे से घुमा कर रिवॉल्वर से जोड़ दूँगा, पर बहुत कस कर नहीं। जो मेरे ख़याल से होगा, वह यह है—

मेरा हाथ रूमाल लपेट कर रिवॉल्वर का घोड़ा दबायेगा। मेरा हाथ मेरी बग़ल में गिर जायेगा और रिवॉल्वर इलास्टिक की डोरी से खिंच कर दरवाज़े से जा टकरायेगा और उसके हत्थे के झटके से इलास्टिक से अलग होकर दरवाज़े के पास गिर जायेगा। इलास्टिक इस सबसे छूट कर बिना कोई शक पैदा किये मेरे चश्मे से लटकता रहेगा जिस पर मेरा शरीर लेटा है। फ़र्श पर गिरे रूमाल पर भी किसी क़िस्म की टिप्पणी नहीं की जायेगी।

मैं अपने बिस्तर पर आराम से लिटाया गया पाया जाऊँगा—माथे पर लगी गोली का शिकार—जैसा कि मेरे साथी शिकार अपनी-अपनी डायरियों में दर्ज करेंगे। जब तक हमारे शरीर परखे जायेंगे, मौत का सही समय बताना सम्भव न होगा।

जब लहरें शान्त होंगी, उस किनारे से नावें और लोग आयेंगे।

और उन्हें सोल्जर आइलैण्ड पर दस लाशें और एक अनसुलझी समस्या मिलेगी।

हस्ताक्षर

लॉरेन्स वॉरग्रेव।

एन्ड देन देयर वेअर नन

अगाथा क्रिस्टी दुनिया भर में अपराध-कथाओं की साम्राज्ञी के रूप में जानी जाती हैं। अंग्रेज़ी में उनकी पुस्तकों की बिक्री अरबों में हुई है, और उतनी ही बड़ी संख्या में अन्य भाषाओं में। वे अभी तक किसी भी भाषा में लिखने वाले लेखकों में से सर्वाधिक छपी हैं, केवल 'बाइबल' और शेक्सपियर को छोड़कर। उन्होंने अपराध पर आधारित 80 उपन्यास और कहानी-संग्रह रचे हैं, तथा 19 नाटक और 6 उपन्यास मेरी वेस्टमेकॉट के नाम से लिखे हैं।

अगाथा क्रिस्टी का पहला उपन्यास '*द मिस्टीरियस अफ़ेयर ऐट स्टाइल्ज़*' लगभग प्रथम विश्वयुद्ध के अन्त में लिखा गया जिसमें उन्होंने एक वी.ए.डी. की हैसियत से काम किया था। इस उपन्यास में उन्होंने हरक्यूल पॉयरो की रचना की, एक बेल्जियन जासूस, जो शरलॉक होल्म्स के बाद अपराध-कथाओं का सबसे लोकप्रिय जासूस बन गया। इस उपन्यास को ल बॉडले हेड ने 1920 में प्रकाशित किया।

उसके बाद तकरीबन हर वर्ष एक पुस्तक लिखने के बाद अगाथा क्रिस्टी ने अपने श्रेष्ठ उपन्यास की रचना की। '*द मर्डर ऑफ रॉजर एक्रोयड*' उनकी पहली कृति थी जिसको कॉलिन्स ने प्रकाशित किया, और लेखक-प्रकाशक के ऐसे रिश्ते की शुरुआत हुई जो 50 वर्षों और 70 पुस्तकों तक चली। यह अगाथा क्रिस्टी का पहला उपन्यास था जिसका '*एलिबाई*' शीर्षक से नाट्य-रूपान्तरण भी किया गया और जो लन्दन स्थित 'वेस्ट एंड' में सफलतापूर्वक चला। उनके सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक '*द माउसट्रैप*', का मंचन 1952 में हुआ, और वह नाटक-इतिहास में सबसे लम्बे समय तक चलने वाला नाटक माना जाता है।

अगाथा क्रिस्टी को वर्ष 1971 में 'डेम' की उपाधि प्रदान की गयी। वर्ष 1976 में उनका निधन हो गया, तब से लेकर आज तक उनकी कई पुस्तकों का मरणोपरान्त प्रकाशन हुआ है : सब से अधिक बिकने वाला उपन्यास '*स्लीपिंग मर्डर*' उसी वर्ष में छपा, उसके बाद उनकी आत्मकथा तथा कहानी संग्रह '*मिस मार्पलज़ फ़ाइनल केसिज़*,' '*प्रॉबलम ऐट पोलेंसा*

बे और '*व्हाइल द लाइट लास्ट्स*'। 1988 में पहली बार उनकी एक नाटक '*ब्लैक कॉफी*' को एक अन्य लेखक चार्ल्स ऑसबोर्न ने उपन्यास का रूप दिया।